#### হোমিওপ্যাথিক

# (जयका-यथा।

#### ज्या ९

श्रभाग श्रभाग खेयरथत विरमय श्रक्ति छ विरमय लक्षण।

৺ ছরিপ্রসাদ চক্রেবতী কর্ত্তক অনুদিত।

চতুর্ব সংক্ষা

# ALLEN'S KEYNOTES IN BENGALI

PUBLISHED AND RWIEDD BY
'PIYUSII KIRAN CHAKRAVARTTI, B. A.

Homosopathy Prachar Karjyalaya Patuatuli, Dacca.

1924,

2 / redirection of the last of

হেনা প্রেস, ঢাকা প্রিণ্টার—শ্রীগোপার্গ চন্ত্র দে দারা মুদ্রিত

#### ভূমিকা ৷

देश्यमा-ज्यमा देशया-जरपत क्षांभ-भिकान देशया-मानत मिल क्षांम क्षांम क्षेत्रपत्र विस्मय क्षांकृष्ठि व विस्मय मान कर्म क्षेत्र क्षांविष्टे। क्षांका मान क्षेत्रका नाम क्ष्मित क्षांविष्टे। क्षांका मान क्ष्मित नाम क्ष्मित क्षांविष्टे। क्षांका मान क्ष्मित क्ष्मित क्षांविष्टे। क्षांका मान क्ष्मित क्षमित क्ष्मित क्षमित क्ष्मित क्ष्म

স্কাগনে বৃদ্ধি আইগুনিয়ার, স্কাগনে প্রাস রস্টকোর, প্রচিত প্রাণাণ বেলেডোনার এবং উলাভ ফস্ফরিক এসিডের এইরূপ এক একটা স্কাগোন বিলেষ্ণাগণ।

এই পরিচালক লক্ষণগালি ডিভি-ভূমি করিয়াই মনে মনে সেই সেই ঔষণেয় गफ्नथ्या जित्र जूमन। क्रिट्ड रूप । जूमना वाजिर्प्रत्क खोर्डा निक्रम् क्रिस्ड लात्रा यात्रमा, त्रारणम मिनीजिमा क्टेरण यक्षत्र एक्ट छान परमामा। अवस खेष्य क्षेत्रद्ध जूनमा कतिया खेष्यभ्य कार्ष्य मिक्राण कतिर्ध रूप , जवर खेरान लाकुछ कान माछ कतिएक रम। खेगरणत काकुछ कान न। वाकिरम हिक अपूर्ण क्षेत्रध निक्षीहम ऋषिएक भोत्रो योग मा अभाष्टः क्रूम्नोअभाग । । । त्याभिक्षभग्राणि-भिकार्गीत जीवन-अक। क्षेत्रत्यक्रणकत्न-केम्द्यक्रणकत्न क्षत्रः द्याशीत्रमण्यान-श्वेष्ट्रपत्रमण्यान काष्ट्राटक श्रीकिमिषक दक्ष्यम कृममा क्रिएक इस । दशिष्ठगाथिक देखगबा-ज्यात विभाग गणन त्राणि द्याबान खाबम लिकाधीरक क्षेत्र इहेत्रा क्षाकिनिवृक्ष इहेरक इत्। वाक्षित्रक केहा क्षावम केक्षण नामक करा विष्ट अव्यक्ति वार्शिय अष्ट वय अन्य अन्य विषय विषय विषय अव्यक्ति स्व विषय अव्यन গুলি অজ্ঞাস করিয়া প্রত্যেক উষ্ণের বিশেয় বা প্রতন্ত প্রতিকৃতি উপদৃদ্ধি ক্ষা छिछ। छर। अरलकाञ्चल अवात्राम-मांगा अवर निकास खांत्ररक वक्षे छन्द्रामा काह अहे शुक्षक काकामि कशिया दृष्ट रेक्षमका-कक्ष काकामि क्या द्विपायनक स्हित्य यिन्त्रा देखसमा-छत्यम करे छानम-भिका "देखममा-असा" नारम छामाभिक रहेण। अल्लाक्षित्महे छरक्ष स्मिक रहेरणहे बहेण। यह भूसक्षामि छा।

এলেনের ''কি নোটস্'' নামক শ্বাসিদ্ধ গ্রান্থের বাজনা অনুবাদ গ্রন্থকান দিকানো হেরিং মেডিক্যাল কালেন্দ্রের ভৈষজা-ভত্তের অধ্যাপক। তিনি অধ্যান ও অধ্যাপনার এই পৃত্তকের বিলক্ষণ উপকারিতা দেখিতে পাইয়াতেন ভ্রন্থা করি ছাত্রনণও এই অনুবাদের ভজ্ঞাপ ফলবড় উপলব্ধি করিবেন অনুবাদ ব্যায়থ সুলামূরণ করিতে যথাসাধ্য চেষ্টা করিয়াভি, জানিনা কণ্ডদুর রুভকার্যা হইরাছি পাঠকাণ অনুগ্রহ পূর্বক ফটি মার্জনা করিবেন।

এই পুস্তকে পারেছিনিস্ ভিকের অভ্যন্তরে সমলক্ষণাপর উষ্ণের উল্লেখ
আছে অধ্যরনকালে সেইগুলি একস্থলে সংগ্রহ করিয়া অন্থাীপনী স্বরুগ
আলোচনা ও অভ্যান করিলে একটা উষ্ণ শিক্ষা করিলেই সঙ্গে মজে অভ্যান্ত
কতকগুলি উষ্ণেরও কভকটা জ্ঞানলাভ হইবে। এবং উষ্ণে উষ্ণে কোণায়
কোণায় সৌনাল্শ ও কোণায় কোণায় অসাল্শ ভাহা ভাল করিয়া বুঝা যাইবে
লক্ষণগুলির প্রাণান্তের ভারতম্যান্ত্রনারে কক্ষরেরও ভারত্য্য করা গিয়াছে।
তিত্র ১৩১৯।
আনুবানক।

## দ্বিতীয় সং

#### বিজ্ঞাপন।

ভৈষ্ক্য-শ্রধার বিতীর সংস্করণ প্রকাশিত হইল এ সংস্করণে প্রক্রেপ বিশেষ কোন পরিবর্তন সাধিত হয় নাই মুদ্রাঞ্কনবায় পূক্র সংস্করণ অংগজন বৃদ্ধি গাওয়া সত্ত্বেও এ সংস্করণের প্রক্রের ন্যুল্য বৃদ্ধিত না করিয়া পূর্ববিৎ দেড় টাকাই রাথা হইল। মুদ্রাঞ্জন-দোষ দূর করিবার জন্ম যথা সাধ্য চেন্তা করিয়াছি, তথাপি গ্রানে শ্রানে শ্রম থাকিবার সম্ভাবনা। গ্রশ্নকার জীবিত থাকিতে সন্ত্রদম্ গ্রাহক মহোদরগণ ইহাকে যেরাগ প্রীতির চক্ষে দেখিতেন, ভর্মা করি ইহা এখনও ভাঁহাদের নিকট সেই ভাবে আদৃত হইবে

হোমিওপ্যাথিপ্রচার কার্য্যালয়। নবাবপুর, ঢাকা। আষ্ট্র, ১৩২০।

বিদী ড---ডাঃ জীনুপেল্যান্ড ।

## ততীয় मरकत्रां विखाना।

देखमणा-ऋषात्र कुछोत्र मरद्धन्नव आकाष्ट्रिक रुष्टेण। धार्वादन भूखकवानि जर-का कीरनांडिम् अत्र त्मिय मश्यत्रार्गत मुख्छि भिणांचेरा दमस्या कहेंगारकः । अवर दमाधिनाम् मामक श्वेषप्ति मूक्त मध्याखिक ष्टेशाछ । छ्वर भनावनित वृक्ति **छिहारतत हैश्टब्रयो भक यगारेव रिश्वा हरेवारय, आंभा कवा गांव रेकार**क व्यक्तिव भिकाणीत परवहे भाषाया वर्दे ।

कांशरक्षत्र मूना आंग जिन वन वाजियां नियार्छ रमहेवस श्रुद्धरक्षत्र मुना बिलिव বাড়াইতে বাধ্য ছইলাম। আশাক্ষরি সহদর পাঠকবর আমার স্কল এটি मार्क्षमा अजिया अशीय शिक्ट्रपरवत्र अहे भूखकवानि शूक्षवद स्थारहत्र हरक राविर्वन । निर्वतम हे जि---

হোষিওপ্যাণি প্রচার কার্য্যালয়। श्रिप्रिष्ट्रिणी, छान्। अपिन्न, ५०२४

श्रीशीयुगिक तम एउसमध्यी।

## **उ**ज्यं मरकतरवंत्र विकाशन।

देखवणान्यमा निःदल्यिक रुख्यात्र श्नम् अपि रुक्षा । जनादत्र मुणका आर्थ्य दक्तां अपित्रवर्धन या शतिवर्धन ना रहेदणक हेश मगाक शतिमृह रहेद्वादक । गूमनेवारमम व्याधिका मरवास देशमा भूमा भूकावद्दे महिन। निरंवपन छोछ -

१ हिमाहिनी, हो का।

# সূচীপত্র।

ष्यतम दग्रहेिंग कः म ( ष्यत )	2	। ग्रीयाजनम-नाईएडी (क्यांच्या)	85
আইওডঃম ( আইওড )	13	वर्गानियम का धनिक्य (क्रमन	of)
आटर्डान्छेय नांदेषि क्य ( बार्ट्ड-ना	۱ (		11.5
श्रादर्खान्छम स्मिठाणिकःम (व्याद्धा-स्म	ซ้) า	जारमान्डिम मिडिजिस्मिडिकम (ज	alklet.
আণিকা মণ্টেনা ( আণ্ )	V	स्थिष )	H 4
আদেনিকঃম এলবম (আসা)	>>	এখু/ডিসিয়া (এখা)	स्व
इछिट्यटिविषय भारक शिर्योग ( ह	উপ-	धारम हि किणाम (धारम)	8 5
भारम )	20	विषयःम दम्या ( व्यक्ति-दम् )	89
ইউফেসিয়া ( ইউফে )	36	धार्ज्यमां (बाध्य)	85
ইফুইসিটম ছাইমেল ( ইফুই )	54		a s
रेटधिन या (रेटध)	34	क्षितियम (अषि)	6.0
ध्यून गारदनिभिग्नम ( देथू )	570	जटमंदिव जिमिष्ठ (जद्या-जाम)	¢∄
६ शिकां क्यांनश (१ शि)	2.	धारमंत्रक्ष्म ( धारमात्र )	44
देकिष्ठणांम (देकि)	२२	ওপিয়ম ( ওপি )	d sa
क्टकांनांष्टिय दनदम्गम (क्रक्न)	3.8	किछ्लाम (क्ष)	æ þ
किया (किया (किया)	24	अधिता कुछ। ( अभि )	44
৫ গেরি <b>কংস ( এগা</b> গ্ন )	২৮	क्षणिकम (क्षणि)	6.0
वागका। हेग (वाग)	e p	कटमांमाईम्म (कटमामा)	40
किरियानित्रम क्ष्म (जन्म-क्ष्ण)	\$	करमाभिष्ठ (करमाम्)	41
धारियानियम छोडोतिकम (	q-B-	क्षिक्रम ( क्षेष्ठ )	ft to
होई)	কহ	कांकाणिक जामछ (कांक्षण-न्याम्)	(d) 20
कमाकाछित्रम (कना )	থা	कारका जीनमार्गानम (कारका-ज)	74
<b>बर्गमारेनम ( कर्म )</b>	00	काटका एडकिटहेिकिन (काटका-८	( 18P.)
विशेश (यशिकिका (जिशेश)	৩৭		12
कटलामारेनम (काटलामा)	GO	काणो कार्यानिक्य (काणी-काल)	40
बारजारवेनम (बारजावि)	8 .	काणो वहित्सम्भम् (काणी-वहिः)	ች <b>ແ</b>

	•		
কালী ব্রোমেটম (কালী-ব্রোম)	99	८६ निर्फानियम (८६ नि)	>>\$
কুপ্রম মেটেলিকম ( কুপ )	95	थिक्य ( छिक )	>>8
दक्कां (दक्कां)	bis	(क्थिनिभिग्नम ( दक्षण )	224
<b>(कोनोग्रस ( दकोना )</b>	৮২	টিউবার কিউলাইনম (টিউব)	>>>
८क <sup>+कि</sup> न्दम्भिश्च (८क् <sup>+</sup> किन)	<b>F8</b>	<b>८</b> छेटमन्बिष्ट ( ८७ त )	5₹•
ক্যান্ত্ৰ (ক্যান্ত্ৰ)	b-8	ট্যাবেক্ম (ট্যাবে)	३२२
ক্যানেবিস ইণ্ডিকা ( ক্যান-ইণ্ড )	64	ট্যারাক্সিক্স (ট্যারারা)	¥₹₿
ক্যানেবিদ স্থাটাইভা (ক্যান-স্থাট	<b>,</b> 50	ট্যারাণ্টিউলা (ট্যারাণ্ট)	३२৫
ক্যান্থেরাইভিদ ( কান্থ )	F9	ष्ट्रिंगियम (ष्ट्रिंग)	524
ক্যাঞ্জিম (ক্যাঞ্চ)	৮৯	ভবেষেরা (ডশ)	১২৭
ক্যামোমিলা (ক্যামো)	∌ ♦	ডাইওসকোরিয়া (ডাইও)	481
ক্যান্ফোরা ( ক্যান্ফ )	৯২	ডिबिटहेिना ( ডिबि )	426
क्रांगमित्र (क्रांगमि)	৫৫	ভিপথিরিন্ম (ভিপথি)	202
ক্যালেভিয়ম ( ক্যালেড )	86	ড্রোদেরা (ড্রোদ)	১৩২
ব্যালেপ্ৰুলা (ক্যালেপ্ৰ)	ne	थ्या (थ्य )	308
ক্যানকেরিয়া কার্ফানিকা (ক্যাল-	<b>71</b> )	থেরিডিয়ন (থেরি)	209
	20	शू किंग वार्गा ( था का )	707
	神经。	নকাভমিকা (নকা-ভম)	מפיל
আদে <b>)</b>	הה	नका भरण्डिं। ( नका-भ )	285
ক্যালকেরিয়া ফলফরিকা (ক্যাক্ষ-খ		नारें कि क किए ( नारे-किन)	\$88
C	44	ভালা (ভালা),	189
·	3.5	ভাট্রম কার্কনিকম ( ভাট-কা)	785
	200	ভার্ত্তম মিউরিয়েটকম (ভাট-মি)	
	9+8	ভাটিম সলফিউরিকম ( ভাট-সল )	542
	3 • €	পভফিল্ম (পভ)	248
- /	9-4	भगरमंडियां ( श्रम्भ )	764
·	- 1	পাইরোজেন ( পাইরো )	>ab
हात्रना ( होत्र )	*>•	পিজিক এসিড (পিজি-এসি)	*#

পেট্রোলিখ্য (পেটো)	১৬২	यातकि छेतिया विन व्यक्ति ( ग	पार्क }-
८९८द्वारमणिनम (८९८द्वीम)	240	र्वन )	₹• 7
क्षःयःम ( क्षम )	208	,, गणिए डिवियम ( भाक गणम	) ** "
क्षांडिना ( क्षांड )	\$68	"" मणिউविणिम (भाक-मण)	<b>₹</b> + B
कशकद्रश्म (क्म)	366	"" गारत्रनाहेफ (भाक गारत)	₹+#
ফসফরিক এসিড (ফস-এসি)	39+	মিউনিঅটিক অসিড (মিউ-অসি	) ₹*७
काइटिंग गांक (क्राइटिंग)	290	मिखेरवा (मिखेन)	2.9
ফাইস্টিগ্না (ফাইস্ম্)	548	भिनिद्धानियम (भिनि)	₹•₩
ফিরম (ফির)	>94	दयस्यवित्रम् ( दयस्य )	6 = 23
ফ্রোরিক এসিড ( শ্লোর-এসি )	>11	८मध्यात्राहेनम (८मध्या)	233
বার্পেরিস ( বার্প )	294	মেনিয়াহিদ (মেনি)	255
विममथ ( विम )	ና <b>የ</b> ረ	<b>८म्मिरमा</b> हम ( दम्मि )	274
(यरक्षांहैक जीमछ ( ८४%)	\$6.4	म)विभिष्ठा क्वानिका (भाव	<b>ተ-</b> ኞ1 )
(चरमरखानां ( दचम )	<b>ን</b> ৮5		3.7F
বোভিষ্টা (বোড)	348	)) )) भगमतिक (A)। श-भग)	457
(वात्रादा ( दवात्र )	>be	» » भिखीत्रदयिष्टा (भाषा-	মিউ)
ব্যাণ্টিসিয়া (বেণ্ট)	51r4		\$ \$ 2
वाक्षिक्षां का (वाक्ष-का)	744	त्रभित्रियरकारकक्षुन ( क्षम, अध्म )	450
वारेकनिया (तारे)	446	माणानस्म ( नाष्टान )	356
জোমিয়ম (জোম)	395	श्राननिक्छणम (श्रानन)	<b>₹₹₩</b>
खिदत्र प्रेम ज्यापम (खिदत- n)	944	রিউম ( রিউ )	225
क्रित्रोध क्रिय ( क्रियं-क्रि)	थनद	क्ष्यम् (क्ष्म्)	₹ <b>₹</b> ₩
(छत्रिक्योहेनम ( ८क्षात्रक्य )	521	किंग (किंग)	११३
एक नितिष्ठांना ( एक नि)	১৯৮	दमारखारख्यं न ( दमाख )	₹ ۞ #
मात्रिङ्किशियम ( मार्क )		भदत्राभिदत्रमम् (भदत्रा)	203
" " करत्रांगाईखग ( भाक-कत्र )		गरिदकादणाधिमम्, गार्हे)	३७३
" " ভলসিস (মার্ক-ডল)	२०२	गारेगीम ( गारेग )	₹-0€
" " । । दोर्टी चा हेखछ ( मार्क-छाट्टी।	)२•०	লিভাম (লিভা)	<b>104</b>
	,		th.

गिगिग्रभ (गिगि)	২৩৮	সিক্ষাইট্য (সিফ্টা)	२१०
लार्विमा (लाव)	₹8•	मिणिभिम्रा (गिणि)	ঽঀ৳
ল্যাক ক্যান্ইন্ম (ল্যাক-ক্যান	<b>(85</b>	म्हिनयम ( म्हिन )	২৭৯
লাক ডিফ্লোরেটম ( লাক-ডি )		त्मात्रिनःम् (त्मात्रि)	245
লাকেসিস (ল্যাক )	२8७	२०० <sub>१-</sub> छात्रा, ( २००५,%)	२৮¢
ष्ट्रांनम ( होंग )	485	ম্পাইজিলিয়া (ম্পিঞ্চি)	264
ষ্ট্যাফিসেগ্রিয়া ( ষ্ট্যাফ )	२६५	ভাস্ইনেরিয়া ( আপ )	२৮৯
ষ্ট্রামোনিরম ( ষ্ট্রাম )	895	স্থানিকিউলা ( স্থানি )	₹8•
সঃলফঃর ( সলফ )	२६७	স্থাবাড়িলা ( গ্ৰাবা )	२कर
সংশ্যিউরিক এসিড ( দল-এসি )	262	স্থাবিন ( স্থাবি )	२२८
সাইকিউটা ( সিকিউ )	२७५	ভাষ্কন ( ভাষ্ )	२२६
गारेक्स्यन ( गारेक्स )	२७७	हाहेखगारमभाग ( हाहेख)	रक्ष
সাস্থিরিশা (সাস্থি)	২৬৪	হাইড্ৰান্তিস ( হাইড্ৰান্ত )	486
गिदक्षा (भिक्)	286	হাইপারিক্ম ( হাইপার )	दत्र
সিম্প্ৰন ( সিড )	246	হিপার সলফর (হিপ)	400
शिमा ( भिम )	২৬৯	दररयरयणिम ( दर्दस्य )	9.0
সিপিয় (সিপি)	२१०	<b>८हिना</b> रयात्रम ( ८हिन )	\$ ♦ \$
तििंगिगोहेनम (निकि)	२१०	<b>ट्टरणा</b> नियाम ( दररणान )	Ø*&
	-		

#### তুরহে পারিভাষিক শবের ইংরেজী প্রতিশব্দ।

असरकथ Sediment अभाग कि In iominatum. অস্কল্প Vicarious. অমুপুর্য স্থায় Complementary relation. পায়্ডুডি Sensitiveness व्यथहामांन Papulai. अवस्त्रण Excoriation व्यवस्थान-वांश्व Hypochondriasis. অবিদাহী Bland. करमांच जैयस Gems Epidemi-Cus. অন্ধৰিত Sun-stroke. अश्विदवष्ट Periostium. আড়ডি Tension. जातिकाण Damp weather. भाषिरछोछिक Mechanical भारपप्र Contents. कांविन "Inchiel. व्यदिवन Paroxysm. আভিখাভিক Traumatic. आम Mucus, आभाषां Rheumatism. भाषां भन्न Stomach উদ্ধেপ Ecuption. Erma Aphthic উপৰাত Injury. উপ্তশ্ন Aggravation উপত্ৰ Epithelium.

Garie Irritation.

किन्द्र-(माथ Psora.

শতারা Tendon.

क्नीमिका Cornea.

क्षम Prolapsus Uteri. करब्रिटि ( canium. कृष्टित्र देशपुन Onanism. रेक निका Capillary दक्षांकिम-हक्षू-अधि Coccyx. अण्डिक्सनम् श्रीष्ट्र Motor Nervea. क्श-दक्षांव Pharynx. खिका (साथ L'uberculosis. कथा-वास् Hysteria. त्रभन Bunio 1. গ্ৰাছি-খাড Gout. श्वहे-खन मितानंवर. fofolowi Caustu, bay Langus. श्चित्रज्ञ Inciend wound. श्रिष्ट्य - कर्ने व्यापित विश्व BWIX Convulsions. (छश्रालेश () var y. Sa Fibria. wis term Flue res of heat. ভাগু-সুদ Tonnil जिक, जिकाकि Sacrum. पथ-भक्ष त्रा Sordes. भीषांश्चि I ibia. CFM Region. धार्क-विकास Cachenia. माष्ट्री-अप Pistula. निर्देशम Degluttition. विभव्यक्ष Sinking. विश्वीयम Expectoration लो-अध्यव Navioular fossa. भहामान Pustular, भक्त Intercostal.

গাপুৰ Pale. পামা Eczema. शौद्धका Eruptions. शृष्ट्रवर्भ Spine. প্রতিক্রা Reaction. ঞাতিখ্যার Catarrh. श्रिशायम Rush. প্রবণতা Tendency. ফুদফুদ-পাকাশয়িক-সায়ু Pneumo gastric nerve. ব্ৰহ্ম সায় Sciatic-nerve. ৰন্ধি-কোটন Pelvis. বহুপাদ Polypus বাতকটক Sprain. विश्वारी Actid. বিদ্ধান্ত Punctured wound. বিধান-তন্ত্ব Tissue विविभिषा Nausca. विषय-निष्ठी Objective. বিসমাসিত Decomposed. विनम Erysipelas বুক্ক Kidney. ত্ৰণপোপ Abscess. ভৌতিক Physical. ম্পিপুর Pubis. मनिवक्ष Wrist মদাত্যর Delirium-tremens. মধান Mesentery. মস্ত Serum. মাষ্ধ-পোষ Sycosis. মুথ-রাগ Flush. মুখশামিতাছি Prostate, মূজ-নাশ Suppress of urine, भूख-भार्ग Urethra.

মূত্রাশয় Bladder. भूगोधीत्र Perineum. মুৎপাপু Anaemia. वाञ्चिक Organic. রক্তাতিসার Dysentery. नित्रका Lymph. শহা Temple. শৃদ্য Foreig i body. শহ Scales. भिषद्म Apex. শীতপিত্ত Urticaria. শীতাদ Scurvy. ধৈগিক विशो Macous-membrane সংস্থাস Apoplexy. म्रश्तृष्ठि Stricture. সম্প্রণ Wound সম্নিয়োগভা Co-ordination, সরশাস্ত্র Rectum. भरक्षिज्ञ Eruptive Fevers. সহামুভুতি Sympathy. সাপ্তলাল Albuminous. শাস্থয় Porous. অুকুমার Delicate. युगाञ्च Colon. श्रही-द्वध Stitching pain. সায়ু Nerve. শ্বপ্ৰ-সঞ্চয়ণ Somnambulism. ৰম্ভুত Idiopathic. স্বর্নাশ Aphonia. হয় Jaw. হম্ভন্ত Lock-jaw. হরিৎপাপু Chlorosia. छ्ण-द्वथन Stinging pain,

# হোমিওপ্যাথিক ভৈষ্যজ্ঞা-হয়ে।

#### অরম মেটেলিকঃম।

(Aurum metallioum)

क्षकावन हम्मू ७ क्षकावन हुण निश्वि बङ जीवन वाकि। ७ मधीवछा, व्यक्षिवडा, छविषाद भषका छेदक्षी (anxiety) निश्वि वाकि

को - मृष्टि , भूधकाम ; जीवत्न विज्यः, इव ।

शांत्रम ७ উशमरटम त मन्त्रमध्य **७**घ-८म् र गांकि ।

নিজেল, নিজীব, গাণ-মেধ (of weak memory), বাশক-প্রশন্ত এনীড়া-কৌড়কে বিরত , অবিক্ষমিত-গত ; জন্মনঃ স্মার্গতিশ্রপ্রাস্থা, বাশক।

অবিরত আত্মহত্যার চিন্তা (ভালা---কিন্ত মনিতে ৬ম, নম)। গভীর বিষাদ ----মণ ও নিযাদ-প্রয়াধন উদ্ধেক; শাণাহতা

क्षित्रांत्र हेण्हा ; कौत्म मनामा भगतार कार्क्षय ; भाग्न कामगान्दारम्य भग्न : आग्न भक्षण रत्नारमर्ह निर्मारमय विमामानका।

অঙ্গন্ধনতা, ব্যস্তসমন্ততা, মানসিক ও শারাখিক পরিপ্রমের সাতিশর ইছে। কিন্তু তাড়াতাড়ি কাল করিতে অসমর্থতা (আঞ্চনো শ

भाष, ७ दशय-फक्षकानिक कर्ष ७९मर मुद्रा ७ कावारकाद कामना

জন্ন, জোধ, প্রতিবাদ, ছঃখ, বৈরজি, আঙ্কা, অথধা সংগ্রোপিত অস্জ্যেদ স্বশতঃ ( ষ্টা)ফ ) অন্ত্র্থ

ক্ষতিরিক্ত ক্ষম্পুতি। বৎসামান্ত ও ডিবালে ক্রোধের উল্লেশ ( কোনা ); বাতনায়। গমে, সালে, প্রবণে ও স্পর্ণে ( এনা ) জীরভামুন্তর।

किशिभवर्ग मिनिन्यमः । एश्विज, विमर्थ, त्योगे : ८कांक-८म्राय-छावय ; वार्किपिरशय परमध्यास मानिक शिक्षक । क्रिया । কেশ-পতন, বিশেষতঃ উপদংশ ও পারদঞ্জনিত রোগে

আর্দ্ধ-দৃষ্টি, কেবল নিয়ার্দ্ধ দৃষ্ট হয় (কেবল বামার্দ্ধ দেথা যায়, গিণি-কা, লাই)।

উপদংশ ও পারদন্ধনিত অন্থি-রোগ।

অস্থি-কভ। -- নাসিকা ও তালুর অস্থির এবং কণাণ-প্রাণ্ডের স্তনাতা সদৃশ অস্থিত কেরিজ (Caries); পুজিনস্ত (Ozeena) ও কর্ণপ্রাব, অতি স্থর্গধ্যাব; সাত্রিতে বেদনার বৃদ্ধি; বেদনা বশতঃ হতাশ হইয়া পড়া; গারদ অগবা উপদংশ হইতে উহার উৎপত্তি (এসা)।

উচ্চ স্থান হইতে কিছু পাড়িতে অথবা স্বাভাবিক শক্তি অপেকা অতিনিক্ত চেষ্টা করাতে (পড়, রস); এবং বিবৃদ্ধি বশতঃ (কোনা) অরায় বাহির হইরা পড়া ও উহার কঠিনতা প্রাপ্তি

অতিশন্ন বিষয়তা সংযুক্ত রজোরোগ ও গর্জাশমের (uterus) ঝোগ; ঋতু-কালে উহার যুদ্ধি।

বয়স্তার প্রারম্ভে বালিকাদিগের খাদে তুর্গন্ধ।

হৃৎপিও যেন ছির ছইয়া পড়িয়'ছে এক্লণ অঞ্ভব; যেন উহাদ প্রদান স্থানিত হইয়াছিল এপ্রকার অনুভব, তৎপরে সহসা একটা কঠিন আঘাত থাদান (দিপি)।

ख्रेयन छ्दकन्न ।---ज्दम् भित्रक्षरमत्र भरत्र मध्यरक ख चक्राःश्वर त्रक्ष-मध्या ; क्रूम, क्रीन, क्रज ७ क्रिमियिक नांकी ; शर्मात्र ७ क्रभाग-१ रिक्षत्र ध्यमीत्र (Carotid) मृक्षमान न्नम्मन ( द्यन, अन ) ।

হৃৎপিত্তের মেদাপকর্ণ ( ক্যাটিভিজেনারেসন ) ( ফস )।

উপচয়।—শীতল বায়তে: শীতল হইবার সময়; শয়ন-কালে; ও মান-সিক পরিশ্রমে বৃদ্ধি। কেবল শীতকালে অনেক অন্তথের উপস্থিতি।

উপশ্য —উফ বায়ুডে; উফ হইবার সময়; প্রাতে ও গ্রীম্মকালে হ্লাস।
সম্প্র ।—(>) অরমের পরে সিফিলাইনঃম ও সিফিলাইনঃমের পরে আরম
ভাল থাটে। (২) অন্ধি-রোগে ও অরায়ু রোগে, এসা, ক্যাল, গ্লাট, সিমি,
টার, থেরে, অরমের সমগুণ

## আইওডঃম।

#### (Iodum.)

ক্ষাবর্ণ কেশ ও চক্ষ্ বিশিষ্ট গওমালা-ধাত্-ছাই ধ্যাক্তি, প্রাণাচ্চ চুর্বলিতা ও অতিশয় শীর্ণতা ( এয়োট ) সংযুক্ত ধাত্-ছাই শবস্থা

উপরের ওলার উঠিবার সময় (ক্যাও ); ও অপুকালে ( এলম, কার্থো-এন, কক ) অভিশয় মুধ্যতা ও খাস-হ্রতা।

অভিদ্না, নেশ আধার করা হয়, অপচ প্রেশীর শীর্ণ্ডা জন্মে (এরে, গ্রাট-মিউ, স্থানি, টিউব)

প্রাতঃকাল হইতে রাজি পথাও শৃকোদগার, যেন ভুক্ত রাগোর প্রত্যেক কণা পরিবর্ত্তিত হইয়া বায়তে পরিবভ হইয়াছে (কালী-কা)।

सूची इहेटल कर्छे ६३। अक्षण भरम भरम आशाप भमा जावश्यक १३, ना शाहरण छे९कर्श ७ वित्रिक्ष अरमा (भिना, मणफ); आहान काटल वा जाहानाटल, आमाभग पूर्व बालिए, खाला द्वार एए।

কজুমন — ব্কান্থির পশ্চান্তাগে, দ্যক্ষ্যের নির্মেণেশে কজুমন অধিয়া কাগের উল্লেখ্য, বায়্নসীর অভ্যন্তর দিয়া নাগা-রক্ষ্, পণ্যশ্ব সেই কজুমনের সংপ্রারণ (কক কোনা, ফ্য)

গল-এছি (thyroid), শুন, ডিমানার (ovary), **অগুমা, সুরামু, সুরাশ্রেম**মুখশার্মারাছি (protectic gland), ও অঞ্চান্ত গ্রাহ্ম হান্ধি ও দুফ্তা প্রান্থিন অমেম
নীর্ণতা ও লোগিতভাও ফ্লিডে গারে

মলিদবর্গ কেশবিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের শক্তি হাজ্যবৃত্তি ( গভল চুল বিশিষ্ট য়জিদিগের গজে ব্রোম); আহারাজে স্থাল বোধ হয়।

ষ্ঠাৰ কান কিছাৰ প্ৰিল্লেন উহার স্বাভিশ্য (ডিলি, জুলনা ক্ষ্ণা — বিশাসান্ত মানজিক পরিসামে যুদ্ধি, ক্যাল-ছাস্ত্রী।

श्विष्ण यम मर्शविष्ठ रहेएलएड जङ्गण गर्छव ; यम योह निर्मिष्ठ रहा पूछ हैपाइड ज क्षाकात कार्छक (कार्कि, मनक)।

क्षिम विश्वीविभिष्ठे क्ष्य, श्राजनमूक उपयोग, क्षेत्र श्राजनमूक (क्ष्याम, क्षेत्र श्राजनमूक (क्ष्याम, क्ष्याम श्राजनमूक (क्ष्याम क्ष्याम श्राजनमूक (क्ष्याम क्ष्याम क्

বালক হাতদিয়া স্বর্যন্ত ধরে (সেপা); বালকের, বিশেষতঃ মাংসল বালকদিনের মুধ্মগুল পাজুবর্ণ ও শীতল হয়।

শেতপ্রদের ---বিদাহী পদর প্রাবে বস্ত্রে দার্গগর্গে ও বস্তা থাইয়া যার ; শতুকালে প্রদরের সমধিক প্রাচুর্য্য জন্মে

জনায় গ্রীবার (cervic ) ক্যানসাবজনিত অপকৃষ্টতা (degeneratio i); উদরে কর্তুনবৎ বেদনা ও পত্যেকবার মগত্যাগকালে র ওপ্রাব ।

বিফল মল-প্রবৃত্তি সহ কোষ্ঠ রোধ, শীডল ত্র্থপানে উহার উপশম

উপ্চয় —উষ্ণভায়; ও মস্তকে কাপড় অড়াইতে বৃদ্ধি (হিপার ও সোরিণমের বিপরীত)

স্থান |—(১) লাইকোপোডিয়বের সহিত অমুপ্রক সহল। (২) কুলিম বিলীবিশিষ্ট কুপরোগে ও কুপদকোন্ত পীড়ায়, বিশেষতঃ গওমালা-ধাতু ছাই অভিবৃদ্ধিত বালকদিরের রোগে, কমে-এসি, বোম, কালী বাই, কোনা, ও স্পঞ্জের সহিত সমগুণ সহল। (৩) হিপায় ও মার্কেয় পরে আইওড ভাগ থাটে, কুপরোগে আইওডের পর কালী-বাই ভাল থাটে। (৪) লিপি বলেন যে পূর্ণিমার পরে, অথবা চল্লের ক্ষয়গ্রাপ্তির সময় প্রয়োগকরিশে আইওডিনের সংস্থোত্য কিয়া দর্শে (৫) হেরিং বলেন যে প্রস্থাবস্থায় উচ্চক্রমে ভিন্ন এই প্রথম ব্যবহার করা বিহিত নহে

#### আঙেজিওম নাইটি কম। (Argentum Nitrioum)

অসাধারণ অথবা দীর্ঘকাণব্যাপী মান্দিক পরিশ্রেমজনিত তরুণ বা পুরাতন রোগ

**७**ष, भीर्ग, त्रक्षवरमृष्टे द्रशांगी

প্রতিবৎসর বিবর্দ্ধিত দীর্ণতা ; নিয়শাথাদ্বয়ে উহান অত্যন্ত স্পপ্ততা (এম-মি) ; কম-রোগ ( Marasmus )।

ভলনালয়ে অথবা নাট্যশালায় যাইখার সময় আশঙ্কান উৎপত্তি ও অতিসারের উপস্থিতি (জেল)। मग्र शित्त शाद्र याय (कान-२०), जाकाजीए क्रिया काल क्रियाय हैका; क्षेप्र क्षेप्र हैकि, मश्रमार मप्रवर्ण, वाक्रिका, दकाननण, अभावनीयजा (अन्न, विवि)।

শিরংপীড়া — মন্তবের পূর্ণ। ও ওনতা সহ রজ-স্থাম জানত,
প্রসারণ অনুভব সং সাহিত্যদেশীদানের অভান্ত অমশানক, নতুন
জনিত; অপালের সম্পূর্ণাংশের উরভন্ততে অথবা শলাস্থানে (দ্যানি)
আর্থান ও প্রচাপনবৎ এক পার্ষিক, তিও ব্যনে পরস্থায়, তাবসাদজনক
মানসিক পরিশ্রেমে বিব্যক্ষিত; অবং ভাচাপনে বা দৃচ্বধানে
উপ্লামিত (জিপ্স, গল্য); শিরংগাড়া।

চশুর শুরুমগুলের তরণ দানাম্য পদাহ , কাঁচা গো-মাংযোর স্থায় লোছিত বর্ণ ; পুয়াজ খোমামঃ ও ভূওলান

ন্যজাত শিশুদিগোর ৮ফ্ প্রেদাহ। পুশ্ময় ও তৃত আর নিঃসরণ , কনীনিকার ( coinea ) অস্বচ্ছতা ও সত ; অসি-পুটের সত, স্থুল্ড ও শ্বৈত্তা , আডে সংযোজনা ( এপিস, মার্ক-সল, রসটবা )।

স্চী কাষ্যজনিত চন্দ্র অস্বচন্দতা, উফার্হে উহার উপশ্ন, ও অনার্ড বার্তে র্ছি ( স্লাট-মি, রাটা )।

हिनि आश्रादशत आकाष्या नाम्य जिन गाहेटल खानवारम, किस बाहेटल खाडिमात खरण ( अवन वा प्र-एक्ष भारत ( Smococ near) खाहारम ल्यूहा, काङ्क-क्षम )

व्याभागित्वत व्यक्तितात्म द्यादशके जिल्लाद्वत विद्यागिति। व्यागान मध्यक (flatalant) श्रीग्रमाना। टाट्याकवान व्यक्तिमध्य गदन जिल्लान: वाष्ट्रक व्याभ मन्न त्यन काविन्ना भारत्य व्यक्ति क्रम्भूत, जिल्लान व्यनामित्र जिल्ला, व्यवस्था व्यक्तिक स्थापित व्यक्तिक व्यक्ति क्रम्भूत

शिष्टे वात गमम अणाम त्यान दिन्छ भ्रिता हो हिस्ति है जिल्ला का अध्यव ( एकि, रिल, निर्म किनी मिलि)। इति विनोत ममन विनव के बार्ट किन किन्न मुद्र है वि एकि एकित छाम अध्यत ।

অভিসার —কাটা শাকের স্থায় ছিবড়া ছিবড়া সর্ব জাম, শয্যাবস্থা থাকিলে পরে সর্বত্ত পরিবড়ি; জমপানাস্থে অভি- সার; মিছরি অথবা চিনি খাওয়ার পর অভিসার; স্তাকার থণ্ডেথণ্ডে অথবা পিতে পিঙে রাশি রাশি শ্লেগামিশ্রিত সসিকা (masses of mucolymph) পড়ন (এসার); তৎসহ সশক্ষে অধিক বায়ু নিঃসরণ (এলো)

জলপান করিবামাত্র অভিসার ( আসর্, কোট-টিগ, গুম )।

দিবারাত্রি অজ্ঞাতসারে মূত্র নিঃসরণ ( কপ্ত )

ধ্বজ্ঞত্ব ---রমণ চেষ্টায় উৎ ছের অমুখান ( ব্রানস, ক্যালাভ, সেলেন )

স্বাতি-ক্রিয়া স্ত্রী পুরুষ উল্বেরই রতিক্রিয়ায় যাতনা, রমনাস্তে যোনি হটতে রক্তপাত (নাই-এসি)

ত্তাযুতে রক্তপ্রাব — যুবভীবিধবাদিগের; বন্ধাদিগের; স্নায়বীয় তিয়ার বিকৃত বিবৃদ্ধি সহকারে নিবৃত্ত-রক্তস্কাদিগের (গাক), জরায়ু হইতে রক্তপ্রাব।

वियम वोय् मिवत्नत व्यक्तियत ष्णृशं ( अयिम भगम, म्गम )

গায়কদিগের পুনাত্তন স্বরষ্ট্র প্রান্ট ; উচ্চস্বরে কাস জন্যায় (এলম, আর্জ্জ-মে, এরম)

নিয়াজেণ অভিশয় ত্র্বলতা, ও কম্পন; চক্ষ্ব্'জিয়া হাঁটিতে পায়া যায় না।
দুচ্নপে ইটিতে বা দাডাইতে পারা যায় না, বিশেষতঃ যথন অহা কেং
দেখেনা মনে করা যায়।

টঙ্কারের ( দড়ক। ) পূর্বের অভিশন্ন অন্থিরতা।

গায়ের কাপড় ফেলিয়া দিলে শীতাত্মতব, অথচ বস্ত্রার্ত হইলে শাস-রোধাত্মতব; বিষল বায় গেবনের স্পৃহা।

এই ঔষধে ক্ষতে অধিক কতাঙ্কুরের উৎপতি নিবারণ করে।

উপ্তয়।---भोजन थाजानगः भोजन यागः । हिन आहातः वतरणत कृत्री खाजनः ७ जामाधात्रभ गानमिक श्रतिक्षरगः वृद्धि।

উপশ্ম। অনাবৃত বায্তে; মুথমগুলে বাতাস লাগিলে; ও শীভল্লালে সানে, হাস।

সম্বা —(১) নাইটেট ছ জ সিলভার দারা পোড়াইয়া দেওয়ার মন্দদলে জাট্রম মিউর ফলপ্রাদ (২) কাফি সেবনে এই ঔষধের স্নায়বীয় দিরোবেদনা বৃদ্ধি পায় (৩) ভাষাক থাওয়ার গর বালকদিরের অন্তথে এই ঔষধ

উগ্যোগী হয় ( আর্ন, ভির) ( ৪ ) शांतिष्ठ, नाद-আন ।।। व , जात्म, ए कूलात म ८७ वंशाय भग छन् भए। ( ৫ ) । इति ।। यत ।। त जाति ।। माहि है क्या जाल जाति , जातान स्थान याधिमांत्र माहिन्य नाकि स्थान ।। कि स

आपक्र मारुद्धि अक्ष भिणकार्वत स्रणीर प प्रांश रिश प्रश्निक है। कि मार्गिस दिश्व अर्थनी अर्थन सक्ति देश व ज्योग स्वत्र स्रानिक विभाव अर्थनी अर्थन सक्ति देश व ज्योग स्वत्र स्रानिक विभाव विभाव अर्थनी अर्थन सक्ति देश व ज्योग स्वत्र स्रानिक व स्राप्ति क्षित्र स्राप्ति क्षित्र स्राप्ति क्षित्र स्राप्ति क्षित्र स्राप्ति स्

#### जारङ्किन्छेश्य व्यक्तिमिक्श्य।

(Argentum Motallioum)

लोची, कोन, दकाशन-श्रक्षान वास्किनदनत दन्नान । शांत्रम व्यथनहरूषकांनल दन्नान । कृतिय देशभूदनत भवाष्ट्रोन यहा

উপাস্থি ( cartilages ), ४ भिन्यूछित छेलाथि, कः, ४५ नण, ५ भिका छ गिर्दिष्टव्यत्र विधानभित्र लोफ़ा

স্বপ্ন-দোষ ----ফ্রিম বৈশ্বনের পরে, প্রায় লা ও রাজিতে; উপরেষ উপান ব্যতীত ; ও উপজের শিণ্ডাস্থ নিমাবস্থার গুক্তপাত

व्य ७८कोदयम श्रुष्ठेच्य ८०४मा

यांग जियांभरम (Overy) ७ शृर्ष्ठ दंगना, जन मध्युंग छ नानामादा जिलाम मध्येमांत्र भरकादम कन्मरमां (जन्माधून थान विद्वार्ज, prolation) (भाक्षम जियांभरम दंगना, नाम) (भाक्षम जियांभरम दंगना, नाम) ; निज्ञत्रक्षमांभरम न क्रजन्मां ।

दिनेशिया सम्बन्धः । व्याधिमरपूकः एतमः । यायमात्रा भाग्रकः ए वर्ष्णामिद्यत्र अत्रक्षः ( क्रम्भः, क्रमः ) यायमात्री भाग्रकसिद्यत्र सम्भूतं सन्ननाः

কিছু গিলিকে, অগবা কানিলে গলা ও স্বর্যমে এবদর ( জনক) অনুভ্র হাতের কানোর উল্রেক জন্মে (গুল, ফে, প্রান) ও পর্যমে প্রকৃত্ব শ্লোর উৎপত্তি হয়। উতৈঃস্বরে পড়িবার সময় থক থক করিয়া কাসিতে হয়; শিনীযের তায় আঠা আঠা সিদ্ধ খেতদারের (boiled statch) ভায় দৃষ্ট সহজে নির্গত নিষ্ঠাবন-বিশিষ্ট কাস

বৃষ্ণঃস্থলের অভিশয় চুর্বলিতা (স্থান); থান পার্যে উহার আধিকা। গায়ক ও বকানিগের স্বরের গুণের বৈল্পণা (এরম)।

স্বায়ন্ত্রের বিশাপা স্থলের ' bifurcation of the trachea ) উপধ্যে অধ্যার্থ সূত্রে স্থান (raw spot); স্বরের ব্যবহারে, আলাপে বা গানে উহার আভিশ্বা।

উপচয় —গাড়ীতে চড়িলে (কক); স্পৃষ্ট বা প্রচাপিত হইলে; আলাণে গানে ও উচ্চৈঃস্বরে গাঠে; বৃদ্ধি।

স্থান্থ ।--- (১) এলমের পরে আর্জ-মেট ভাল থাটে। (২) হাজে কাসের উল্লেকে ষ্ট্রাণমের সহিত সমগুণ সম্বন

#### আণিকা মণ্ডেনা।

(Arnica Montana)

ন্ধারণীয়া নারী, রক্ত প্রধান ব্যক্তি, এবং মুণান্ধতির সঞ্জীবন্তা ও অভিসর আরক্ততা। '

উপশাতাদির মুথ্য বা গোণফল বিশেষতঃ সামান্ত উপঘাতের দীর্ঘকাল স্থারী সংস্কার (ইম্প্রেশন )

সর্বাশরীরের অভ্যন্তর দিয়া আখাতিতবৎ স্পার্শ-দ্বেষ, খঞ্জতা ও ঘৃষ্টতা অমুভব; পেশীর আভিঘাতিক গীড়া।

জাধিভৌতিক (মিক্যানিকাল) উপঘাত, বিশেষতঃ সংখাত (কঞ্চান) জনিত স্বপ্তি (ষ্ট্ৰুপর ) সংযুক্ত, উপঘাত : অনিচ্ছোর মল মৃত্য নিঃসরণ

সুল-মূথ অন্ত্রন্ধনিত উপদাতের পর ব্যবহার্য্য ( সিদ্দা )

বিমিশ্র ভগ্ন (কম্পাউও ন্যাকচার) ও ডক্সনিড প্রচ্র পুষোৎপত্তি (ক্যালেও)

আঘাত বা উপঘাতের ফলে; কোমলস্থানের বিদারণ পরিশ্যু সংঘর্ষণে ও

निष्णियान, जनर भूरयादणांख ७ १ छन निनात्रयारण ७ जारमायन-जिम्न (absorption) व्यवद्वनार्य नानश्या

शायवीयात्रा, त्वप्रमा गरु। स्थमा ; म्वामतोत्वय खाँखीयक व्याखनीयका (काम्य, काफि, हेट्या )

শরীরের উর্জাংশের উত্তাপ; । মাংশের শীতশতা।

সুৎ্যগুণ অধ্যা কেবল ম**স্তব্দ ও সুধ্যতকোর ওরেরগুণ: মিমাংদে**গ শীত্রতা।

সংজ্ঞাশৃহাতা; কিছু জিজ্ঞাস করিলে পরিশুদ্ধরণে করেল পারস্বা যায় ঘটে, কিন্তু অটৈতজ্ঞ ও প্রাণাপ ওৎক্ষণাৎ প্রেড্যান্থক মান (কোন বাক্ষোর মধ্যমানে ব্যাইয়া পড়া, যাগ্ট)

दमांनी यटन दय जाराम किन्नु एम नारे

উপযাত বা অভিযাত অনিত, গতন বা মন্তিদের সংখ্যাগর্ভ (concussion)
মন্তিক-ঝিলার প্রদাহে, রক্ত-সংগ্রেশর সন্ধেই হইলে আন্দোরণের সাহাযার দাবছের।
হাইড্রোন্দেক্ষণাস, বালকেনিগের বাজ্য সম্মুখাংক্ষের মৃত্তব্ধ শীত্তিশতা
( অভিযাবে, বোম )

गरकाम, देवलक्षम्कान, व्यक्तिकाम मन-मून निश्मत्व ; ज्यम कात्कम्प निश्मत्व । व्यक्तिकम्प निश्मत्व । व्यक्तिकम्प क्षेत्र प्रमा क्षेत्र प्रमा क्षेत्र व्यक्तिक क्षेत्र । व्यक्तिक प्रमा किल प्रमा किल व्यक्तिक व्यक्त

উপযাত অগণা কাস বশতঃ চকুর শুক্তমশুলে কিছা ভারস্থানে (Iris) রক্ত করিত হইয়া রক্তশাত (কিছা নকা)। স্পৃষ্ট বা আহত হইবার অতিশয় আশিঙ্কা সংযুক্ত, <sup>গাউট</sup> ও আম্বাত

বস্তি-গছবর (Peivis) প্রাদেশে একপ্রকার স্বষ্টবৎ অমুভব বশতঃ সোজা হইরা ইটিতে অসমর্থত ।

কুন্ত কুন্ত বেদনাবিশিষ্ট, একটীর পর আর একটী, অভাপ্ত পার্শ-বেষসংযুক্ত কোটকোৎপান্তর প্রবণতা (একসঞ্চে অনেকগুণি কুন্তা কুন্তা কোটকোৎপত্তি, সল্ফা)।

বাম্দিকের পকাঘাত, সবল ও পূর্ণনাড়ী; খাসের হুড় গুড় শব্দ, দীর্ঘ নিখাস ত্যাগ; বিড় বিড় কবিয়া বকা।

উদগার ; চেকুর , পচা ভিষের স্থায় হর্গফ

রক্তাতিসার; তৎসহ মূত্র-রোধ, বিফল মূত্র-বেগ; আনেক্ষ্মণ পরের পরে মলত্যাগ।

কোঠ-রোধ; সরলাত্রে মল সঞ্চিত থাতক, অণচ নির্গত হয় না,
মূত্রাশরের মূথশায়ী গ্রন্থির বৃদ্ধি অথনা গর্ডাশরের বিপর্যান্ততা (retrovertion)
বশতঃ ফিতার ভাগে মন

প্রসবের পর জননাঞ্চের স্পর্শ-ছেষ; এই ঔষ্ধে প্রসবের পরবর্তী রক্তপ্রাব ও উপসর্গাদির প্রতিষেধ জন্মে

প্রের পর মূত্র-রোধ কিংবা ত বারিত সূরজাব ( ওপি )

উপচ্য।——বিশ্রানে; শরন কালে; ও ছরাপানে; বৃদ্ধি উপশ্য।——স্পর্শে; ও সঞ্চলনে (রস, রুটা) হ্রাস

मश्का ।—(>) अकन, रारेशांत्र, ७ त्रमिएकात्र महिल व्यांशिकांत्र कार्शृतक मत्रक (२) श्रुकेदिल्म्श्री—(द्वार्य गांश्के, ठांत्रना, कारेटिं।, शारेटिं।, त्रमिका, ७ हेगारक्ष महिल व्यार्थिकात्र मम्खा (०) अवन, आश्मा, इत्या, रेशि, किरतत शरत व्यार्थिका खान थारिं ; व्यार्थिकांत्र १ रत्न मन-अभि खान थारिं (४) मिल्ता शान किया व्यव्यारत ध्रुखनिल शोकांत्र व्यत्मक ममत्र व्यानिकां गांवरक्ष रत्न (४) शृष्ठंवश्यात्र मश्यार्थि, हारेशांत्रिक्तत्र महिल व्यार्थिकांत्र व्यान्या रत्न

#### আদে নিকঃম এলবঃম।

(Arsonioum Album)

জডিশ্য অবসমতা, জীবনাশক্তির শীপ্তা পাঞ্চাদন; মুহ্ছা

शक्कि: -- कि ] अवम म, यसाम निवामा, जेमारा

[ থ ] ব্যাফুলতা, ভয়পূর্ণতা অফ্রিতা, অবচ্চলতা।

্নি বিশাসনতা, অমুজবাধিকা, ক্লনমানিতা সহফে বিম্নজিম উৎপতি। যাতনাম যতই আভিশ্যা অমুদ্ধেতা, অধিয়তা ও মুজু জম্মের ডঙই আধিকা।

মানসিক অভিরতা কিস্ত শরীরের এত ত্রবলতা যে
নড়িতে পারা যায় না; একস্থানে স্থির হইয় থাকিতে পারা যায় না;
অবিরত স্থান-পরিবর্তন করা আবশুক হয়; য়োগী এক শ্যা হহতে অল শ্যায়
যাইতে চায়, এবং ক্রমণ্ড এথানে, ক্রমণ্ড মেধানে শ্রম ক্রিয়া থাকে

व्यक्तिका मध्यक्त मुक्ता छत्र । द्यांकी महन करत्र त्य स्थम तमन्द्रन तकान मण पर्नित्व मा, जिल्लाहा त्यांका व्यक्तिका छोछा रुक्तिस मा; तम निभिष्ठ रे भित्रक याक्रिकाह , नकाको वाक्तिम, व्यवना भगाम भग्नन कतिएक त्यत्म सुक्ता छग्न।

মাজিতে উৎকঠান আজমণ, তম্জাল শ্যা প্রিত্যার ক্ষিয়া আদিতে হয়, মধারাজির পদো উহা সম্ভিত হয়

क्लिकित (वित्नी, व्याकाण्ड प्रांन क्रिनाट्सत नाम क्रिनाट क्रिनाट क्रिनाट (उद्धा), क्रिक्ति, क्रिक्र पान क्रिनाट (उद्धा), क्रिक्ति, क्रिक्र पान क्रिनाट (उद्धा), क्रिक्ति, क्रिक्र पान क्रिनाट क्रिनाट

जामिक व भिभामा जागा काम भाग कांत्रवात छात्र्छिमेछा ; जामाभद्य अभ महा रम मा, दक्तमा छेड भोडण जाग कोर्च कांत्रछ भारत मा, जामाभद्य भीछम सम छोछ दिव माम कार्यक्षिण भारक। दिश्मी सम होग्र वरहे किस भाम क्रिट्ड भारत म वा महिम करत मा। থান্তা দেব্যের গন্ধ বা দর্শন সহ্য করিতে পারা যায় না (কলচি, দিপি)।

শীতশ হল পানের আতশর পিণাসা; এক একবার অল্ল অল্ল করিয়া বারবার জলপান; কচিৎ ফচিৎ আহার গ্রহণ, কিন্তু পার্মাণে অধিক।

শীতশ ফল; বরফের কুলী; বরফের জল আয় বিয়ার, বিশিষ্টর্মণে প্রান্তত মাংস (সসেজ); উগ্র মদিরা; উগ্র পনির, সেবন বশতঃ আমাশয়িক উপজ্ঞব

দাত উঠিবার সময় শিশুদিগের পাতুরভা, গুর্ঝগতা, বিরক্তচিত্ততা, ও কোগে চড়িয়া ক্রত গতিতে বেড়াইবার প্রবৃত্তি

আহার বা পানাতে, অভিসাম; অল্ল, মলিন বর্ণ, ত্র্নদ্দম মল; মল ক্ষেই হউক বা বৃহৎই হউক, মল্ত্যাগোর পর অভিশয় অবসন্তা।

অর্ণ :-ইটিলে বা বসিয়া থাকিলে, কিন্তু মলত্যাগকালে নয়, স্থচী-বেধবৎ বেদনা, তদ্বারা উপবেশন ও নিদ্রার ব্যাঘাত : উত্ত্যাপ প্রান্ধেন জ্বালাশকর বেদনার হ্রাস প্রান্তি ; অর্শ-বলির বিদারণ বশতঃ মৃত্যত্যাগে কট

খাস খাস-কাসের (Asthma) খাস; উঠিয়া বসিতে অথবা সমূখভাগে অবনত হইয়া থাকিতে হয়; য়াত্রিতে, বিশেষতঃ বায়টার পরে শায়া হইতে নামিয়া পড়িতে হয়, শ্বাস-রোধের আশিক্ষায় শায়ন করিতে পারা যায় না; শীত-পিত্ত (Urticaria) রোগের পরিবর্তে জ্পরোগের নাম আক্রমণ।

সত্তর শীর্ণভাগ্রান্তি। —শীন্তল স্বর্গ ও অভিশয় ছবলত। সহকারে শাদ্র শীদ্র শীর্ণভা (টিউব, ভিরে); রোগাক্রান্ত স্থানের শীর্ণভা , জয় (Marasimus) শোপ, ত্বের পাঞ্বর্ণ, সোমের বর্ণ, মৃত্তিকার বর্ণ (এগ্রে-এসি)। সংসামান্য পরিশ্রমে অভান্ত অবসরভা।

হির হইয়া শরন করিয়া থাকিলে রোগীর গ্রাব্যাতা অমুভূত হয়না ; কিন্তু নজিকে দক্ষিত বড়েই অবসর বোধ হয় व्यवसार्क ५ है। रहेटल रहे। भर्याष्ट्र धावर शांजि ३ है। रहेटल २ हो। भ्या : मोध सं ४ है। द्रोश मण्डलिय वृद्धि

আত্রাণ, আহার, অথবা অফ্র কোন প্রকারে পরারে পরা বাজ্যরের বিংবা পরা জ্বাস্তব পরার্থের সংপ্রধেশের মন্দক্ষা।

উপচয়। সধ্যবাজির পরে (১ট ইইডেইটা রাজি পণ্যশ্ব)।
শীতলতা হইতে; শীতল আহার্য্য বা পানাণ দেখে;
আজান্ত পাথে অথবা মন্তক নীচ করিয়া শয়নে, র জ।

উপশ্য ।—সাধারণতঃ উত্তাপে (।গকেশির বিপর্যত), কিয় শিরংপীড়ার উত্তাপে নতে, শীতস অলে ধুইলে এই শিরংণীড়ার ক্ষণথারী হাস (শিক্ষি), আলাকর বেদনা, উত্তাপে উহার হাস প্রাণ্ডি।

मह्यु । ( ) जिल्हा रमण, कारमा, कम, लाई तोत मिर्ड जारग-निर्कत जरूलूतक ( Complementary ) मध्य ( २ ) जाक छन्। मानियोगान ; मभूतकरण जान , मुडरपण न्याक्ति जन्ड क कान्यकरणत निष्द विषाक अव्हा स्था-रथधानि जनिक लोजा जारा निर्कत कथ जान कमा कराना

### रेफेटशटिंगित्रियम शाटक विद्यारम।

(Enpatorium Perfoliatum)

वृक्षितिशत द्यादशः, खद्राद्रास्ट्, विद्यासारः व्यथितिक स्वर्यात्रः क्ष्यात्राक्षः व्यवस्थात्रः विस्थात्रः व्यवस्थात्रः विस्थात्रः विस्यात्रः विस्थात्रः विस्थात्यः विस्थात्यः विस्थात्यः विस्थात्रः विस्थात्यः विस्थात्यः विस्यात्यः विस्थात्

সর্বি শরীরে ভগবৎ ঘৃষ্টতা-অনুভন (জার্গ, বোলগ, পাইয়ো) পৃষ্ঠ, মস্তক, বশ্বঃস্থল ভান্স প্রত্যিক্স বিশেষতঃ মণিবয়ে (Wrists) সন্মিচ্যুত্তবৎ অস্থি-বেদনা।

(यमनात ग्रह मर्साक्षीन छ। ७ छोजछ। थारक छछहे 'हे खेषध धरिक छ॰ या भी ११ ( शहे, मार्क, जूनना कक्षन )।

অক্সি-গোলকে বেদনাবিশিষ্ট প্র্পথেষ; প্রতিশ্রাম, প্রতি অস্থিতে বেদনা; ব্যাগক ইন্মুমেঞ্চা রোগে অভিশয় অবসাদ (ল্যাক-ক্যান)

শীঘ্র শীঘ্র বেদনার আবিভাব ও শীঘ্র শীঘ্র তিরোজাব (বেল, মাাগ ফস, ইউপ-পার্পু)

িরে। ঘূর্ণন ; যেন বামদিকে পতিত হইতে হইবে এরাণ অহুভব (পতনের আশ্বায় বামদিকে সাথা ফিরাইতে পারা যায় না, কলো)

কাস —পুরাতন কাস; প্রালেপক জয় (হেটিক ফিভার) সহকারে জরলকাস; বক্ষংস্থলে স্পর্শ-বেষ, হাত দিয়া বুক ধরিয়া রাখিতে হয় (বাই, ফাট-কা), রাতিতে বৃদ্ধি, হুংমের পরে জ্বাবা সবিরাম জ্বের অবর্গর

জার।—একদিন পূর্বাহে ৭টা হইতে ৯টা ০হাস্ত দীত, পরাদন মধ্যাহে দীত;
দীতের শেষে ডিক্ত বমন, জল পানে দীতের জততা জল্মে এবং নমনোৎপন্ন হয়;
দীতের পূর্বেব ও শীতের ভোগকালৈ, অস্থি-বেদনা।

শীত ও তাপাবস্থার পূবের ও ভোগকালে পছণ পিগাস রোগী যথেষ্ট জল পান কবিতে পারেন বলিয়া, শীও গাসিংধছ লানিতে গায়

#### ইউফোনয়া।

#### (Euphrasia)

शक्त, भ्रम्भाव अथवा वाह्याद्यम व्याविध आधिकोछिक (भिकाधिका) । द्वारक्षम गम्भूभव (आर्व)।

देशिक विद्यो (mnc membra 164) विद्यान ६ १ वर्ष व नाम्बाब देशिक विद्योत्र व्यिक्षित्रकांत्रव्यनिक भौका (catalidad allection )।

প্রভূত বিদাহী অন্তাহনাব, তৎসহমারে প্রভূত অবিদাহী প্রতিশ্যায় (এলি-সেণার বিপর্যাত)

हमू भिया मकल मगरशङ्खल शर्फ, ननः लादक एक् भरता-

किछ हहेगा बारक ; हमूज शांछांत्र क्यांखखारांत्र ब्यांत्रख्यां, क्योंखखां व ब्यांगा।

প্রাত্যকালে প্রাণ কাস ও প্রাচ্য় নিষ্ঠীনন সহকারে প্রভূত তনল পরিশায়, দক্ষিণদিক্ষেয় উফ বাভাসে উহায় যুদ্ধি

প্রাতঃকালে বিশ্বজিকর শ্লেমাথত তুলিতে চেষ্টা করিলে, যে গ্যাম অবা বহিত পুর্ফে ভুক্ত ৫ তেমধ্যার যমন হইমা না শট্টে মে প্রাথ গলাম ঠেকা ঠেকা অমুভূত হয় ( প্রাই )

४क्कोश्यक थक् वक् कतिया कामिक अञ्च स्था-निर्धावन, जारक निर्धा ११७ छेथोरन छहात्र वृद्धि

ह॰ भम काम-कामियात्र मगरा व्यक्तिया व्यक्तिया व्यक्तिया दिन्द्र

চন্দ্ এবং দাসিকার প্রতিশায় সহকারে রফোলোপ, প্রভূত বিদাহী অঞ্জাব

भक्षा-गन्नगाळाग नियमिक, दिक्दल दाक घन्द्रोग्यांशी ट्यांच ; अथगा विमाय छाषाभिक ; अझ, अझकामथायो, दक्ष्यम व्यक्तिन क्यांक्रेक, सकू (वाक्षा)।

উপচয়।—गस्ताकारम, भशाप्त, शृश्यत अखाश्वरम উपाछ। य. जा हिना व मिनिपिरिका योजाम स्पानिश्चित शतः देक रूपने कविर (हिन); इसि। স্থাক [——( ১ ) চক্ষু-রোগে গ্লুমেটিশার সমগুল ( ২ ) অশ্রাচন ও নাসিকার প্রতিশ্রায়ে এ**লিয়ম সে**গার বিপরীত

# रुक्रेमिष्म श्रीरमन।

(Equisetum Hyemale)

মূত্রাশয়ে প্রদারণবৎ তীত্র বেদনা, সূত্রত্যাগে উহার অমূপশয়। ঘন ঘন অসহা সূত্র বেগ, তৎসহ' মূত্রত্যাগের সে যে তীত্র বেদনা (বার্ম্ব,

অবিরত মূত্র প্রবৃত্তি অধিক পরিমাণ, পরিষ্কার, জ্ঞাবৎ মুমাত্যাগেও উহার অনিবৃত্তি (স্বস্নুত্র, এপিস, ক্যান্থ)

প্রস্থাব ত্যাগকালে মূত্রমার্গে তীর জালাকর কর্মনবৎ বেদনা মুদ্ধদিগেব মূত্রাশয়ের পশাঘাত

সার্জ্জ, পূজা ) ।

দিবসেও রাজিতে অনিজ্ঞায় মৃত্যপাত, জলবৎ প্রাভূত মৃত্যা, আজ্যাসই কেবল উহার নির্ণেয় কারণ

সাম্বন্ধা |---- এপিস, ক্যান্থ, ফির-ফস, প্রসান্ত কুইলার স্থিত এই ঔষধের ভূলনা হয়

#### रेट्या निया।

#### (Ignatia).

মাধবীয় পকতি; অতিবিজ্ঞ অন্ত্ৰুতি ও সহজে উত্তেজনগাঁলতা বিশিষ্টা ন্ত্ৰীলোক; এবং মলিন বৰ্ণ কেশ ও অক, কিন্তু মৃত্ন প্ৰাকৃতি, ক্ষত অনুভৱ , সম্বৰ কাৰ্য্য সম্পাদন লক্ষণাপন ব্যক্তিদিগের পক্ষে ইংগ্লিম্মা বিশেষ উপযোগী। পলনেটিলার স্থাক্ত, নমনীয় প্রকৃতি, অশুস্থাবাদীলতা, ধীর । ও চিত্তের অত্যৈতাৰ সহিত ইংগ্লিমার বিপরীত সম্বন্ধ রক্ত প্রধান ও পিত্ত-প্রধান প্রম্বাদিগের সহিত নক্ষক্ষকিকার যে সম্বন্ধ, ন্ত্রী-কোক্ষিগের স্নোগেই ইংগ্রিমার সেই সম্বন্ধ। ইয়েশিয়ার লফেতে অতিশয় অস্কৃতি থাতে। বলাগীত বাতে কর্বের গতান-ধ্বনির উপশ্য, হাটিবার স্ময় অশেষ যাওনার
শাস্তি; গিলিবার স্ময় গলা-বেদনার শান্তি; আহারে আমাণ রের শৃক্তার
ভবের অফ্পশ্ম তেই কাগা যায় তত্ত কাগের মুদ্ধ, ইাটিবার স্ময় ভির
হইয়া দাঁড়াইতে কাসের উপ্লেক, শেকিকাল আকেপিক হান্ত; ধ্বজন্তক সহ
রমণ প্রার্থি জ্বের শীতাব্দ্যায় ভ্র্যা, তাপাবস্থায় ভূষাহীনতা;
বিশ্লামকালে বদনের বর্ণের পরিবর্তন; আহারকালে দাঁত-বেদনার উপশ্য।

অতি শীল শীল, অর্থাৎ অতারা সময়ের মধ্যে মানসিক অবস্থার পরিবর্ধন, অর্থাৎ আহলাদ হইতে জঃথে হাজ হইতে ক্রন্দনে পরিষতি (ক্ষি, ক্রোক, নমা-ম); খামতেথ্যালা।

দীর্ঘকাল স্থায়া সংযত শোক বশতঃ সানসিক ও শারীরিক অবসমতা।

অনিচ্ছায় দীর্ঘ নিশাস জ্যাগ (গাক) তৎসহ আমাশম-গহরম ত্র্লগতা ও শুঞ্জা অহস্তব; আহার গ্রহণে উহার অন্ত্রপশম।

द्यांत्र, दणां क व्यवना निकां भ द्यारमय मनगण ( शहेल, आम्न-गण ); आंश्रिक উপजन मध्या विकास क्षित्रका

जक्षेको बाबिएक हेस्हा

তীশ পায়সূতি। অভীন বিবেক।

চঞ্চাতা, অধীরতা, অফিয়-প্রতিজ্ঞতা, কল্ফকারিতা

শনীর অভ্যান থাকিলে প্রাকৃতিও ভাল গালে, কিন্তু অভি শংসামাল চিত্ত-বিকারে সহজে ব্যক্তভার উৎপত্তি হয়। সহতে বিরাতির জান্যে।

যৎসামান্ত দোষ-দর্শনে বা প্রতিবাদে ক্রোদের উল্লেখ খণো, ও উষ্পতি নিষের থাতি রাগ হয়।

योगकिंगिरक जिन्नांत्र कनिएक समया काष्ट्रमा कनिया करेरक गाउंगेया मिरण, कार्यामय गोष्टा रम, किया निर्धायकांत्र हैकांत्र ( मक्का ) सारम ।

व्यक्त भरवाभ ; भरवज व्यमस्थान-भरव्यक विष्ठाकि । वश्य ग्रांमिक व्यक्त । व्यक्त व्यक्त

মস্তকের পার্শ্ব পিয়া যেন একটা প্রোক বিন্ধ হইতেছে এব প শিবঃপাড়া, তথাগ তর পিয়া শয়ন করিলে উহা উপশ্যতি হয় ( কফি, নকা, প্রাণ )

তামাক সহ্য হ্যনা; ভাগাক থাইলে অণ্ণা ভাগাকের গ্য লাগাইলে যাণা ধরে য মাথা-ধরা বাড়ে

কণ বলিতে শ চর্মণ করিতে গালেব অভ্যন্তরতাগ দংশিত ইয় কেবল আহার করিবার সময় মুথমগুলের কোন এক ক্ষুদ্রস্থানে সম্ম উৎপন্ন ইয়

বেদনার অভিরিক্ত অমুভূতি ( কফি, ক্যাম )

निक्षिण रहेवात्र मगग्न ८कान ष्यद्यत्र व्यवस्य गर्व भन्नीरवन व्यामान, উৎক্ষেপन, या षार्क्षण

मोगांवय कूज कुज काटन द्वपना

প্রায়শঃ ঠিক একই ঘটকার রোগের প্রত্যাবৃত্তি :

কোঠ-রোধ। গাড়ীতে আরোহণজনিত; ও পক্ষাঘাতমূলক কোঠ-রোধ; আত্যন্ত মল-বেগ, উদরের উদ্ধিভাগে উহার আধিক্য অনুভব (জিরে); মল-ভ্যানে অভিশন যাতনা, পারথানার যাইতে ভর হন; কনী পারিনীদিগের কোঠ-কাঠিছ

মণতারে অন্ধিক বেগ দিলে, অবনীর্য (Stooping) ইইলে, অণ্বা কিছু উঠাইতে চেষ্টা করিলে শুদত্রংশ ( হাজিশ বাহির হইয়া পড় ) ( নাই-এসি, পড়ো, রাটা); তরল মশত্যাগ-কালে উহার বৃদ্ধি

শর্শ। গুজিবার মনত্যাগ-কালে বলি-নিংসরণ, হাত দিয়া পুনরায় উহা ভিতরে দিতে হয়; সরলাজ্যের উপরের দিকে তীব্রে সূচী-বেদের স্থায় যাতনার সঞ্চারণ হয় (Shoot up) (নাই-এমি); মনত্যাগের গরে কয়েক ঘটা পর্যন্ত উহার আধিকা থাকে। (রাট, সল)।

জন —শীতাবস্থায় বদনের আরক্ততা (ফর); শীত, কেবল শীতা—
বন্ধায় পিপাসা, বাহা উত্তাপে শীতের র্জি; উত্তাপাবস্থায় পিপাসা—
শ্বাতা; বন্ধার্ত করিয়া রাখিশে উত্তাপের উপশ্য (আবরণে উত্তাপের র্জি,
নয়া)

উপ্টয় ্ত্রাক, কফি, রাজি প্রশাস গতি তারগয়, মনোভার, ও শোক হইতে রুদ্ধি।

উপশ্য ।--- উक्का । नक्किलिन (भिष्ठ), निर्मतन ; ख निरुद्धर छेपभय। गुम्बक्त ।---( > ) कि , नवा, है। दिन भिष्ठ हैद्दा भिष्ठा दिसम-सन् भष्य। ( २ ) हैद्द्यांभग्राज भन्यक श्रमदारिमा दोना निर्वादिक हथ।

# इशुमा माइदनिश्यम।

(Æthusa Cynapinm)

উত্তপ্ত গ্রীমাকালে শিশুদিগের দজোদ মঞ্চনিত রোগে বিশেষ উপযোগী; যে সকলে শিশুব তুথা সহা হয় না, তাহাদের পদে দলঞাদ।

অভিশয় হ্নলতা :---শিশু দীড়াইতে পারে না : মাথা ধাড়া করিতে পায়েনা (এবোট) ; নিজাল্ভাসহ অবসরতা

भिश्वितिरगत अक्ष ।---- हिंछा कतिरछ व्यम्भिया : स्छव्दिछ।।

অভিশয় উৎকণ্ঠা ও যাতনাজ্ঞাপক মুধার্মাত, তৎসহ নামিকার আরুষ্ট জবহা ও স্থান্সন্থো।

याख्या ७ উৎ क्ष्रीनाक्षक मूर्वजी मागिकान्न ज्याङ्कारन प्रकाणनिक উरस्र ।

मान्शूर्व शिश्वामान्याजा ( र्वाणम श्रम, भारम व विश्वीष )।

মুদ্ধাসহতা।—কোন আকারেই দুগা সহা হয় না; থাইবামাত্র বড় বড় সংযত থতে বমন হইনা পড়ে; তৎপরে দ্রাপতারশকঃ ভয়ালুতা জলো (মাগ্র-কার সহিত ডুখনা কয়ন)।

मरकाकामकारम भिक्षमिरभन्न व्यक्तिमान्मा; जक्तिमान्न रक्षिण, म्रद्भवर भक्त भगर्थ, প্রাবস্থাবিদ্যে সহস। বস্ত ; व्यक्ष थे। शिष्ठवर्ग वन्न थे। তৎপরে সংযত দুগ্ধ ও পণিরবৎ পদার্থ উদ্যানিণ।

काराद्वत कर पहिका भट्ट कुळ्या छात्रीयन । श्रीतछाछ अपूछ यभन ।

আকৃথিত অসুষ্ঠ, আবক্ত মৃৎমণ্ডণ, নিম্নদিকে আঘূণিত (Turned downward) চুকু; স্থিয় ও প্রসায়িত চুকু-তারা; মূপে ফেণা; মংকর্ষ হয় (Jaws locked), ক্ষু, দৃঢ়, জন্তনাড়ী; সহকারে অপসারেয় আন্দেপ (Epileptic spasms)

বম্ন, ম্লু-ড্যাগা, ও আফেপের পরে নিদ্রাস্থা সহকারে চুক্লিডা ও কাবসম্ভা।

উপচয় |--- আহার বা পানাস্তে; ব্যনাস্তে; মলভ্যাগাস্তে, ও আক্ষেণাস্তে বৃদ্ধি

সম্মা ৷-- এণ্ট-ক্রেড আস্, ক্যাক্ষ, ও সেনিকিউলার সহিত সমগুণ সম্বন্ধ

# ইপিকাকুয়ানহা

#### Ipecacuanha.

আমা সিক লকণের প্রাধান্ত (এন্ট-ক্ডে, গলস) ; জিহ্বার পরিচছ্মতা, অথবা অন্ন লেপাচছনতা

অবিরত ও অনবরত বিবমিষা (Nausca) সংযুক্ত সকল রোগা।
বিবমিষা —প্রচুর লালা নিঃসরণ; শুল,চিক্ক (glaidy),আধক পরিমাণে
শেরা বমন, অবচ উহাতে বিবমিষার অনুস্পান্ম, বমনের পর নিঞানুতা, মাথা
নোরাইলে উহার আভিশ্যা; তামাকের মুখ্য ফল (Primary effects), গভের
মুধ্য ফল।

আমাশর।—আমাশর যেন বালিয়া পড়িয়াছে (ইংগ, টাফ), এরপ পিথিলতা অহতব; যেন হাত দিয়া উহা মোচড়ান, আকড়ান ও নিগড়ান ষাইতেছে, এবং অস্তের অভ্যন্তরে হাতের প্রভাবেটি আমুল ভারতাবে চাপ দিতেছে এপ্রকার অম্ভব; নড়িলে চড়িলে উহার বৃদ্ধি।

नाकोत्र निकटि आश्रान (Flatulence) अनिक कर्जनवर छमत्र-द्यम्म।

উওপ্ত দিবস, শীতল রাজি বিশিষ্ট শরৎকালের রক্তা ওসার (কলচি, মার্ক)।
ক্রাস্থাক ওলাউঠার প্রাথম লগত, বিবামষ ও বমনের প্রাণান্ত (কলচি)
রক্ত-প্রাব — পবল বা অপ্রবল, শারীরের সকল ধার হুইতে
উজ্জ্বল লোহিত (ইরি মিলি); ধ্রমায় হইতে প্রভুত, সংষত। রক্তপাও।
রক্ত-প্রায় কালে খানের করু, নাভা হুইতে গর্ভাশয়ে স্থচা-বেধন।

উদরের আড়াআড়ি বাম হইতে দাগণ দিকে কওনবৎ বেদনা ( গ্যাক )। শুদ, আক্ষেণিক, আকুকিত, খাস-কাসজনিত, কাস।

অস্নমাত্র পরিপ্রামে খাস-কট; ইাসফীস স্বাধ ও আমাশসের স্মীণে উৎকঠা সহকারে প্রবেগ খাস-সূচ্ছ

निधाम-उद्देशकारण योधू-नणो भूरण रभगात, एए एक मण महकारत काम;

অস্থিত লি সকলই যেন ছিন্ন হইয়া খণ্ড খণ্ড হইতেছে এরপ বেদনা (যেন ডার ইইডেছে, ইউপ)।

भवित्रांभ जात्र।—जिन्त्रांभेज वा विभूष्यम भवित्रांभ करत्रत्र हि कर्मात आहारा । विविधिया भरश्कि, ज्ञांना जामा वात्रिक जनस्य मिन, क्रेनारेन जन्दि विज, व्याप्त क्रिनारेन जन्दि ।

जकतिन शत्र जकतिन, बकहै चलित्र छश्चिछ भवित्राम काश्मिना; छ छ्नियात्र वर्गिय महकात्र जब

উত্তাপ ও শীতগতায় অভিনিক্ত অমুভূতি।

উপচয় |---শীতকালে ও পরিশুদকালে; উফা, আর্র দক্ষিণ দিকের বিবে (ইউটো); ও যৎসামান্ত সঞ্চলনে; বৃদ্ধি সক্ষা ।——(১) কুপ্রমের সহিত অন্তপুরক সম্বন্ধ। (২) আমাশরিক উপদ্রবে পলস্ ও এন্ট-ক্রুডেব সহিত সমগুণ সম্বন্ধ; (৩) ইনমু,রেঞ্জা, শব্দি, ক্রেলভা ও শিশু-বিস্চিক। রোগে ইপিকাকের পর আসে নিক ভাল থাটে; স্বর্যন্তে শৈল্য (Foreign bodies) থাকিলে ইপিকাকের পর এন্ট-টার্ট উপযোগী হয়।

# ইক্ষিউলাস হিপোক্যাফেনম।

(Æsculus Hippovastanum.)

যে সকল ব্যক্তির অর্শ-প্রবণতা থাকে, এবং যাহারা আনা সিক, পৈতিক তথবা প্রাতিপ্রায়িক উপস্তবে (Catarrhal troubles) উপজত হয় তাহাদের পক্ষে এই ঔষধ উপযোগী।

রক্তণ্যক্ত অনিত পূর্ণতার দ্রায় দ্রৎপিত, ফুসফুস, আমাশয়, মন্তিফ, বন্তি-গহার (Pelvis) ও তকাদি বিবিধ স্থানের পূর্ণতা।

যক্তের শিরা ও অর্শ-শিরার শৈরিক রজ্ঞ-সঞ্চয়।

নিরাশা, বিষয়তা; অতিশয় কোপনতা; সহজে জোধের উদ্রেক হয় এবং শীরে ধীরে উহার শান্তি স্থানা অতিশয় ক্ষণরাগিতা (ক্যান)

মুগ-বিষয়, গল-গহরদ, ও সরলাদ্রের শ্লৈগ্রিক ঝিল্লীর স্ফীডডা, জালা, ওপডা ও অবদরণ অমুভব ৷

নাসিকার প্রতিশ্রায়; পাতলা জলবৎ জালাকর দ্রাব , নাসিকায় অবদরণ এবং নিশ্বসিত, শীতল বায়ুতে অতিরিক্ত অমূভূতি।

ফলিকিউলার ফ্যারিপ্রাইটিস; প্রোবল জালা, গালার মধ্যে অবদরং অনুভব; প্রান্সধ্যের নীরসভা ও থরম্পর্শতা।

ফ্সিসে (Fauces) জালা, কণ্টক-বেধন, জ্গ-বেধন, নীরস্তা ও আকুঞ্চন জামুজ্ব সহ বারংবার গলাধঃকরণের গুর্তি।

সরগান্ত (rectum) — সরগান্তের শুজ্জতা ও উত্তাপ ; সরলান্ত্র সূদ্রে সূদ্রে কাষ্ঠথতে পূর্ণ রহিয়াছে এরূপ অনুভব ; সরগান্তের উर्तिपिटक छुन्निकालाना कर्मान्त छोत्र त्वधमात्र मध्याः ( ईर्धा, मण ) ; व्यथानी, व्यक्ति, व्यालाकत प्रेमर त्वधि वर्तत व्यर्ग , क्विर गर्भधाव ।

भूर्वल , जांका ७ कखुम्रम ( मणक ) मर मन्नादक न होहोंनि ।

কোন্ত-ব্যোধ ----শক্ত, গুড় আয়াসে নিঃসানিত মণ; ওৎসহকারে স্বলাপের গুড়তা ও উপ্রাণ; কটি ও জিকস্থানীয় (Lumbo-sacial) তাব্র পৃষ্ঠ-

মল-জ্যাগের পরে কভিপর ঘটকাপর্যন্ত সরলান্ত্রের পূর্ণজা ও মল-দ্বারের স্থতীত্রে বেদনা ( গলো, ইয়ে, মিউ-গমি, সম্ম )।

कम्म । ও विसारी भणिन जामन छप्तन किएन किएन। जान है। हिस्स आंजनग्र स्रोसि।

কটি ও ত্রিকস্থানের সংযোগ-স্থলে ভীব্র পৃষ্ঠ বেদনা; বেদনার অয়াধিক নিরম্বর বিভযানতা; জিক (Sucrum) ও বজ্ঞানের (Hips) আক্রান্ততা

शिष्ठ जिल्ला जाकिएमः अर्जन्यमः विदेश ना भाग स्थापिक कम ७ व्यापत्र करमः विभाग वा अरुगा वा विदेश क्षाः

পৃষ্ঠে খারাত্ম ও পঞ্জত্ম আমুভাব।

बाह्, भक्या ७ शृक्षेत्रराम भक्षायां छवद बाह्यस्य ।

উপচয়।----- নজিলে চজিলে; শীতল খায় নিঃখননে; এবং পৃষ্ঠ-খেদনা ও লগর্শধেষ বিচয়ণে ও অধনীয় হইলে; যুদ্ধি

अश्वा ।——(>) व्यार्ण ; जारणां, दणांणिन, रेदा, मिछ-এणि, नमा, जगरमत ममकः। (२) दणांणिन नावरादम व्यार्ण क्षण्यां छेललग लिएत ऐक्षिण बाना स्थाप्रहे व्यार्गाना व्यापा। (७) समा क्षण्याम गान्सादम व्याप्त व्याप्त क्षण्याम मिलित, क्षिण व्यार्गाना स्थापा रेक्षिण क्षण्या।

### একোনাইটঃম নেপেলঃসা

#### ( Acoustum Mapellus )

যুবক-যুবতীদিগের, বিশেষতঃ রক্ত গুরানা অব্যায়ামশীলা, কুমারাদিগের তর্কণ বা নুতন বোগে; বাভাতপের গরিবর্তনে সহজে অহ্নথেণ উৎপতিতে; মলিনবর্ণ চুল ও চক্ষ্ নিবং শক্ত গেশী-তন্ত ( tigid musculat fibre ) বিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের গলে; সাধারণতঃ একোনাইট উপযোগী

শুক্ষ শীতল বায়ু, উত্তরদিকের কিন্সা পশ্চিমদিকের শুক্ষ বাতাস, ও ঘর্মাবস্থার শীতল বায়ু-প্রবাহ লাগিয়া সোণোৎপতি; ঘর্ম-রোধের মন্দল।

অভিশন্ন স্নান্তীয় উত্তেজনা সহকারে অতিশয় ভয় ও চিত্তের উৎকণ্ঠা (anxiety) বাহিকে বাইভে, উত্তেজনা ও অধিক লোক্ষ্ বিশিষ্ট অনতায় যাইভে, রাভা পার হইভে; ভর

ভীততা স্থক মৃথাকৃতি; ভয়বশতঃ জাবনের শোচনীয়তা;
রোগ সাংঘাতিক হইয়া উঠিবে বলিয়া নিশ্তিত ধারণা, মৃত্যুর দিন পুর্বেই বলা;
গর্ভকালে মৃত্যু-ভয়

অস্থিরতা উৎকণ্ঠা, প্রত্যেক কার্য্য সম্পাদনে অভিশন্ন ব্যস্তসমন্ততা ; খনঘন অবস্থান পরিবর্তনের আবশুক্তা ; সকল বস্ততেই চক্ষিততা।

বেদনা ৷—বেদনায় অসহিফুডা, বেদনা বশতঃ গিণপ্তভা; অভিশন্ধ অন্থিয় হইয়া উঠা; রাত্রিতে আধিক্য

হানিম্যান বলেন যে হোমিগুণাথি মতে একোনাইট নির্বাচিত করিতে হইলে সর্বোপরি উহার মানসিক লক্ষণগুলির অর্থাৎ শরার ও মনের যাতনা। অন্থিরতা ও অদম্য অশান্তির সাদৃশ্য থাকা আবশ্যক

অত্যন্ত সামাল অহ্যবেও উৎকণ্ঠা, যাতনা ও ভয়ের বিজ্ঞানতা

রোগিণীর গীত-বান্ত সহা হয়না, উহাতে তাহাকে বিমর্থ করে ( স্থাব ৷---শত্কালে, স্থাট-কা )

दश्यांन (एक्स) वन्या २२८७ छिपांन कतिए वातक प्रगणि ग्छन्द साधन्य इस, खब्दा आदि छ भिद्यापूर्वन करन खदर द्वाशो १ ७५ इस, प्रनन्नार छ हेट७ छस भास , छिहात भहिष्ठ मध्य हन हटण खाँचात (एवा छ ७ दे २५ ०) एक ।

इक्त-क्रयांना प्रजीपा व वाद्याद्यांच । ज्याद्यांचित सत्, वाद्याद्यांप ए जिस्मार्थ

श्रामाद्यम् मुख्य मार्थः मुद्रा व्यवस्थाः, श्रामाद्यम् श्रामाद्यम् विविधाः (localization)

জন। প্রস্তান উত্তর গাতে-জ্বল; বদন মানকা পর্বন একনার
আরক ক্ষরার পাছন জালা আধিক পরিমাণে শান্তল জালা পান
করিবার জন্ম জালাকর পিপাসা; জত্যন্ত স্নাথবায় অভিরতা,
যাত্তনাম অবল্পন (Lor-ung about); সন্ধার জাকাশে ও নিমা ঘাং বায়
সময় কোগীর মধীরতার উৎপত্তি।

हेकात्र (कमखन न)।—मध्याध्यमकारण, जिल्ला छित्र दर्भ ते छेखान, खबरणन (jerking) खण्णनम (Stwitching) किश्व अध्यात १२। (lit) हरान, वित्रक्ति क्षकाम ख हिदकात कत्रम, भारतात छेजसला ख खक्छ। जान कत्र।

काम, ज्ला ।--- एक, प्रविष्ठ भाग-त्याधकत काम; एक, किन, किन, श्रम् भाग-त्याधकत काम; एक, किन, किन, श्रम् भागित भागित भाग भाग भाग काम, क्षिण्य, भागित भाग भाग भाग किल काम, निष्यातम काम); एक, भीकिल वाकाम काथ्या वासू-क्षावाद्य त्वात्यम छिद्र शिक्ष ।

देव वण जात मधन करियात्र छ छ जदमानाहरू वावरान कता क्या छ छिए सरह, जह छिएमए खाला खारवत महिल हेश भगातिकार छात्रांश क्या क्या विषय नरह। यि जिल्ला काला छ छानक द्याशी हम छटन काछ दर्गान खेया वावरात्र कतिनाम खारवाम नाह, जटकानाहरू दिवाली ज्या कारवान करें। इन्हें हरूर ।

अद्यानाहेरिक्षक উर्জ्यक काञ्चन विश्वमान ना वाकित्य होईक्ट्रफ सद्यप्र खानमानकात्र अस्यान गर्यमारे कायकात्र मत्य ।

উপচ্য়। ---गांशारक व शांकरक त्यमना कागरा क्षेत्रा छैठि ; উक् शृह्य ; भगा क्षेत्र छिठियात मगत्र ; त्यांशाकनक भारकं भगतन, (क्षि, नक्षन्य), व्यक्षान् भाष्टित भगन राक्षित भाग । স্থান ।—( > ) জরে, নির্মাধীনভার, বেদনার অসহাতার ক্ষির সহিত, অভিদাভের ফলে আর্লির সহিত; সকল রোগীর পক্ষেই সলফারের সহিত, অফুপুরক সম্বন্ধ ( Complementary ) যে সকল জরে উদ্ভেদ নির্গত হয় ভাহাতে ক্ষাচিৎ একোনাইট উপযোগী হয় (২) তক্ত অবস্থায় প্রেণানাইট, আত্রন সক্ষার উপযোগী, এবং তর্ক্তালাধিক অবস্থায় একোনাইটের প্রেণ বির্গত প্রে ব্যবহার।

## এ ক্টিয়া রেসিমোসা।

(Actea Recemosa.)

স্তিকোনাদ; রোগিণী মনে করে যেন সে উমাদগ্রস্থ হঠতেছে ( সিফি ) আপ্লাফে আপনি উপহত ক্রিতে চেটা করে

श्रायू-भूग विरमारभन्न भन উन्मान

যেন একটা ভারী, কাল মেল রোগিণীর দর্বব শরীরের উপর স্থাপিত রহিয়াছে, এবং এরপভাবে ভাহাব যথক আর্ভ করিয়া ফেলিয়াছে বে সকলি তাহার নিকট অদ্ধ কারাচ্ছর ও বিশুগ্রণ অন্তর্ভ হয়

আসনের তল হইতে বেন ইন্দুর দৌড়িয়া খাইতেছে এরাপ প্রান্তি ( ল্যান্ট-এসি, ইপু)

জানি-প্টের স্বায়্শ্ন । — জানি-গোলকে (eye-ball) অধিরাম বেদনা অথবা তীব্র, চিড়িকমারা, স্করমান বেদনা, শহাদর (temple), মস্তক-শিথর, মস্তক-পৃষ্ঠ, ও অনি-গহরর পর্যান্ত উহার প্রেসারণ এবং সিঁড়ি বাহিয়া উঠিতে বৃদ্ধি ও শরনে উপশ্য ।

গর্জাশরের অথবা ডিম্বাশরের প্রতিদিপ্ত গদণ (reflex symptoms)
ফলিত মৃৎপিত্তের উপদ্রব সহসা ধৃৎপিত্তের ক্রিয়ার বিশ্বতি, খাস-রোধের
সম্ভাবনা; যৎসামান্ত সঞ্চলনে মৃৎকাশ (ডিকি)।

ঋতু -- জনিয়মিত ; অবসাধজনক (এলস, কক) ; চিন্ত-বিকারে, শীঙ-

लाहार, जावना व्यवस्था निर्णायक किया निर्णाय , जानः दकाविया, विशेषिया जावना जिल्लाम-भरमूकः । बाङ्क कारण गान भक्ष गणरनः वृष्टि ।

, আক্ষেণ দে হিষ্টিরিয়া বা অপসার অনিত; অরামুরোগেয় প্রতিক্ষিত্ত। হইতে উৎপর; ও গাতুকালে বিবাগত, আক্ষেণ। বামপাথে কোরিয়ার আতিশ্যা।

वामाभिदकत खरनत्र निष्म धोख दब्धना ( यह )

শরীরের নানাখানে ডিম্বাশ্য অথবা গর্ডাশ্যের উপদাহের সহায়স্ত্তিকানিত ভীপ্র, কর্ত্তনবৎ, ডড়িতের ভাষ বেদনা; অরায়্-প্রদেশে একপার্ম হহডে অস্ত পার্মে তীরমারার স্থায় বেদনা

१९। विविधिया; निक्षिशिन्छ; कृत्विभ क्षान्यदेवस्नात श्राप्त दिस्ना; উপরের আড়া আড়ি তার নেগনা; তৃতীয় মাধ্যে গর্ভপ্রন ( ছাব)। প্রস্ব কাল — প্রস্বের প্রথমাবস্থায় কম্পন ; ধ মধীয় উত্তেশনা শানত উদার; জরাম্ব-ম্থের মৃত্তা; উতা, আফেপিক, গামাসিত প্রস্ব-বেদনা, ম্ব-সামাত গোলমালে উহার বৃদ্ধ।

क्ठकोटक आक्रिश्म विभिष्ठे ध्यमवाश्विक द्याना

লগংগের সহিত গানুদা লা কিলে গড়েছি শেষ মানে এই ঔষধ ব্যবহার ক্ষিণে প্রেগব-বেদনায় হত্ততা ক্ষমে।

मर्खम (ता टां पर), क्रोफम (Skatine), अववा अस क्षमारा ८भभार • क्षवम मक्ष्रोगरम खिद्यास अक्तिमास २००१म - एवस ।

শাড়ের ও পিঠের পেশাডে বাডের বেদনা। পেশী শুর, শঞ্জ ও গাসুন্থিত অর্জুড হয়; সেগাই করা; শেলা, অলবা পিয়ানো গালানে বাচর চালনা মাল মেরদত্তের অন্তত্তবাধিক। (এগার, সাণ-ব্য)।

छिमदत्रत दशमीत वाल , श्रृही-दयम, ७ वाणमतात्र मण दयमना ।

আমবাতিক রঞ্জুল !

উপ্টয়। শাহকালে; যতই অধিক পরিমাণে রজঃ নিঃস্ত হয়; তওছ অধিক যাতনা যাতে

স্থান্ত ৷—করায় ও বাতের ব্যারাণে কলো ও প্রনের সমন্ত ; এগার্ল লিলি, সিপির সহিত্য সমন্ত্র সম্মা

### এগেরিকংস মংক্ষেরিয়ংস

(Agaricus Muscarius, )

লযু কেশ; এবং ত্ত্ ও পেশীর শিথিলতা বিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের পঞ্চে উপযোগী

কীন, মন্থা রক্ত-সঞ্চলন বিশিষ্ট বৃদ্ধদিগোর পক্ষে উপধোগী মন্তপানীদিগোর শিকঃপীড়া, মাদ্যপৃত্বির মনদফ্লে (শোধ, নথা সাধ) প্রনাপ —সন্নিপান্ত-ব্যান প্রথিরত প্রধাপো কো; শ্যা ছাড়িয়া বাহির হইয়া যাইবার চেষ্টা

শিয়ঃশীঃ জরে বা বেদনায় সহজে যাহাদের প্রাণাপ অন্যো (বেল); যাহাদের কোরিয়া, স্পাদন বা মুথ-বিক্ততি আছে; ভাহাদের শিয়ঃশীড়া প্রবিংশের শীড়াজনিভ শিরঃশীড়া

অতিশয় কণ্ডুয়ন ও আসহজোলাবিশিষ্ট শীত-স্ফোট (চিলরেন); নীহার-জোট (Frostbite) ও শীত-ভোগের অস্তাস্ত ফল, বিশেষতঃ স্থমণ্ডলে।

জাত্রাৎ আবস্থায়, অনিচ্ছার অল সঞ্চালন; নির্মাবস্থায় উহার বিরাতি;
এক একটা পেশীর সামাল সঞ্চলন ও উৎকোপণ হইতে সমতা শরীরে নর্তন
লক্ষণাগর কোরিয়া; সমস্ত শরীরের কম্পন ( মূথ্যগুলের গেশীর ক্ষপেন,
মাইগেল)

ত্বকে যেন বরফ স্পৃষ্ট অথবা বরফবৎ শীতেল হটা বিদ্ধ হুটতেছে এক্সপ্ ' অমুন্তব ; উত্তপ্ত হুটা-বিদ্ধবৎ অমুক্তব

কর্ন নাসিকা, বদন, হস্ত-পদ প্রভৃতি নানাস্থানের আগা ও কত্মন্বিনিষ্ট আগ্রন্তভা; নানাস্থানের আরক্ততা, ফাওতা ও উত্তপ্রতা

হাঁটিতে অনিশ্চিততা, পথে প্রতিবস্ততে হোঁচট্ পারে; দাঁড়াইলে পায়ের ওড়মূড়ার আঘাতিত হওরার জার বেদনা করে।

পৃষ্ঠ-বংশে স্পর্শে অমুভবাধিকা ( থেরে ); প্রাত্তে উহার আধিকা

त्वमा — पियाणार्थ পরিশ্রমকাথে; উপবেশনকালে, কটিদেশে ও विकाञ्चित्रमा (Sacral region) বেদনা

ষাতিরিক্ত ইন্সিয়-সেবা বশতঃ পৃষ্ঠবংশের উপদাহ।

समिष्ठ है जिस रमनासा- उ भास ॥ अनुमानन

উদ্ভেদ-বিলোগফনিত তপ্সার ( cpilepsy ) রোগ ( chila, স্থা )

भनीर वस ए छि अधाणरन, प्रदास्ति व्यावस्थान (till) शृक्षेत्ररम (तमन् । व উৎপত্তি क्रिक्की करणक्षांस (verteba) क्रामन्द्रस

मितृ उत्रथ प्रशिष्ट्रांग काम , वामहाक्षांत्र क्ष्यावर वांडना ( क्रिकेट्स स , 'अडेटस स , मिरिप्र )

শাতল বায়তে অত্যস্ত অম্ভনাধিক্য ( ক্যাল, কালী কা, সোরি )। উপরের বামধিকে ও নাচের দক্ষিণদিকে, কোণাকোলি রোগের প্রাকাশ, (এখুন, ব্রোম, মেড, ফুস, সল-এমি)

উপচয়।---জাহারাজে, গ্রাণাজে, শতুল বায়ুতে, মান্সিক জাভ-নিবেশে; ঋড়-ষজের পূর্বে (ফস, সোলি) রুদ্ধি

मञ्जूका ।——महाकारमन क्षाणारण, जो क्षेत्रा, काम, कान-इक, शहक, गाक, मका, क्षि, द्वीरमान मश्क ; दकानियाम——भाष, छारनम, जिस्सन मश्कि भगवन भवक

## এগ্ৰঃস ক্যায়ীঃস।

(Agnus Castus)

मिका-धार्मान ( जिल्हािक ) याष्ट्र भाष्ट्र अल्या छन्।

ष्णग्रमक्का, ज्ञान हिन्मिका लाध्य; अत्रव ताबिए वाता योग मा, ककी वाका इहेवात भा वाद्धान त्या वाद में (क्ट्रिक, यम-। मि, विक्

ধ্বন-জঙ্গ ও লাগা-মেছ বিশিষ্ট পুরান্তন রোগা, অবিবাহিত ব্যক্তিবিরের সামবীয় ছার্বাসতা।

আকাল বাৰ্দ্ধকা —-বিষঃ তা, উপানীনতা, চিতের অভিনতা, আপনাকে খেল জান; যুবক-যুবতা। মগের ইজিয়-শজিন অপবাদার হইতে উহার উৎপত্তি; উক্ষেত্র ইইডে উম্ব সম্পূর্ণ ধ্বজভঙ্গ ৷—জননে ক্রিয়ের দি বিগতা, গোলি চতা (Ilac cidity) ও শীতলতা ইন্সিন-শিক্ত বা চক্রিয়-লিক্তার বিয়তি (ক্যালড, সেলে)

পুনঃ পুনঃ প্রমেধের আক্রমণের পর ধ্বশ্বভাগ প্রমেধের অ'ব-'বলে'লের মনন্যল

সম্ভোগ-লিক্সা অংখা উপস্থের উথিতির অবিস্তানতা সহকারে তাল-মেহ খেতপ্রদর স্বচ্ছস্রাব কিন্তু ওদারা বজ্ঞে পীতবর্ণ দাগ ফাগে, অতিশয় শিথিলিত জননাঙ্গ হংতে অজ্ঞাতসারে উচা নিঃস্ত হয়।

স্তালারিনীদিগের হ্রান্তাবের লাঘব বা বিলোপ (এসা, লাকি-ক্যান, ল্যাক-ডি), তৎসহকারে অনেক সময় অভিশয় বিমর্যতা; রোগিণী বলে যে সে মরিয়া যাইবে

হেরিংমহক্ত অথবা মৃগনাতির গদ্ধের ভার নাগিকার সমূথে কলিত গ্রা। এই ঔষধে বিচরণ অনিত অবদরণ ( Excuriatio ) নিবারিত হয়

স্ক্রালাড ও সেলেন ভাল থাটে।

# এণ্টিমোনিয়ম জুডম্।

(Antimonium Crudum.)

বালক, বৃদ্ধ ও স্থুলেজ্ব-প্রাবণ তরণবয়স্ক ব্যক্তি ( ক্যাগ্ধ )

প্রাত্ত কালীন অভিসামগ্রস্ত বৃদ্ধ, সহসা কোষ্ঠ-রোধের উৎপতি অথবা

শাতলতার অহওবাধিকা, সদি লাগিবার পরে উহার আধিকা।
শিশুর প্তথতেও থিটাগটে প্রকৃতি, অন্যের স্পার্শ বা দৃষ্টি সহা
হয় না; কথা বলিতে বা গুনিতে বিশ্বজি (এণ্ট-টা, আইওড, নিলি); একটু
আদর করিলেই ক্রোধের উদ্রেক

ক্রন্দনসংশ্বক্ত অক্তিশয় বিষপ্পভাব ৷

धीवरन विद्राप

आकृषिक ष्यक्षकायभागिककार, भागिक विषय (वाशिने शक्षाविक हा ( वज ) , नीह निर्दामी, क्षणमग्र रहेगो षाषा-रहा।

পত্যে কথা এলিতে অথবা কবিডা অর্ডি করিতে ছনিবার পর্কি

চ্যাতোকে গানশের ও উরভ তেমের ছাব, হতাশ তেমের মনা ফল (ক্যাহ্যফ্য)

ল সাবদ, ও মুখের কোণ শিগারিত ও চিপিটিনামুজ ( cinal)

শিরঃপড় - নগাতে সান বশতঃ, সদি শাগিয়া মদিয়াণানজতা; জন্মান্তঃ, বসান্তব্য, ও ফল আহ র জতা আমাদ্রের বিশ্বালা জিলিয়া; এবং উজেদ-ধিলোণ বশতঃ শিরঃপীড়া

অতিরিক্ত আহার বশতঃ, আমাশ্যের রোগ, আমাশ্যের গুরুষড়া, সহজে পরিপাক-জিন্নার বিশৃজ্ঞালার উৎপত্তি জিহ্বায় গাঢ় জুগ্ধার্থ, শুলে লোপা, মূণে প্রা গাড়-প্রবণতা (আর্জ্জনা, সলক্ষ)। আম ও আর্চার এইনার লোহা

উর্দ্ধ দিকে ও আধোদিকে আনেক বৎসন্ন পর্যায় নিয়ত বায়ু নিয়ার। ত্রুবোর গথাবি শস্ত উদ্পার।

वाजिए काजिए मानिकात १ काद त्रक् वहेरछ अधिक भविषाए स्था निश्मत्त ; मणबात रहेरछ त्रम्नि कात्रक, छेराएक कांगरफ रूपिया वर्णत मान गार्ग ; आंत्रक्रीयी आर्था ।

চম্মে অসাভাবিক বিষর্জনাদির উৎপতির প্রাবণতা; হাতের বাজুদের নথ শীঘ্র বর্জিত হয় না; স্থান্ত পোচিলের ভার ফাটা ফাট আকারে ও শূল্বৎ সুস্তা সুস্তা স্থান সহক রে পুনরুৎপন্ন হয়।

भविष्य भी है। वा भाषान्यका ; दिविष्य , विष्यविष्य भाषात्र व क्षेत्र है। विषय , भगत्र खेराक अञ्जिष गाकिना **कर्या**।

অতিরিক্ত উত্তপ্ত হওমাতে খার-লোপ।

সূর্য্যের উত্তাপ সহা হয় না; রৌদ্রে পরিশ্রম করিলে পার্থ করে (ল্যাক ক্রাট মিউ); অগ্নিতাপে অতিরিজি উত্তপ্ত হওয়াতে বৃদ্ধি প্রাপ্তি; উষ্ণকালে অবসমতা; স্থা-দাহ বশতঃ গ্রাড়

গ্রহণ কাস সুর্যোর উত্তাপে অথবা উষ্ণগৃহে বিব্দিত, ও শতিত জ্পে প্রগালন বশতঃ উৎণর গ্রাপণক কাস

শীতলজনে সানে অপ্রতি; শতন্তকে গণান প্রথা প্রণ শিশুর ক্রেন্ন, শীতলজনে প্রবেশ শিরোবেদনার উৎপতি, প্রুর বিপুপ্তি; সম্ভরণে বা জলে প্তনে নর্দি (রুসটকা)

উপচয় আহারান্তে, শীতগদলে প্লানে; অয়দ্রথ্য বা অয় মদিরা সেবনে; সুর্য্যের বা অগ্নির উত্তাপ ভোগাত্তে; এবং অতিশয় উত্তাপ বা শীতগত লাগিয়া; বৃদ্ধি

উপান্য — অনারত বায়তে; বিশ্রামকালে; উফললে মানাতে; উপান্য।
সাম্বান্ত — (১) স্কুইলার সহিত সামূপুরক সম্বন্ধ। (২) আমাদায়িক
নোলে বাই. ইলি, লাই, পলদের সহিত সমগুল সম্বন্ধ। (৩) পলস, মার্ক,
সলফের পরে এন্ট-ক্রেড ভাল থাটে।

## এণ্টিমোনিয়ম টার্টারিকম

(Antimonium Tartarioum )

নিশেষ্টে, শ্রেমা প্রধান ধাজুর ব্যক্তিন, ও রস-প্রধান ধাজুর ব্যক্তিদিগের পর্ণে এই ঔষধ উপযোগী

ক্রেন্ডে স্থানে থাকার দরণ উৎপন্ন রোগ ( আস, আরাণ, টেরে )।

करे खेमस निष्धांत्राविष्ट सायुत ज्ञान्त विया भाग-किया छ प्रक्ष-मक्ष्मन-कियात ज्ञान ज्ञान करा करा छ रा उन्हें हेगात भरतारात्र श्रमान भरिताणक लक्ष्मरात्र छ ९ १७ रूप, ज्ञार्थ प्रथम द्वाणी कोरम, ज्ञार न वृश्य-निलीटि ज्ञासिक भरिमार्थ द्वाणा-मक्ष्य द्वाण श्राय, त्यां रूप त्या कामिरण ज्ञासिक द्वाणा छेठित, किछ कि इन्हें छेठी ना याहात्रा निकारे विश्व भिष्ठ जोशीयग्राक ग्रहारेश परतः, विशेष छोत्रा (विश्व हिटल होत्रः, विश्व हुँ हेट्य कीरम, बीड़ी (मिट्रिल एम्स मी (मफेन्युक श्वानि)

সুখসগুলের শীতলতা, নালাজতা, পাগুরতা, ও শীতল ঘর্মাচছরতা (টাাং )

গাঢ়, জল, গেছনৎ ( মান্চ) পদাথে বিন্যার শান্তরতা, ফ্রিনা-স্ট্রক আ ফ্রিন্ত্রাপ্রান্তর আরম্ভ্রতা; নাল লাল নেলা জিহনা বড় লাল মধ্যভাগে শুক্ত; এপেলা ফলা থা এয়ার আসাধারণ আকি জিলা ( এলো – অয় ও লাচার থাওয়ার স্পৃহা, এটে-কুড )

বমন — বেভাবে থাকা যান সেই ভাবেই বমন হয়, কেবৰ দশিলগাধে দানে বমন হয় না, বমন করিতে করিতে মুডালোড়ি, বমনেশ্ব পশ্নে তদ্রালুতা ও অবসয়তা; শীঙ্গ দর্ম ও শশ্মির সংকারে ধ্বশাউঠার বমন, প্রডোকবার বমনের গরে এক এক মাজা নোন্য (ভিন্নে)

সকল বোগের স্টেড্ট অভিনয় নিদ্রোলুত। অথবা নিদ্রো যাইবার স্থানিবার প্রান্থতি (নয় ম, ওগি)

অন্মিকানাল শিশুর পাজুরজা, মাস-শূমজা থাবি-থাওয়া, শিশুর মাস-শুশু (এসাফকশিয়া)। এই ঔষণে মৃজ্যা-সময়ের 'বলা-মৃজুপাড়র' উপশাস্থি অংশা (টারান)।

कृतकृत श्रीमक, जिल्लाकुः व्यक्तिव कृतकृत्युक श्रीमक अवस्थि कर्कु (श्रीण

উপচয়। — জার্ন, শীঙ্ড সমগে, রাজিতে শ্মনে; গৃহের উফ্রডায়; ও বসম্ভবালে বজু-পরিবর্তনে; বজি।

উপশ্য ।--শীওল অনার্ড বায়তে, নোজা এইয়া বলিলে, কাস-নিষ্ঠীবনে, দক্ষিণ পাথে শয়নে; উপশ্য।

সক্ত্রা --- (১) এট-টার্ট, গাইকোলোডিয়ামর মহিও দমওব; কিন্ मारेदकारभाष्टित्ररमञ्ज नामा-भारत्रत्र आद्याभिक भ्याणालन प्रानिवाह प्रानिवाह नांना त्राक्ष्त अनात्रव विकिष्ठ रूप , ितिद्विभावक अभक्षव, ऐं ७४ रोयरपर **অভিসার, উন্ন বেদনা, २ মন, १ বারের শান্তলভা ও অর্**রারো স্পাহা লং ল कारह ; इतिकारकर अम्बन, विश्व धार्य छोटी भाग कि गांत की नगछ। অধিক তর ভি জালুতা; এবং বমনাতে বিমিয়ার উপন্য এবেন (২) যণন ফুসফুসের ক্রিয়ালোপ হইয়া আদিতেছে বোধ হয়, রোমী নিজাগ্রাড় হইয়া পড়ে, কানের হ্রাস বা নিবৃত্তি গলো; তথন ইপি বাকে খলে এটে-টার্ট ব্যাহাত **इम्र** (७ त्शा-वोरक कियामारनम मनाकरण पूछा विकल हहेरे जन गिणि भिन्ना व्यवस्थ्र मा रहेला, धार्च- ने हें ए स्निष्डि रम (8) अस्पान वा कर्छ নাগীতে শৈগোৰ (foreign bodie ) অৰস্থিতি বখডঃ খাস্কুডেছ্ (cy-pr coa) সিলিশিয়ার পূর্বে; প্রমেহের জাব-লোণে পা সোটিশার পূর্বে; গেঁডসেঁতে ভিভিন্ন দোষে স্নোগ জন্মিলে টেনেবিছের পূর্বে, এণ্ট-টার্ট ব্যবহৃত হয়। (৫) বালক্দিগের কালে এণ্ট টার্ট উপযোগী বোধ হইতেও ভত্মারা সহভো দল না मिल्लिक हिरुभेर कार्यश्रीक इस ( ७) यमक ख म्यूदक्रिक व्याप्त महास्त्र আমতে শিশুদিগের কাস বুদ্ধি পাইলে এন্ট-টার্ট প্রেরোজিভ হয়।

## এনাকাডিয়ঃম ওরিয়েকেটল।

(Anacardium Orientale)

সহসা স্মৃতি-বিলোপ; সকলহ স্বপ্নাধিব নোধ হয়, নোগী স্বকায় বিশ্বতি বশতঃ কভিশন্ন বিন্নজ হন্ন, মে অপ্রতিত হইয়া পড়ে, কাম কর্মের উণ্যুক্তর থাকে না।

অফ্রাপরবশতা (malicious disposition), ত্থপ্যে আ্যান্তিশালতা।
অভিসম্পাত ও শপথ করিবাব তুর্নিবার প্রবৃত্তি। (ল্যাকক্যান, লিলি, নাই-এসি) অবিরত প্রার্থনা করিবার প্রবৃত্তি (ট্রাম)।
আপনার আ অক্তের প্রতি নির্ভরের অভাব।

द्यांभीत द्यांभ इस द्यत कोशांच एर हो। हि या भीति, हि। हे क्विटिंग जादम्भ करत व्यक्त रुक्तां क हो है ने निर्देश कि है। है।

हारिवात भग । एक नार. ८० ८कः "१२८-८२ १५ म छद मर्था ; भीत निरुष्त लार गक वजा असे १८-१२ । एम

भकः शिक्षदग्रतश्चे ध्राप्रका

कार्य ख दक्ष देवका अरुकार अवस्त स- हुः छोत

অজু ৯ স্ব গাব, তানজন বি-মে ১ সে-গাবলা করা ও হাডোদাপ দ বিষয়ে গান্তীয়া ধারণ

भवीदत्रत्र (क न काश्रमंत्र क नि १८०० देशन क श्रीत पंका ( कि का) ) कामना विकास विद्या विश्वास ( कार्यक्र) कान्य-क्रीय, १९५०) ; कामन दन न केर्यक काञ्च हाशिक श्रेटक्टक ; किश्मी अक्ष संतर्रा (विष्या) । विर्वास विश्व विद्या

जाहात कितिवास भगा भगा कताल উপশ্নিত (आर्थ), ताबिटि न्याप महत्व, उपया दिया, स्थाप माध्य शाख, तार नाफ्टम छिटन ख कार्याकाटम विक्तिक, भिताभीका

ख्यायाभीपिरधन भागाणाण १ जागायक भिनःशीका (आक्ष-भा, आंक,

णारातीम ७ नानाम मा। अंक् अ कामान वर्ष अस्ति कारण ८ तार्मत णणग अस्टिंस रूप (काणो-क, रमानि)।

कामा । य व्यासमित मूक भाकित्महें दक्षतम "त्मर दम कि नहें जातम क्षित्र कार्का : कार्का द्वा कि हो इं कि में या (दिन के वार्क्षक); भित्रभक्ष-क्षित्र के मार्क के में से (वर्ष, क्ष नर्दा विभिन्न के)

হাতের ভালুতে আঁচিল

মল-ত্যাগের অভিশয় ইচছা, বিধ মণ-ভাগের চেন্ন করিলে মল পরিতাজ হংলা ও গে হজা শার থাকেনা সরল এ শ্জেশ্র, পঞ্চাথাণিত, ও ছিপিবজবৎ অন্তভূত হয় (সরলাগ্নের কভিজিনা বা মান্যামত ধ্যনাজ্যা peristaltic action) (নদ্ম) সম্বাদ্ধ ।——(১) রস-প্রেড, বছটবা, ও রস-ভেনের সহিত সমগুল সংঘ (২) দফিল হইতে বামদিকে লক্ষনের গতি প্রাবণতা (এই)। (৬) লাহকো ও প্রসের পরে এনাকাভিরম ভাল থাটে (৪) এনাকাভিয়মের পরে ও পূর্বে প্রাটিনা ভাল থাটে

# এস্থাসাইনঃম।

#### (Anthracinum)

কার্মকল, দূষিত কত এবং ক্ষতে, পচলা ও আসহ্য জালাসংযুক্ত রোগ।

যথন আসেনিক বা অক্ত কোন প্রনিখাচিত ঔষধে কার্মঞ্চল কিংনা দূষিত কতের জালাকর বেদনার নিবারণ হয় না, তথন ব্যবহায়

রক্ত-প্রাব ; মুথ-বিষর, নাসিকা, মধা-ছার বা মুজে-ছার ইইডে রক্ত-দার , কাল, কাল, কাল, কাল্ড (বিভেলান কাল্ড) (কোট) রক্ত

সেপ্টিক ফিন্তার, শীঘ্র শান্ত-ক্ষয়, নাড়ীর নিমগ্বতা, পেলাপ দ্র মুর্চ্চা (পাইরো)।

গ্যাংগ্রীণ সংযুক্ত ফড়; দুষিত একডির আসুল-হাড়া (teler), কাঝান্ধণ, এরিসিপেলাস

দূষিত আফুল-হাড়া; পচপা ও জয়ানক জাগাকয় যেদনা ( আসঁ, কার্ম-এসি, স্যাক)

সাংঘাতিক দূষিত ত্রণ; ক্ষৃষ্ণ বা নীল বর্ণ ফোফো; চক্ষিশ খা আট-চ**ল্লি**শ ঘণ্টার মধ্যে মৃত্যু।

কার্মজন; ভযক্ষর জালাকর বেদনা; সগানির স্থায় ছরিড (offentive) পুয় মিঃসরণ।

মৃতদেহ-বাবছেদ জনত কত, বিশেষতঃ গুহার গাংগ্রীণ জ্যািবার অভিমুথতা; দূষিত পুষ্ম জর (সেপ্টিক ফ্রিগার), ক্লপ্ট অধ্সয়তা (আস, পাইরো)।

श्रम् व व्या द्वर्गन पू गण भागि तरक स्थित वर वाणाकत नमन व व्यक्तिमा व्यवगत्नको वक्षभागि क्षभाग (वाग, वाशता)।

(इ), तम्य छ अदयन नर्नाशक श्रीका दर्शन

পচাজ্ঞরের য সূত-দেহ-বাবচেচ্দগ্রের গ্রন্ধ আঘাণের মন্দণণ ; গ্রুগদ্ধ নিশ্বঃসনে বিধাকতা (পাইরো)

दहितर नरमन कान्यक्षणरक भक्ष-िकिएमात द्रांभ नना हिन नरक। छहा कारिया रमख्याय ज्ञायहे छापनान रुप्त। वान्यक्षण रक्षनण प्र छाछतिक देवस छारार्शिह ज्ञारत्रामा ज्ञाछ रुप्त, ज्ञक्क विकिएमाय ज्ञकी द्यांभी छ महे ह्या ना।

স্থান ।—(১) পূग-पूर्वि जिन्धां जार्म, कास-वित्र, जात्म, त्रिकान, विदर्भन, विदर्भन,

### এপিস মেলিফিকা।

(Apis Melliflon)

গণ্ডমালা-ধাতু; বিবর্দ্ধিত, দুঢ়ীভূত গ্রন্থি; ধঠিন ক্যান্যার অথবা নিমুদ্ধ ক্যান্সারে অপিস উপযোগা।

मात्री, विष्मयण्डः विधवा नात्री; जावर त्य भक्षण वाण्य-वाण्यिकाता भाषात्रवण्डः मावधान वाक्षित्रण्ड शांक रहेत्व जावाणि त्याणाता (यम ( त्वाज) जावाणात शर्म जिल्ला जावणात व्याणात व्याणात

व्यमम्पूर्वतार्थ विक्रिक व्यवसा विमुख ७३० छित्रसम मन क्रम (विक्र), त्रामाश्चिका (श्रम), व्याम्धिका (व्यारण हिना), ख मीडांभश (व्याहिट विमा)

विरवय, अग्र दक्षांप, विश्वकि अ व्यवक ग्रेग्रेट्स्य भूमायन।

কোপনতা; স্বায়বীয়তা ( nervous ); অস্থিরতা; সংজ্যে সপ্তই না হওয়া অপ্রজাব প্রবণতা; না কাঁদিয়া থাকিতে পারা যায় না; সাহসহানতা, আশাস্ত্রতা ( গলম )

জাগ্রৎ বা নিজিত কালে শশুদিগের আক্তিক, তীব্র চাৎকার ( হোল )

্খার চক্ষুর নিশ্নত কো, থলাব নাগততা, উন্দর্ভাগে, কালা-কা); হাত-পায়ের জলপূর্ণ ক্ষাততা, পিপাসাশৃভা শোণ (পিপ স সংযুক্ত শোণ, বসে-অসি, এপোসা)

ম্পর্শে অভ্যন্ত অমুভূতি (বেল ব্যাক )

त्यमन। ज्यानाकत, ह्ला त्यथवर, छो छोटन त्यमना ; महमा त्यमना व ए कञ्चान हहेर्ड ञ्चानाक्षत्र प्रिक्षि (कोणो-वाहे, णार्ग-कान थणम)

পিপাসাধীনত শোণে, ও উদগীতে পিপাসাশুক্ততা (বদলের অধিকতর মোমাক্কতি ও অভিশয় পিপাসা, এদে-এসি)।

खननारकत जिल्हा जिल्हार गरकारत जनतिज मूळ; जिक मृहार्थि मृहा धात्रन कतिया त्राधिष्ठ शात्रा यांत्र ना, जबर जान कात्रिय मृज-भरन प्राथन ज्ञामा धरम ; भूनःभूनः, यञ्चनां युक्त, ज्ञा, त्रकां क मृद्ध निः मत्रन

কোর্চরোধ ——কোর্চ-রোধে মল-ভ্যাগের অধিক চেন্তা করিলে যেন আঁটা কিছু ছিড়িয়া যাইবে এরূপ অমুজব

অতিসার —মতাগামীদিগের অতিসার, উদ্ভেদ-বিশিষ্ট রোগে, বিশেষতঃ উদ্ভেদ বিদয়া গেলে, অতিসার, নড়িলে চড়িলে অনিজ্ঞায় মল-মিঃসরণ, বেশধহুয় থেন মল-দ্বার বিস্তৃত্ররূপে উন্মুক্ত রহিয়াছে (ফ্যা)

দক্ষিণ পার্থ সমধিক আক্রান্ত হয়; দক্ষিণ দিকের ডিয়াদ য়ের ্থিবর্জন যা শোণ; দক্ষিণ অগুকোষের দোণ

সবিরাম জ্বর; নর্বনা অপরাহ্ন তিনটার সময়, পিপাসাস্ত, শীড (ইয়ো), উষ্ণৃতে ও বাহোডাপে শীতের বৃদ্ধি ( পুর্বাহ্ন গটা ও অণ্যাহ্ন এটার সময় শীত, থুজ )

উপচয়।—নিত্রান্তে (ন্যাক); উষণ ও উত্তপ্ত গৃহে; ভিজিলে (রসট্যা), বৃদ্ধি; কিন্তু ক্যাস্থান শীতল জলে ধুইলে বা শিতল জলে মানে; কাসিলে, होिटिन क्यों भ ्नि शिश्वान (निमनोच), प्रदेशी पीम्प्य; डि॰म्य

अञ्चलकाथा इद्देशक भरत काभिरम आरकाथा अध्या इद्देशक भरत काभिरम अध्या । (२) ताभ-लक्षम खान बारहे। (२) सार्क्ष हेनात का तु यस वर्षात्र, का द, लिख, दर्शन खक्षककाथा इद्देशक भरत किभिरम आरकाथा करना।

## @< <!-- A क्या क्या क्या क्या क्या विस्था ।</th>

(Apocynum Cannabinum.)

निःख्या, विरम्य ७३ मूज ७ घरण त द्वांभ व्याखि

मञ्ज्ञानी विद्योग (Solous membraics) छक्न, जोपार्थिक त्याव

त्माय ।— शिश्नोज्ञां ज्ञ्ह त्माय (ज्ञाय श्रीम), ष्रभ महा रमना ज्ञाना वमन रहेगा शह्फ (ज्ञाम), विधान विकास प्रान्छ द्याटन व महिल अमर्वहें अधिकारम त्माय ; जेविकम, जेविकरण्ड, ज न्यार्थित । ज्ञारत्व भगवती, ज्ञान भरतामित त्यार्थित भविकों त्माय । क्रियों क्षित्र ज्ञान विकास ज्ञान विकास भविकों त्माय ।

উत्तर छ रुष्ठ- धरम्य दर्भाग वर्षा छ काछ । अस्मार भ्वा । अस्मार्थिका । नक्ष्मां प्रकार का का प्रकार । विषय । अस्मार्थिका । नक्ष्मां प्रकार । नक्ष्मां प्रकार । नक्ष्मां प्रकार । नक्ष्मां । क्ष्मां । नक्ष्मां । नक्ष्मां । नक्ष्मां । निषय । क्ष्मां । क्ष्मां

গর্জাবন্ধায় স্ক্রুব্র ও জঙ্গ অথবা গ্রহার ও বরণ াচ (কোনা)

স্থায় । -- শোণে, এনে-এমি, নিম, আমা, সিম্ব, ডিন্সির সাহত স্থাধ্য স্থায়।

## **६८वाटिनः**श।

#### (Abrotanum)

পর্যায়ক্রমে কোষ্টবন্ধ ও অভিসার; অজীর্ণস্থবা আবী অভিসার।
অভিশ্য শীর্ণভা, বিশেষতঃ গুজ্যাব্যের শীর্ণভা (আইয়োড, ভানি, টিউব)
সহকারে বালক্ষিণের ক্ষয় বোর (মরাস্মাস); চর্মের লোলিভভা দি খিলভাবে
বলীতে বলীতে বুলিয়া থাকা

ক্ষম বোগে মস্তকের ছব্রলভা, উহা সোঞা করিয়া রাণিছে পারা যায়না কেবল নিয় শাথাধ্যের ক্ষয় প্রাপ্তি।

জডিশর কুধা, অথচ পর্যাপ্ত আহারেও শরীরের শীর্ণতা প্রাপ্তি, (আইও, ফাট মিউ, তানি, টিউব)।

থলী (Cramps) বা তৎ গ্রবন্তী উদর-বেদনা হইতে অলপ্রাজ্যালের বেদনা-বিশিষ্ট আকুঞ্চন (Contractions)

বাত —ক্ষাততার আরভের পূর্বে অত্যন্ত বেদনার জন্ম থাবপ্রেয়; অভিসাম অথবা অন্তবিধ নিংপ্রবের সহসা অবরোধজনিত ; এবং অর্শের সহিত, ও ইক্তাতি-সারের সহিত পর্যায়ক্রমে উপস্থিত ; বাত।

গাউট ---স্ধি-স্থার ক্ষীভতা, শুর্জা (Stiffness), জৎসহ কণ্টক-বেধ্বৎ যাভনামুভব , মনিবন্ধ (wrist) ও জন্দস্থির (ankle-joints) বেদলা ও প্রাদাহ

সর্বশ্রীয়ের অভিশয় পর্তা (lameness) ও প্পর্শ-ব্যেষ কণ্ডুরনশীল নীহার-স্ফোট (chilblains) (এগার) ৷

ি শুদিগোর অতিশয় ছ্র্বাসভা ও অবসমতা এবং একপ্রাক্ষার প্রাচেপক জর। দাঁড়াইতে অসমর্থতা।

শিশুর মন্দ-৫ ক্ষতি, কোণনতা, বিরক্ত-চিততা ও নিয়াশতা; প্রচিওতা, নিয়ুরতা, ও নির্দিয় কার্য্য করিতে ও বৃত্তি

পাঞুর, কুঞ্চিত, বৃদ্ধবৎ মুধমগুল ( ওপি )।

সমস্ক। ক্ষেটিকে হিপারের পরে; প্রিমি রোগে একোনাইট ও ব্রাইওনিয়ার পরে, আক্রান্ত পার্ষে খাদের প্রতিব্যাক্তাজনক প্রচাপনবৎ অমুভবের বিশ্বমানভায়; উপযোগী।

## এभिलिमःभ नारेद्वोगःभ।

(Amylenum Nitrosum.)

श्वाकातिक त्रव्यानिवृद्धिकारण वा खर्षात्र शास्त्रोत्र, त्रख्यामान जीरणाकपिरगत्र भरक अहे खेमध উপযোগी

এতেদ্বারা ধমনিসকল প্রাসারিত ও উহাদের গভি বিবন্ধিত হয়, কিন্ত গরে নাড়ীর গুর্বলতা ও মন্দর্গতি অমে।

মুধমগুলে ও মস্তকে রজের তীব্র গতি (বেল, গ্লন)।

অত্যন্ত শীতল সময়েও আনাব্যত বায়ু সেবনের আক্ষাঞ্জা; গাঁএবঞ্জ-বিমোচন ৬ জানালা খুলিয়া দেওয়া ( আজ্জ-না, ল্যাক, সল )

যে সকল রোগ আরোগা হয়না ভাহাতে অনেক সময় এমিল ধারা উপদ্য জনো; মৃত্যু-যন্ত্রণা নিবারণে ইহা অভিশয় ফলগুল।

মুখ্-নাগ (মাদিংস্)। মুখ্মগুল, আমাদম, ও শনীমের নানাখান হইতে উহার আরম্ভ তৎপরে শর্মের উৎপত্তি, অনেক সময় ঘর্মের উত্তপ্তা ও প্রচুরতা, সহসা উহার সীমাধদতা (abaptly limited), নিয়াংশের তুষান্ত্রবং শীজগতা; তৎপরে অভিশয় অনসম্যতা

यदमामास्य मदनाष्ट्रांद्य मूथ-वाद्यात्र छेदमश्चि ( दकाका, भिन्न )

हालि (गण्डामि कांतर॰ गारमत आंत्रफ्छ।)।---भूताखन वा खत॰ ; मागुर्तिक विविधिया।

व्यक्ष-भिरत्नोदयम्मा, विरम्भणः व्याक्षां । शार्षां शार्षां शार्षां वाक्षिणः। शण व्या व्यक्तिक क्षा द्वास एय, दिला कवित्रा राष्ट्रा व्यावधक इत्र

ষদ্শ্ল; স্থপিতের জিয়ার গওগোল; ম্থপিও ও জীবার মুখ্ৎ ধন্দীগরের (calouds) তীজ দপদপ ( গ্লন )।

অনেককণ পর্যান্ত প্রতিনিয়ত অঙ্গ-প্রদারণ; এ ইচ্ছার পরিত্থি অফোনা; থাট ধরিয়া ও অক্টের সহায়তা লইরা অঙ্গ-প্রদারণ (আড়ামোড়াডাঙ্গা)।

প্নঃপুনঃ গঞ্জীয় দুজেণ ( হাইডোগা ) ( ফাগী-ফা ) প্ৰেস্থেয় অব্যবহিত গয়েই স্তিকাক্ষেণ (Puerperal convulsions) ৷ উপচয়।----সানসিক বা শানীরিক প্রমে বৃদ্ধি।

স্বাহ্বা ।—(১) বেল, ক্যান্ট, কোকা, ফির, গ্লন, ল্যাকের সহিত সমগুণ সহক (২) আত্রাণে শীপ্র ক্রিয়া দর্শে; স্পর্শ-জ্ঞান-বিলোপকর পদার্থের ক্রিয়ায় মৃতকর ব্যক্তিদিরের প্নজীবনের সঞ্চার জ্যো। (৩) আদত ঔষধ প্রধানতঃ যাপাকর; রোগী ঔষধে অভ্যন্ত হইয়া পড়িলে প্নঃ প্রেয়েণ অংবশ্রক, উঞ্জর উচ্চতর ক্রমে ইহা আ্রোগ্যকর। (৪) ক্রমের শক্তির উপরেই অধিকাশে সময় আরোগ্য নির্ভর করে

## এমোনিয়ঃম কার্ববিনিকঃম।

(Ammonium Carbonioum.)

শারীরিক প্রকৃতির রক্তহাব-প্রধণতা, রক্তের ভরগতা ও গোহিত কণার অপকৃষ্টতা (degeneration); ক্ষতের গ্যাংগ্রীণে পরিণত হই বার সন্তাবনা।

শারীরিক পরিশ্রমের জ্বজাব বশতঃ প্রবাজীদিবের নানাঞ্চার অহাবে; সর্বারা "ক্ষেলিং বোভল" (এমেনিয়ার শিশি) কাছে রাখিতে হয় এরপ অক্সারীদিবের পকে, এবং যাহাদের শীভকালে সহক্ষে দিনি লাগে, ভাহাদের পকে এই ঔষধ উপযোগী।

শিশুরা গালে ধৌত কর ভাগবাদে না

निजांकाष व्हेवात সমন শাসকদ व्हेता आहिएन, भाग ध्यांक्षित सम् स्नितिष्ठ इत ( शिक्ष, गांक )।

व्यक्ति-कारण, बड़ वृष्टित नमग्न वम-दमकाख ।

শিরঃপীড়া; পূর্বতামুভব, বোধ হয় যেন কপাল ফা<sup>ট্</sup>য়া যাইবে (বেল, গুন)

নাসিকার রক্তপাত।—প্রাতে হাত ও মুখ্যমণ্ডল প্রাক্ষালনের সময় (জার্গ, ম্যাগ-কা), বাম নাগা-গন্ধু হইতে রক্তপাত; আহারাত্তে রক্তপাত।

গুজিনা, বারংবার নাসিকা হইতে রক্তাক্ত শ্লেমা নিংসরণ, ক্ষবশীর্য ( উপ্জ, ক্ষবনত মঞ্চক ) হইকে নাসাতো রক্তের প্রধাবন। প্রাথশঃ রাজিতে নাদাবয়োধ; মুথদিয়া নিশ্বাদ গ্রেছণ করিতে হয়; দীর্থকালয়ার্যা পর্দি; শিশুদিগের নাদা-রোধক পদি (হিপ, নকা, আমু, ষ্টিষ্ঠা)

পচা গল-ক্ষত; তাল্মলের পচা ক্ষত জ্বিবার উপনেম, এছির রজপ্রতা। ভিপ্রিরিয়া ব, ভার্বে-টিনায় নাসিকার অবস্থান্তা; খাস রজ্জ হর্যা আইনে বলিয়া শিশু মুমাইতে পারেনা

ধাতুর আরিস্তে ওলাউঠার ন্যায় লক্ষণ (বোড, ভিবে)।

থাতু —অতি শীঘ্র শীঘ্র, প্রান্ত রম্মার, রম্ম- নঃসরণের পূর্বে উদরবেদনা,
বিদাধী রম্ম-রক্তা, উহা শালিয়া উরুতে ক্ষন্ত মধ্যে; মাজিতে ও বসিয়া পাঞ্চিশে

অধিক পরিমাণে রম্ম-ম্যাব (মিম্ম); ঝঠু-কালে দাত-বেদনা, পেট-বেদনা ও
বিষয়তা; প্রোক্তি, বিশেষতঃ উরুদ্ধয়ের প্রান্তি; মৃত্তুপ (হাইতোল) ও শীত।

প্রার ।---- স্বরামু হইতে স্পাবৎ আশাকর আব ; যোলি হইতে বিদাহী প্রাপ্ত আব ; ভাগের অবদরণ (exceriation) ৷

ষ্বকল্প সহস্বাসে খাস-ক্ষত্ন, শাদীবিক পরিপ্রমে অববা কভিদ্য সিঞ্চি বাহিয়া উঠিলে উহার আভিশ্যা, উফগ্তে বৃদ্ধি।

अधिकिंगिमात्र ( दक्षांसम्म विश्वादन वास् ए दवण, वास् कञ्च ग्होज्छ। ) पाछन्म गर्व्हावकृष्टे खेष्ठ।

ওতার আহে প্রায় কটা হইতে ৪টা পরান্ত কাশি-কা) গুণিকানিত কর্মনেয় আয় গলা করুমিত হইয়া ওককাস

নথ-মূলের প্রাণাহ; অফ্-বেরের গভীর-মূল বেননা (ভাইওস, মিলি)।
কালেটিনার ভায় শরীরের জারজভা (এইলাছের সহিত জুলনা কর্মন)।
গভীর নিজা সংমূক্ত সাংখাতিক থার্লেটিনা; সশক্ষ খাস; জীবনীশজির
শীণতাবশতঃ উদ্ভেদগুলির অল্ল অল্ল প্রকাশ; মজিকের প্রকাশত স্কাবনা
(টিউব, জিক)।

উপ্তয়। ---শীতশ, পার্মকাশে; আর্ম পোণ্টিশে; প্রাক্ষণেনে (washing) ও পত্কালে; স্বন্ধি।

উপশ্যা ।----উপরেম উপর ধর্মাধ্যা উপ্ত হইয়া শমনে (এসে-এসি); বাণিত পার্শে জর দিয়া শমনে (পলম); ও ওক্ষালে; উপশ্য। সম্প্রা ।— (১) রস্ক্রের বিষ-ক্রিয়া এবং কীটের ছল-বেধ-যাতনা এই ঔবধে নিবারিত হয়। (২) দক্ষিণ পার্শ্ব সমধিক আক্রিন্ত হয়। (৩) ল্যাকেসিসের সহিত প্রতিকৃশ সমন্ধ

## এদোনিয়ঃম মিউরিয়েটীকঃম।

(Ammonium Muriatioum )

স্থাকার জালস; আথবা শারীর সুলা, জন্তা শীণ ব্যক্তিদিগের গণে, বিশেষ উপধোগী।

জনবৎ বিদাহী প্রতিশ্রায় ( actid coryza ), স্থাবসংস্পাদে ওপ্তের গত (এলি-সেপা )

ধৃত্ক'লে বিরেচন ও বমন; অন্ত্র হইতে রক্তেনাব (ফুল), পদহরে সায়শূল জনিত বেদনা; রাজিতে রজ-প্রবাহের অধিকতম আধিক। (বোভি—শরনে আতিশ্যা, জিয়ো)

ष्मिष्ठ नायु-निःमत्रग विभिष्ठे प्रसंगा ८कार्छ-८त्राध

কঠিন, বিণ্ডিত নল, নিঃসারণে অভিশয় চেপ্তার আব্যাহ্রতা, নলখানের প্রান্ত হইতে ভালিয়া ভালিয়া পতন (মাাগ-মি) মলের বর্ণেয় শরিবদ্ধন, ছইবারের মল একরণ হয় না (পলস)।

তার্শ বলি টাটার ও বেদনা করে; মলভ্যাগের পর করেক ঘণ্টা প্যাপ্ত সরলাজে জালা ও হল-বেধনের ভার যাতনা হয় (ইন্ধি, সল্ফ ); বিশেষভঃ প্রায়ন-মার বিলোপের পর

শেতপ্রদর; অভের শুলাংশের জায় প্রাব, প্রাব-নিঃসরণের পুরে নাডীর নিকটে আলাকর মোচড়ান বেদনা, প্রত্যেক্যার মুদ্রে-ত্যোত্রর, পরে, কণিশবর্গ, আঠাআঠা, বেদনাপুজ প্রদর-প্রাবঃ

পৃষ্ঠে, স্বন্ধাহিষ্ণয়ের ব্যবধান-স্থানে শীতগভা অনুভব ( স্যাকনান )। ইাটিবার সময় জভ্যার শিয়া স্থ্রত ও ব্যবিত বেশ্ব হয়। পেশীর স্ক্রতা হইতে हिर्णत क्रिशिषका अध्य गिया प्रता अभिश्विका (क्रि. मिहिर्म )।

श्वर्य क्रिश ध्या (जन्म, क्षाम, मिहिर प्रतिकिक, विनि )

महास्या जन्म केर्याम श्री प्रता विकास क्रिक्ट, भ्रम, भ्रम, दमनिकिक, क्षान बोटहै।

## এম | প্রিসিয়া।

(Ambragrisea.)

বালক-বালিকাদিগের, বিশেষতঃ উত্তেজন-ও বলা, স্নায়বায়া ও প্রকা যুবতীদিগের পদেশ; এবং বৃদ্ধদিগের স্নায়বায় সোণে, স্নায়্র "কার্নার্ডার্ম"; এমুব উপযোগী

नीत, प्रया, वाध्विशन, याश्वामत महत्व मानि मादन ।

काजिमम विषश्का, करमक भिन भगान विमान जन्मन

বৈষয়িক উৎপাত্তের পর নিজা যাইতে অপারগন্তা, উরিয়া বসিতে হয় (এ) স্কুলা, দিপিয়া )

হর্মান নিশাস সংযুক্ত রাগুলা সোগ (জিহবার নীচে অধ্যক্ষ টিউমার) (গুলা) উদরে শীতশতা অধ্যুত্তর (ক্যাখ )

মঙ্গ-ত্যাগকণলো ক হারত উপাত্তি, এমন কি গাড়ার উপস্থিতি পর্যান্ত সহ্য ধ্য়না; বারবার বিফল মল-আর্ডি, ও উথতে উৎকণ্ঠার উৎপত্তি

অনেক্ষণ ইটো, ও কঠিন মল-ভাগে প্রস্তৃতি সামাঞ্জ সামাঞ্জ কারণে ঋতুবয়ের বাবহিত কালে রঞ্জাব

বিশেষতঃ অথবা কেবল মাজিতে গাঢ়, নালাভ শুলা স্থোম্য, প্রাম্মান্য

थाकिया थाकिया छात्रण धारणां भक्ष क म, छर्मर छम्नात छ प्रत्रक्ष ; छर्छः प्रत्र कथा विणित्न वा शिक्षण छर्मत्र धार्मिका (क्ष्म) (क्ष्म) म्मा निर्माका कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य छर्छ ना, खां छः कारण छर्छ (शहेख); ह्र्यण-भक्ष विम्निका छर्मा कार्य कार्य कार्य ।

উপচয়।---উফ পানীয় প্রব্যে, উফগৃহে, গীত-বাজে; শমনে, উটিচঃসরে কথা বলিলে বা পড়িলে; বহুলোকের বিজ্ঞমানতায়; ও আগরণান্ডে; বৃদ্ধি।

উপশ্য |---আহারাস্তে; শীতল বায়্তে; শীতল আহারীয় ও পানীয় জ্বো, এবং শ্যা হইতে উত্থানে; উপশ্য

সম্প্রকা ।---এন্ট, এসাফ, কাকা, ইয়ে, মস্ক, ফাস, ভেলের সহিত এখার সমগুণ সম্বন্ধ।

## এরঃম টি ফিলাঃম। (Arnm Triphyllum.)

নাগিকার শর্জি; বিদাহী, তরলত্মাব; নাসারস্থ্রের আবদরণ (raw)

জ্ঞবৎ প্রাব নিঃসরণ সরেও নাদা অবর্গ্ধবৎ অমুভব (এম-কা, শু যু, সিনাপিসের সহিত তুলনা করুন), রাজিতে বিব্রিণ্ডিত হাটি

বিদাহী, রসানীবৎ জাব নিঃসরণ, তদ্বারা নামিকার অভ্যন্তর ভাগ, নাসাপাখ ও উপরের ওঠের অবদরণ ( আস্ব, সেপা )

যে পর্যান্ত রক্ত না পড়ে সে পর্যান্ত সাতত নাকখুটন; নাসিকার পার্থে অঞ্লি প্রাণিই করা

রক্ত না পড়া পর্যান্ত ওচি খুটন; মুণের কোণের পাত, বিদারণ, ৪ বক্তপাত; রক্তন ৫ড়া গ্রান্ত হাতের আফুল কামড়ান

অতিশর বেদনা লাগিলেও কাঁচা রক্তেনাবা স্থানে শুটন ও অসুগাঁ প্রবিষ্ট করণ; রোগী বেদনায় চীৎকার করে অথচ অসুগাঁ প্রবিষ্ট করিতে শিরত হয়ন (ডিপণিরিয়া, স্বার্লেটিনা, ও টাইক্যেড অরে)

মুখের ও গলার স্পর্শ-দ্বেষ বদতঃ শিশুদিগের পানাহারে স্থান্ধতি ( মার্ক ); ও নিজাহীনতা।

প্রভূত, বিদাহী লালা, তদ্ধারা সুখের শ্লোদ্ধক বিদ্ধী শাইয়া যায় ; জিহ্ব ও সুথ-গহবরের অবদরণ জন্মে ও রক্তপাত হয় श्रव-माभा ---- छिखन-शिक्तमित्यन गांकीम दश्रां भागमा मण्मित पन गिरणांग (क्रम, छिल) । जीम कतिया श्रव-निरणांश (श्रीक्बन्मा, कष्टे, मम, रमाम)।

धर्मा-याध्यक्रियितम् भर्मा-दिवसना - प्रदान कर्षण्डा, प्रांनिक्डिं, प्रांनिक्डिं, प्रानीयप्रजा, प्र विचानिक भनिवर्धननीयज्ञाः प्राणान कनिरम, क्या निरम, अया भन किरम वृद्धिः वक्षा, नायकः, छ अजिन्छोभिरमक भगा-वाया।

স্বার্ণেটিনা রোগে বিভাগ বা ভূতীগ্রবার বড় বড় গোছাগ গোছাগ চাস উঠিয়া যাওয়া।

উদান্তা, স্বল্প বা বিশুপ্ত মূক্র সহকারে সালিপান্ডিক স্বার্ণেটিনা; ১উরিমিনার স্বাশক্ষা।

সাংঘাতিক স্বার্গেটিনা ও ডিপথিরিয়ায় নাসিকা ও মুখের মতে এই নিষ্ধের পরিচালক লক্ষণ।

क्ष्यक्ष ।—(>) रिशाम, ७ मार्डेड-এमिन शता एक, व्यव अमरपू क, क्ष्य अमरपू क, क्ष्य अमरपू क, क्ष्य अमरपू क, क्ष्य अमरपू क व्यव अमरपू क विभाग अमरप् अम्यु अमरप अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अमरप् अम

### এলিয়াঃম গ্রেপ্। (Allinni Copa)

বিবর্দ্ধিত নিংশ্রব নিংগরণ সহকারে শৈগিক-বিধ্যার জন্দ ৫ ডিগ্রার অনিত

मिसिसिण कि कि निर्दार्थना, ७९मर गांधांत्र ५ मिं; मस्याकारण उत्तर द्वि, जनात्त्र वाश्रुष्ठ উरात्र উপभग; উभग्रह मितिया कांगिरण आगात त्रुष्ठ (हेडिस्क, भगम)।

পাতৃকালে শিরঃণীড়ার নিরতি, ও ধাতুলাব অফরিত ফইলে উংগা প্রান্তার (শাক, জিক)। চক্তে ধ্য কালিয়া উৎপরের ন্তায় জালা, কামড়ানি ত টাটানি, চক্ষ্ কচলাইতে হয়; চক্ষুর জলপূর্ণতা ও জলফাব, উহার কৈশিকা নাড়াতে ( capillances) রক্তাধিকা এবং অভিশয় অও সাব

মন্তকের প্রতিশ্রায় ; প্রভূত, জলবৎ, ও বিদাহী (actid) নাসা-স্পাব, তৎসহ প্রচুর অবিদাহী অগ্রস্থাব (বিদাহী অঞ্চ ও অবিদাহী নাসান্দাব, ইউফো)।

নাসিকার অগ্রভাগ হইতে বিন্দু বিদাহা জগবৎ আবি পতন, (আস´, আস-আইয়োড)

বসস্তকালের প্রতিশ্রায় —উত্তর-পূঝ্দিকের আর্দ্র বাতাস ডোগের পর শর্দি; প্রায় সাগিয়া উপবের ওঠে জালা ও গতে জগো

হে-ফিভার ( ওযধি-গন্ধজ জর ) — প্রতি বৎসর আগষ্ট মাসে উণ্ডিও \* যা চ্ইতে উথান করিলে প্রবল হাঁচি, পিচফল নাড়াচাড়া করাতে উৎপত্তি

নাসিকার বহুপাদ ( পণিপ:ম ) ( মেরম, ভাগে, ভাগে নাইট, সোরি )

শর্দিজনিত স্বর্মন্ত-প্রদাধ; কাসবশতঃ রোগীকে হাত দিয়া স্বর্মন্ত্র ধরিতে হয়; বোধ হয় বেন কাসিতে কাসিতে উহা ছিড়িয়া যাইবে।

উদর-বেদনা — পা ভিজিয়া শর্দি গাগিয় , অতিরিক্ত আহার করিয়া, শসা ব শাকেব কাঁচা চাটনি থাইয়া , ও অর্শ অস্থা উহার উৎপ্তি ; বালক-দিগের উদর-বেদনা, বসিয়া থাকিতে বেদনার বৃদ্ধি, নড়িয়া চড়িয়া বেড়াইলে হ্রাস

বদনে, মন্তকে পাড়েও বৃকে একগাছি দীর্ঘ স্থার স্থায় স্বায়বিক বেদনা
স্বাভিষাতিক পুরাতন সায়ু-প্রাণাহ; অলডেদের পর অবশিস্তাংশের স্বান্ত্র্ শূল; জালাকর ও হুলবেধবৎ বেদনা

আসুশ-হাড়া —বাছর উর্জ পর্যান্ত লাল নাল দাগ্য, বেদনায় কিপ্তাবৎ করিয়া তোলে, স্তিকাবস্থায় উহার উৎপত্তি।

পায়, বিশেষতঃ গুড়মুড়ার ঘর্ষণ বসতঃ দত ও ক চা গ্রান 'ঘের্যনে পায় ক্ষত হইলে এই ঔষধ উপকারী''।

শঁড়াসী ধরি প্রসবের পর (afte forceps delivery ) স্ভিকাবভায় শিরা-প্রদাহ। উপচিয়া।--- সামাধে ও উষ্ণাত প্রাণ্ড প্রাণ (প্রস , ধনারত বাস্ত । वृक्ति, ইউফে, )।

উপশ্য |----भोडण शृह व कार्ना वृद्ध विभूद्ध खेलमग ( लणम )

স্থান — '১) ফন, গলান হত অমুপুরক স্থান (২) লাম র্বানে (১০) পুনান) কা লাক বংশ ও বিশিলিয়ার পুরের উপনেশ্রণী, (১) ইউদে,
সিয়ার সহিত সমগুল সহল, কিজ লাগ-জান ও আমানাবে বিপরীত সম্পর্ক,
(৪) পা ভিজাইবার মন্দক্ষে রস্ট্রোর স্থিত স্থ্য

# এলুমিনা।

( Alumina )

याहात्रा श्रूत्रां छन दबादम त्राय भोदक छोहादमञ्च १ दक्ष अञ्जूषिमा विरम्प छिन्द्यांभी ; "श्रूत्रां छन दक्षांको जन्मिमा ब्युटकानाविष्ठ खन्नम "

भात्रोतिक উভাগের অসম্ভাব निभिन्ने धार्क (काम निनि)।

कीन, एक, क्रम दाि।; मिना नर्न म्लाइ ि; म्ह, लाम्झ शहिः। धनाम वास्त छ वास्त छ वाहिः ( 1910000111 '11(4); एक, मेलन्य, क्ल्यूमम्मन छर्द्रम, नीडनाट छरात क धिका ( दलिः); भगा म भ तीत छक रहेटल शाकिरण महा भति। स्त व्याहा कल्यूमन ( भणा ); दम लगा छ त्रक ना १ दफ दम लगा छ कल्यूमन, क्रम या करा

म्मम का कि शिक्ष भीरत भीरत भक्ष रहा । अवस्ती का कि मिरन से आप रिवास स्था (का न-रेख)।

हिन्द्र मा (शिक्षिया এवर विवाखांका खिन्न है। हिन्द्र नाम माम मा । हिन्द्र वृद्धिया है। हिन्द्र किर्फ ७ विद्धिक हम (कार्क्ष-मा, कान)।

অসাজানিক গুধা; সেওসার, ক্লথড়ি, অলার, লবল, চা বা ক্ষির চুর্ব, গবং অয় ও লপাচ্য ক্লব্য আহাধের আকাজা ( সিকু, সোরি ) , রোক্স আক্সু সহ্য হয় না।

वहदरमञ्ज वाभी भूबाङन উष्णांश, म्याकारन উर्दात आङि ।

শবণ, স্থান, সিকা, গোলম্বিচ প্রভৃতি সক্ত উত্তেল্প শ্রেণ তৎফণাৎ কাসের উৎপত্তি

কোষ্ঠ-রোধ।—অধিক মল্ সঞ্চিত না ইইলে মল-প্রিতি বা মল ত্যাগের সামর্থ্য জন্মনা (মেলিগো) অতিশ্য কুন্তন, শতদ করিয়া কিছু ধরিয় কুঁথিতে হয়, শক্ত, গ্রন্থিল, লরেল ফলের মত, শোলাবত, মল, অথব নরম কাদার মত মল, উহা মণধারে পালিয়া থাকে (প্রাট)।

সরলান্ত্রের নিশ্চেষ্টতা, কোমল মলও নিঃসারণ করিতে অতিশয় কুন্থনের আবিশ্যকতা ( এনাক, প্লাট সিলি ভিরে )।

স্তম্ভান বিশ্বনির ক্রতিন আহার ক্ষনিত, বোতলে ছ্রাণারী শিশুদিগের বৃদ্ধদিগের (গাই, ওপি); এবং গর্ভাবস্থায় সরলায়ের নিশ্চেষ্টণা বশতঃ (সিপি); কোষ্ঠবন্ধতা

মূত্র-ভ্যাগ কালে গোগিণীয় অভিসার। মল ভ্যাগ-কালে প্রহোব করিতে কুন্তন করিতে হয়।

খেতপ্রদান বিদাহী ও প্রাস্থত, গোড়মুড়া (heals) প্রাস্থ প্রবাহিত আব (নিফ), দিবাভাগে উহার আধিকা; শীতলফলে আনে লাখন ঝতুর পরে, শারীরিক ও সাম্লিক অবসয়তা, প্রায় কণ বলিতে পারা ধায় না (কার্কোন্ত্রন, করু)।

কথা বলিলে প্রান্তি জনো; প্রান্তি ও ক্লান্তি, অবখ্য বলিয়া থাকিতে হয়
উপচয়।—শীতল বায়তে; শীতকালে; উপবেশন কালে; গোলল
কালু খাইলে; কণ (মাংসের ঝোল) আহারে; একদিনপর একদিন,
কামাবস্থা ও পূর্ণিমার সময়; বুদ্ধি

উপশ্ন — गृष्ठ श्रीष्मकारण : एकश्रानीय स्ववाभ रम ; ख्याङ्गित क्तिव्यत्त अग्रयु (स्वर्धि), अवर्थकारण (कष्ट); श्राम।

मश्चि ।——( > ) बाहेश्वनियात महिल अञ्जूतिक मध्य (२) बाहे जा। क मगरफ्त परत धर्मामां जान थारि। (०) द्वारश्य एक्षण व्यवस्थ बाहे श्र भूताजन व्यवस्थ धर्म जिल्लाकी। (३) द्वारश्य द्वारश व्यात कार्य श्र रकानायम धर्मामात्र मभ्यत्। भोग्यांता विश्व करेंद्रण भोग-मृत्य , हा भाग्यांनिष्ठ द्वादम बर्जुम्ना जक्षी खार्यान धेमध

### এলো সকোটি না।। (Aloe Socotrina)

ঘাহারা অলস ও ক্রান্ত নানাসক ও শারীরিক গরিন্থে বিরওন; মানসিক পরিপ্রেম মাহাদের প্রান্থি অংগা তাহাদের পক্ষে এই ঔষধ উপযোগী।

বৃদ্ধ ব্যক্তি; বিশেষতঃ শোগা -প্রাধান-ধাতু, শিবিল-শরীয় স্ত্রীলোক দিবোর পক্ষে এট উন্ধ উপযোগী পর্মা সহকারে অভিশয় অব্যায়ত ইহার লক্ষ্ণ।

শীতকালের স্থাগমে প্রতিবৎসরট পঁচড়ার উপস্থিতি। (সোরি। আপনার প্রতি অথবা আপনার অন্থবের প্রতি অস্থপ্ত ও কোধায়িত, বিশেষতঃ যথল কোঠ বল থাকে

रेशिक विक्षीत दर्गा । भगा अभगा भगगात (rectum) रहेएल (क्ष्रिश्चित्र म्हण्यात्र क्ष्रिक्ष क्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्य क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष

क्षणारमत्र काष्ट्राकाष्ट्रि भित्रः गेष्टा, त्यक्ति भन-विश्वपरम छेशा युक्ति (द्यम, आहे) एक्षणश्कादत्र रुक्ष्य खक्षक, क्र गिनिया ( mansen )।

শিরংগীড়া। --- উত্তাপে উতার বৃদ্ধি ও শীতেশ ওয়োরে শ্লাস (আস); কটিবেদনার সহিত পর্যায়র যে শিরোবেদনা; অপ্রচুর মল-নিঃস্রবেদ পর শিরংগীড়া

শতিশার। — আহার ও পানের জাব্যবৃহত পরে ডাড়াতাড়ি করিয়া বহিণেশে, পায়থানায়) যাইতে হয় (জাই-টি, মল্লেন্স্যান্ত্রর জাধ্যক-পেশার উপর নির্জন করিতে পারা যায় না ( শর্থাৎ মল বেগ ধারণ করা যায়, না ); প্রত্যুয়ে তাড়াতাড়ি শ্যাত্যাগ করিয়া বহির্দেশে ( পায়থানায় ) যাইতে হয় ( সোর, রুম, মলফ ) অপান ( বাষু flatus ) নিঃসরণ কাে থেন উহার সহিত সহ নির্গতি হটাবে এইরূপ অনুভব ( ওলিন, মিউর-এসি, গ্রাট-মিউ )

উদর বেদনা — উদরের দক্ষিণ ভাগের নিয়াংশে কর্তন ও গোচড়ানবং বেদন ; মলত্যাগের পূবের ও মলত্যাগ-কালে বেদনার গড়াও ভারতা, মলভাগের পরে সমস্ত বেদনার বিরতি জন্মে, কিন্তু পাস্তুও ঘর্ম ও গভার ছর্মলভা অবশিষ্ট থাকে; বেদনার আক্রেমণের পূবের তুর্দিম্য কোষ্ঠ-রোধ থাকে।

ছুর্গন্ধ, জালাকর, অধিক অপান (বায়ু-(latus) নিঃসরণ; অল্ল মলেব সহিত অধিক অপান নির্গমন ( এতার ), অপান নিঃসরণের পর মলবারে জালা।

অনিচ্ছায় নিয়েট মল ও অ ম রাশি নিঃসরণ, অভিসার কাণে ফুধা

মল-ভাগের পূর্বে পেট ভাকা, স্থসা প্রায়ল মগ-বেগ, স্র্লাণ্ডের প্রায়ল ;
মল ভাগে কালে কুন্তন ও অধিক আপান নিঃসরণ; মল ভাগের পরে প্রাথ

অর্থ —নীক্রর্ণ, আসুর ফকের বেশ্পার রাশ্য বকি ( মিউর-এশি ); সরসায়ে অবিরত আবেগ; রজেন্সাবী, স্পর্শ-ধেষ বিশিষ্ট, উত্তপ্ত ও শীতল জল প্রয়োগে উপশ্যিত-অর্শ, তাত্র কণ্ডুয়ন

मनवादत क्रजूत्रन ও काना, উহাতে निजात वाचाक (हेकि)

উপচয় ৷—প্রত্যুষে; শারীরিক পরিশ্রমের অভাবে, উত্তপ্ত প্রফ্রাকালে; আহার বা পানাম্বে; দাড়াইলে বা হাটিলে স্বন্ধি

উপশ্য |---শীতন অলে; শীওল কালে; অপান ও মল নিঃস্মূনে উপশ্য

সম্প্র |— (১) উদরের রক্তাধিক্য এবং বরুৎ-শিরার রক্তাধ্য সংযুক্ত ভানেক প্রতিন সোগে সলফারের ভাগ এই ঔষধন্ত ব্যবহৃত হয়, অপর এতদ্বারা লুপ্ত উদ্ভেদ প্রকাশিত হয় (২) এগ-থিউ, গ্যাস্, নতা ও পড়োগের সহিত এলোর সমন্তণ সম্বন্ধ

## এফিরিয়দ রুদেন্দ

#### ( Asterias Rubons )

মাষক ধাজু দোষ ( সাইকোটিক ডারাথিসিম), শিণিল, গমিকা প্রধান ( ym shat'c ) শারীরিক প্রতিঃ কোপন সভাব

(कान क्षकांत्र हिल-निकारक, निरम्य ३६ व्यक्तिनारम महस्य छेरखणनात छेरः खि (क्राका, क्यांना)।

উত্তপ্ত বায়ু ধারা পরিবেষ্টিত গাকার ক্রায় মন্তকের উত্তাপ। মন্তকে রক্ত্র-সঞ্গায়।

সংখ্যাসমোগে; বদনের আরও ড, নাড়ীর দৃঢ়তা, পূর্ণতা, ও জেহতা

স্তানের ক্যালার, তর্ত্ব; জুরিকা দিয়া কর্তনের ক্যায় বেদনা; স্থান আকর্ষণী বেদনা, গড়র পুর্বে যেরূপ হয় স্তানের সেইরূপ জ্বাত্তা ও প্রান্ধিতা; স্তনম্ম ভিতরেরদিকে আরুষ্ট সম্ভূত হয়

ন্তনে একটা সাসবর্ণ মিশ্রিত আরক্ত চিক্তের প্রাকশি, উহা ভাজিয়া গিয়া প্রান্ধ নিংসরণ; ক্রেমে ক্রেম সমতা জন আক্রমণ, উহাতে অভিশ্য প্রর্গম , উহায় প্রান্ধ-ভাগ পাপুর, সমূরত, শক্ত ও বিপয়ান্ত; কলনেশে উষৎ কোহিত অভামুরে (granulatio 1) আয়ুত্ত

हणदनत अपूर्ण , दर्भोत्र वैषक्षात्र अभागाद्यारा ( अन्नम, दस्न )।

व्यभिषात्र (पार्मिन्। १५) ; द्योद्धात्र व्याप्तम छिन ४७ व्ह व्हेतात्र आति व्याप्त मियम भूग्या भक्ष भक्षोदत्र व्याप्तम ।

কোষ্ঠ-রোধ। --- ছর্ণ্যা কোষ্ঠ-রোধ , নিগ্রণ মগ-প্রবৃত্তি ; জাগণাইয়ের আফুডি শক্ত শক্ত গোলার ফায় মগ

काडिमांत्र , अञ्चल करियम सर्व, क्षांत्रक ए । हा मार्थ कार्य ( Carib, आछ, आहे, शूक्षा )

मात्रीपिरगत गरछोध-विध्यात तृष्टि ( विवि )

भवत — (১) गिष्ठदेवका ७ गिणियांत २१०७ मध्य १ ५६ । (२) खारनव कांकादित कांदर्शा- वस, दकामा गिणिय महिष्ठ, व्यवर अशक्यादन, दनस, कांक्य, छ मसरफंत्र महिष्ठ ; जूसना हम

## এসেটিক এসিড।

#### ( Acetic Acid )

গানুর, কীণকায়া, শিথিল লোলিত পেশী; গানুবর্ণ, মোমবৎ বদন ফির) শ্বিশিষ্ট, ব্যক্তিদিগের পক্ষে উপযোগী

রাজ্ঞাব —প্রত্যেক হৈশ্বিক ঝিলীসম দার, নাদিকা, গলা, স্থাস্থা, আমাশায়, সম্ভ্র, গর্ডাশায় হইতে রক্তপাত ( কির, মিলি ) ; অসায়ুর সক্তপ্রাব ; অম্কল্প
( vications ) রক্তপ্রাব ; নাদিকার আভিঘাতিক রক্তপ্রাব ( আর্থ )

নালক্ষিপের ক্ষয়রোগ (mārasmus) ও অক্সান্ত শরীরক্ষয়কর রোগ (এন্ত্রে, আইও, সানি, টিউব)

অভিঘাতের (11)।। 'e-) পর (গণ-এদি); শক্রোপচারেব পর; স্পার্শজ্ঞানবিলোপকর ঔষধ ব্যবহারের পর; অতিশয় অবসন্ধতা।

শোগ, বছমূত্র, পুরাতন অভিসার প্রভৃতি রোগে তীত্র, আগাকর, অধিক অলপানেও অতৃথ্য, পিগাসা ; কিন্তু জ্ববে পিপাসাশূত্যতা।

গর্জ বস্থায় অম উদগার ও বমন, দিবারাতি মৃণ্দিয় অল উঠা ও ও ভূত লালা আব (লাক এসি,—মাতিতে লালাআবের মৃকি, মার্ক-স্ল

অতিসার —অবসাধ্যনক, অতিশর পিশাসাংযুক্তা, আদিক মলজাব বিশিষ্ট অতিসার, শোগ, টাইকঃস জ্বর, ও যথার অতিসার, নৈশ্বর্মসহকারে অতিসার

প্রক্ত জুপ, হিদ্হিদ্শব্দবিশিষ্ট খাস, নিখাস সহকারে কাস (স্পঞ্চ); শেষাবস্থা

ক্রুপ রোগে ও সাংঘাতিক ভিপথিরিয়ায় সাইভার ভিনিগারের বাষ্প নিখসন ফলঃ দ

চিৎ হইয়া শয়ন করিতে পারা যায় না (চিৎ হইয়া ডাল শয়ন করা যায় আদ); উদরে শুক্ততামুভব ও তজ্জক খাস-রুচছ; উপুর হইয়া উদরের উপর ভরদিয়া শয়নে ভালরূপে বিশ্রাম লাভ হয় (এম-কা)

প্রেপক জন্ন ( হেডিক শিভান ) গ ন প্রেন প্রিশ্ব ও ও গুরুও বামগালে লাল চিহ্ন ও অভিনয় নৈদ্ধণা ।

## এদেরঃম ইউরোপিয়ঃম।

( Asarum Europeum )

स प्रवीप व्याक्त , विषध वा छिटखस्था-त्यावः , वार्षिक्षण द्वाक रमरक्त क्षांत्र रक्षन रक्षांत्री भूरक्ष निष्ठतः व्यक्तिरक्षरक जातन सम्भान (भाकि-काम) ; मध्य कार्यत्र भण्डा

त्य दक्षांस क्षाकाञ्च हिन्द-विकास नम्लः भोटल कम्ल

সায়ুর অতিরিক্ত অনুভ্যাধিকা কাপণিদ বা রেসমের বস্তো নথের জাঁচিড়, অথবা কাগজোর খড় খড় শব্দ সহা হয় না। (ফির, টার)।

वर्षम् त्यन त्यांन नांदानस्वत्र धिलि धाता सक्ष व्हेपाटि आर्थन व्यस्त व लियात्र ग्राम एक्ट् त्यन व्यद्यानिक व्हेशा विख्या कावना वहिनेक व्हेत्व आ व्यक्तात्र काञ्चय , भीकिल हाटम हमूर धूर्टेटल खेराव माथि।

हिला भी जिला वाह्य वा भी जिला काला विष्टे जान लाएग ; त्योग, व्यारमांक अ यो जाग मश हम मा। বিবিমিয়া—(nausea) থাকিয়া থাকিয়া ব সততে ইপি বিব্যায়া, আহারাত্তে উহার বৃদ্ধি, জিহ্ব র পরিচ্ছনতা (সলফ); গভাবস্থাব বিব্যায়া মদিরাপানের তৃর্জনে আকাজক; রুসিয়ায় মধিরাপানী দিগের পথে প্রালভ

ঔষধ

প্রাতে নিম্রা হইতে জাগিবার সময় আমাশয়ে (stemach) "ভয়ন্ধর" প্রচাপন ও থননবৎ অন্বত্তব (অমিতাচারের পর )।

অভিশয় প্রান্তি ও সভত অ,তে ( yawını ıg )

উপচ্য —শীতল ও শুক, অথবা পরিচ্ছন্ন ও স্থান্য আবহাওয়ান বৃদ্ধি (কষ্ট)

উপশ্য — মুখমণ্ডল অথবা রোগাক্তান্ত স্থান শীতলঞ্জলে প্রান্ধান্ত, ও আর্মি, ডিজাকালে ( ফষ্ট ) উপশ্য।

সম্প্র (১) প্রাস-র্দ্ধি সম্বন্ধে কণ্টিক্ষের সহিত ; এবং রক্তা্বৎ কুচিক্রি মল-লগণে এলো, আর্জ্জ-না, মার্ক, পভ, পল, সল এসির সহিত সমগুণ সম্মূদ (২) এসেরমের গরে বিস, কট, পল, সল এসি বাবস্থাত হয় ৷

## ওপিয়ঃম।

#### (Opium)

বালক ও রজের পথে , অর্থাৎ প্রথম ও বিভীয় বালকত্বের ( বার্দ্ধকেরের) রোগে ( বার্দ্ধনেরের ) কোগে ( বার্দ্ধনের ) , এবং লযুকেশ, শিথিল পেশা, ও শারীরিক উপ-লাহিতার অভাব বিশিষ্ট বাজিদিগের গলে ওপিয়ম বিশেষ উপযোগী

ঔষধে অনুভূতির অভাব, জীবনী শন্তির প্রতিজিয়ার অভাব স্থানর্বাচিত ঔষধেও কোন ফলপ্রকাশ পারনা (কার্ম্বো সরো, ভেলে)

অতিভক্ত এবং আংশিক বা সমাক পশাঘাত সংযুক্ত ,ভয় স্ইতে উৎপ্রা, ভয়ের মনকল তথনও অবশিষ্ট ( একন, হাইও); অম্বারের বালাভানিত গ্যাস বা বালা নিশ্বসন্বশতঃ উত্তে এবং মন্তপায়ীদিগের রোগ

### অতিশয় নিদ্রোলুতা; বেদনাশ্যতা, আক্রাজাহীনত ও অভিযোগ পরিশান্যতা সংযুক্ত; সকল রে গ।

वाक्षित (क्रामान) --- अपाति व किर्मातन व कार्यन ; भाषात अप्रलाशित भन्न खन्नमादन ( शहेकम --- भाषान दकार्यन । त अन्मादन, काम,
मन्त्र), जावर कान्यन क्रम -- खन जारमण। जारमण-कारण । क्रम न न भिष्ठ ज

আংশপের পুর্বেজ আন্দেশ-কান্তে চিৎকার (এপিন, চেলি) নিশ্বাসে ও প্রেশ্বাসে গুইয়েই শ্বাসের গভীর শব্দ।

প্রলাপ, অবিশ্বত কথাবলা; চনু বিস্তৃতক্রণে বিমৃত্যু, ম্থমগুল আশ্বরণ ও ক্টাড (ফুলাফুলা); অথবা অভৈডঞ্জ, কাচবৎ চক্চকে, অর্থুমণ্ডল চক্ষু, পাঞ্ল মুথমণ্ডল গভীন ডঞা (কোম); ডৎপুন্ধে হুণ্ডি (ইুপান)

(त्रांशियो मत्म करत त्य तम नाणीत्ज नारे ( नारे ); अगांशिक जिश्त मत्म अहे जान पारक।

নিজাবস্থায় শ্যাবিদ্ধ খুঁটন ( আতাৎ অবস্থায়, বেল, হাইওস)।

भ्रमाखाम ( ডिलिनियम हिटमम्म ) ---- १६६, मीर्च वा कि मिरशन भ्रमाखाम ; भ्रोख म्रमखन, छोला, ज्यामाकम, छेख्य, फुक ७ स्, छह्छ नामा-स्रव।

निया - थाशीर निया , भाग का भीता, जातिक भ्रामखन, जाक्त-भूमिक हिन्दू, ब्रक्टवर्ग हैं।, উভিন্তা घटिशाकादिक क्रक् ; हकादिब शदब

िता ताल करेगांड स्मा भाग क्षणा ( किंख, माक्स) ।

শ্যা এত উত্তথ্য বোধ হয় যে রোগিণ উহাতে শ্যন করিতে পারে না (শ্যা শ্রু বোধ হয়, থার্ব, রাই, পাইরো); একটু শীতল স্থানের অন্বেধণে বারংবার নড়েচড়ে; গাল অনায়ন্ত ক্ষিতে চায়।

পরিপাক-যজের নিজিপ্ততা ---ধমন জিয়ায় ( পেরিষ্ট্যালটিক স্থাফশন ) বিগ-ব্যস্তা বা পক্ষাধাত ; অন্ন কাবন্ধ বোধ হয় কোষ্ঠবদ্ধতা —শিশুনিগের; খুলালী শ্বপ্রয়তি নারীদিগের (গাফ); অন্তের নিজিয়তা বা আংশিক পক্ষাঘাত বশতঃ; মল-প্রের্ডি পরিশ্রা; ও দীগের বিষাক্ততা জনিত , কোষ্ঠ-রোধ শক্তা, গোলাকার, রুফার্য বর্তি, লাবৎ মল (চেলি, পুনা), মল বাহির হইয় আবার ভিতরে প্রবেশ করে (সিলি, গুনা)

মল ৷---জনিচ্ছায় নির্গত, বিশেষতঃ ভয় প্রাথির পরে (জেল); কালে ও সুগ্রি; মলবারের মুধাবরক পেশার পদাঘাত জনিত; মল

মূল — মূলাশরের পূর্ণতাসহ মূল-রোধ, প্রাথবের পরে অথবা অত্যন্ত তামাক থাওয়া বশতঃ, স্বত্তাশরিনী ধালীর ক্লোধের পরে অত্যাধারী শিশুর; ক্রেরা তরুণ রোগে; ও মূলাশর বা মূলাশরের মূণাবরক পেণীর পক্ষান্ত বশতঃ; মূল-রোধ।

( খ্রীমোনিয়মে মুত্রেষ অমুৎপত্তি থাকে; কিন্তু ওপিয়মে মূল-নিঃপ্রব ক্লান প্রাপ্ত হয় না, মূলাশয় মূলপূর্ণ থাকে কিন্তু রোগী সে পূর্ণত টের পায় না ) ওপিয়মে অয়ের জিয়ার অমনই অভতা অসে যে অভিশয় প্রথম বিরেচক ঔষ্ধ্রেও ভিশা দর্শেনা, (হেরিং)।

অধিক মাজার ওপিয়ম ধারা চিকিৎসিত রোগীদের ছনিবার অভিসার (ডাঃ লিপি)

তরণ উদ্ধেদর আক্ষিক বিলোপ বশতঃ মন্তিক্ষের পক্ষাঘাত অথবা উদ্ধার (দড়কা) (জিফ)

ক্ষা-রোগ (মারাসমাস); শিশুর ত্ব আফুঞ্জিত হয়, ভাহাকে শুর্জার ক্ষুদ্র বৃদ্ধের স্থায় দেখায় (এরোট)।

উপচর।---নিদ্রাকান্তে নিদ্রান্তে (এপিস, ন্যাক); বর্দ্ধ-নিঃসরপ ক্ষালে; উষ্ণতা হইতে, ও উত্তেজক প্রব্যাদি সেবন বশতঃ; বৃদ্ধি।

উপশ্য --- শিত তার; ও অবিরক্ত বিচরণে উপশ্য।

সম্বন্ধ ।—( > ) বিষ মাত্রার ওণি রম সেবিত হইলে উগ্রা কফি, নক্সভমিকা কালী-পার, এবং অবিরত হাঁটিয়া বেড়ান উহার প্রতিহারক। ( ২ ) লক্ষণের সহিত প্রকা হইলে ওণিরম সেবনের মন্দক্ষ ওণিরমের হোমিওণাঞ্জিক ক্রমন্বারা নিবাবিত হইতে পারে (৩) ওণিরমের সহিত এণিস, বেল, হাইওস, খ্রাম, ও ক্রিকের তুলনা হয়।

## ককিউলাস।

#### (Cocoulus.)

ণতিলা চুল ও পাতিলা চক্ষ নিশিষ্ট যে স্কল রম ী ঋতুকালে। ও কভানহায় অতিশয় ক্ষষ্ট পায় কোহাদের পক্ষে; এবং আনিবাহিতা ও সন্ধানহানা নাত্রী দর্গের পক্ষে, এই ঔষধ উপযোগা

याश्राता मक्ता भएए; त्य भक्त क्रमाक्रीक्रिय क्ष्यू देवयमा भरकारत क्ष्यिक्य, क्ष्यू अविषय क्ष्यू क्य

গাড়ী, নোকা অথবা বাজ্পায় শকটে আরোহণ বশতঃ (আর্গ, নকা-ম), কিংবা সচল নোকার প্রতি দৃষ্টিপাত জনিত, বিবাময় ও বমন; সাম্জিক বিবমিয়া (১৫০-১'৫ বেবেন); বাজায় শকটারোহণ-জনিত বিবমিয়া

শিরংশীড়া ৷-- গ্রাবার ও সভকের পশ্চান্তালে, মের দণ্ড পণ র সংগ্রেগারিড; সক্ষানা ক্ষিয়া বাধার ভাষ; সস্তাশ লার বিশ্বমধ্র জানুরপ বিব্যানা সহ; প্রতি গ্রুকালে; এবং মালা ভিৎ করিয়া শয়নে বিব্যান্ড, শিরংপাড়

शाफीटण, दनोकाम व्यवना दमरणत शाफीटङ वादारून व\* ७: ४ वमन भित्रशोद्ध मेश्रभामकात्र विस्थित स्थान

भूरव धार्फन व्याधान भरकारत भूगांशेनक (य क)

সময় অতি শীশ্র শীশ্র চলিয়া যায় ( অতি ধারে ধারে যায় আর্জনা, কান-ইও)

সমত্র শরীরের অভিশয় আজিশয় মুকাগতা আমুভূত হয়। উট্ডেঃরেরে কথা বালতে অভিশয় মুকাগতা আমুভূত হয়।

व्यनितित्र, जिन्ह भागिक উত্তেজনা ও রাজিজাগরণের মন্দ ফল; जन पटी काण कम निकार्शिक्ष व्यक्तिम क्रिक्षण अस्छन; निकारीनकात परत देशांत्र दिवास अस्टिन स्थार्थण।

উত্তেজনা, आम कावदा रामना यमें वार्ष वार्ष व पद्म अ कल न

শ্যায় উঠিয় বসিলে মততাবৎ শিয়োঘূর্ণন; অথবা গাড়ীর সঞ্চলনে শিরোঘূর্ণন (ব্রাই)

প্রত্যেকবার নজিলে চড়িলে উদরে ধারাল ৫ গুরের গ্রায় কর্তন বা ঘর্ষণবৎ অমুজব , মগুকে ও শরীরের অগ্রান্ত অংশে শুগু-গর্ভতা অনুজব ( ইয়ে )

রজ:-নিঃসরণের চেষ্টায় এতই হর্বক্তা যে নিয়াজের দৌর্বাল্য বশতঃ (এলম, কার্বো-এন) প্রায় দাড়াইতে পারা যায় না; এতে কবার ঋতুর পরে অর্শ

থাপুর অমুকল্পে, অথবা গাতুদ্বের মধ্যবর্তী সময়ে ( আইওড, জ্যাস্থ ) প্রান্তর, মাংস-ধৌত জ্বলের ক্রায়; রক্তাত্মর ( Serum ) গ্রায়, রসানি সমূদ, রক্তাত্ম, প্রান্তর , প্রান্তর গান্তর বিস্থার প্রদার।

প্রতিবাদ সহ্য করিতে পারা যায় না ; সহজে বিয়ক্তি জ্বো ; সামান্ত সামান্ত বিষয়ে জোধের উদ্রেক হয় ; যোগী ভাড়াভাড়ি কথা বলে ( এনা )।

জ্ঞারের ধীন, প্রাচ্ছর ও স্থায়বীর ও রুডি ধারণ, তৎসহকারে দিখোঘুর্ণন , ও জোধ-গ্রহণত

উপচয়।—আহারে, পানে, নিজায়, ধ্মণানে, আগাণে; শকটারোহণে; आহাজের সঞ্চলনে বা সন্দোপনে, এবং গর্জাবস্থায় উত্থানে; ধৃদ্ধি।

ज्ञानुस्य (১) कारिया छ शकाचाट्या जकरण देशा छ नरवार गरिए, ज्वर द्वाशाकाश्वरात्मा पर्या जिल्हे केरिया कि कि कि कि

(২) ছর্দ্ধন্য কোষ্ঠবন্ধ সংযুক্ত নাভীদেশীয় অন্তর্মন্তে (umbilical her ia) নক্স বিফলান্তে এই ঔষধে আন্মোগ্য জ্যায়াছে

# কফিয়া ক্রড।

(Coffea Cruda.)

দীর্ঘ, ক্ষীণ, অবনতদেহ, মলিন মুধাক্ততি, গ্লেক-প্রধান পিন্ত-প্রাকৃতির রোগা। অতিরিক্ত অহত্তি; দৃষ্টি, শ্রুতি, দ্রাণ, আত্মাদন, স্পর্ল, সকল ইন্মিয়েরই অতিশয় তীক্ষতা (বেল, ক্যাম, ওপি) মন ও শরীরের অসাধাবণ কার্য্য-পরতন্তা (u nusual activity)। মনে নানাপ্রকার ভাবের উল্মে; দ্মান্য কাশ্য-স্পাদন, তথ্যস্ত নিজার বির্তি

आकिष्मिक म्टन्डिटियम अर्थना आन्निस्यनक विश्वदात्र मन्ययं। करे -উত্তেশনাজনক বা অস্থ্ৰসঞ্চলক সংবাদের সন্যুষ্ণ, জ্যোস); भागनां । १७; প্রায়ায়ত্ব হৈ প্রিজনেন

বেদনায় অভিশয় ভীরতা অন্তব , উচা বসহাঞ্জায় বোধ হয়, রোগকে শিপ্তবং করিয়া ভোগে ( এক, ক্যাম ); সে যাতনায় ব্যস্তিত হয়।

নিম্রাছানতা, সম্পূর্ণ জাত ৭ অবস্থ ; চাফু বুজিতে অসাধ্যতা ; মানসিক উপ্লাদে শারীরিক উজ্জেনা (রজোনিয়জিকাকে কন্দ (prolupeus meri), জরাযুর উপদাহ জনিত নিম্রাছানতায় সিনিমিজর সহত তুলনা হয় )

ित्रःशीषा — व्यञ्जिक भागभिक शांतक्षम, छिस, ख व्याणाशम व्यक्तिक भितःशीषा, जिन्ह भागभिक भागभिक, द्वाध इम्र द्यम मिश्वःक दिश्वक निद्ध इस्टिट्स ( १८६१, सन्छ), मिश्वम द्यन क्रिण्डिस व्यथन व्याधारिक इस्मा वक्ष क्रिल्ड स्थान विक्र क्रिण्डिस व्यथन व्याधारिक इस्मा वक्ष क्रिल्ड स्थान विक्र क्रिल्ड स्थान क्रिल्ड स्थान विक्र क्रिल्ड स्थान विक्र क्रिल्ड स्थान क्रिल्ड स्थान क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल्ड स्थान क्रिल्ड क्रिल क्रिल्ड क्रिल्ड क्रिल क्रिल क्रिल्ड क्रिल क्रिल क्रिल क्रिल क्रिल क्रिल क्रिल क्रिल क्

वालमम्ख रहेमा कारोग एक मान कता ( ८वण, दिम् )।

गिविष्ठाम, उपरक्षणविष् (jerking), ववर भूट्य वस्कृत खन त्राणित छन-मिछ, किस त्मरं छन छम १२वामाल जाजाव्य पर त्वमना (विष्ठ, वाष्ठ, भन, करें, मिल, जारेन्मन)।

উপচয়। — जाकात्रक भागाजात्व; অঙার আননো; শাওল, অনাস্বত বায়তে ; মাদক উষধে; বাদে।

मध्यक्त ।----(५) अक, काम, देश, मण्यक्त अविक मधक मधक। (२) का ४ कष्टे, कक, देशन मुख्कि विमयक मध्य

## কলচিক্ম অটমনেল।

### (Colchicum Autumnale.)

আমবাতিক ও গ্রন্থি-বাতিক (ilicumatic) ধাতুতে; স্বষ্ট পুষ্ঠ স্বদ্ ব্যক্তিদিণে ব পক্ষে; এবং বৃদ্ধদিগের রোগে; কলচিকম উপযোগী।

আলোক, শব্দ, উত্তাগন্ধ, স্পর্শ, ও অপরেম মন্দাচরণে মোগীকে ক্ষিপ্তপ্রাম কবিয়া ভোলে ( নক্স ) , ভাহার যান্তনা অসহা বোধ হয়।

শোক বা অন্তের হুদার্য্য জনিত পীড়া ( ষ্ট্রাফ )।

আফর্যণ, ছেদন, ও প্রচাপনবৎ (pressi g) বেদনা, উফকালে উচার অপ্রগাঢ়তা, বায়ুশীতল হইলে অস্থি ও গজীর বিধান-তন্ত্রন (deciper tissue) আক্রান্তত, বাম হইতে দক্ষিণ্টিকে বেদনার গতি (ল্যাক)

দ্রাণ-শক্তির অতিশয় তীব্রতা; খাগ্যদেশ্য পাকের গম্বে বিশেষতঃ মহস্ত, অণ্ড অথবা বদাক্তেমাংসপাকের গম্বে (আস সিপি) বিবমিষা ও তুর্বলতা; গালি জ্ঞাগরণের মন্দেশ (করু)

খান্তরতো অপ্রবৃত্তি ; উহা দেখিখে, অধিকস্ক উহার গণ্যে নিম্নজি। বায়ুজনিত (৪৪১) উদরের অতিশয় স্ফাততা, বোধহয় খেদ উদর ফাটিয়া যাইবে

ল মাশম ও উপনে জ্বালা বা বরফের স্থায় শীতলতা।

শরৎকালের রক্তাতিসার, অন্ত ২ইতে অধিক পরিচাকে শাদা পাদা ক্লাটকুচি ক্ষুত্র স্থা স্থাবি নিঃসরণ; শাদা আম; ও অপ্রের টাচার গ্রায় পদার্থ (ক্যান্ত, কার্ব্য-এমি) নির্গমন

মূত্র ক্রানিল স্বল্প, বা বিলুপ্ত মূত্র সাধা অধ্যাপতিত পদার্থ সংযুক্ত বিলু বিশু মূত্রপাত; রক্তাক্ত, ক্রিপ, কালীর মত, মূত্র; বিগলিত (putifil) ও বিসমাসিত (decomposed) রক্তের থণ্ড, এলবুমেন, ও চিনি।

স্পর্শ করিলে ও নাড়িলে চাড়িলে ফরা স্থানে অভিনয় অমুভূতি।

সন্ধিস্থানে সন্ধি-বাতজনিত বেদনা; সন্ধি-স্থান স্পর্শ করিখে বেদনায় ন্যোগীর চিৎকার। हिन्ह्य ।---मत्नाकार्य वा व्यवसा गांत्र ; व्यक्ति । व्यवसा मां व्यवसाय । व्यवसाय वा व्यवसाय । व्यवस्था व्यवसाय । व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्य व्यवस्था व्य

উপশ্ম ।— त्यांश मण्ण्वं ऋषित्र व्हेशा वाक्षिण नमन-आश्वित नापन, मण्णिक हिल्ल हिल्ल हेरात भूनतानिक (बाहे)।

স্থান। (১) আমন তিক স্থি-ন তে ( १ 'উট ) মস্ত্র-করণ ( নানানার effusio 15) হু ফাতে, ও উফকালের আমবাতে; বাইওনিয়ার স্থিতি ভূগনা হয়। (২) এপিস ও আসেনিক বিফল কইলো এই উস্থে অনেক সময় দেকি আরোগারাপ্ত হয়

# কলোফাইলম

### (Caulophyllum)

शक्षिवश्वात, श्राम्यावश्वात, अञ्चलानावश्वात्र, श्वीरणाकिषिरशत भरण करणाणहिनम विराम्य উপযোগी।

लीलांक पिरशत्र वांछ, विरमयछः भूता भूता मित्र वांछ (क्लि-िल), करमके मिनिट १ त्र शत्र दवस्यात्र श्रांत-शतिवर्धन (भग्य); धावांश्व मित्र व दवस्यात्र शक्ति (Stiffness), धारविषय (Paroxysmal), धारक्षिक, श्व मित्राम दवस्या

থৌৰনাগমে, গজু-প্ৰকাশ-কা**ণে কো**রিয়া, হাইরিয়া, অথ্যা, স্বান্ত্র (epilepsy) (এপ্রিয়া)।

ए तत्र — विनारो, जनगामधनक सान; উপনের অভিপ্টের खक्ष, जाञ्चल पित्र छेरा जूणिया ताबिट्ड १४ ( त्यथ ); क्षांट्य भाष्य । ( त्राह्डा ) ( विणि )। ছোট ছোট বালিকানিগের প্রাদর ( क्षांच )। গর্ড-শারবের ৫ ভিবর কর্ডা सनक প্রাদর।

खत्राश्च भोर्क्षणा वन्षणः 'वणाण गण्यां ( किणित । -- गणीत नियान मरव्या मीत्रकण यनिष्ठ गर्ध्याय, (स्थन )। আক্ষেপদংযুক্ত স্থদৃঢ় জরায়ু-মুখ, জ্জেল পেগবের নিলম ; এব ফ গ্রীবার (cervix) সূচী বেধবৎ বেদনা।

चल्लाक्ष्मिन किया में कार्या मिक आर्थित अपन-निष्मिन क्षिमित क

ফ্রান্তের পর রক্তলাব , পেশী-তস্তর স্থিতিস্থাপকতার অসম্ভাব , গর্জ প্রাবের পর অপ্রবল রক্ত আব ( সিকেলি, ্ াম্পি )

প্রস্বান্তিক বেদনা — অধিক স্থায় স্থাণী অবসাদকর প্রাসবের পরবর্তী সংগ্রু-পিক, উদরের নিয়ভাগের আড়াআড়ি; ফুচকী পর্যান্ত প্রাসবিত ; বেদনা (পায়ের নলা পর্যান্ত প্রসারিত, কার্কো-ভেজি, কক)।

প্রস্বান্তিক প্রাবের দীর্ঘকাল পর্যান্ত অবস্থিতি পেশীর অতি গ ছ্রালতা, শিথিলিত নাড়ী হইতে অনেক দিন পর্যান্ত বিন্দু কিরিয়া ফণ্ড (সিফে)।

সাহান্ত নিশ্ব (২) অতিয়া, বেল, শিল, গ্রুম, সিংক্তি, গ্রুম ভাইবারের সহিত সমগুল সম্বন্ধ (২) প্রসোটিলার পেশব-বেদনার সহিত সমগুল, কিয় মানসিক অবস্থা বিপরীত (৩) "মান্তিয়া" ও অরাণ্র বিশ্বান শ্রেমা শ্রিমা শ্রিমা বিশ্বান বিশ্বান শ্রিমা শ্রিমা বিশ্বান বিশ্বান শ্রমাণ্ড শ্রিজিপ্ত (1012) লকণে, মিপিশার সমগণ

## কলোসিন্থিস

### (Colocynthis.)

উদরে যন্ত্রণাপ্রদ বেদনা, ডজ্জ্জ্জ বোগীর ভাবশীর্য হাইয়া দিউ।জ হাইয়া থাকা, ভৎসহকারে মন্থিরভা, এবং শান্তি পাপ্ত হহবারানামত আবর্ত্তন; শক্ত্র প্রচাপনে উপশ্য (উত্তাপপ্রয়োগে উপশ্য, ম্যাগ্রন্থন)

বেদনা —আহার বা পানাস্তে বেদনার বৃদ্ধি; বেদন বুশতঃ অবনত হইয় দিত জি হইতে হয় (ম্যাগ-ফুস I—অবনত হইয় দিত জি হইলে বৃদ্ধি, ডাইওস); देवतिक (cha tiii, ll h mou, धमरक्षांध) नण कः १८ण । एना भ, उपत दक्षना अलाख दक्षांच स्वाप्त कार्य दक्षांच अलाख दक्षांच अलाख दक्षांच अलाख कार्य वा निवर्तक व

क्षिणमण्डा, श्रेष्ठ रहेटक सन्ता ए हुण्डि। दर्शण्या दरवरी क्षांस्क्षमिण्ड दर्शका,----यणा, जिस्स त्वसमा, उन्न. व्यक्तिशस अन्नतालाल (क्यांम, श्रेमंग)

भिरत्रोधूर्गम ।- सम्छरवार्ग मध्यकध्नारै गात म्यम विरम्भिखः वागिपिरकः, भछमार्थकमः উष्ण्यक सवा स्मानमधानक भिरत्रोधूर्यन ।

गारप्रिका। रयन পिछ्यामा औष्टि। इष्टरास्ट क्रकोरक अम्रण यामपन्न। रयममा ; क्यार्थार्था मधन।

সমগ্র অজের নিম ভাগ পর্যান্ত, ব ম ক্চ শতে, বাম উকতে, বাম আছতে, ও জানুর পশ্চান্তাগের গহরণে ভাগিত ঘ ডবৎ স্পার্মান বেদনা

উপচয় — दक्षांदम क दक्षांदम , अङ्क्षियान - निर्माखम्दक (हो। क, आहे) ; अवर (উপন दक्षनांत्र ) शन्ति व दछाञ्चरन , दुक्ष

উপশ্য — শবনত হঠয়া বিভাল ছইলে, ও দক্ত প্রচাপনে; উপশ্য ।
স্কৃত্ব —(১) দক্ষিণ সামেটিক স্নাম্র অম্পুর্নের বিলের বিলের বিলের নির্মান করিছে পা হয়াত্র দরিল বেশনা শ্রান্ত নির্মান, ও পদ বিলের উহার আভিশ্যা; এনং উন্বেশনে উপশ্য; এই স্থান ক্ষাপনে, ও পদ বিলের উহার আভিশ্যা; এনং উন্বেশনে উপশ্য; এই স্থান ক্ষাপনে, নেকের সহিত ক্রেনিছের তুপনা হয় (২) ক্রেনিরের, আ প্রায়ত্ত রোবের অথবা নারব শেকের মন্দক্ষ জনিত ভিলাশ্যের (০০মাপ্র) রোবের জ্বারা জ্ঞাল্প রোবের ইয়াকের সহিত ক্রেলাবের তুপনা হয়

# কফিকম।

### (Caustioum)

রুষ্ণ-কেশ, দৃঢ়-দেহ-তত্ত; ত্রাক্স- গোর -দোষগ্রন্ত, অতিশয় পীতবর্ণ ও মলিন মুথাকৃতি সংযুক্ত; এবং খাস-পথ ও মূল-গণের পীড়াগ্রন্ত ব্যক্তি-দিগের পক্ষে কষ্টিকম উপযোগী

ক্ষুণ্বর্ণ-চুল ও চক্ষু, াবং প্রকুমার, ও অভিশয় অমুভূতি বিশিষ্ট বাল ক্ষালিকা, দিস্তোদগ্যকালে অকে ইণ্টারট্রাইগে। (অহিপু এন ) ( লাইকো ), অথবা উন্ধারের (দড়কা ) উৎপত্তি ( টান )

অবসামজনক রোগ অথবা দারুণ চিত্ত-বিকার বশতঃ মন্তিফ ও পৃষ্ঠবংশীয় স্বায়্প্তচ্ছের ক্রিয়া বিকার ও ডজ্জনিত পকাঘাত

মস্তক-তল, গল মধ্য, খাস-পথ, সরলায়, মলবার, মৃত্য-মার্গ, প্রাস্থ বার, ও জরায়ুর আবদরণ অথবা স্পৃশ-ডে্য (soieness) (মৃষ্টবৎ ভামুভব, জার্গ : মচকানবৎ অমুভব রুমটকা)

বিষয়ভাব —-বিমর্যতা, নিরাশতা; ছন্টিখা, শোক, ও ছংগ হইতে উহার উৎপত্তি, তৎসহ অশ্রুপতি, যৎসামাত্য কারণে বালক কাঁদিয়া উঠে।

অন্তের যদ্রণায় তীব্র সহাহভূতি।

দীর্ঘকালস্থানী শোক ও ছঃও ( ফ্রন-এসি), নিম্রাইনিতা ও রাজিখাগরণ (ক্রু, ইয়ো); ভর ও আনন্দাদি আকিম্মিক ডিভ-বিকার ( কফি, ফ্রেল); জোধ বা বিরজি; এবং বিলুপ্ত উডেন; হইভে উৎপদ পীড়া।

শিশুদিগের হাঁটিতে শিথিতে বিশ্ব (ক্যাক্র-ফ্স)

শিশুদিগের অদৃঢ় বিচরণ ও সহজে পতন

অনৈচিত্ক সূত্র —কণসিতে, ইণচিতে, ও লাকে ফোৎকরিতে অনিচ্ছার মূত্র-পাত পেল, সুইলা, ভিয়ে )

কোষ্ঠ-রোধ —বারংবার নিক্ষণ মল-প্রার্থ্যি (নবা); দ্রেণ্যুম্নি জাবস্থায় মল-ত্যাগে অবিধা, কর্ম-বলিধারা মল-নিঃসরণের প্রতিব্যাক্তা শক্ত ও চিক্কণ (shining), চর্ষির ভাষ মল; রাত্রিতে শধ্যায় মূত্রত্যাগ মহ শিশু-দিগের কোষ্ঠবদ্বতা

আবাদরাণ ( inwinese), ७ भन-माभ मह पत्रकार खारि छठ। त दृष्टि ( श्वारकार शृक्षि, कारका-८७कि, कम)

त्राविष्ठ दक्षान क्षेत्रांत्र अवशादनहें अध्हन्मछ। दोध श्राना अवस दक मूछ्छछ वित्र हहेगा वाकिष्ठ भागा गांग ना ( १७०, त्रम )

मध्रमा नाष्ट्रक हिष्टिक २१, किश्व मध्यागत भाषि व्याग ना। व्यक्तिक উक्षकात वादक रहेएक भागा धाम ना, উक्षकात्र भाषि व्यागना। मुद्धीत्वरभन्न श्रांश मध्यम विरमाभ । भूक्षणका ७ कम्भन।

অধি দাছের কভ-চিথের পুনরাম নৃতনত্ত থি, পুনরাম টাটানি, পুরাজন উপমাজের আবার উল্ভি: রোগীয় বলে যে এই অধি-দাহ অন্ধি জাহার। কথনত স্বাস্থ্য-স্থ সম্ভোগ করে নাহ।

सक् — निर्धातिक भगरमम अस्ति भूर्य छेणस्किः व्यक्तिकः नानः क्विम मिवि जिर्गिको क्षिति हिन्हः ७ भगरन क्षितः सङ्

शक्षांषाण — क्रिक्ट्रंट्रं ; श्रत्यक्ष, बिस्त, धिकश्र, तमन, भनीत्रण था, वा म्यांगरम् ; शांधाञ्चलकः स्थित्व शाट्यं ; भोजभ वाजाम किश्ना वाम्-जावाक प्रनिज ; होरेक्ट्मफ वा होरेक्ष्म प्रात अववा क्रिक्शित्रमात् भनवजी ; छ कृत्य तन्त्य क्रिक्मिण ; भूष्णाचाज ।

উপরেম অফিন্প্লবের প্রেম, উচা উন্টালিড রাখিতে গাবা মাহনা ( ফ্রেক ফ্রা, জেল, রাফ ----উর্থ ও নিম উলম অফিন্পয়বের-পতন মি গ )।

भौतिम । -- वृहद, व्यममान, बुखमस्युख्य, महत्य प्रक्षायां ती, प्रमन्त्र प्रविमा, भूज

ক্ষুদ্র, সর্বাধরীরে ব্যাপ্ত; চক্ষ্র পাতা ও মুখসগুলের উপর অবস্থিত , এবং নাসিকায় স্থিত; আঁচিল

রোগীর কিছুকাল উপশ্য জনিয় তৎপরে উপকারের নিরতি (সোরি সল)
উপচ্য — পরিচছর, উত্তম কালে (in clear line weather),
বায় হইতে উষণ্যহৈ প্রেশে (বাই), শতল বায়তে, নিশেষতঃ শীতল বায়র
প্রবাহে; শীতল হইলে; এবং আর্ম হইতে ধ্বনা আল করিলে স্থান্ধ

উপশ্য |—আর্দ্রি, সিক্ত কালে (in camp weather); ও উষ্ণবায়তে; হাস

সম্বা ।—( > ) কার্কো-ভেজিত পেটো দের সহিত অরুপ্রক (comple mentary) সম্বর্জ ( ২ ) ফসফরাদের সহিত পেতিকুল সম্ব ধ্যের পূর্বের বা পরে কৃষ্টিকম বাবহাত হয় না , এসিড্স ও ক্ষির সহিতও প্রতিকুল সম্বদ । (৩) শ্লেমা সিলিয়া ফেলার আবশুক্তায়, আর্লিকার সহিত , অক্সিপুটের পকাষাতে জেল, প্রাক্ত, মিলিয়ার সহিত ; সর্ভালে, সম্বাক্তালে বৃদ্ধিতে পরিষর্ত্তিত হৈছে, ক্রেল্ল ও কার্কো-ভেলিন সহিত ; প্রাত্তন অরুনাদে, সলফালের সহিত ; সমগুণ সম্বদ ( ৪ ) সাসজনিত বিষাক্তভায় ( ক্লেণ্ডিটার্মিগের মুখে টাইণ অর্থাৎ সীদের অক্রমারণের মন্দ্র্যল ) , এবং পাঁচড়ায়, সলফ বা মার্ক অপবাবহারের মন্দ্র্যলে; ক্টিক্ম বিষ-দেশ্য টে ক্রেন। ( ৫ ) দক্ষিণ পার্থই ক্টিক্মের জিয়ার প্রাধান্ত প্রকাশ পার।

## কার্বলিক এদিত।

(Carbolio Acid.)

ভয়ানক বেদনা; সহসা আহিছিবি, অলকাল অবস্থিতি, একং সহসা ভিরোভাব (বেল, ম্যাগ-ফঃ)

\* স্থাসার ধারা ইহার জন্ম প্রস্তুত হইয়া ও কে। অক্সান্ত এসিডের প্রস্তুতির নির্দেষ সহিত এই স্থানে ইহার অনৈক্য দৃষ্ট হয়। नजीत्र व्यवसम्बद्धः , शहसामप्ताः , नीरमन मिथुन्ताः स मीडल प्यापिकाः। (कामित कोर्द्सा (खिलि, जिस्त )।

भातीतिक श्रीतप्रध्या, न्यनांक श्रीयक दें हिटल ७ नतार्यत देवान श्रीता, विक्षा भाषात्रकः प्रक्रिय कर्षा स्थारिकत छेदर्शक

मशुरकत व्यापानिकात अस्त अस्त अस्त अस्य कि जित्र जित्र विवाद स्व कि अस्त अस्त कि अस्त

জারিদায়ের ফতে পরিণতি ও রস্থানি নিঃসর্

मूथ-विवस, नामिका, गण भगा, नामा-तक मत्रणांत छ जानका १० (valgina) इहेट्ड इस्डि (putrid-951) नाम मिश्मत (जञ्ज, भार्ति, भारेद्रा)।

দুষিত স্বালে-টিনা ও বসস্থ ( এম কা )

व्यथात्राम (दर्जाका) मञ्जयात्रा निमान्किक क ; अधि व्यमात्रक, व मर्निष्ठे (crimbed), दर्काममारूक व्यक्तिक भागा भूषा (कादमक्त )

छ्हेकि मिनता ७ छामाय दगारनक ग्लूटा ( जगात, कादबा-८७क्षि ) ।

मछाशामा, गिर्धिता, इत्यार मामूजिक निर्मायम २ वा भाग दहादम्य वम्म, मिलम, अभागाहित्यम छ। य भव्छ वर्ष भ्वण गर्भाष ।भन (भाग्रेटन )।

শৈষিণ বিষ্ণাৰ চাঁচ ৰ ভাষ তংশ শাস ছি কুছনে নিঃসারণ সকলাপ্র বজাতিসার (dyponitery) (বসাস্ব); পাতেপা, অনিজ্ঞায়নানগত কুফাবর্ণ, অসহা গ্রণি অভিসাল।

ভযক্ষর তুর্গদা শাস সহকারে কোঠবদা (ওপি, গোর)। বিদাহী, গভূত চুর্গদ গরুলবর্ণ পদর

प्रयुक्त । क्रिया विकास क्रिया क्रिया है क्रिया है क्रिया है क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

घेनोजित्म अववा जाण्यामा अतिवाद छत्कत्य कामिन क्रिक्तितान क्रिक्ष क्रवा दकान जा राद्य भगोर त वाक्षार्थ वाज्ञत्य खर्णाम्ब आहेजात चिनिनाद लापार्थ छेरात जाष्ट्राक्षत्र छ वाक्षिक विय-टाग्य निनष्ट रा

## कादर्वा এनिम्यालिम।

### (Carbo Animalis)

শিরঃপীড়া —মাথায় যেন বাভাবত (ঘুণীবায়ু) গুবিষ্ট ইইয় ছে এরাগ অফুডব; মাথা যেন থও গও করেয় উড়াইয়া গইয়া গেল এরাণ অফুডব, রাত্তিতে উঠিয়া বসিয়া মাথা ধরিয়া রাখিতে হয়

শৈরিক রক্তাধিয়া, নীলগণ্ড, ও নীগওঁচ, ও অতিশয় দৌক্ষণ্ডাবিশিষ্ট পরিণত-বয়স্কদিগের রোগ

রক্ত-সঞ্চালনের জীণতা ও স্থিতিশীলতা (stagnated), এবং শারীরিক উন্তাপের অত্যন্ত অল্লভা, নীল-রোগ (Cyanosis) (এণ্ট-টার্ট, কার্মো-ভেমি)

প্রান্থি ---- দাড়, কক্ষ-ভঙ্গ, কুচকী, স্তন প্রস্তৃতি গ্রন্থির দৃঢ়তা, ফ্রীডড়া, ও ব্যথিততা; ধারাণ শঙ্গ-বিধ্বৎ, কর্তুনবৎ ও জালাবৎ বেদনা (কোনা);

ऋष भूरवत्र प्रविष्ठ भूरव र। त्रमानीरक शत्रविष्ठ ।

উদ্ভোগনে, এমন কি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভার উঠাইতে সৃহজে শারীর চম্বিয়া যাওয়া; কিছু উঠাইতে সহকে অতিশ্য হ্রালভার উৎপত্তি, হাটিবার সময় পাষের গোড়ালি ঘুরিয়া যায়

সন্ধির হর্মশতা; সামাজ পরিশ্রেষে উহা সহজে মচকিয়া যায়। বিমুক্ত শুক্ত, শীতল বানুতে অঞারুস্তি।

ঋতু-প্রকাশের পর ধতুমভার একে প্রবিলকো যে কথা বলিতে পারা যায় না (এলম, কক); কেবল প্রাত্যকালেই ধতু-মক্ত প্রাথাহিত হয়।

শ্রুপজির বৈলকণ্য, কোন্ দিক্ হইডে শন আইনে বলিডে পার যায়না

সুসমূস বেষ্ট গুদার ( pleurisy ) ইইতে আয়োগ্য লাভের গর বলঃস্থলে একপ্রকার স্থলী-বেধবৎ বেদনার অবশিষ্ঠতা ( রাণ-বন্ধ )।

রকঃ, প্রদর, অভিসার সক্ষই অবসাধকর (আস্থিন স্কলই জ্রন্ধ্যয়, সোরি)। छिश्रह्य।—-(क्वीन शृहेतात श्रात श्रीक (त्यीन व्हेनोत्र श्रात श्रीक (त्यीन व्हेनोत्र श्रात छ्र्यात श्रीक (त्यीन व्हेनोत्र श्रात छ्र्यात श्रीक छ्र्यात श्रीक छ्र्यात श्रीक छ्र्यात श्रीक छ्र्यात थ्रात । व्हेनोत्र श्रीक छ्र्यात श्रीक छ्र्यात थ्रात । व्हेनोत्र थ्रात ।

मञ्जा ।——(३) काध्य-धरमत म १० वस्पूनिक भवत (२) नाम, द्वाम, कार्यन -८७ सि, फम, मिलि मणस्यत महिक भगवत मध्य (७) न । या । ७ वहां अधिम आह रत्तत भक्षण्य कार्या कालमाणिम घणका (कांदर्श-८७ सि, ८७)।

### कादर्या ७ जिट्ठे विनिम।

(Carbo Vegetabilis )

ध्वक वा वृक्षितर्गत कावभाषकाक द्वार्शम मनकरण (भिष्क, क्या, द्यांति); ज्वर ध्विणीष्ट्रक व्याप्ता कावभम कीयमीणिक विभिष्ठ थाष्ट्र-विक्रक वाकिषिरग्र श्रक्ष , दहे छेष्र छिन्द्यांशी

भूक्षवर्षी दत्रारशत्र रमोक्षणकत्र यरणत्र व्यवस्थित विमागान्छातः, वाणाकारभत्र होम वा कारमत व्यवस्थित व्यक्षिणका भाग-रप्तारशः, व्यथिति यभित्र यभित्रा वान्यनिक व्यक्षिः मारमाः, भीषिकाण भूरक्षत्र खिल्णारख्य यरवः, व्यवर हे।हैण्डाख व्यवस्थ कथा प्रहेरक व्यन्तर्भात्शः, कारक्षा-रखिक खलरगान्।

क्रेनोहेरनत्र क्र्मटल, विष्मपण भित्रांग जारात्र अवर्षार्थ; भागम, भवन, छ भवनांक मार्ग्य अवव्यव्याद्य; महे मदछ, भारम वा यमा दमव्या; जवरं अजिला छेल्ला श्वाराह ; अक्ष्म।

রজাদি তরল বিধানের অপচয়ের সন্ধ্যন (কষ্ট) । শৈলিক বিদ্ধীর ভগাবস্থা হটতে রজাপাত (সিশ্ব, ফস)

স্থৃতি<sup>দ</sup> জিন্ম প্রধানতা ও চিত্মাশফিন্ম ধীয়তা।

সংগ্রহ পর্যান্ধ প্রতিদিন নাসিক। হইতে রজপাত, পরিপ্রয়ে উহার বৃদ্ধি ; রজ পাতের পূর্বে ও পরে মুন্মথালের পাতুষ্কতা।

क्षिणिक विश्वीमत्र त्य त्कांन यात्र स्ट्रेट्ड प्रख्यकान्छ, छश्रत्मस्, स्थानीक्ड

ব্যক্তিদিগের রক্তশ্রাব , ত্রালীভুড বিধান-তন্ত হহতে রঞ্জারত হণ, শ্রিনী শক্তির অবসরতা

পাণ্ডুর, নিমগ্ন, আকুঞ্চিত মুখমগুল; উত্তাল পিণ্ডুন কোনে)
ধুসলভ পীত্রর্ণ ঈষৎ নীগবর্ণ শীতল ঘর্শ্যে শীতল, মুল্মগুল, মুগুল অ'বেৰ পর

দত্তের শিথিলতা, যাড়ী ২-তে সহজে গজনাব

যাহাতে বোগীর অহথ করে রোগী দেই সকণ জায়ের আ বাজা করে পুবাংল ম্লাপারীরা ভ্ইন্সি বা প্রাতি চায় বোগী দেরের চারিদিকের কাপড় চিল করিয় দিতে চায়

পরিপাক শক্তির ছর্নাল্ডা — আত্যন্ত সামান্য আহারও সহ্য হয় না; আম বারে ও অল্রে অভিনয় বাল্প স্থায়, শয়নে উহার আর্থিয়; আহার বা পানান্তে আমাশয় যের ফাটিয়া পা বে প্রাকার অন্তর্গ অভিরিক্ত মদিবাপান, অধিকার তিতে আহার, ও অধিক মদলা যুক্ত খাহারেয় মন্দ্রাল

উদ্যারে অল্পকালস্থায়ী উপশ্য

শিরামগুলীর বোরের প্রাধান্ত (সলফ), রজে শস্মাক অব্যিলেন সংযোগের লক্ষণ (আর্জনাই)

কৈশিকানাড়ীর (capil my) বজ্ঞ-সঞ্চালনের প্রসন্থান বদ এঃ প্রকর
নীলাক্ততা ও হস্তপদের শীতলভা, প্রাবদীশক্তির প্রায় অবসংভা, আবিরত
প্রাথার বাতাস পাইবার ইচ্ছা।

স্বাভাগ সন্মা কালে; আর্দ্র সন্মাবান্ততে; ও উষ্ণ সিজকালে স্বভাগের বৃদ্ধি, এবং সম-চেষ্টান্ন উহার বিফলতা ( প্রাতঃকালে বৃদ্ধি, কষ্ট )

অন্ব-প্রত্যাদের শীতগতা বশতঃ নিদ্রা হইতে জাগরণ এবং রাত্তিতে জানুর শীতলাতা বশতঃ কষ্ঠ (এপিন)

বারংবার, অনিচ্ছার নিঃস্তে অভিত্র্গণ মল, মলত্যাগের পর আলা ; কোমল মলও ভানারাদে পরিত্যক্ত হয় না ( এলম )

রোগের চরম অবস্থায় (last stage) প্রভুত দীতেল ঘর্ণা, দীতেল দ্বাস, দীতেল জিহ্বা, ও স্বর লোপ লকণে, এই ঔষধে থাবন রক্ষা পাইবে পারে जिश्विष्ठ । भागन म्करना यास्म, न्यां कर का । गरान कुरनारेन, भिष्ठभाग अ शाक्षण अवन्यवाद्यात , एटेएक्सन व न्यां भारते अनेर एम, आक्षणारण।

উপশ্য উদারে, ও পাশার গাডাগে, ধাস

माय्या ।— (१) काशि-कार्त व १०७ व्यस्पृतक १४५ (१) द्रानिव्यां िक खेयर ४७ व्यस्पृ जित्र व्यक्ता ( अणि ) (१) छ १० व्यक्त विद्या विद्या

## काली कार्विनिकम।

#### (Rali Carbonioum)

क्षकारकम, भिष्मिण रमर-जिक्ष, रमप-क्षायन वृद्धिष्मरनात दवान, विरूप्यणः रमाण क नक्षायाण ( क्यम-क्षाद्ध, जाम)

भित्रोदस्त असम् अमार्थ अवना स्रोबनीभिष्टित अभित्रस्त भएत, विष्यकः सोबन्धः चार्किमिर्शत भएक (भिक्ष,फम-व्यभि, फम, दर्शति ) वहे क्षेत्रम छेभरगानी ।

भूषी दिश्म, ७ हिक्किमाता दिशनीश्यङ विश्वामकारण व जातिनास्त शार्थिनास्त निर्माणकारण व नाविक नार्थिन महिन स्वाम स्व

जारग्रात क्लोर्म महा कितिएक लोगा योग ना; जेगर क्लाब. विभागकः १ म-क्लोर्म, दर्शनी हमिक्छ श्रीमा छिर्छ। ওকাকী থাকিতে অভিশয় অপ্রস্তি (আস, বিস, লাই-একাকী থাকিতে ইচ্ছা, ইয়ে, নক্স)

উপরের অক্ষি-পল্লব (oye l'ds) ও জার মধ্যবতী স্থানে । থলীর স্থায় স্ফাততা।

রম্পাত্তে, এবং স্বপ্নে বেতঃপাত, গর্ভপাত,ও হামের পর চম্মুর ছবলতা আমাশরের ফীতত ও অতিশয় অনুভৃতি; যেন ফাটিয়া পড়িবে এরপ অন্ধতর, অতিশয় আগান, রোগিণী যাহা কিছু পানাহার করে তাহাই যেন বাঙ্গে পরিণত হইবে বলিয়া বোধ হয় (আইওড)

প্রাতে মুখ ধুইবার সময়, নাসিকা হইতে রক্ত-পাত

কেবল আহার করিবার সময় দাঁত-বেদনা; দণ্দপকর বেদনা, উষ্ণ বা শীতশ কিছু দাঁতে লাগিলে বেদনার আধিকা

গর্জ-পাত প্রসর বা জরায় হইতে রক্তরাবের পর; ও আহারকালে, পুষ্ঠ বেদনা, ঘণ্ম ও প্রকাতা; হাটিবার সময় বোধ হয় যেন হাঁটা ছাড়িয়া শয়ন করা আবশ্রক

কাস।——— শুদ্ধ, আবেশিক কাস, কাসিতে কাসিতে আঠা আঠাগোম ব পুষ্ আল্গা হয়,উহা গিলিয়া ফেলিতে হয় গল-ব্যোধ বা ভুক্ত দ্ব্যে বমন বিশিষ্ট আকেপিক কাস, কাসিবার সময় গলা হইতে শক্ত শুদ্র, অথবা ধুমল থগু সমূহের বিকেপ ( ব্যান্ত, চেলি )

খাতু হইবার সপ্তাহ পূর্বের তাহ্নথ আমুভব, ঋতুকালে ও ঋতুর পূর্বে পৃষ্ঠ-বেদনা

खक्त अभव-दामना ; क्षायण शृष्ठ-दामना ; शृष्ठ क्षाता शिष्ठ इदेशात है। (क्ष्ठ)।

উঠিয়া বসিলে অথবা সমুথদিকে অবনত হইলে কিংবা আন্দোদিত হইলে উপশ্য-প্রাপ্ত খাস-যোগ (asthma); রাজি ২টা হইতে ৪টা পর্যান্ত আধিক্য

কুসমূদের কত রোগগ্রস্ত ব্যক্তির এই সোর-দোষদ্ব ঔষধ ব্যতীত কদাচিৎ সারোগ্য প্রাপ্ত হয়।—হানিম্যান। शिक्षित्क आयाम , भगरकारम (Phray x) मध्य-कर्षकि विष्क्रत आया एकमनवर (Sticking) दवमना (शिक्ष नाष्ट्र-क्रीम ) ; वायुनभीर क मश्रस आवादित भरवम , शिक्षियांत्र मस्य शिक्ष दवसना ।

दकाष्ठ्रवस्त्रका दृष्ट, जावारम ( illicu t ) निश्मितिक, अध्ये जन पर्का शुर्क्त द्विमात्र प्रकोटनपननंद रनमना मरगुक, गन

হুৎ পিণ্ড ।---- মেনাপরস্থতার (Inity desc) নামে। ও বব তা ( ফ্স) । বোধ হয় যেন হাৎ হিণ্ড প্তাঘায়া ঝুলায়মান কহিছা হৈছ (লাাক্ষ)।

धम धम भिन्गांशा ।

সম্বাধি । ( > ) कार्त्वा-एणिय मिष्ठ अञ्चल्या मध्य ( २ ) तार्थ, नारे, नारे, नारे-जिम, होरनय २ ६७ ममछन मध्य । ( ७ ) ७ मण, घण्य ५ म विभिष्ठ कारम, कानी-मण, एम, होरनय भरत हैदा जान नारे ( ६ ) आहि-मिछ वावदार म मू म हहेरन जहें छेष्ट्य स्टू शिकाभिक द्य कार्तिमान

# কালী বাইক্রমিকম

(Kali Biohromicum.)

প্রতিখ্যায়জনিত, উপদংশ জনিত ও সোরা-দোষ্থানিত যোগ-ভোগী সুশ্বায়, গ্রু-বেশ ব্যক্তি

জুপ ও জুপফনিত রোগ প্রবণ সূল, স্থান্য, স্থান-গ্রীয (altait necked) বালক বালিকা।

চক্ল, নাদিকা, মূথ-বিষয়, গল-বিষয়, বায়ু-নগা-ত্বন, জানাশয়ান্ত্ৰপ (gastro-intestinal tract) এবং জনন ও মূএ-বন্ধ পথের হৈ দিক বিষ্টার শীড়া—ভূদেছ্ত্য রজ্জ্বৎ (প্লাজান্ত্রাব্, উহার এক অংশের সহিত জন্ম অংশ লাগিয়া থাকে, টানিলে দীর্ঘ দড়ির মত লম্মা করিতে পারা যায় (হাইছা, লাইসি)।

গ্রীশ্বকালে সম্ৎপ্র রোগ বিমৃক্ত বায়ুতে শর্দি লাগা।

পর্যায়ক্রমে আমবাত ও আমাশয়ের উপস্তব, শরৎকালে এক বোর্গের ও ক্ষমতকালে অপর রোগের আবির্ভাব, আমবাত ও আম-রজের প্যায়িক্রমে উপস্থিতি (এরো)

বেদনা সুদ্দে সুদ্দে স্থানে বেদনা, অস্পার অগ্রভাগধারা সেই সেই স্থান আয়ত করিতে পারা যায় (ইটো), একখান হইতে অন্ত স্থানে ক্রেডিস্বেশ্বর বেদনার অবস্থিতির পরিবর্তন (কাল্য-সল, ল্যাক-ক্যান, পলস); সহসা আবির্ভাব ও ভিরোভাব (বেল, ইটো, ম্যাগ্র-ফ্রম)।

প্রতিদিন একই ঘটকার নাব্-শ্লের উপস্থিতি ( চিনি-সল )।

আমাশরের রোগ — বিরাধ নামক মধিরা পানের মক্ষণ ; বুভ্গার (কুধার) বিসুপ্তি; আমাশর-গছবরে গুরুত্ব; আগান; আহারের অব্যবহিও পরে বৃদ্ধি; রজ্জুবৎ শ্লেয়া ও রক্ত বমন; আমাশরের গোলাকার কতে ( সিম )।

নাসিকা —নাসা-মূলে এ চাপনা বেদনা (কপালে ও নাস -মূলে ঐ প্রকার বেদনা, ষ্টিক্ট); গৌজেরমত শ্লেত্মাত্মাব, ত্থেছেড, রজ্বৎ সব্জ বণ তরল শ্লেম নিঃসরণ; পরিকার রাশি স্বাশি শ্লেমা-নিঃসরণ, শ্লেমান্থাব সহিত হইলে মন্তকের পশ্চান্তাগ হইতে কপাল প্রান্ত প্রবল বেদনা

দাসারদ্ধুবন-প্রভেদক অস্থি পণ্ডের (Scittum) শত, ও রজাত্ত প্রাব অথবা শক্ত শক্ত শ্লোরা বড় বড় পণ্ড নিঃসরণ (এলম, নিপি, টিউক)

ভিপথিরিয়া—স্মৃদ্, মৃক্ত -সদৃশ, তন্তময় (fibrinous), নিয়াভিমুথে শ্বর্যন্ত্র ও স্কঠনালীতে প্রসারণ-প্রবং ক্রিম বিজ্লা

আলিজিহব। জলপূর্ণ কোষের ভাগে দৃষ্ট হয়; উহার অধিক স্বীততা, কিছু অয় আরক্ততা (রুমট্রু)

কাস ---প্রবশ ঘড় ঘড় শব্দ সংযুক্ত, গলায় আঠা আঠা খোমার স্কায় বশতঃ গল-বোধজনক, কাস; কাগড় ছাড়িবারসময় উহার আধিকা (হিপ)

জ্প—ভগ্ন ধাতিব স্বর (কর্কশ ঠন্ ঠনে গলা) প্রাতে জাগরণাতে হশ্ছেম শেষ অথবা থিতিস্থাপক তন্তময় পদার্থ নিষ্ঠীবন, খাস-ক্লছে, শ্যানে উহার উপশ্য (শ্রনে আতিশ্যা, এরেল, ল্যাক)। न्न-दक्षारम উপদংশক नछोत-थामक (dee) cat ng) घड

भित्रः भोषा --आ क्वारनात शृद्धि अशातिष्ट्र पृष्टि अश्वा पृष्टि-होनाज (८वन, माक-१७)। उद्ध्य भवन कविवा भावनात आवश्वकला; आलाक ७ भरम विव्रिक्ष भित्रः भोषा विष्ठ क्रेट्ट शूनत व पृष्टित श्वारत अ (अम्हेदिस, भ्रान), आक-१७

কন্দ, গ্রীমকালে উহার পরিদ্খামানতা। মাংসগ ঘাতিদিগের সজোগ-লিজার অসম্ভাব উপচয়।—গ্রীম গড়তে; ও উত্তথকালে; রুদ্ধি।

উপান্ম। --- শীতকালে চণা লগাণের উপশম (এনম ও পেটের বিং রীও)।

স্বাহা ।—( > ) क्रांष व्यविष्ठ दिवान क्रांत्रण विष्ठ विष्ठ

# কালী-ব্রোমেটম

(Kall Bromatum, )

शूनकाम त्यस-दर्भाग-आवन वाजिनियिशम ० एक वाहै क्षेत्रम छिन्द्रशामी ; गूनक व्यतनका वानकभिर्माम आकिहे हैहांम छित्कृष्टेशम क्रिया प्रदर्व গল-গহরর, স্বর্ধন্ত, মৃত্র-মার্গ, প্রভৃতি সমগ্র শরীরের অন্নভ্য-রাহিতা, আন্দোলিত অনিশিঙ্ক গতি বোধ হয় যেন ক্ষর্যাধ্য পার্শের্দিকেই চলিতেছে

সামবীয়তা, অস্থিয়তা, স্থিন হইটা বিটিটা পাবিতে পারা যায় ন, নড়িয়া চড়িয়া বেড়াইতে অথবা কার্য্যে নিবিষ্ট পাকিতে ধয়; হস্ত ও হস্তা সুলী সর্বিদাই সঞালিত হ্য; হস্তদ্বিশেব অভিনত ( গ্লব্যের অস্থিনতা, ক্রিক্ষ) হস্তাসুলীর স্পাদন

অদ্যা ক্রন্দন ও গভীর বিষাদপূর্ণ প্রান্তি অর্থাৎ শ্রবাস্তবিক বিষয়কে বাস্তবিক বোধ করিয়া বিষয়তা

श्रीक-भ कित की गठा; कथा विलिए छूल হয়; विभाषक।, क्यान कथा वनाहेवात शूर्व्स मिट कथांकी विलिश मिटक हम ( जनाक)

নিষয়তা, হতোৎসাহিতা, উৎকণ্ঠা, বোধ হয় যেন চিন্ত-ল্রংশ ইইবে। পেশীর অসামজন্ত (জেন) সায়নীয় দৌবালা অথবা গতির জবতাও অনুশতা বিরক্তি ও শোক, সম্পত্তি বা সম্র্যেশ অপচয় এবং বিষয়-কার্য্য-সংক্রোপ্ত উপদ্রব বশতঃ অন্থিরতা ও নিগ্রাহানতা

वालकिपितित वािकिपिति छा (काणो-कम), निर्माय में ए क्ष्यफ, किरकात, क्ष्यि, क कन्मन कत ; अध्यत यश, कांची य वस्मात क्ष्यि भाषि ख्या ना । वश मकत्र (मिणि)।

আইট্র ডিলিজ নামক সোগে, আক্ষেণ।

অপশার।—আজ্যা, উপদংশজ বা টিউবারফেল অনিত অপশার, সাধা-রণতঃ ধাতুর হুই এক দিবস পূর্বে; ও অমাবভার সময় রোগের আবেশ, আক্রমণের পরে শিরংশীড়া।

মন্তিকের প্রতিশিশু উপদাহ সংযুক্ত শিশু বিস্ফটিকা, মন্তিকে সম্প্রাণেব পূর্বে; হাইড্রোকেফেনস্থের প্রথমবিস্থায়; প্রযুদ্ধা

পূর্বাহ্ন ৫ টার সমর প্রভাহ শিশুদ্ধির উদর-বেশনা ( অপরাহ্ন ৪ টার্ম সময় কলো, লাই)। श्रुविश्वाय श्रीयनीय काम , ख्राष्ट्र, कठिन, तार श्रीनवरू, श्रुव पारश्त श्रामण्डा यमक, काम ( क्योनी )

मध्यस्य । --(>) भगमानिक विश्वास्य कात रुग्यस्य नगण स्वयस्य (२) भूष-पृथिकात्र देखिशिनिय क्षारियारम्य भागस्य अहे खेयस्य भाग्यहे आर्जानाम्यस्य

## কুপ্রম মেটেলিকম। (Onprum motallionm)

व्यारिकार। अध्या अध्य भूटल क निकारिक मगरम स्थान-मन्यर्गम व्यारिकार।

अञ्जिषिका मान्तिक भाषामा अवर नित्निको निका (कक, भरा) नामा भामभिक ७ भाषोतिक व्याग ए , व्यवसा উৎक्षीत व्यागमा

লালালার স্কারে মূলে জীব, স্বাহ শিষ্ঠ থাতের জীবাটে (ভাষারৎ) আমাদ (রুসট্যা)

मर्शित श्रीम व्यविद्यात स्थित नावित भना व खिल्ड द्याखा (कार्य)। नाम अतिवाद मध्य छत्रन भार्थ द्यान भरम भागा (ख्यान क्षा) जैनदा ख सद्याम नम्हासादा (न्द्रम खिन्म) नामेश्व सभाखेत

छिएस-विस्मिदिशत वर्षाय विषय विषय याकरात्र भनामक (वावित्र ना इत्यात्र मन क्ष्म, सिक्ष), क व्यव्या मिल्रिक्ष भोषा, जारक्षभ हेषात्र, व्यन, भारम्य पर्णित विस्मारभन्न भनायक (शिक्ष, सिक्ष)।

नीगवर्ग म्थमएक व भाक्षिक क्षण्ड मह छेषात्र ( मक्ष्य )

\* নীর-শাধায় থল্লী (c amps ), করতলে, পদততে জভ্যা-পশ্চাতে থল্লী তৎসহ অঙ্গ-প্রত্যক্ষের অভিশয় প্রান্তি

ঘনঘন পেশীব সঙ্কোচন ও প্রদারণ বিশিষ্ট আংক্ষণ, হস্তা সুলী ও পানা সুলীতে উহার আরম্ভ, সমগ্র শরীরোপরি সংপ্রদারণ; গর্ভাবস্থায় আক্ষেণ, প্রসনাস্থে আক্ষেণ (দড়কা), ভয় ব বির্ণিণ পরবর্তী আক্ষেণ, অঞ্জ যন্ত্রের রোগের মন্তিক্ষের স্থান-বিকল্প বশতঃ আক্ষেণ (জিক্ষ)।

জিহ্বার পক্ষাঘাত; অসম্পূর্ণ, ভোতলা কথা

অপসার —জাতু হইতে "অরা" অর্থাৎ এক পকার "সর্সরের" আরম্ভ ও ্ উপরে উথিতি; রাত্তিতে নিজাকালে র্দ্ধি (বিউফো); অমাবভার সম্ম; মিশ্ধারিত ব্যবধান-সমরের পরে অর্থাৎ পাতৃকালে; পতান বা মন্তকে আঘাত প্রাপ্তি হইতে; ও অলে ভিজাতে; রোগের আবেশের উপস্থিতি

বোডল হইতে অল ঢালিবার শব্দের স্থায় কাদের গলগলাকা ।

শীতল জল পানে কালের উপশম (কষ্ট শীতল জল পানে বৃদ্ধি, ক্ষাল্ল)
ছপশ ক্ষ-কাস — অনেকলগন্থারী, খ্যাস-ব্রোধকরে, আলেপিক, কাস;
কথা বলিতে অণজি; খ্যাস-শূরাতা (বেলগ হইরা পড়া), নীলবর্ণ মুখ্মগুলা,
শারীরের-দৃঢ়তা ও স্তব্ধতা; ক্রমান্তরে তিন আবেশ (স্থান); হৈতল
লাভের পর অভরল ভ্রজন্তর ব্যন (ক্যান); প্রভাক আবেশের সহিত
ক্যাটালেলি সদৃশ আলেপ

জন্তবার পশ্চান্তাণে ও পদওলে উগ্র, যাতনাঞ্জ প্রস্বান্তিক বেদনার গতি উপ্রান্ত —শীতল বায়ু; শীতল বাতাস (wind); রাজিকাল, পদের ঘর্ম বা উন্তেদের বিলোপ; বশতঃ বৃদ্ধি।

উপান্ম।—একটোক ঠাণ্ডা অলগিলিলে বিবমিষা,বমন, ও কালের হাস সক্ষা।—(১) ক্যালকেরিয়ার সহিত জারুপ্রক সম্বন্ধ (২) ওলাউঠায়, আসেনিক ও ভিরেট্রমের সহিত তুলনা হয়; ইশিকাক কুপ্রমের উদ্বিদ সমগুল। (৩) হুপশ্ব-কালে ও ওলাউঠার কুপ্রমের পরে ভিরেট্রম; এবং উদ্বেদ-বিলোপজনিত মাক্ষেপে এপিস ও জিক; ভালগাটে।

### 64141

#### ( Coon )

कार्याभीन कोवत्न व्यक्तिम भागात्वक अ मानामक निवसम वभ उः स्वाद्वतः क्षत्रक्षाक्षिः। अवर स स् अ गोर्खक्त व्यवस्त्वा निवसन शोक्षा ( (प्रान्त-अ))

ত্বায়বীয় আবস্মতী লানত ব্যাদ , সলজ্যতা, ভারতা, শোক সংস্থো অস্বচ্ছদান্তা।

বিষয়তা, কোপনতা, নির্জ্জনতায় ও গুপ্ত শায় আন দ

মদিরা ও ডামকুট সেবনের স্পূহা, এভান্ত উত্তেজক পদার্থ সেবনের আকাজ্যা

ব্যায়াম-জীড়ায় নিযুক্ত ব্যক্তিদিগের; রুদ্ধণেরের, এবং অধিক পরিমাণে শুইন্ধি মদিরা ও তাত কুট মেবিদিগের, দ্বাস্থ-ক্রুস্কা।

वयाश्वरभव रशीवेद (opportsion, bravines-) **७ व्यान-१८६ महकारव** 

मिजां जूत्रका, अवह दक्षांबां व आताम शावमा माम मा

বাডাগান গল ( আর্জু-মা, মরা ); অভিরিক্ত প্রিশ্রম বলভঃ; এবং স্বৰ-পিডের অভিন্যিয়া হইজে আর্ল, বোরা, কন্ত ); প্রবল স্বব্দন্দ।

भक्षा वा द्यामियांच व्यादियांकद्यां मध्यमण (व्याम्); উत्त्रिक स्वा, यशिया, विश्वा, विश्वा, व्याप्त द्रव्याम स्वाम ।

बारे खेरार में राज्य दक्षिण निवासिक स्था।

সাধার্যা ।----(১) রোগার আলোক ও লোক-সংস্থের ইছোম, ব্রামো; এবং অন্ধর্মার ও নির্জ্জনতার আকাজনায়, কোকা; বাবস্তুত হয় (২) জামাকের বিষয় স্বরূপ প্রথমে কোকায় বাবহায় হইয়াছিল

# কোনায়ম ম্যাকিউলেটম।

### (Conium maculatum)

রজোনিবৃত্তি-কালে ও রঞোনিবৃত্তির পর বৃদ্ধা কুমারী ও পাদিশের রোগে এই ঔষধ পরমোপকারী

বৃদ্ধ প্রথ , বৃদ্ধা ক্ষারী, বৃদ্ধ কুমার, দৃঢ় পোদা-ভন্তবিশিষ্ট, সহজে উত্তেশনাশীল লঘু-কেশ ব্যক্তি, শারীরিক পরিশ্র পরিশ্র বলবান ব্যক্তি, এই সকল রোগীদিগের রোগে কোনামর বিশেষ উপযোগী

যুদ্ধদিগের ত্রবেশতা , আঘাত ব পতনঞ্জনিত নোগ , বিবর্দ্ধিত গ্রন্থিনিছি, ক্যাম্পার ও প্রাক্তাগ্রস্ত , দৃঢ় তন্ত , ব্যক্তিদিগের রোগ

কার্য্য বা অধ্যয়নে প্রেবৃত্তিপরিশ্স ; অলস, উদাসীন সকল বিংয়েই অমনো-যোগী ব্যক্তি

শ্বতি-শক্তির চুর্বলন্তা, মান্সিক (চষ্ট সহ্য করিতে অসামর্ণ্য

উপ্রস্বভাষ; সহজে বিরক্তা, প্রভূত-প্রিয়া, বিবাদী, ভর্জনকারী, প্রতিবাদে অসহিয়ু ( অর ) ব্যক্তি; যে কোন প্রকার উত্তেলনায় মান্সিক অবসাদের উৎপতি।

একাকী গাকিতে জয়, অগচ লোক সংসর্গ পরিত্যাগ (কালী ফা লাই) গ্রন্থির প্রস্তারবৎ দৃঢ়তা; স্বষ্টব্রণ ও উপথাতের পর , কর্ন ট রোগ-প্রবণবাজি দিগের স্তনের বা অণ্ডের দৃঢ়তা

ধাত্কালে ও ধাত্কাংলন পূর্বো স্তানের স্পার্শ-বেষ, কঠিনতা ও ব্যাণিততা, (গ্যাক-ক্যান, কালী-কা)

भिरवाचूर्नन । -- विटमचछः, भारत जाता छ भारता श्रीभा कितिवाच जारा ; यरुनाचाळकरण मछक-मध्गाणरम, ज्यापा छक् मध्माणरम ; भारा रचारक मछक मण्मूर्ग ऋषित ताथा ज्याचळक रुव ; वामिरिक माध्या किताहिक (करना) ; बुक्षिर्णन , अवः छिचाणरवत छ अङ्गिरवत श्रीकृति महिक महिक महिक महिक भिरवाचूर्नम ।

কাস; পরয়ে শুদ্ধ স্থান জয় উৎপন্ন, থাকিয়া থাকিয়া কানের আগেপিক আবেশ (spasmodic paroxysm); বক্ষাস্থলে ও রলার অভ্যস্তরে কও য়ন ্লাইওড), রাজিতে, শ্যন-স্মায়ে ও গার্ডাব্দ্যাস, অংগ্রা (কট কালী-বাই)

মূত্র-জাগে অভিশয় কট। মূত্রে-প্র বাহের সনির মৃত্য ; মন একণা। থামে মাবার পড়ে; মূলাশনের মূথশায় হাছির অথব গড়াশয়ের হীড়া

सङ् — क्रीन, विल्लुख, निग गेड म्मरमन अरनक गरन, अडाझ गनिमार निग्लंड, ब्रह्मकां क्षामों , जारम भूज भूज रमान्डि वर्ग खर्ड निग्लिंड इंटन खेहान विरमाण ( छम ) मक्ष्माणन , मिंद व जार वर्ग हैं। मीजिल क्रारम् होड निथित्न ख्यान्डिस ( मान्डिन छ) , न्नरः।

खाता ।--- श्राञ्चता मन्तिम श्राप्त क्षाता ( त्य ता, दवाछि ); विभाशे प्रकारण ; इक्षांकात्र , क्षांक्र , नाष्ट्र , मिन्ताय , स्थान ।

মদাদশ —সংযত সঙ্গল-প্রতির, অণা বিলুপ্ত ঋজুর মদাদশ ; কাম প্রবৃত্তির অপরিত্তি, অণা অভিপরিত্তির সদাদশ ।

চক্ষ প্রদাহ ব্যতাত্ত আলোকে বিভ্যা; ফারম কালোকে চক্ষ ন্যবহায়ে উহার অভিশ্য , সাগিতে পড়িয়ার অভ ছাত্রির থয়। , তার আলোকাভ্য (গোরি)।

বিশারাজি খণা, নিয়ো আ|সিবামাত্রা, অথবা চক্ষুরুজ করিবাসাত্রা শর্ম (সিশ্ব)।

উপচয়।—वाधिष्ठ, भगतः । भगाय । भ किवित्य वा छेठिया विभरतः । छ कोगोर्था ; इक्षि

## কোলিনদোনিয়া।

(Collinsonia)

বস্তি-গহবরে (pelvis) ও যক্তের শিরায় রক্ত সধ্য জনিত রজঃকচ্ছ ও

অর্শনহ বন্তি-গহবরের যন্তে রক্ত সঞ্চর, বিশেষতঃ গতেঁর শেষ করেক মালে। হাজোগজনিত শোগ।

অর্শ ও অগি মান্দাগ্রস্ত ব্যক্তিনিদের জ্বকন্স স্থাপত্তের ক্রিয়ার প্রতি-নিয়ত ফ্রতা অথচ হ্রবলত

পুরাতন যাতনাসংযুক্ত, রক্তজাবী অর্শ ; সরণাঙ্গে যেন কার্চ-থও, বালুকা অথবা ক্ষম ক্ষম প্রস্তর রাহ্যাছে এরূপ অমুন্তর ( ইঞ্চিউ )

অর্শজনিত সকুষ্ণ রক্ষাতিসার

পর্যায়জনে কোর্চ-রোধ ও অভিদার; রজসঞ্চয় জনিত নিয়াজের নিজিয়ভা; ধীরে ধীরে নির্গত কঠিন মল তৎসহ বেদনা ও অভিস্থা আশ্বাশন (flatulonce)

গর্ভাবস্থায় বর্শসহকারে জননে স্ত্রিয়েরকভূয়ন; শয়ন করিতে অসামর্থ্য উপচয় — বংগামান্ত মনোভাবে বা মানসিক উত্তেজনায় রোগ-শক্ষণের বৃদ্ধি ( আর্জ্জ-ন )

সম্প্রা |---(১) অর্ণাংস্ট প্রফোগে ক্যান্ত, ডিফি, ও অভাভ ওষ্ধ বিফল হইলে কোলিনগোনিয়া ব্যবস্থেয় হয় কিনা দেখা উচিত (২) ক্ষণোও নক্স বিফল হইলে কোলিন উদর-বেদনা (colic) আরোগ) করিয়াছে। (৩) কোলিনের সহিত, ইস্কিউ, এলো, ক্যাম, নক্স, ও সলফের ভূলনা হয়

# ক্যাক্টস প্রাণিওফোরাস।

(Cactus Grandiflorus)

রক্ত প্রধান ব্যক্তিদিগের রক্ত সঞ্চয় (একন) অনেক সময় সেই রক্ত-সঞ্চয় হইতে রক্তপ্রাব; রক্ত-জনিত সমাস मुङ्ग-खरा, दशाश क्यांत्यांश च नम दशांभीत विश्वांत कार ) सामिका, मृत्रभूम आसीता, श्राणांत्र असुव्यांत्राः करोट अक्ष्यांच (द्यांके, सिलि, क्ष्म)।

मुख्यक्त मधास दन कामणात भागिभानत श्रीम भिताशीण ( द हान्दन छि॰ मा, दिन्न) । त्रामि । छि॰ कारणात निद्वार्थना ( शे॰ , भागि )

द्रका-मक्षत्र स्थानिक क निष् विक भगरत छेशावन । पश्चिम भारति सिनः भौजा अञ्चार्भाग । जोज प्रभागकत, क म्योन्सन २ त दयान

সমগ্র দেহ পিঞ্জর-বদ্ধবৎ বোধ হয়, পিঞ্জরের প্রত্যেকটা তার যেন ক্যিয় মোচড়ান হয়

न्न न्य । प्रश्निक, स्वर्णिक, भूगांण्य, भवनाय, वर्षाण्य, वर्षाण, वर्ष

खिलान विकास कार्य कार्य निकास कार्य निकास है। जो किलान है। देश के स्वाद्य कार्य कार

यणः इरणत्र निर्माश्यमत होतिषियण यम मृहायण जन माहि प्रयक्त यक प्रस्थिति। जन्न जन्म कार्यन, क्षात्रोधारमध अभावे भाविकका।

লোহ নির্ণিত হতেও যেন ধংশিও শীব্র শীব্র একবার প্রত একবার বিমুক্ত ইইতেছে এপ্রকার অনুভব; স্পন্নের স্থানাভাষ এরণ আবদ্ধতা শহরত

সকল স্থানেই বেদনা। তাড়িত শুখালের আর উৎক্ষেপণ ও উল্লাফন এবং স্থান্ত আক্ষনে । রিসমাথি, তৎপরে প্নরায় উপস্থিত।

শয়ন-কালে রজ-প্রেবাহের বিরজি ( বোভি, ক্ষষ্টি )

खर्कका क्विता कि , देखिना ममग्र ७ धामनात्व भग्नत ( मान्य ) ; जबर अष्ट्रकारमत्र देनकरणे , वृद्धि

প্रविष् ५०छ। ও जनबार ५०छ। व म्या क्रबंघ जारम् मा क्रांच्या क्रांच

# ক্যানেবিদ ইণ্ডিকা।

(Cannabis Indica)

তাতিশয় বিস্মৃতি; শেষ কণ ও ভাব শারণ থাকেনা; কোন বাক্য আবস্ত করিয়া যাহা বলিতে হইবে তাহা মনে থাকেনা; মন্তিছে জ্যান্ত চিন্তা সমবেত হওয়াতে কোন ডিন্ত বা শটনা প্নংশ্বরণ করিতে পারা যার না ( এনাক, গ্যাক-কা )।

জবিরত অনুমিতি ( constantly lineal zing )
প্রতি সামাল কথার অপরিমিত হালা
কৌতুক ও অপকার করা, অনন্তর বিলাপ ও ক্রাণ্যন করা
মৃত্যু সমীপবন্ধী হইতেছে বলিয়া অভিশয় আশাদা

মান্ত্যি (refrium tramens); অত্যন্ত বাচাৰতা; সময়ও স্থান অত্যস্ত বাডাইয়া বলা

সময় অতিশয় দীর্ঘ বোধ হয় (আর্জ-না), এক বিপল একযুগের স্থায় অমুজুত হয়

স্থান অভিশয় দীর্ঘ বোধ হয়, কভিপয় হস্ত কভিপয় জোদোর স্থায় বোধ হয় করোটী যেন উন্ফুক্ত ও অবগদ্ধ হইভেছে এপ্রকার অন্তর্ভব ( এটিয়া )

স্পাধারে (perineu n) অণ্যা সল্লারের নিকটে কোন গোলার উপরে উপবেশনের স্থায় ক্ষতিতা অহুভব (তৎসহকারে মূলে অধিক পরিমাণে রজ্জুবৎ শ্লেষ্মার অব্যতি, সিক্ষ)

সম্প্রস্থা ।---বেল, হাইও ট্রামোর সহিত তুলনা কর যায়।

# ক্যানেবিদ স্থাটাইভা।

" Cannabis Sativa, )

শরীরের কোন কোন স্থানের উপর অথবা কোন কোন স্থান হইতে, যথা মন্তকের উপর এবং মলদার, আমাশর ও স্থংপিও হইতে যেন বিন্দু বিন্দু জল পড়িতেছে, এরপ অমুভব। कृष्मा (कांध-रत्तांध, ज्यम्म भूग (तांध भूग्धारत्तव आकृष्यन महिक्ता भाषत्रांत भन्न श्रीट ५ व आपूर्णन भ्रद्धां ५ विद्यांख निक्षित ज्ञेभरत्र ज्ञेष्ठिर ५ भगवादित (pitelli) विद्यांख भाग कृष्ट, व भाग-कांग दवरिन दविधित ६० व मिष्ट्रांडिया है। इन्हेंग्रा, बाग-जित्रांत्र भागकी

किलिए के शंभाग तो भा, ये कि अर्गात विभट्ट र्वान्ड ( क्यों के )

श्रामह द्यादगंद छन्छ , भागिक धनसा (विजीय व्यवस्था, मृत्यछानात्थ व्यामा, भाष, भोष्ठवर्ग भूषक स्थान अभाग, गिष्ठदान )।

भूव जानि-काटण व्याणांकत ७ मरभनकत्त, जावर १ महोद्धारम अभिक उत्त ट्राक्सनवद दिममात्र भूवामार्कत भूव रहाक शम्हाकिरक द्यानात ।

भूजमार्का वसावत कृष्टिण भक्तिएक रक्षमनवर दवमना

সম্বাহ্য । भूकियादर्शन विदेशव खोषाद्वत अधविष्ठि अवश्वात खाषि, आहेला, दशका, दशद्वीदमन महिल मगलन मध्य

# ক্যান্ডেরাইডিস

(Cantharides)

সকল অলের অভ্যন্তরের ও বাহিরের অভিনিত অর্ভুতি বেদনা, শারীরের সার্বাংদেই জ্বাহনা, অবদরণ ও টাটানি, তৎসহ অভান্ত মধ্যতা

मानिका, भूग विनम, व्यक्ष, धनन-पञ्च छ भूज यञ्च एहेएछ त्रख-छानि। প্রত্যেক বস্তুতেই বিরুজি পান, আচার, ও ডাগাকে অও বৃদ্ধি। অসমাজ মাণান করিখেও মুক্রান্দ্রের বেদনার বৃদ্ধি।

অবিরত মুক্রে-রেগা, এক এক বার ক্ষেক্ বিদ্ধু সাল রজনিভাত মূল নিঃসরণ ( সহসা মূল-প্রতি র সূত্র মার্লে তীল ক্তের্যন্, পেটোস)। মূত্র-জ্যাগের পূর্বেও পরে এবং মূত্র ভাগি-কাপে অসহ্য মূত্র-বেগ; মূত্রাশরের প্রবল বেদনা

সুব-ভাগ কালে সূত্র-মার্গে জ্বালা ও কর্ত্তনবৎ বেদনা, এবল সুস্থন ও মূত্র-ক্রম্ছ

মশ -শুদ্র বা পাত্বর্ণ, আরক্ত, ছম্ছেগ্ন গ্লের রেখা ক্ষিত, আফ্রের উপচার আয় পালপ্র বিশিষ্ট মল

স্থাে মক্তাক্ত শুক্ণাত ( লেড, মার্ক, পেট্রে )

সম্ভোগ লিকা! —স্ত্রা-প্রায় উভয়েরই সঙ্গম-প্রারন্তির আভিশ্যা উহাতে নিজার ব্যাঘাত; অত্যম্ভ বেদনাসংক্ষারে উপস্থের প্রাচণ্ড উভিডি (পিক-প্রায়)

বায়ু-পথে (air passages ) হুম্ছেড দেখা (বোভি, কালী-বাই)

ত্বক। -কোন্ধাসংযুক্ত বিস্প (erysisclas), সকল দ্রীরে কোন্ধা এবং উহাতে যাতনা ও পুষোৎগত্তি

রৌম্র লাগাতে এরিথিম ( জারাণিমা )

সকল প্রধান প্রাণাহিক রোগে জ্বালাকর বেদনা ও অসহা মুত্র-বৈগ, ক্যাহেরিদের বিশেষ পরোগ-গ্রহণ।

সম্প্রস্থা ।---- এপিস, তার্স, ইফুই, মার্কের স্থিত স্থত্ত সম্বত্ত

অগ্নি-দাহে ফোক উৎপন হইবার পূর্বে ও যোজা উৎপন হইলে ক্যাছেরিস ব্যবহার্যা। যদি চর্মা ছিন্ন না হইমা থাকে তবে যে কোন এমেন উষ্ধ এল-কোহলে মিশ্রিত করিয়া দ্রব প্রান্তত করিয়া পাগাইয়াদিয়া ভূলাদিয়া ঢাকিয়া রাখিলে সম্বন্ন বেদনার শান্তি জন্মে এবং অনেক সমন্ন কোকা পড়েনা চর্মা ছিন্ন হইনা থাকিশে স্থানিদ্ধ বা চোমানজ্ঞাে দ্রব প্রান্তত করিয়া লাগান উচিত উত্তর স্থানেই সঙ্গে গজে শকীক্ত ঔষ্ধ (ক্রুম) আভাভানিক সেবন করা বিহিত

### ক্যাপ্সিক্ষ।

### (Capsionm)

পাতল চ্লা, নাশবর্ণ চন্ত্র, ফাইপুই র জ- পধান অবচ ধারবাম বাজি
শ্লো-প্রান হাড়; পতিজিয়োবপাদন দতির অভাব ( Lack o leactive force) বিশেষ ভঃ খুলকায়, সহজে আভ বাজিদিলের; ভাল্স প্রকৃতি,কোনপ্রাকার পরিশ্রামেই প্রাকৃতি জাদো না; পরিহাসালামভা, অবচ সামান্ত বিষয়েই কোষের উল্লেম।

শিশুরা, আনার্ত বার্তে যাইতে চারনা; সর্বদাই শীত শীত অমুভব করে; অবিগ্যাকারিতা দেখার, আনাড়ি, মোটা, ময়লা, শিশু, কাল বা চিশু। করিতে অঞ্বতি

একাকী থাকিতে ইন্ছ · শুইয়া নিয়া যাইবার ইন্ডা। আরিন্তে গুণ্ড, ও নিজাহীনতাসহ জনস ও বিষয়পভাষ ব্যক্তিদিগের গৃহ-রোগ (home-sickness)।

श्रम-द्रकाष (fauces) श्रम-भगाः मांगा-त्रकः । वक्तःश्रमः भूखाणयः भूखभार्तः । ७ शत्रमाद्रवत्र व्यान्त्रक्ष्यः ।

গণার মধ্যে ও শরীরের অঞ্চান্ত অংশে, উন্তোগে অর্থশিনিত, শব্দান্ত্রীতের ঝালের জার জালা ও যাতনা অনুভব।

জালা, যাতনা। আন্তদ্য স্পান্ধের। জ্বাক্রা সংযুক্তে গলার আবৃহ্ধন; ক্রোইড, মলিল-জারত ও দ্যাত ভালুমূল বিশিষ্ট ভালুমূল-প্রদাহ (tonsillitis)।

शंक्षां पश्चित्र विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

কর্ণের পশ্চান্তানো বেদনাবিশিষ্ট শ্টান্তভা, উহাতে অত্যন্ত স্পর্শ-বেষ।
প্রত্যেকবার মধ্য-ত্যানোর পর পিশাসা ও প্রতিষার জন্ম-পানের পর ক্ষমান।
করে, প্রত্যেকবার শীতে পিশাসা, এবং প্রত্যেকবার জন্মণানে কম্পান।
যতই শরীরের শীতগতা বৃদ্ধি পার ভতই মেজাজ খারণে হয়।

সায়বীয় আক্ষেপিক কাস সহসা কাসের আবেশের উপস্থিতি; কাসিবার সময় মাথা যেন থও থও হই রা ছুটিয়া যাইয়ে এরণে অন্তথ্য। প্রজ সমরে নয়, কিন্তু সশ্পে কাদ বাহির হইবার সময় মুথ হইতে কটু ছর্গন, একেবারে কভকটা বাধু নিঃসরব।

कांतिल ( म्लाना, छान्न, खड़्च , कर्न श्रेड्डिं) पूत्र वर्जी म्हार विवता मन्त्र ।—( > ) जिनित, दिना, बार्च, कांनाछ, भन्तर गरिड कांत्रित क्रांत्रित व्या ह्य ( २ ) मिताम खदत्र कांत्रित भदत मिना छान थाएँ ( ७ ) बाक्कनकत्र, खंग'कत्र, छ होडे'दन दिनन घंत्र' किल्म छ (व्राट्डिंग' १६७७' कांक्किक्स खर्डित हा

### क गाँदभागिना ।

### (Chamomilla)

পাতলা-কপিশ কেশ স্থায়, ও উত্তেজনশীল প্রস্তির ব্যক্তি, বিশেষ্ডঃ বালক-বালিকা; এবং কাফি বা মাদক সেবন বা উহান্ন অপব্যবহান বদতঃ অভিনিক্ত অন্তভূতিবিশিষ্ট ব্যক্তি।

নবজাত, ও দজোদামকালীয় শিঙ

ক্ষণরাগী, কোপন, যাতনায় এসহিষ্ণু (কফি); অশিষ্ঠ, শিষ্ট উত্তর দানে অসমর্থ, ব্যক্তি

শিশুর অতিশর কোপনতা, ও বিরক্তিপূর্ণতা; কেবল কোলে করিয়া বেড়াইলে প্রশান্ততা; অধীরতা, এজবা সেজবা চাওয়া, না দিলে রাগকরা, অথবা দিলে বিরক্তচিত্তে গ্রহণ না করা (ব্রাই, সিনা, জিয়ো), কণরাগিতা, পরস্রোহিতা (spiteful)

শিশু যাহা চার তাহা না পাইলে সকরণ বিলাপ: গুণ্ গুণ্ করিয়া জেন্ন ও অস্বিতা।

নোগী কাহাকেও কাছে থাকা সহ্য করিতে গারে না, নিরজ-চিত্ততা নবশতঃ কাহারও কথা ভাহার সহ্য হয় না ( সিলি ); সে কথা বলিতে জালবাসে না, অভয়ভাবে উত্তর দেয়।

ব্রোধকনিত অন্থণ, বিশেষতঃ শীত ও জ্ব।

বেদনা —বেদনা অসহা বোধ হয়, কিন্তা করিয়া ভোগে; উভালে র্ডি পায়, ছইপ্রহর রাজির পূনে সামংকালে বাড়ে; বেদনার সহিত ভঙাল, প্রামা, ও মুহ্ছা থাকে; আডি ভি স্থানে অবশতা অনুভূত হয়; উলারে উপচয় অন্যে

এক গালের আরম্ভতা ও উরপ্ততা, অন্ম গালের পাতুরতা ও শীতলতা। বিমুক্ত বায়তে অতিরিক্ত অমুভূতি, বাতাদে, বিশেষতঃ ক'লে বাতাস লাগিলে, অতিশয় অঞার্ত্তি

উक्ष किছू भूर्य महेला ( विम, वार, किए), উक्षम्र छ्यायम किष्माण, भगाग्र मग्रम किष्ठिण, किष्म मिला किष्मा कि

অভিসার।—শীতগতা, ক্রোধ ব বিরক্তিজনিত; দত্তোত্তাদ কালে; তামক্ট গেবদের পর; প্রসূতাবস্থায়; নিমাভিম্বে গাত-মন্ত; অতিনার

সর্থবর্ণ, জলবৎ, বিদাহী, অভিজ্ঞ কাও বা শাক্ষের স্থার ; উত্তেপ্ত, অভিজ্ তুর্গন্ধা, পাচা ডিমের ভাষা ; মধা।

छन-त्रस्त्रत श्रामार, म्लार्ग উशास्त्र द्यमना (द्रामान, मार्रहो।); लिखन स्थान म्लार्ग-द्यमः

खछमात्रिमी क्षीमिरगत जानन। जानि जन-१६ निश्मत्रन (मद्धामरक १६ ছাড়াইবার পরে নিঃসরণ, (কোনা)।

মাতার জেনুধাবেশের পর জনপান করিয়া শিশুর টকার (দড়কা) (নক্ষা---ম'তার জয়প্রতির পর, ও'ল)।

প্রাণা বাতের বেদনা বশতঃ রাজিতে শহা পরিভাগ করিমা ইতন্ততঃ বিচরণের আবগুকতা (রুস্টবা)।

निर्माल्का, किन्छ निर्मा पाইटि भाषा यात्र मा ( ८वन, कहे, ७ नि)।
वाक्रिक भन-उभ-मार, भगावि वाहिटिव भा वाहित कित्रिक वाहिटिक रुप्त ( भग, ८म७, भगम )। উপচ্য।--উন্তাপে, ক্রোধে; দায়াহে, মধ্যরাজির পুর্নে; অনার্ড বায়তে, বাতাদে ও উদ্যায়ে, র্ডি

উপশ্য।—কোলে চড়িয়া বেড়াইলে; উপবাদে; ও উষ্ক আর্দ্র কালে, হ্রাস

उनस्वा ।—( ) विकारणानात मिछ जासून्य गायस । भिछामिरात्र विद्या । स्वादा का स्वादा का जिल्हा विकारणाना । ज छेम तत्र का सूत्र का जास्य का जारणानिका छे । विकारणानिका विक

# ক্যান্ফোরা।

(Camphora, )

বেদনার বিষয় ভাবিলে উহার উপশম (হেন্টি — রুদ্ধি, ক্যান্ধ-ফস, হেলোন, অক্স- এনি)

শারীরিক ও মানসিক ছবলতা ও উপরাহিতা

শীতল বাষুতে অভিশয় অমুভূতি (হিপ, ক্যাণা-মি, সোমি)

উপঘাতপ্রাপ্তির মন্দকণ; শরীরের উপরিভাগের শীতপ্রতা, বদনের পাত্রতা ও নালাক্ততা, ওঠের দীস-বর্ণ; গভার অবসাদ (prostration) গরীবের উপরিভাগ, স্পার্শে শীতল, অথচ গাত্র বস্তার্ত রাখা সহ্য করিতে পারা যায় না। গোগাণ্যও গাত্রাব্যরণ ফেলিয়া দেয় (মেডো, সিকেল)।

যৎসামাক্ত স্পর্শে সমগ্র শরীরের বেদনাবিশিষ্ট অন্তভূতি

জিহ্বার শীতলতা, গোলিততা ও কম্পন

সহসা বমন-বিষেচনের আজমণ; নামিকার শীতলতা ও সুক্ষাতা; উৎকণ্ঠা ও অন্থিরতা; ত্বকু ও শ্বাসের শীতলতা (ভিয়ে, জাটো) खनाष्टित्रोत त्यारमानमार भीष गांवशाया जीव \* ७ (कि.स.)

জাবনী ভিন্ন আবিশ্যাক ও সমাক্ অবসাদন হ শরারেব জাতিশ্য শীতলতা; রবস্পানিত শতে ও পুষ্ঠ বিষম এরে (তিরে) অনেক সময় প্রযুক্ষ ওয়দ, নাড়ার প্রশান, অভান্ত প্রভা, ও প্রায় জাপাণ্যতা

হামে ও ধার্নে চিনাম উদ্ধেষ্য অপ্ত শ্ব গুধুমগুলের পাজুরতা বা শীতলতা, আ কুম্ভিততা, নাল জ্বতা ও নিময়তা (hipp critic) বালক আয়ুত থাকিতে চাম না (ক্ষিক্ত)

हारमञ्ज भक्ष १ कांत्र शतिनाम

खिनामा ।---वर्खमान त्यारगत विषय हिस्स -किटन; উक्ष वास्र्य । भीष्ठम स्रम्भ त्य ; উक्षमा ।

(छा: दर्शित वरणन क्षोणप्रम ७ काम्फर्तत्र ग्रामाय छाछ गणनकान्त्र ग्राम्थ छाटनत्र छेल्ट्स सुनद्रम्भ दर्शामक्ष्माणित क्रम्माण निष्य क्रम्स। कर्णी क्षित्रा दर्शियाम भिष्म )।

## कालिश्या नािंदिकािश्या।

(Kalmia Latifolia.)

তক্ষণ স্বামূশ্ল, বা ১ ও গাউট জানত রোগ, বিশেষতঃ বাত ও গাউনে পরিণাম অরূপ শুৎপিতের আক্রান্ততা।

বাত হইতে উৎপন্ন অথবা উহার সহিত সপর্যায়ে উপস্থিত হাজো।

জেমন, চাপন, ও চিড়িক মারণের স্থায় বেমনার নিম্নাভিমুথে সঞ্চারণ (ক্যান্ত —উর্দাকে, লিড); তৎসকারে বা তৎপরে আনুক্রোন্ত-স্থানের অবশতা (একন, ক্যাম, প্লাট)।

দক্ষিণ অক্ষিতে ও অক্ষি-গহররে প্রতীর স্থচী-বেধনবৎ বেদনা (বাম চক্ষে, মিজ); পেশীতে স্তব্ধতা, ও বেদনা, চক্ষ্ ব্যাইলে উহার আধিকা, মিজ); স্ব্যোদ্যে বেদনার উপস্থিতি, মধ্যাত্মে বৃদ্ধি ও স্ব্যাত্মে বির্তি (স্থাটি মিউ)

বাত।—তীব্র বেদনা, সহসা উহার স্থান-পরিবর্ত্তন, সন্ধিতে সন্ধিতে গতি, সন্ধির উত্তথতা, আরক্ততা, ও স্ফীততা, অলমাত্র সঞ্চাধনে আতিশয়।

মস্তক অবনত করিলে অথবা নীচের দিকে দৃষ্টি করিলে শিরোঘূর্ণন। নাড়ীর ধীরগতি, প্রায় অপ্রাণ্ডা (প্রতি মিনিটে ৩৫ বা ৪০ বার ম্পান্ন); পাতুবর্ণ মুখ্মগুল ও দীতল হস্ত-পদ

সম্বাদ্ধ (১) বাত ও গাউট নোগে, লিড, ম্পিজি, নোডের সমগুণ (২) স্থানো ম্পিডিসিয়ার পরে ভাল থাটে

# ক্যালেডিয়ম।

(Caladlum)

শব্দে অতিশন্ন অমুভূতি; যৎসামাশু শব্দে নিয়ো হইতে চম্ব্রিত হইয়া উঠা (এসার, নকা, টারেণ্ট)।

অত্যন্ন বাস্থ-নিঃসরণ সহকারে প্রথপ্নঃ উদগাস, বোধহয় যেন আখাশস শুক্ত ভুক্তরবো পূর্ণ রহিয়াছে।

ধ্বজন্তক ----মানসিক অবদাদ, সম্ভোগ-লিগা ও উদ্ভেজনা স্হ্লাদ্রে শিথিলিত শিশ্ব (লাইন সেলে)

আলিগনেও উপস্থের অমুজেক , সংসর্গকালে কম্যোদীগনা ও শুক্রাপাতের অভাব (ক্যাল, সেলে)

যোনি-কণ্ড্য়ন। তজ্জন্য কৃত্রিম রমণ-জিয়ার প্রস্থিতি (অরিগে; জিক); গর্ভাবস্থার; শ্লেমান্রাব সহ কণ্ড্রন। সাধাত্তের জরে নিদ্রা এবং জর জে জাগরণ। মিষ্ট ঘর্ণো মক্ষিকাকর্যণ। (অর্থাৎ দাণ মিষ্ট লাগে বলি মার্গি আসে)

भभक अ कीएँ म सभाम अखिभग खांगा स कखुमन । निष्टिक एष्टिक अक्षेत्रचि ; निष्टिक एम स्म ( खाहे ) कार्याक्षिप्रभ जामांक भाक्षांत्र ग्युहा विनष्टे स्म

# काटिनाळुना।

(Calendula)

व्यक्तिक (Tianmatic) स्थारम श्रूपादम्खि याजीक न्यक-

क्यामगरिक्त विसारण कण्हिणिण शोष्ठीत्र योत्रा मश्याम माध्य व्यममर्गणात्र श्रम्भा।

हित्र-खित्र जनमान वोश्विक महाज्ञादः (Wounda) এवर मदानानगरत्त भएत, स्ट फाडाब्र छेर्भामन ७ कामक भूगांर्भिय-निवात्रम अवर काख हिर्म्स अक्रियार्थ ग्रावर्थात्

আভিষাতিক ও অরম্ভ সায়্য অধ্যুদ (Neuroma) (সেগা); বিগারিত কত হইতে সায়্য প্রান্থ (হাইপায়); রাজ্য-নাম ও অভিময় বেদ্না বশ্তঃ অবসমতা।

পে<sup>ক্র</sup> বা•্কগুরার (Tondons) ভগাবস্থা; প্রাস্থক্ষণণে বিদারণ; জান্ত্রির সংযোগস্থল পর্যাক্ত সন্তরণের সম্প্রধেন ও সেহস্থ ভঙ্গল পদার্থের (Synovial fluids) জাপ্তর।

সঞ্চ-ত্রণ (Wounds) অধ্যের উদ্ধাপয়স্থার আকলিক বেদনা সংযুক্ত সভারণ; বিসপোৎপতির পারীরিক প্রাকৃতি (সোরি); পুরাতন, উপেলিড, মুর্গরা, কভ; গাাংগ্রাণ অধিযার আশ্বান প্রাল-এমি)।

ক্ষত (Ulcers), উপদাহশীল, প্রদাহিত পচপাপত (Soughi g) বিশিষ্ট দিয়া-ক্ষীতি (Varicose) সংষ্ক্ত আ্বাতিতবৎ বেদনা বিশিষ্ট ; ক্ষত (আর্প) অক্তিশয় পূয-নিঃসরণ

শন্ন ক্রিয়ার পবিকার কর্তনে, ও বিদার গ বাভবাতে, প্রাণক পুণ নিংগরণ নিরাবণে ক্যানেতুলা প্রাঃ ক্ষমোঘ

मश्चित्त |--() शिरांत, ख आ मछ ए भत मिश्ल असूर्। क मध्य (१) त्कामल विधान-ज्ञात विलाय वाजो ०, ज्यान आपांकां विधान-ज्ञात विलाय वाजो ०, ज्यान आपांकां विधान अधिक भारत अधिक मध्य मिश्ल अपांका आविकां मिश्ल मिश्ल मिश्ल विधान अधिक मध्य मिश्ल अपांका विधान अधिक मध्य मिश्ल मिश्ल अपांका विधान अधिक मध्य मिश्ल मिश्ल विधान मिश्ल विधान मिश्ल मिश्ल विधान मिश्ल मिश

# ক্যাক্ষেরিয়া কার্বণিকা (ক্যাক্ষেরিয়া অশ্রীরাম)

(Calcarca Carbonia)

প্রেম -প্রধান ধার্তু, স্থানর কেশ, গ্রা মুগারুডি, নীলনমূল, স্থার ওক ; যৌবনকালে সুগত্ত-প্রবণতা।

সোরা ধাতুর; পাণ্ডুরতা, ছর্মাণতা, ভীরুতা, বিচরণে সহয়ে জান্তি স্থাত্ব–প্রবিণ্তা, স্থানেহ।

व्यक्ति ग्रथमञ्चन उ त्याहिल त्याविष्ट वाह्य वाह्य वाह्य । यहार वह महिल महिल महिल महिल व्यक्ति ।

বৃহৎ বস্তক ও বৃহৎ উদর; বিমৃক্তে ব্রেমারমা ও সেবনীসন্ধি, (Sutures) কোমল অন্তি, অন্তি অতি ধীবে ধারে বিকাশ প্রাপ্ত হ্যা অস্থিয় বিশেষতঃ মেকগত ও দার্ঘাত্মির বক্তা আর ভারের কুটিলভা ও বিষ্ণাতা, অনিয়মিতরশে অস্থির বিকাশ

নিদোকালে মস্তবে প্রভাত ঘর্মা, উহাতে মাথার চারি দিকে অনেক দূর পর্যান্ত যালিশ ভিজিয়া বায ( দিদি, ভানি )।

প্রধানতঃ মন্তকের পশ্চাস্তাগে ও ঘাড়ে, অথবা বক্ষঃস্থলে ও পরীরের উর্জাংশে প্রভুত খণা ( সিলি )।

ক্যালকেরিয়া জ্যাপ্য বিশেষ শিরোঘর্ষা, ও বিসুক্ত ব্রহারদ্রসহ আসাসে ও বিলমে দক্ষোদর্গম

রোগ বা আরোগোণ্ড কালে, অগুকারের অতিশয় ক্সাহা, আপাচ্য দ্রুগা ডোল্ডনের আকাজ্য (এশম), মাংশে অপ্রার্থি

পরিপাক-প্রের জয়ও ---জ্যা উদগার, জয় বসন, জয় মল; সম্ভাসারের জয় গ্র (চিপ, রিউম)

মাংসলা, বক্ত-প্রধানা, এবং শীদ্র শীদ্র বর্দ্ধনশীলা, বালিকা। অতিশয় শীদ্র শীদ্র শীদ্র, অধিক পরিমাণ, ও অধিককাল স্থায়ী, শতু; তৎপরে বন্ধদল বা রমোনিলোপ সহকারে কোরোদিদ ও এমেনোরিয়া। নাড়ী — অতি শীল্প শীল্প, অতাশ্ব অধিক পরিমাণ রম্ব-ভাষ; শীত্রস আর্চ্রে নোজায়া, পা থাকার ভায় পারের শীত্রতা ও আর্চ্রভা; এবং শ্ব্যায় ক্ষমণত শীত্রতা

অত্যঙ্গা মানগিক উত্তেজনায়, প্রস্তুত সম-প্রাধানের প্রত্যাচ্ডি (সম টিউব)।

রোগিণী আশকা করে য়ে ডাহার বৃত্তিজ্ঞা জিয়াবে অথবা লোকে ভাহার মানসিফ বিশৃদ্ধালা দেখিতে গাইবে (এক্টিয়া)

দীর্ঘ, ক্ষীণ, জ্রাত বর্জনশীল যুবকদিবোর ফুসফুনের রোগ; দক্ষিণ ফুসফুনের উপরের ভূতীয়াংশ, উপরের ভূতীয়াংশ, মাইরি, সলফ); ধাতুগত রোগে অনেক সময় ফ্রফনাস অপেক্ষা ক্যালকেরিয়া অধিকতর উপযোগী ( টিউবের সহিত ভূলনা করুন)

অসম্যক পরিপোষণ; ও অসম্পূর্ণ অভি নির্মাণ কনিত রোগ;

ইটিতে বা দীড়াইতে শিবিতে কট, শিশুদিগের ইটিতে পার্ডি ইয় না এবং চেষ্টাও করিতে চায় না; ঘণ বিলোপ

ঘর্মবশতঃ পদত্তের অবদরণ ( গ্রাফ, সেনি ); ফোজা ও ফ্রান্ধি পাদ-পর্ম ( গৃহে থাকিলে ) বিমৃক্ত বাষু সেবনের আকাজান, উহাতে উৎসাহ, উপসার ও বল অয়ায় ( পল, সল )।

শীতলতা। — সর্বাদান শীতলতা; এক প্রিন শাতলতা (কালী বাই); মন্তক, আমাশ্য, উদর, পদব্য ও অভ্যাবনের শীতলতা, বিমৃত্যে বায়তে অপ্রার্থিক, উহা বেন গায় বিষে; শীতল আর্চ্র বায়তে অম্ভ্রাধিকা, প্রায়ই শর্মি জাগো (সলফারের বিপরীত)

ঘর্ম — একাজীন ঘর্ম ; মন্তক, ও মন্তক্ষের কেশার্ত ভাগ আধি ও নী এল , গ্রীবা-পৃষ্ঠ ; বক্ষঃস্থল ; কক্ষতল (atmpit) ; জননাল , এবং হও ও পদ্ধারের 
শর্ম (সিপি)

আমাশয়-গহার বিপার্য্যন্ত রেকাবের ভাষ ক্ষাত, চাপ দিলে উহাতে বেদনা।

শীতল ভিজা স্থানে দীড়াইয়া থাকাতে, অথবা অলে দাঁড়াইয়া কাল করাতে; ও শীতল কাদা শইয়া কাৰ্যকারীদিগের ইউরিমিয়া অনিও কিংবা অগ্রান্থ রোধা কোঠবছ থাকিলে সকল প্রকারেই ভাল বোধ।

ক্তুত্রিম উপায়ে মশ নিঃসারণের জাবখ্যকভা ( এলো, সেলে, সিপি, সিলি ) বেদনাশুক্ত স্থরভঙ্গ, প্রাতে উহার ঝাধকা

আয়ত্বাত্ত-শক্তি (magnet sm ) গ্রহণের ইচ্ছা (ফ্য ) ৷

উপচয় |--শীতশ বায়তে; আর্ত্রকালে; শীতল ফলে; প্রকালনে (৫৩ট-জ্ড); প্রাতে; ও পূর্ণিমার সময়ে; বৃদ্ধি

(दलक देव्हें स्माप्त क्षेत्रकारण ; क वाहित्य कार्यस्था क्षेत्रका हिन्न विषय

সন্মন্ত্র |—( > ) বেলেডোনার সহিত অমুপুরক সম্বন্ধ; বেলেডোনা ক্যাল-কেরিয়া প্রযুদ্ধ্য তর্মণ অবস্থায় উপযোগী। (২) লাইকো, নকা ফদ, দিলির পূর্বের ক্যালকেরিয়ার ভাল জিলা দর্শে। (৩) নাই-এসি, পলস, সলফের পরে (বিশেষতঃ কনীনিক প্রায়ারিত থাকিলে) ক্যালকেরিয়া; এবং নাসিকার শর্দিতে ক্যালকেরিয়ার পরে কালী-বাই; ভাল থাটে। (৪) হানিম্যানের মতে নাইট-

### ক্যালকেরিয়া আদেনিকা।

(Calcarea Arsenica)

অতিশয় খানসিক অবসাদ।

यदमागान्य गत्नाष्ट्रात्व खदकरम्भत ष्ठेदभिष्ट (भिष-भा)

मखरक ७ वाग वरक बरकन क्षांवन ( कमिन, अन )

श्रुष्क शार्षेत्र शीक्षा यण ७: अश्रप्तात्र स्त्रांश

মন্তাগায়াদিগের মন্তাগান গাঁরভ্যাগে অহ্নথ ; মদিরাপানের আব্দাভাগা (এসার, সল-এগি)।

त्रत्यानिवृधिकाण मगीलवर्षी रहेवात मगत प्रमाणीमिरतम अञ्चल ।

স্থ্য [---(১) दणाना, श्रम, णिय-कास्त, १णम, नरक्षत्र महिन्छ मगद्यन महार्थ (२) णामका-श्रमान (lymphatic) माळू, दमात्रा-माळू, ख खिल्ला-माळूटळ (tubercu osia) दकानांत्ररमत्र १त्र खाण यांटे

# का)लदक्तिया कम्यातिका।

(Calcarea Phosphorica)

নীরকে ও ময়লা সুনাক্ষতি, কাল চুল ও চশু; খুল নতে কিন্ত স্থা দেহ বিশিষ্ট বীক্তিদিগের পকে; এই ঔষধ উপযোগী

গওদালা ধাতু-দুষ্ট বালক-বালিকাদিগের প্রথম ও মিতীয়বার মজেডেরেমকালে; মতিসার ও অভিশয় আধান শিশুর শীর্ণতা, দাড়াইতে অসমর্থতা ; ইাটিতে শিথিতে বিলম্ব (কাল, মিলি) ; নিমন, লোলিভ উদর

निखन्न नाखी रहेरज नकांक खन्न श्वार्थ भन्न । भूग भन्न, शहेख)

রেকাইটিস —করোটার অন্তি, সূক্ষাতা ও ভঙ্গপ্রবিণতা; ব্রেলারন্ধা ও সেবনী-সন্ধির অনেকদিন পর্য্যন্ত অসংযোজন, অণব রুদ্ধতা ও পুনরায বিমুক্তেতা; বিশ্বিত কিংব উপসর্গ-সম্বিত দহোৱেদ।

পৃষ্ঠবংশের ছ্র্বলভা, বিশেষতঃ বামদিকে ব্রুজার প্রাবণভা; শরীর ধারণে অসমর্থতা; দাড়ের ছর্বলভা, মন্তক ধারণে অক্ষমতা (এরো)।

যৌধনাগমে কুমানীদিগেন দীর্ঘতা, ও সত্তর পুষ্টতা প্রাপ্তি; অস্থিব কোমলন্থ যা মেরুদ্ধণ্ডের মজন্ত-প্রাবণতা

যৌগনাগমে নীয়ক্তা কুমায়ীদিগেয় বয়ঃত্তণ, তৎসহ মূর্দ্ধাদেশে শিয়ঃপীড়া ও আখান সংগ্রুত অগ্নিমান্য, আহায়ে উহায় উপশ্ম

শোক বা হতাশ-ত্রেমজনিত অন্তব ( অয়, ইয়ে, ফগ-এসি )।
বোগের কথা ভাবিলে উহার আধিক্য অয়ভব ( হেলেন, অয়-এসি )।
অনৈচ্ছিক দীর্ঘনিখাস ভাগে ( ইয়ে )

অফির অসংযোজন; এতজারা নুতন অফিনিশ্বাণকর প্রাথের বিবর্জন উৎপন্ন হয়।

শীতকালের বাত ; বসগ্রকালে উহা ভাল হয় এবং শর্ৎকালে প্রসায় উপস্থিত হইয়া থাকে।

বিষ্ণালরের বালিকাদিগের শিরঃগীড়া (ক্লাট-মি, নোরি), অভিসায় প্রত্যেকবার আহারের চেফীয়, উদরে বেদনা।

জগন্দরের (fistula in ano ) সহিত পর্যায়ক্রমে বংশালক্ষণ ( খাঝ ); শারীরিক উত্তাপের অভাব; শীতল ঘর্মা ও সর্বাশরীরের শীতগতা।

উপচয়।—আর্জ, শীতশ, পরিবর্তনশীল কালে; পুর্বাদিকের বাতার্দে,
দ্রবীভূত বরফে; ও মান সক পরিপ্রমে; বৃদ্ধি।

উপাধ্য ৷---গ্রীমকালে; ও উঞ্চ, শুক্ষ বায়তে ৷ স্থাস ৷

मध्या ।—() मार शां- बन, कांक रागंत, कांक, रागंत- विम, छ कांकी करमत महिल करें छेगर पन मगलन मथ्य ; छत्तन (त्रारंत्रत नवर्त्वो ज्यान छात्र रमित नवर्त्व मथ्य मिनिमियात्र मगलन वर्ते, किंद्र हेगर छ मण्डल पान नारें (र) क्रिकें महिल कर्म न्या (०) क्रिकें छ पान नारें (र) क्रिकें महिल कर्म न्या (०) क्रिकें छ, रमित, रमि, मनरमंत्र पूर्ण, जनर कांम, क्रिकें हिल्दा परंत्र ; जहें छेगर प्र मिन् मर्था एमं।

## किदशांदकां देश।

#### ( Kreesotum )

মলিমধর্ণ ম্থারাজি, অসমাক বিক্ষানিত, ক্ষাণ ক্লোষিত, অভিব্রিক্ত বৃদ্ধিত; ব্যাংক্রাম অপেক্ষা অধিকতর দীর্ঘ রোগিণা (ক্ষম)

त्रक्षत् पृथ्वे, कृथिक भूभाक्षि (काखा); गखमागाजाय सा (मात्रा-(माय'-क्षे ; क्ष्यं भीर्गका खाख ( चारेक्ष ) नामक्राणिका ; क्ष नित्रज्जकक्षा नात्रीिक्रिशंत (तोश ( णाक )।

রজনাব-প্রাবণ শারীরিক প্রায় ত ; মুন্তা সূত্রা অভিযাত হইতে বিম্জাভাষে রজপাত (জোট, শাক্ষি, ফস) ; নাগিকার-রজ-পাতে, ফুসফুসের রজভাবে, ও রজমুজে অপ্রাণ প্রায় ; টাইফ্রেড্ অরে রজভাবের পর অভিশ্য অবস্য়তা; দত্ত উ্যান্ত্রের পর মণিন রজ্জার ( গেমে )

ঋञूत्र भूदर्श ७ सङ्-कारण कर्त शब्धन ७ छन् छन् धन ।

দৈমিক বিল্লী কইতে বিদাহী, ছর্মা, রসালী প্রাব; জীবনীশস্তির অভিশন্ত ক্ষমণদ।

সদ্যার প্রাক্তালে এ প্রকার প্রেবল কণ্ডুরন যে উহাতে রোগীকে কিপ্তাবৎ করিয়া তোলে (উদ্ভেদ-পরিশৃষ্ট কণ্ডুরন, ডলিকোন)

দক্ষোদানে যাতনা; দাত উঠিয়াই ক্ষয়প্রাপ্ত হইতে থাকে; নীলাভ লারভা, কোমশ, সাজন (Spongy), রক্ষপ্রাথী, প্রদাহিত, ক্ষভসংকুজ দক্ষ-মূল বমন—গভাবস্থ য় লালালাব সহকারে ঈষৎ মিট্ডল বমন , বলাউঠার বমন, দতোদগম-কালে বমন , অভিছগ'র মনশাৰ সহকারে প্রতিনিয়ত বমন , আমাশয়ের দ্যিত রোগে বমন

খাতুর পুর্বেষ্ ও খাতুকালে উতা শিরোবেদনা ( গিপি )

ধতু।—নিরমিত সময়ের অতিবিক্ত পূবের পেতৃত পরিমাণে দার্ঘদায়ী থাতু, খাতুকালে বেদনা, খতুর পরে উহার আতিশ্যা শ্রান করিলে খাতু প্রাক্তিত হয়, বিসলে বা ইাটিলে উহার বিরতি অব্যা, শার্থ পানীয় দ্বা পান করিলে ঋতুর বেদনার শান্তি জ্যো; খতুর রক্তের স্থির।ম্প্রাক্তি ক্যন কথন উহা প্রায় স্থাতি থাকে, জনগুর আবার পতিত হয় (সল্ফ)

অনিজ্যার মূত্র-পাত, কেবল শয়ন করিয়া মূত্রত্যাগ করিতে পারা যায়; পাত্র্ব ( palc ) প্রভূত মূত্র, মূত্র বেগ, শয়া পরিত্যাগ করিয়া না যাইতে না যাইতেই কাপড় নষ্ট হয় ( এপিস, পেটোস ); প্রথম নিলোকালে মূত্র প্রাব ( নিশি ), শিশুকে উহা হইতে সহজে আগরিত করিতে পারা যাম না।

সূত্র কালে ও তৎপরে জ্ঞালা ও টাটানি ( সল্ফ )।

খেতপ্রাদান — বিদাহী (actid, corrosive), ছগ জি প্রাব , খাভুত্বয়ের মধ্যবন্তী সময়ে, উহার আতিশ্য (বোজ, বোর), প্রাবে কাঁচা শ্তের ছার গল্জ; উহাতে বল্ল খেতদারের ভাষ শল্জ হয়, ও বল্লে হরিজাবর্ণ দার লাগে। প্রস্বান্তিক প্রাব — মলিনবর্ণ, কপিশ দল দলা, ছর্গদ, বিদাহী প্রাব , এক এক বার প্রায় থামিয়া যায়, আবার নৃতন হহয়া উঠে (কোন, সল) ভগ (Vulva) ও বোনির প্রবল বিদাহী ক্ষত্রেন।

উপচয়। বিম্কা বায়তে; শীত ধতুতে; শীতল হইবার সময়; শীতল জলে গা ধুইলে বা স্থান করিলে; বিশ্রামে বিশেষতঃ শয়নকালে; বৃদ্ধি

উপশ্ম ৷—সাধারণতঃ উফতার উপশ্ম

স্থায় ।—(১) ক্যাম্বার ও অন্তাক্ত দ্বিত রোগে কিয়োজোটের পরে, আস, ফস, সলফ, ভাল পাটে; (২) কার্ষোডেজি আ কিয়োকোটে প্রতিক্ল সম্বন্ধ

### (किक्शिम (मिनेश्रिक्शम।

(Croous Sativus).

ধুনঃ পুনঃ অমুণ্ডতিব পাবিবর্তন; সহস ভাত্যন্ত প্রক্রমতা হইতে গভাব নৈরাধ্যে পরিণতি (ংগে, নগ্রম)

অত্যন্ত আফ্লাদ ও প্রাতিগ্রতা সকলকেই চুম্বন কবিতে প্রন্তি; প্রক্ষণেই আবার ফোধের আবেশ।

সরীরের যে কোন স্থান হইডে কাপ, আঠা ৯ ঠ , সংষত, ব্যক্তপাত-স্থান হইতে লম্বা জমা কাল দড়ির ভাগে বুলায়সান

(ইল্যান্সা) রক্ত প্রাব
রক্ষোনির্দিন কালে, দশদপকর, স্পাননকর, নিয়মিত ঋতু-কালের ছুই
তিন দিন বিবদ্ধিত; শিরংগড়; শায়বীয় অথবা ধতু সংস্থাই, ও রঞ্জ বের
পুরে, তৎকালে, বা তৎপরে উপস্থিত (লাাক, লিলি, গিলি) শিরংগড়া

हिन् — श्र (यन ध्यश्र ; यन ष्यत्रभाष कत रहेतारक, ख हिन्द षर्धर (तरात्मव धिर एप्रव) यन भोष्ठण नाष्ठांग निरुद्धर , उन्नव सर्खन, हिन्द्र शोष्ठा मृहक्तरण र क कतिरण छेभभम खा ख

নাগিকার রক্তণাত; কাল, স্থানেছল, রজুরৎ রক্তা, প্রত্যেক বিন্দু টানিয়া সূত্রে পরিণত করিতে পারা যায়; তৎসহ কণালে বড় বড় শীতল ঘর্মাবন্দু (শতল মর্মা, কিন্তু পাধার বাতাস প্রাপ্তির ইচ্ছা, উল্লেখ গোহিত রক্তণত, কাগো-ভোজ), ফ্রাকেশশশল শিশুদিগের নাসিকার রক্তণত (ক্যান্দ্র, ফ্রা

কাল রজ্বৎ, সংশ্ব রকাবিশিষ্ট রজ-রচে ( অষ্ট )
আস্ময় উদ্ব, গভাশায় বাহ আবা করীরের অঞ্চল জানে যেন স্কীব কিছুনড়িরেছে এক্লেপ অস্তব থাবি, পুরা, সলফ ); তৎসহ বিবসিষ্ ভ্র

অতিশয় হয় সংগুক্ত কোরিয়া ও হিইরিয়া একবার গান ও নৃত্যকরা (টারা) আ্বার বিযাপ ও রোম। শ্বভন্ন স্বতন্ত্র পেশি**শ্রেণীর আ**ফে**ণিক আক্**ণন্দ ও স্পাদন ( এগার, ইয়ে, ভিক্ক )

সম্বাদ্ধ |—(১) কোকদের পর প্রায় সকল রোগেই নথা, পল, বা সদ ভাল থাটে (২) রজ-গংক্রায় রোগে অপ্তিপেগোর সহিত কোকগের ভূলনা হ্য

## ক্রেণ্টন টিগ্লিয়ম।

(Croton Tiglium)

এতদারা মন্ত্র-০ থের (intestinal tract) শৈথিক থিলী আলোও হট্যা রক্তের জনীয়াংশ নিঃস্ত হয় ও প্রভূত, অলবৎ অভিযার ফল্মে (ভিরে), এবং সর্বাপরীয়ে একপ্রকার তরুণ পামার উৎপত্তি হয় ( এঃস )

যেন আক্রেণিক উৎকোপে (Spasmodic Jerks ) বন্দকের গোলার জার সবেলে (গাল), মল নিঃত্ত হয়; রোগী পান বা আহিণর করিবামাত্র তাথবা আহার করিবার সময়েও মণলাব; হরিদ্যাবর্ণ জলবৎ মণ

সতত মল-প্রবৃত্তি অনস্থর সহসা মল নিংসরণ, মল সরলাম হইতে তারের স্থায় ছোটে (গাাম, গ্রাট, পড, গুড়া)

মল-ভাগের পূথে অন্তে অলের আন্দোলনের প্রার গতি ( মলভাগের পূথে কুলন, এলো)

বক্ষঃস্থলের অভ্যন্তর দিয়া স্তন হইতে ক্ষরা স্থি (Scapula) পর্যান্ত আকর্ষণবৎ বেদনা, যতবার সন্তান স্থন পান করে ততবার একই পার্মে বেদনা উপস্থিত হয় : স্তন-রুম্বে অতিশয় স্পর্শ-বেষ অমুভূত হয়।

সর্বাশরীরের দারণ কণ্ডুরের, কিন্ত চুলকাইতে পারা যার না, বেদনা লাগে, কিন্ত আন্তে আন্তে ঘর্ষণ করিলে উপশম জন্মে; সর্বাশরীরে পামা (eczema)

हो। श्र्य উভয়েরই জননাঞ্চের নিদাশণ কণ্ডুরন (হঃদ); প্রায়ের জননাঙ্গে ক্সুড়ির ফার উড়েদ; এতই অরুভূতি ও ক্পার্শ-থেষ যে চুলকাইড়ে পারা যায় না কাস, মাণা বাহিশ স্পর্শ করিবামাত একপ্রাকার আকেপিক কাসের উপস্থিতি, উহাতে শাসম্প হর, গৃহে ইাটিয়া বেড়াইতে অথবা জোগারে বসিয়া ঘুমাইতে হয়।

উপ্তয় —প্রতি স্থাগনে; পানাজে; আহার বা অন-দান কালে (আর্জ্র-না, আ্না); থামকালে; ফল ও মিষ্টার নাহারে (গ্যাম); এবং অক্তাল আহার বা পান প্রহণে; র্দ্ধি

স্থান্ধ ।—( > ) শিশুদিগের প্রাতন অতিযারে, ফালা-জোম ও ফ্যের সহিত; স্তন-দান কালে শুন-র্ম্ব হইতে পৃষ্ঠ পর্যান্ত বেদনার সিলিশিরার সহিত; জোটিনের ভূলনা হয়।

# द्वारिक्षेत्रभ रिक्षिण ।

C Cromalus Horridus )

गखमाणा थाळू-छडे, ध्रंगीळूळ, त्रक्कवान-ध्रवन क्रमंत्रहर; आहेरमाहिक दानकारन (निष निरम्य पात्रा अक्ष्मंप्रमहिक (fermented) इहेम त्य नम्बन्द, जनानक वा मरकामक द्राभ केष्णम हम कारात्क कारेरमाहिक त्यान वरन); यनिमानामीनिर्गम निरम्भ निरम; जनर क्रांत्रमण अन्या मक त्याहिकम अक्षिम्सकाम अहां) अहे खेष छन्द्रमंत्री हम

শরীবের পূর্ববর্জী নিজেল অধ্যালনিত রোগ; সেপ্টিক, টাইফরেড অথ্য ম্যালেরিয়া অর; ম্যারিশীকার প্রাতন ফল; প্রকৃত প্তনাবস্থা (Collepse)

गमागि। जनिष्णिक मिल्लाभाषी, जनः त्रकाशांषी ७ ७४-८एए गासिनिरगत

রক্তে-ত্যাবপ্রবণ শারীরিক প্রারুতি; চন্দ্র, কর্ণ, নাসকা ও শরীরের গুত্যেক ধার হইতে রক্ত-পাত; রক্তে-ঘর্ম।

চক্ষুর শুক্রমগুণের, পীতবর্ণ; কনীনিকার প্রানাই (ICeratitis), কিংবা কনীনিকা ও উপভারার (iris) প্রদাহের পর আই শুষ্ধে দৃষ্টির পরিছেরভা জ্যো

হলিমক বা উৎকট পাপু; যক্ত্ৰ অপেকা মুক্ত অধিকতন আজেছি।

রজ্ঞানী পাপুরা, সহসা সকল দার হ≷তে, এবং ওফ, নও, ও মাড়ী হইতে রজ্ঞান হয়।

জিহ্নার অগ্নিবৎ আরজভা, নস্পতা ও সমতগতা (পাইরো); দারণ স্ফীততা

সাংখাতিক ডিগণিরিয়া বা ফার্লেটিনা; গশকোষ বা তালুম্লের দ্বীততা বা গ্যাংগ্রীণ; শৃক্ত ভোকগিলিলে বেদনার শাধিকা; বসন বা শতিসারের পাক্রমণ

জীবনী-শক্তির অবসয়তা; নাড়ী প্রায় পাওয়া যায় না; রজের বিষাজতা (পাইয়ো)

वमन। --- खिरक्षां अ इर्सन नाषी महकारत रेनिख्य वमन , व्येखिमारम स्र्त्र नित्र वमन , मिलन भार्य व हिर हहेत्रा मत्रन स्वतिरम ज्यनहे मिलन, मद्भवर्न निर्मार वमन ; भीज-ज्ञाततत्र त्रस्ववर्ग वा स्विन्हर्तित छोत्र वमन

অভিসার; কাল, পাতলা, কফি-চূর্ণের মত মল, ত্র্গণ্থ মল। আহার্যা ব' পেরস্রব্যে দূখিও ব'পা বা গচনজনক জব্যের সংগ্রেবে উৎপন্ন ক্ষতিস্থার; পীত-অর, ওলাউঠা, টাইফ্রেড, ও টাইফ্রেস অ্রের অভিসার।

সেপ্টিক, বা জাইমোটিক রোগাণিতে উৎপন্ন শক্তের মজন্মান ; মলিন, ভরণ, অসংষত মজ

শবছেদ জনিত অভিযাত। কীটের হল-বেধ ; গো-বীজে টাকা-গ্রহণের সুফল। স্বলী-ভূত দেহে অমুক্স (vicarious) রজঃ (ভিন্নি, ফদ)।

নির্ত্ত-রলকাণিগের ভীত্র ভাগাকেশ (flustics of izeat) ও সিন্ত ভালনক ঘর্ম ; প্রান্থি ও জামাশরে শৃগুতামূভ্ব ; মণিন, তরণ, ছর্মার মঞ্চ বিশিষ্ট, জনেক্দিন কানী জনায়ুর মন্তন্মাব।

মরার্র দ্বিত রোগ, রক্তনাবের সম্থিক প্রবণ্ডা, মলিন, ডরল, ছর্নদ্ধ রক্ত।
সম্বন্ধ ।—(১) ইলান্স লাল, লালা, ও পাইরোর সহিত কোটেলঃসের
ছুলনা হয়। (২) ন্যাকেনিসে ত্বক্ শীতল ও আঠা আঠা ঘর্দাকে থাকে;
কোটেলানের ত্বক্ শীতল ও শুক্ষ থাকে; ইলান্স দ্লিন্দ স্ন্ন্ন্সের রোগে, কাল
রক্ত নিষ্ঠীবনে ব্যবহৃত হয়।

# গ্ৰোফাইটিস।

#### (Graphites)

्य मक्रम मात्रीमिरशंत्र धूमप-व्यवन्छा, ज्ञान्त क्रिक्ष्छा ; ज्ञान्त विमाणिक सङ् बारक कार्यारमत्र भरक आगारियिम छेभर्यात्री ।

श्वाश-त्योयनामित्रात्र शत्य शणत्यशिषात्र त्यक्रण अधियात्र निवृष्ट-त्रस्रक्षाणित्रत्र शत्य आयारेतित्रत्र त्यरेक्षण अधियात्र

অভিশর গতর্কজা, জীরাতা, ইতগুডঃতা; কোন বিষয় ছির-নিশ্চর করিজে অসমর্থতা।

কার্য্য করিতে বসিয়া অস্থিরতা ( বিষ )

বিমর্থতা, হতাশতা ; গীত-বাদ্যে অশ্রেড্যাব ; মৃত্যু-চিন্তা ব্যতীত অঞ্জ কোন চিন্তা না স্ক্রা (গীত-বাদ্যে অসহতা, ভাট-কা, ভাব)

অকি-পুটের পামা; আর্ত্র ও বিদারিত উত্তেদ, অকি-পুটের আর্ত্রতা ও উহার হাস্ত্রদেশে শহুষা চিপিটিকা (ceusts)।

সঙ্গমেরিদেয়ের অপব্যবহার বশতঃ উহার দৌর্ববল্য।

অভিনিক্ত শল্প, পাপুষর্গ, প্রথম উদন্ধ-বেদনা সংস্কৃত বিশ্বিত ; ও পদ্ধন আনুস্করাতে বিশ্বিত (পশ্ম) ; খড়

শ্বজ্-কালে প্রাতঃকালীন বিব্যাম।, ভাতিশর মুর্ধলতা ও অবসরত (এলম, কার্বে-এন, ক্রা)।

বিদাহী, অলের অব্দরণকর; দিবসে ও রাজিতে দ্মতে দ্মতে দ্মতে দিন্তে দিন্তি দি

ন্তন-ত্রণের পর অধশিষ্ট শক্ত কত-চিহ্ন, ডজ্জন্ন গুন-চ্ছের প্রবাহের প্রতিন্ব ব্যাকতা; পুরাতন কত-চিহ্ন ও পুনঃ পুনঃ ত্রণের উৎপত্তি হইতে গুনের কর্নটিকা (caicer)।

থকের অথপতা; প্রতি উপঘাতেই পূযোৎপত্ন হয় (হিণার); প্রাতন ক্ষত-চিহ্ন প্নরার কাঁচা হইয়া উঠে। কা্বের উপরে উদ্ভেদ; হাতের আঞ্ল ও পারের আঞ্লের ব্যবধান স্থানে এবং শরীরের নানাস্থানে উদ্ভেদ, এবং এই সকল উদ্বেদ হইতে একপ্রাকার জলবৎ, স্বর্হি, আঠা আঠা বস জরণ।

নথেয় ভকুরতা ও বিক্বতিপ্রাপ্তি (এণ্ট-কুড); বেন শত ইয়াছে এর বেদনা, স্থুলতা ও ধঞ্জতা ৷

মন্তকের শিথর-দেশের উপরিভাগে জালাকর গোস্থাকার ফুদ্রস্থান ( জ্যান্ত্র, সশফ সাতল স্থান, সিপি, ভিরে )

শিশান-বায় রোগের (catalepsy) হায় অবস্থা; তৈড়েজো বিভাষানতা, অপচ নড়িতে চড়িতে বা কথাবলিতে অক্ষমতা।

সহলে শদি লাগে; বাৰু-প্ৰবাহে অফুভবাথিক্য (বোর, ক্যাল, ছিল, ন্যা) ক্ষাট্রকর শীর্ণভাপ্রাপ্তি

গোলমাৰল ভাল শুনিতে পাওয়া যায়; খোড়ার গাড়ীতে বা রেলের গাড়ীতে, এবং গুড় গুড় শক কালেও ভাল গুনা যায় ( নাই-এসি )।

অভিসার —ক্পিশ, ভরশ, অফীর্ণ পদার্থ বিমিঞ্জিড, ও অসহা চুর্মণ মল; প্রায়শঃ উদ্ধেদ-বিলোপ শণভঃ, উহার উৎপতি (মোরি)।

প্রাতন কোঠবনতা; আসানে নিংসারিত বৃহৎ শক্তা, গ্রন্থিন,শ্লোর স্ক্রনারা সংযোজিক দলাদলা; তা্তিরিক্তা বৃহ্ছিৎ (সলক) মল; মলত্যাগান্তে মলন্বারের টাটালি ও বেদনা।

দিল'জ্জ, বিরুক্তি কর, কিঃ ছাগ্নে হাত্মকর কালক।

কপালে মাকড়সার জালের স্থাতা পাকার স্থায় অহতেব, উহা দুখ করিয়া কেলিবার অভিশয় চেষ্টা ( বোরা, ব্যারা, রোম, নাণ-স্ক )

য়েগমোনস এরিসিপেলাস। জালা ও ন্তল-বেধনবং বেদলা সংযুক্ত, মুখ-মগুলের বিসর্প ; দক্ষিণ পার্শ্বে আরম্ভ হইয়া বাম দিকে গতি ; আইওডিন প্রয়োগের প্র

ন্ত্রী-প্রায় উভা জাতিরই রতি-ক্রিয়ার নিশ্চিত জাপ্রবৃদ্ধি। উপচয়।---বাজিতে, ঋতু-কালে ও ধতুর পরে বৃদ্ধি

मञ्जा । —( > ) कहे, स्थि, ७ गांहेटकांत्र मस्छ अञ्भातक मध्या । ( २ ) गांहे, छ शत्यत्र भरत्र छाय छाण थार्छ ; यून्छोपिरांत्र स्यम-रत्नांका ( obdaity ) कांगरकत्रियांत्र शरत हेर छेशस्यांत्री स्त्र । इन्य-रत्नारशं, मश्यांत्रत्र शरत ; ज्यार प्रयस्क

प्रमारक छोत्र आत्म भिनियोत । द्या श्र-पत्र कांध करत्र (क) प्रजू द्यादन श्राफ, पाई छ लरगत गम छन

### গ্লনথেন।

(Glonoine)

ক্ষারবীয় গাঁড়; রস্তেল্ডোধ না, অভিশয় অন্তর্ভিবিশিষ্ট স্ত্রী-লোক ; স্কর্পে আক্রাপ্ত হয় এর গ ব্যক্তি

মানাসক উত্তেখনা ভয়তাাথি ভীতি, উৎসাত প্রাথিও উহার গৌৎ ফল জনিত অপকার , চুল-ছাটার মণা ফল ( একন, বেল )

গ্যাদের আলোতে কাজ করাতে, ও মন্তকে উত্তাপ পতিত হওয়াতে
মন্তকের উপদ্রব; মন্তকে উত্তাপ-পাগা সহ্য হয় না, চুলীর উত্তাপে অথবা
রোজের ইণ্টিকো অয়ণ করে ( গ্যাক, প্রাট-কা )

মন্তিকো রজ-সঞ্চয়, অপবা পর্যায়ক্রমে মন্তক ও জংপিওের রজ-সঞ্য মন্তক অতান্ত বড় বোধ হয়; যেন মন্তিক অপেকা করোটী (skull) ছোট এঞালার অমূত্ত হয়; আরু প্যাত্ত ও সূর্য্যাবর্ত্ত শিরঃপান্ড। (Sun stroke and Sun-ipendache); মর্বোর হাস-র্ত্তির সাইত উহার হাস-র্তি (ক্যাল, ভাট-কা)।

साधीत्र व्यक्तात्व मटा मटा मटा मछा के खादा थावा थावा भारत। स्वार्थिक व्यक्त थावा व्यक्ति विकालिक विका

মন্তিদ অভিনিক্ত বৃহৎ, পূর্ণ ও ফাটিয়া পড়ার ছায় অমুভূত হয়; রক্ত উপরের দিন্দে ভর্মেণত হয়। প্রতি পদ-বিক্ষেপে, নাড়ীর স্পান্দনে ও সংঘর্মণে মন্তিক্ষ দপদপ করে।

বিশবিভ বা বিশ্বা থাড় বশতঃ মন্তিক্ষে তীন রজ-স্থার; খাড়ুর পরিবর্ত্তে শিরঃ-পীড়া।

অরায়্র প্রভূত রক্ত-জ্ঞাবের পর শিরঃগাড়; গর্ভবর্তী জীদিগের মৃস্তব্রু বক্তের প্রথাবন। ক্যারটিত ধননীয় দেশ দেশ সহকারে এবেল ধ্বংস্পান্য ; ধ্ববিভিন্ন জিয়া দায়া সিত ও গৌরবারিত (Taboured & op neced) স্বত্ত ধ্ববশিতে, এবং তথা হইতে জতবেলে মন্তকে প্রধাবিত হয় বলিয়া নোধ হয়

मिखिएकत त्रका-मध्य २ म् ७: भिखिएरात छेक्षां त-८वाश ( मध्या ) , मरखारह्य-कारण मिखिक-विज्ञोत व्यापाट ( meningitia ), किंग्र दर्ता शि दम्भित्रा द्वरणर्धाम केंग्रयात्री विणया द्वाप इत्र

সম্যাকালে কয়লার আগগুণের নিকট মসিলে অথবা সেথানে ঘুমাইয়া পড়িলে বালক-বালিকাদিগের পীড়া জন্মে।

নিবৃত্ত রক্ষমাদিগের ভাপাবেশ (flushos of heat) (এমিল, বেল, দ্যাক); রক্ষমাদিগের ভাপাবেশ (ফির, স্থান্দ)

উপচয়—সূর্য্যোত্তাপে, রোদ্র-ভোগে; গ্যাগের আলোডে; অভিরিক্ত উত্তাপ গ্রহণে; সংঘর্ষণে, অবশীর্ষ হইলে, উর্জে আরোহণে; টুপির স্পর্শে, ও কেলচ্ছেদনে; রুদ্ধি।

সাহার্মা---(১) এনিল, বেল, ফির, জেল, নোলিল, প্রামোর সহিত গ্রানের সমগুল সহল।

## চায়না বা मिदक्षाना।

China-Cinchona >

यणवान, श्रामवर्ग वाकिषिरात्र भटकः । क भूटकः भवन, भटत दिनेक्षणाकः । स्नाविषि निःमत्रम यणकः प्रक्षिण्क वाकिषिरभत्न भटकः बाहे देशस क्षिरवाती।

अमिना, देवताना, नीतवा (कम-कमि), नित्राभण, विषयण, वाहित्रा वाकिट्ड व्यनिष्टा, किन्न व्यापार्टी कतिवात महिरमत व्यक्तवा

শরীরের তরল বিধানের অপচয় (losa of vital fluids),
বিশেষতঃ রক্তশ্রাব, এবং অতিরিক্ত স্তন্য-দান, অতিসার,
পূঘ স্থাব (চিনি-সশ) হইতে উৎপন্ন; অপন, ম্যালেরিয়া-সমূভ নিদ্ধারিত
সমরে প্রত্যাগত, একদিন পর এক দিন উপনীত: রোগা

প্রতি ৷ প্রতি ৷

त्वसना — विभिक्तमात्रा व्यथना है निम- कि जिय दिश्वा दशकात गर्छ दनस्त , खार्छ मिसिश्वादन, मकल व्यक्तिद्ध ; अ व्यक्ति-दन्द (periosteam ) दनस्त , जव्बल चन चन व्यक्त क्षां का कि विभिन्त क्षां का कि विभिन्न क्षां का कि विभन्न का विभन्न का कि विभन्न का कि विभन्न का विभन्न का कि विभन्न का कि विभन्न का कि विभन्न का विभन्न का कि विभन्न का विभन्न का विभन्न का कि विभन्न का कि विभन्न का विभन्न का विभन्न का विभन्न का कि विभन्न का विभन्न का

অভিশন মুর্ধগতা, শারীরিক প্রানে অপ্রান্তি, সারবারতা; কপুর্শে অনুসূত্র, বেদনায়, ও বান্তু-প্রান্তি অভিনিত্ত অনুসূতি; সমগ্র সান্তু-প্রতান্ত অনুসূতি অনুসূতি অতৃপ্রিকর নিম্না, অথবা অবিরত নিম্না, সাজি ভিন্টার পরে উহার বৃদ্ধি; প্রত্যুয়ে জাগরণ

এক হাতের বরফের ভায় শীতগড়া, অভ হাতের উফড়া (ডিজি, ইপি, প্লস)

শিবংশীড়'—বোধ হয় যেন মাথা ফাটিয়া যাইবে; মন্তব্দের ও গ্রীবার বৃহৎ ধমনাধনের তাত্র দপ দপ; বদনের প্রানীগুড়া; মন্তব্দের পৃষ্ঠভাগ হইডে গমগ্র মন্তব্দের উপর বেদনা; বিদিয়া অপবা শুইরা থাকিলে বাড়ে, ভ্রম দাড়াইতে বা হাঁটিতে হয়; রক্তেন্সাবের পরে বা অতিরিক্ত ইন্দিয়-শেবার পরে উহার উৎপত্তি।

মূথ-মণ্ডলের পাশুরজা, নিমগতা ও আকুঞ্চিততা, চক্ষু নিমগ ও নীগবর্ণ প্রাথ দারা পরিবেষ্টিত; অমিতাচারের পরবর্তী মুথাক্ষতির জার পাশুর ও রুগ মুথাক্ষতি; সম্বান্ধে ওঞ্জান কালে দশু-বেশনা

আমাশয় ও অন্তের অভিশন আগান, উদ্যানে উপশন জন্ম না ( লাই, প্রভা ।—উদ্যানে উপশন, কার্ব-ভেজি); ফল আহারের পরে বৃদ্ধি পায় (প্রস)

প্রতাহ কোম এক নির্দিষ্ট ঘণ্টায় উদয়-বেদনা; পিজ-শিলা (gallstones) বশতঃ নির্দ্ধ রিড সমরে প্রত্যায়ত্ত উদয়-বেদনা (কার্ড-মে); রাজিতে ও আহারাত্তে বৃদ্ধি; এবং অবশীর্ষ হইয়া বিভানে হইবে (bending double ) উপশ্ম (কলো)।

রক্ত-প্রাব বস্তঃ প্রাস্থ-বেদনার বিরুতি; রোগাণীর কাহারও পার্শ স্থা হয় না, তাহার হাত ত্থানি পর্যন্ত ভূঁইতে গারা যায় না

भूथ, नाणिका, खनायू ना खन्न इहेट जिल्लान ; द्वारानिक जिल्लाक का त्रक्तिश्रीक, खन्न खटनाव क्ष्म ; यदिन बद्ध अपना कर्ननाम महकारन यिन महक अपना कर्ननाम महकारन यिन महक अपना कर्ननाम महकारन यिन महक जिल्ला अपना क्ष्म । प्रमाप ( किन-क्रम )

স্বিরাম জর — প্রতি আক্রমণে জ্বের আবেশ ছই তিন ঘণ্টা অরাবস্ত্রী হইর আইসে (চিনি-সল), সাত দিন বা চৌদ দিন পর পর জর প্রত্যাহত হয়, কথনও রাজিতে জুর আইসেনা; আর্ড হইলে বা নিসাকালে প্রভূত ঘর্ম নিঃস্ত হয় (কোনা)।

উপচয়।——অত্যক্লমাজ্য কপদেন; একদিন গম একদিন; বায়ু-প্রবাহে; চিত্ত-বিকারে, ও রস রক্তাদির অংক্ষরে; বৃদ্ধি।

উপশ্য ।--প্রচাপনে ও অবনত হইয়া বিভাগে হইলে হাস।

স্থান ।—(১) দিরমের সহিত অরুপুরক সম্পা। (২) অগ্রবর্তী থাকারের স্থিরাম অরে চিনি-সলফের সহিত তুলনার (ডিঞ্জি, ও সেমেনের পরে চারনা প্রতিকৃপ। (৪) অভিরিক্ত চা পানের মন্দ্রকে, রক্তজাব হইতে থাকিলে চারনা ফলপ্রদ

### **(**इलिट्डानिश्च ।

(Chelidonium Majus)

श्वात्र, शिष्ठमा म्थाङ्गि, कीन-दार, উত্তেজনশীम; यङ्गद, आधानम छ উদরের রোগ-প্রবং (গড); সকল বর্ষ, সকল ধাড় ও সকল লিখের রোগিনি-গের পক্ষেই এই ঔষধ উপযোগী

দক্ষিণ স্বয়াছির ( Scapula ) নীচের ও অভ্যন্তরের কোণের নিষ্ণে অধিয়ত বেদনা ( কালী-কা, মার্ক — বাম স্বয়াছির, চিনোপ, গাল ) ঋতু-পরিবর্ত্তনে উপস্থিত বা প্রাক্তা বৃত্ত অন্তস্থতা (মার্ক); আহারাস্থে সমস্ত জন্মথের প্রাসপ্রান্থি

শ্রেছবায় গাঢ় পীওবর্ণ দেপ, প্রাস্তভাগের আরক্তভা, দন্তের চিহ্ন ( ৫৬ ----বুহুৎ লোগিত ঞ্জিহ্বায় দস্তাক, মার্ক )

যে পর্যান্ত না দল্পপ্রান্ন আধাশন উহা উদ্গান্ত করে, সে পর্যান্ত অভিশন্ন উত্তপ্ত পানীর দ্রেব্যের আক্ষাঞ্জ (আসা, ক্যান্ত)

নির্দারিত সময়ে সমাগত অফি-কোটরের পাযুশ্ল (দক্ষিণ পার্যের), ও অতিশয় অঞ্গতি; অশুক্তিল প্রবল বেগে নির্গতি হয় (রুস)।

কোর্চ-রোধ ; মেধের বিটার জার গোল গোল গোল শক্ত শক্ত গোলার আকার মল (ওপি, প্রথ); পর্যায়ক্রমে কোর্চ-কাঠিত ও অভিনার।

অতিদার।—রাজিতে; শেওলা শেওলা, পাতলা-ধ্যর, উজ্জল পীতাত; কপিশ বা শুল্র, জলবৎ, লেহাকার; অনিজ্যার নিংস্ত; ম্ল। বদন, কপাল, নাসিকা ও গওর্যের সবিশেষ গীতবর্ণ।

ত্বকের পীতমিঞ্জিত ধুদর বর্ণ ; পরিগুফ কুঞ্জিত ত্বকু। হতের তালুকার এই প্রকার বর্ণ ও আফুডি (দিগি)

यक्षराज्ञां । शिख् (jaundice), मिक्किन घरक ट्यामा। मिकिन ग्रमण्टमप्र व्यक्तार, यक्षराज्य क्षेत्रभर्ग (यार्क)

व्यादमिनिक काम ; कामिवान ममन मूथ रहेटछ क्ष्म क्षम दावावछ विकिश्व रहेना शांदक (बार्टफ, कामी-का)

দিশিণ পার্শের সমধিক আক্রান্তি; দিশিণ চন্দু, দিশিণ কুনকুন, মণিণ কুলি ও উদর, দিশিণ বঙ্গাণ (li)) ও জন্মার আক্রান্ততা; দিশিণ পদ ব্রদের স্থার শীতল; বাম পদ স্বাভাবিক (লাই)

আহারাথে ছবলতা ও আলত, শরন করিয়া থাকিতে ইছো যক্তাবের পূর্ব ইতিবৃদ্ধ সংযুক্ত অথবা যগ্যা-প্রবণ-ধাত্বিশিষ্ট ব্যক্তিদিরের প্রাতন, পচা প্রসারণশীল ক্ষত।

পিত্ত-भिना, मन्दिन प्रकाश्वित्र मीट्ट यममा ( शिख-भिनाखनिक छेनत-यममात्र प्रमानक प्राक्तिमान, काङ् )। স্থান্ত ।—(১) যক্তের পীড়ার ব্রাইওনিরার ব প্রাবহারের মন্দ্রণ চেলিভোনিরম ধারা নিবারিত হয় (১) চেলিভোনিরমের সহিত একন, ব্রাই,
লাই, নার্ক, নক্র, ভাল, সিপি, ও সলফের তুলনা হয় (৩) চেলিভোনিয়মের
পরে আস্, লাই ও সলফ ভাল থাটে, এবং আরোগা সম্প্রণার্থে প্রারই

## জিঙ্কঃম মেট্যালিকঃম।

(Zinoum Metallioum)

মন্তিকের ও দায়র অবসরতা; জীবনীশক্তির প্রাচুরতা, মন্তিক ও সায়ুর শক্তির অসন্তাব; এত হর্মণতা যে হামাদি উডেদ অথবাধত্ প্রকাশিত হইতে পারে না, নির্চাবন, ও মৃত্য ত্যাগ করিতে, এবং ম্বিতে বা মনে রাথিতে পারা যায় না

পদম্বয়ে ও নিম্নাঙ্গের অবির্গত ও উৎকট অস্থিরত অনুভব; সর্বাদা উহা সঞ্চালন করিতে হয়।

যেই ঝাতু-রক্ত প্রবাহিত হইতে থাকে সেই সকল প্রাকার অহুথের নিবৃত্তি জন্মে, নকল প্রকারেই ভাল খোদ হয়, কিন্তু ঋতু বন্ধ হঠলেই তথন আবার সকল অহুধ প্রত্যাবৃত্ত হয়।

সন্তিক্ষের রোগে, সন্তিজের পক্ষাবাত-সন্তাবনাম; স্বান্তাবিক আরোগ্য-শক্তির অতিরিক্ত ছর্কাতা বলতঃ উত্তেদের অবিকাশ ( ফুপ, সল, টিউব ); সন্তিদ-গহররে রস-ক্ষরণের লকণ

**भिक्ष्य योश यात्र योत्र का का का का का का का का** करत

भिश्व निर्मात्र केंप्तित्र। উर्टर ; निर्माकारण मर्थामत्रोदत छे०रक्षणण बरण ; छीछ हरेत्रा कांत्रिक हत्र, अक-पृष्टि हाहित्रा शारक, अस्त्रक कार्यक्ष्म कार्य ; छोहात्र मुश्रम अक्ष्मतात्र भाष्ट्र अक्ष्मतात्र अक्ष्मत्र अक्ष्मतात्र अक्ष्मतात्र अक्ष्मतात्र अक्ष्मत्र अक्ष्मतात्र अक्ष्मत्र अक्ष्

দক্ষোদগদ কালে, পাণ্ডুবর্ণবদন ও অনুতাপ সহকারে,

हैकात ( मज़का ), दक्ष राष्ट्र का शाहार है है है है है है है का ( दिलाधाना विभविष ); है क्रू पूर्वन ; मिखारिक गरपर्यंग

হস্ত ধ্যা ও মস্তকের, অথবা এক হস্ত ও মস্তকের অনৈফিক গভি (এপোদা, ব্রাই, হেলি)।

উডেদ-বিলোপ; বা ভয়প্রান্থি বশতঃ কোরিয়া ( তাণ্ডব রোগ )।

প্রবাহণ ১১ টা বা ১২ টার সময় ভরানক স্থা (সল); আহারকালে অভিনয় পেটুকভা; শীঘ্র শীঘ্র থাইতে পারা যায় না ( শিশুদিগের প্রভের মন্তিজ-রোগ)।

শ্যার শয়ন করিবার পরে কয়েক খণ্টা পর্যান্ত, এনন কি নিজাকালেও পদ্ধয়ের অভিশয় দায়বীয় সঞালন

পদৰ্যের ঘণ্ডাব্রুডা, ও অঙ্গুলির নিকটে ক্ষত; তুর্গন্ধ পাদ-ঘণ্ডের বিলুধি; অভিশয় মানবীরতা।

বেদনাপূর্ণ নিহার-শেলাট (Chilblains ), খর্ষণে উহার বৃদ্ধি

পৃষ্ঠ-বংশের প্রীড়া, সমগ্রা পৃষ্ঠবংশের দীঘাদীঘি জ্বালা; পৃষ্ঠবেদনা, উপবেশনে উহার অভিশয় আধিক্য, বিচরণে স্থাস (কোবাণ্ট, পশস, রসটন্ম)।

शृष्ठ-वररभत উপদাহ; भक्तित जिल्हा अविभन्न **अ**वनन्ना ।

পুঠে স্পর্শ সহা হয়না ( চিন-সল, টারাণ, থেরে )।

কেবল পশ্চাদিকে বজ হইয়া বসিয়া মূত্ৰত্যাগ করিতে পারা যায়।

व्यक् विक्रि (लगीत म्लामन क छिर्ट्यम्ल (ब्राजित, क्रिय)।

শরীর-শাথার ছ্র্লিতা ও কম্পন; শিথিবার সময় হস্ত কম্পন; গাড়ু-কালে হস্ত-পদের কম্প।

ধর্ম-কালে কোন প্রাকার গালাবরণ সহা করিতে পারা যায় না

উপ্চয়-শ্রা-পানে, জন্মাত্র পানেও অনেকগুলি লক্ষণের বৃদ্ধিপ্রাপ্তি (এলম, কোন)!

উপশ্য-নিষ্ঠাবন ত্যাবে বংশালকণের; সূত্র-ত্যারে স্ত্রাশরের লক্ষ-

বের; শুক্রজাবে পৃষ্ঠ-পক্ষণের (বৃদ্ধি,-কোবাণ্ট) এবং গাড় প্রাণে সর্জাজীন শক্ষণের; উপশ্য

সম্বাদ্ধ (১) উদ্ভেদ বিশোপ জ্ঞানত প্রাক্তন নাগে, হেলিও টিউব, জিল্পের সমন্তব (২) জিল্পের পরে ইশ্বেডাল থাটে, কিন্তু নহা ভাল থাটে না। (৩) জিল্পের সহিত ক্যাম ও মকোর প্রতিক্ল সম্বন্ধ; জিল্পের পরে বা পূর্বে এই ছই ওষধ ব্যবহাত হয় না।

### (जनिमिश्वश्म।

(Gelsemium.)

বালক-বালিকা, ও যুবক-যুবভীদিগের পকে, বিশেষতঃ প্রায়বীয় ও গুলুবায়ু-প্রকৃতির নারীদিগের পকে এই ঔষধ উপযোগী

গতিজনন-সায়ুর (Motor nerves) সম্পূর্ণ পক্ষাঘাত সহকারে সমগ্র পেনী-মণ্ডলীয় সম্যক্ শিধিলতা ও অবসন্তা

উত্তেলনা, উপদাহ, ও আহভূতি-শীশতা; জী-পুরুষ উজয় জাতিরই স্থাতিয় মৈপুন জনিত দারবীর রোগ

ভয়, উত্তেজক সংবাদ ও আকস্থিক মনোভাবের মন্দদল ( ইগে। আকস্থিক, ভানন তন্ত, কফি)।

মৃত্যু-ভর ( আস ) ; সম্পূর্ণ সাহসহীনতা ।

জন্দাশরে, নাট্যালয়ে, অথবা কাহারও সহিত সাক্ষাৎ করিতে য ইতে হইলে অতিসার উপস্থিত হয়; সাধারণের নিকট উপস্থিত হইতে বা রজ্মফ দর্শনে ভয় অন্যে ( আর্জ্জ-না )।

সূর্য্যের উত্তাপ বা গ্রীষ্মকালের উত্তাপজনিত সর্বাদ্ধীন অবসাদ জিহ্বা, হাত, জঙ্গা; ও সমস্ত শরীরের জুর্বিলতা ও কম্পন।

নীরবে, ও একাকী থাকিতে ইচ্ছা; কাহারও সহিত কথা বলিতে অথবা কাহাকে নিকটে আসিতে দিতে (সে চুপ ক্রিয়া থাকিগেও) অনিচ্ছা (ইগ্নে)। শিরো ঘূর্ণন, মস্তেকের পশ্চান্তাগ হইতে উহার প্রাণারণ ( দিশি ); শিরোঘূর্ণন সহকারে ধিজ-দৃষ্টি ( একটা বস্তু ছেটা দেখা ), ঝাণদা দৃষ্টি; দৃষ্টিবিলোপ; ও নড়িতে চড়িতে চেটা করিশে মন্তব্ৎ অম্ভব

भिश्वित्रिय श्वास खत्र, खत्र वण्डः भिश्व धांजीत्क व खक्र किह्न धतित्र थात्क ( रवादा, खांनि )

দৃষ্টি-হীনতা-পূর্ধক শিরংগীড়া (কালী-বাই) প্রাক্ত স্ত্রজাবে উহার শান্তি পেশীর সামঞ্জত্তোর বা সম-নিয়োগতার (co-ordination)

অসম্ভাব; পেশীগুলি ইচ্ছাত্তরপ কার্য্য করে না

শিরাপীড়া — মের্ফনতের গ্রীবাদেশীয় অংশে উহার আরম্ভ; মন্তক্ষের উপর নিয়া বেদনার প্রসারণ, কপালেও অক্তি-গোলকে বিদারণবৎ অক্তব (ভাল, দিলি, এইরূপে আরম্ভ, কিন্তু এক পার্শ্বে); মানসিক পরিপ্রেমে; ধ্য-পানে, ক্রোভাপে, ও মন্তক নিয় করিয়া শয়নে; বেদনার বৃদ্ধি।

চক্ষুর উর্ধ্যে মন্তক্ষের চারিদিকে বন্ধনের স্তার অমুক্তব ( কার্বাল-এসি, সলফ ); মন্তকের উপরিভাগে স্পর্শ-দেষ

मा मिष्टिश हिष्टिश खरिशिएक म्थिति म्थिति म्थिति म्थिति क्रिया क्षिति हिष्टिश हिष्टिश क्षिति हिष्टिश क्षिति हिष्टिश हिष्टिश क्षिति हिष्टिश हिष्टि

वृक्ष वयदमत धीव ( यन्तर्गा ७ ) मां फ़ी

চক্ষু পাতার অতিশা ওক্ষ ; উহা উগীলিত রাণিতে পারা যায় না ( কষ্ট, গ্রাফ, সিপি )

জরে পিপাসা-পরিশৃত্য শীত, বিশেষতঃ মেরদতের উপর দিয়া শীত, ত্রিক্ষান্থি হইতে মতকের পশ্চান্তার পর্যান্ত জ্ঞান্ত-রাজি ভরকের স্থায় পরণর পৃত্তের উপরে ও নীচে শীতের প্রধাবন।

छिशहरा — आर्क्षणात्म अङ्ग्रहात शृद्धः गत्नाष्ठाव ना मानमिक উछ्छमात्र , कूमश्वादाः जामादकत धूमशादनः तादात्र विषय ए।विद्याः अवः कारात्रक मूट्य निष्यत्र क्षित्र कथा श्रानत्म , तृष्टि।

সম্ব্রা । ত্রাণারিত টাইফয়েড অরে ব্যাপিটিসিয়ার সহিত , এবং কুইনাইন দারা প্রতিরাধ স্বিরাম অবে ইপিকাকের সহিত জেলসের তুলন হয়।

# টিউবারকিউলাইনঃম—ব্যাসিলাইনঃম।\*

#### (Tuberculinum-Bacillianm)

त्य गक्न वाक्तित्र भूशांकिक शांक्या, नम्म नोमवर्ग द्योतः । याशास्त्र व्यक्ति मीर्थ, कीष, दिक्षेत । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्त्र व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । याशास्ति व्यक्ति व्यक्

যথন কোন রোগীর স্থা-দোষে গুটিকা-রোগের (টিউবার্নিন্টজার ডিজিল)
বিবরণ জানা যায়, এবং অন্ত্যুক্ত স্থানির্বাচিত ঔষ্টের্মণ্ড উপশ্বন বা
স্থায়ী উপকার না দর্শে, তথন রোগের নাম যাহা কেন না হউক, এই
ঔষধ ব্যবস্থাত ইইয়া থাকে

রোগের লক্ষণের অবিরত পরিবর্তন; ফুসফুস, মন্তিক, ব্রুক (kidneys), যক্তৎ, আমাশর স্নায়ুমওল প্রস্তৃতি যন্তের একটার পর আর একটার আক্রান্ততা,—সহস উহার আরম্ভ এবং সহসা বিরতি

সহজে শর্দ্দি লাগে, কি প্রাকারে কোথায় শর্দ্দি লাগে তাহা জানা যায় না; "বিষণ বায়ের প্রতি নিখান এৎবেই" খেন শন্দি লাগে এমগ বোধ হয় (হিপ)।

দ্রতি ও প্রত্যাধী শীর্ণিটা; ভাগমণে আহার করিলেও মাংসের করপ্রাপ্তি (এয়েটি, ক্যান্ক, কোনা, আইও, ফাট)।

বিষয়তা, আশাশ্যতা, বিমর্থতা, কোপনতা, নিম্নস্ত-চিন্ততা, ক্ষণমাগিতা, নীম্মতা, নিমাননতা; প্রভাষতঃ মধুর প্রাম্নতি কিন্ত একাণ প্রোম্ন উমান্ততা। গৃহেম সমস্ত বস্তুই অপমিচিত বোধ হয়, যেন কোন অপমিচিত স্থানে স্বাইতি করা যাইতেছে।

শিরংপীড়া।—পুরাতন, ও শুটিকাজনিত শিরংপীড়া; দাবা তীব, কর্তনবং দক্ষিণ চকু হইতে সম্ভবের পশাস্থাগ পর্যান্ত পোনারিত বেদনা; বোধ হয়

<sup>\*</sup> ডাঃ ফিস্ক ও সোমান ফুসফুসের পুষমর নিটাবন হইতে এবং ডাঃ হিণ পর্ব বিক্ষণদৃষ্ঠ, ব্যাসিলঃস টিউবারকিউলোসিস বিশিষ্ট, টিউবারকিউলাস ফুসফুস হইতে

(येन गोणोत्र होतिसिटक आकृष्टी ट्यांकांत्र পত्र (i on hoop—ट्यांक्य मुन्द्र त्यांकांत्र आश्रेष्टी) त्रिशाटिए (असीक, गणक); खिलांत्र श्रुनिक्षिहिक खेयद्य प्रतिना दक्यण गोणा शांदक भावा

বিজ্ঞালয়ের বালিকা দণের শিরোবেদনা — অধ্যয়নে বা সামাক্ত মানসিক প্রাম বেদনার আভিশ্যা; নিকটে চক্ষ্ রালিয়া কার্য্য করাতে বৃদ্ধি, চসমা চোলে গাক্তেও অনুপশন; গুটকা দোষের গুরুবৃত্তান্ত।

মন্তিক ঝিল্লার বা উহার ভূমিদেশের প্রদাহ, তৎসহ রস-নিঃপ্রবণের আশকা; রাতিতে প্রান্ত-দৃষ্টি ( দাধা দেখা ); নিজা হইতে ভীত হইরা চিৎকার পূর্বক জাগরণ; যথন এপিস, হোল বা সলফ স্থানির্বাচিত হইলেও ফলপ্রাদ হয় না।

नामिकाम जागांग जागांग रवलना विभिष्ठ एका छेक ममुरहत्र छेदशिख हिन्सिखर्न हुर्शका शूध (भिरक)

প্লাইকাপলোনিকা (কেশরোগ বিশেষ); বোরা ও সোরি বিফলান্তে এত-দ্বারা ক্ষেক্ষন রোগীয় চির আরোগ্য লাভ হইয়াভিল

অভিনার — আক্রিক স্থান বাধি। প্রত্যুগ কালীয় অভিনার ( স্থান ) ভালরপে আছার এইণেও শরীরের শীর্ণতা প্রান্থি ( আইও, ভাট ); স্মলা, কটা, জলবৎ, তুর্নার, মল; অভিনতে নিঃস্মণ; অভিশন্ন তুর্মালতা ও প্রভ্ত; নৈশ খর্ম।

ধতু নিধারিত সময়ের অধিক পৃথের ; অভি প্রভূত ; অভিরিক্ত দীর্ঘকাল খারী ; গ্রারজে ধীর-গতি ; ভরত্তর রথক্চচ্চু ংষ্জে ; গুটিকা-দোষের ইভিবৃত্ত বিশিষ্ট ; ধতু

ক্ষুদ্দের, বিশেষতঃ বাম ক্ষুদ্দের শিথর-দেশে গুটিকা সঞ্চয় ( ক্ষু, সুল্ফ, থেরে )।

পামা (ccroma) ।—সমস্ত শরীরের উপর অটকাজনিত পামা; দারুণ কণ্ডুমন, রাজিতে গাজ-শক্ষ উল্মোচনে, ও মানে উহাল অধ্যক্ত; অধিক পরি-মানে শামা শাম ভূষির জায় শব্দ পাত , কর্ণের পশ্চাতে, চুলে, চর্মের ঘলিতে অবদরণ ও স্পর্শবেষ সহ রস স্পরণ; চর্মের অধিবৎ আরক্তভা । দক্ত।

এই উষধ প্রাপ্তত করিয়াছিলেন; একগু ধিক্ষ ও সোয়ানের ঔষধ টিউবার্র কিউ-নাইনংম এবং হিথের উষধ ব্যাসিলাইনঃম নামে অভিহিত হইয়া থাকে কিন্তু উত্তয় প্রস্তৃতিই নির্ভরযোগ্য ও ফলঞাদ। স্ন — ( ) সলফার ও সোরিণমের সহিত অমুপুরক সহদ (২)

যথন সোরি বা সলফ, অথবা অক্ত কোন অনির্কাচিত ঔষধে উপশম বা স্থায়ী
উপকার দর্শেনা তথন টিউবার ব্যবহৃত হয়; হে-ফিভার ও য়াল্মা রোগে

ধাত্-দোষ সংশোধনার্থে সোরিণমের পরে টিউবার প্রয়োজিত হয় (৩) গুটিকাজনিত রোগে, রক্ত সঞ্চয় বা প্রদাহের তক্ত আক্রমণে নেসেডোনা ব্যবহৃত হয়

(৪) টিউবার-প্রয়োগে আরোগ্য প্রাপ্ত রোগীয় স্থাত্ত অ্যাইবার জন্ত হাইভূষ্টিস প্রয়োজিত হয়

## টেরেবিস্থ।

#### (Terebinth)

### মুত্রে ভায়োলেট ফুলের গন্ধ।

জিহবার মাস্থাতা, চিক্কণতা (glossy) ও আন্ত্রক্তেন, যেন জিহবান কণ্টক (papillae) বিনষ্ট হইয়াছে; উরত জিহবা কণ্টক; জিহবার লেপ থণ্ডে থণ্ডে উঠিয়া পড়ে; উহার নীচে উজ্জল লোহিত ধর্ণ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র স্থান দৃষ্ট হয়, অথবা সমগ্র লেপ সহসা পরিষার হইয়া পড়ে (সম্প্রেট অরে), জিহবার শুরুতা ও আরক্ততা, অগ্রভাগ আলা (মিউর-এসির সহিত তুলনা কর্মন)।

উদর।—স্পর্শে অভ্যন্ত অহন্ত্তি; স্ফাততা, আধান, অভিশয় আধান, ক্ষন ( কগচি )।

কতিসার। অলবৎ, ঈবৎ হরিবর্ণ, আমসংযুক্ত; প্রাভুত, ত্রগন্ধি, রক্তাক্ত পুনঃ পুনঃ নিঃস্ত মল; মলবারে ও সরলারে জ্বালা; মল ত্যাগান্তে মূর্ছো ও অবসমতা (আস)।

রমি শ্বাদে হর্গন গল-রোগ ( দিনা, স্পিঞ্জি ); শুন্ধ, থক্ থক্ কাস; মলমারে তুড়তুড়ি, স্ত্র-রুমি, মহীলতার স্থায় রুমি, গ্র-রুমির ( tape worms ) অংশ নিঃসরণ।

রক্তমূত্র।—মূত্রের সহিত সম্যকরূপে মিঞ্জিত রক্তম, কফি-চূর্ণের

ন্মার বাংগজিত গোর্থার্যার্ড (c or dy), ধুমল, সাপ্তসাল (al numinous) নুত্র ; প্রভুত, সলিন অথবা কাল, বেদনাসূত্য, মূল।

বৃদ্ধক, মূলাপথ ( bladder ), কুমধুস, অন্তর্গ ( intestines ), জরায় ও ভৃতি আভাস্থানিক মধ্যের মাজ-সধ্যা ও প্রদাধ , তৎসহ মজেন্দ্রাব এবং সাংখ্যাতিকভার প্রবণতা।

পাপুরা হিমোরেফিকা, দিন দিন নৃতন নৃতন বস্তুসংখ্যক কালশিরা (ecchymoses) (সলফ-এদি)।

বুজকের বিধান বিকারে সর্বাদীন শোগ সহ উদরী, স্বালেটিনার পরে শোগ (এণিন, হেলি, শ্যাক)

ক্ষতিসহ আনু হইতে রক্তেনাব; শত অথবা উপথকের অপকৃষ্টতা সহকারে মণিন অএবল মজপাত।

বুক্কক, মুক্রাশ্য ও মুক্রমার্গে প্রবল জালাকর ও আকর্ষণবৎ বেদনা (গঞ্জ, জ্যান, জ্যান্ত )

মূত্রাশয়ে প্রথশ আলা ও কর্তন্বৎ যাতনা, সুস্ন; উদরের নিম্নভাগে অমুভবাধিকা; মূত্রাশয়ের মূলদেশের ত্রালভা বলভঃ মূত্রাশয়-প্রদাহ ও মূত্রাধ

সাংগ্রদাল মূল ; উহার তরণ ও প্রথমাবস্থা, ছাঁচ ও উপত্ক ( casts and epithelium ) অপেকা রক্ত ও অপ্রলালের আধিক্য ; ডিফ্লিরিয়া, রালে টিনা ও টাইদ্যেড ত্রের পরবন্ধী এঘু মিহুরিয়া ( সাংগ্রদাল-মূল )।

মূত্রে অক্ষণাশ ও রত্তের আধিকা কিন্ত ইাচের অভিশয় অমভা; আরু গৃহে বাদে বৃদ্ধি

मूळकुष्ठः ; भारकिशिक भूव-दक्षांध ।

স্কৃত্য ।--- এলুমেন, ক্ষান, আর্ব, ক্যান্থ, ল্যান্ড, নাই-এসির মহিত সমগুর গুরুষ ।

ম্যালেরিয়া ও আফ্রিকার জনে প্রতিষেধক ঔষধ সর্লণ ব্যবহারেরও বিধি আছে।

### ট্যাবেকঃম।

#### (Tabaoum)

মন্তিক্ষের উপদাহ (cerebral in it it in) ইইডে উৎপার রোগ, আ জৎপায়ে ফুসফুস পাকাশরিক পায়ুর (vagi) জিয়ার অপাই উপ্যাহ

গালের ও পৃষ্ঠের শীর্ণভা।

সমগ্র পেশীমগুলের সম্পূর্ণ অবসরতা।

গাত্তের বরফের ন্যায় শীতলতা; শাতল ঘর্ণো আচ্ছমতা।

শাস-কাস, সবমন শির:পীড়া, নিরোঘূর্বন, হাঁচি প্রান্থতি দক্ষণের আবেশে আবেশে অর্থাৎ থাকিয়া থাকিয়া উপস্থিতি।

অজীর্ব, স্তুৎকম্প, ও স্বিরাম নাড়ী সহকারে অভিশয় সিরাশত।।

শিরোঘূর্ণন।—সৃত্যুব্ধ পাতুবর্ণ, উহা বর্ষিত হইয়া সংজ্ঞাশ্যতা, বিমৃত্ত বায়তে ও বমনে; উথানে অথবা উর্জাদকে দৃষ্টিপাতে; এবং চক্ষুর উদ্যালনে, উপশ্ব প্রাপ্তি।

প্রত্যুষে সবসন শিরঃলীভার উপস্থিতি, সধ্যাফে উহার অসহ্যন্তা, নিশারণ বিবসিষা, প্রবল বমন , শব্দ ও আলোকে বৃদ্ধি; নির্দ্ধারিত সময়ে প্রত্যান্তৃত্তি, এক বা গুই দিন স্থায়িত্ব

মশুকের দক্ষিণ পার্শ্বের উপর হাজুড়িবা পদার আখাতের স্তাম আদ্দিক বেদনা।

` নাপদা দৃষ্টি, যেন অবশুঠনের ভিতর দিয়া দেখা যাইতেছে; মন্তিছের উপদ্রব অনিত তির্যাগদৃষ্টি (trabismus)

**रत्रिमा जलवा मर्यम-जाध्य मीर्यजा जमिल मृष्टिशेमला।** 

পাপুবর্ণ, নীশবর্ণ, ক্ষিত, নিমগ্ন, পতনাবস্থাপন্ন, শীতল ঘর্মাচছাঃ; মুথমগুল কপালে শীতল দর্ম, ভিন্নে ।

বিবমিষা; সামৃত্রিক বিবমিষার ভার অবিরত বিবামষা; অল্লমাল নড়িলে ,ড়িলেই বমন; তৎসহ প্রাতিঃ; বিমৃত্য বায়ুতে উপশ্য।

বমন। শীতল ঘর্শ্বসহ, প্রবল বমন; নড়িতে চড়িতে আরম্ভ

ক্রিলেই ব্যন্ত গর্ভাবস্থায় বসন; ল্যান্তিক এসিভ বিফল হ**ইলে** ব্যবস্থের (সোরি)

সামৃত্যিক বিবমিষা, নিদারণ বিবমিষা; পাণ্ডুবর্ণ ও শীতগতা; ষৎসামান্ত গঞালনে সৃদ্ধি এবং আহাজের ডেকের উপরে বিমল শীতল বায়ু সেবনে উপশম

আমাশায়-গহবরে ভয়স্কর শ্রোন্তি ও নিমগ্রতা (sinking) অমুভব।

বিব্যাষ্থ্য সহক্ষাল্যে আমাশয়ের শিথিলতা অনুভব (ইপি, টাফ )

শিশু উদর আনার্ত রাখিতে চায়; উহাতে বিবমিষা ও ব্যনের শান্তি গুয়ো; উদরে শীওলতা (কলচি, ইলাগা, ল্যাক)।

কোষ্ঠকাঠিত — ভাজের নিজিয়তা জাণবা সরলাজের পকাথাত; সল্বারের মুখাবরক পেনীর আক্সেপ; অনেক বৎসর স্থারী গুল-ভ্রেথ (Prolapsus ani) মলহারের দক্তা (horpes)।

স্থাতিসার —সহসা, ঈষৎ পীতবর্ণ, ঈষৎ হরিষণ্, আঠা আঠা, সবেগ অলবৎ মণলাব; তৎসহকারে বিব্যিষা, বসন, অবসমতা ও শীতল ঘর্মা (ভিয়ে ) অতাও-প্রাম্ভি; অতিশয় গুমপান বলতঃ রোগের উৎপত্তি।

व्कक मून --- नामिएक मूज-मानीत तीषातीष श्रीय चारक निक त्यस्मा (यार्क) : निताक विविभिया ७ मीजन चर्म

হৃৎকণ্প — বাম পার্শে শয়নে প্রাবন্য, ও দক্ষিণ গার্থে শয়নে বিয়তি। নাড়ী।—জত, পূর্ব, বৃহৎ; স্তা, সবিয়াম, অভিশয় মদা; স্থীব, শনিয়মিত, প্রায় অপ্রাপা; নাড়ী।

হস্তদম বরফের ভাগে শীতল, শরীর উষ্ণ।

জাত্ত হইতে নিয় পর্যান্ত জতবাধর বরফের জার শীতণ ; জঙ্গের কলান

উপশ্য ।----বিমুক্তে, বিমল, শীতল বায়ু সেবনে; ওগাতাবরণ উলোচনে উপশ্য

সম্বাদ্ধ ---তামাকের অপব্যবহারের সন্দ ফলের প্রতিহারার্থে নিমোজ ওষ্ধ সকল ব্যবহৃত হয় (১) ইপি,---অভ্যক্ত বিব্যাধা ও ব্যন। (२) जाम,— खामांक हर्सावत क्षण। (७) नश-प्यणानात्थ भवितन शांति जामानिक व्यक्त। (८) कम,—खंदकण्य, जासकृत स्वक शंदिशक, ममरम-खिरावत रिवेक्षण। (८) हैरवा,—जासकृत हर्साकिक रिवेक्षण हिना। (७) विषय, ज्या, भागि, —जासकृत व्यक्ति पश्च त्यमा। (१) विभिन्न, —वार्वत प्रिक्षण व्यक्ति। (७) विभन्न ज्यानिक भोजा भीजा विश्व व्यक्ति। (१) विभिन्न व्यक्ति। (१) विभिन्न व्यक्ति। (१) विभन्न व्यक्ति। विश्व व्यक्ति, विश्व व्यक्ति। (१०) व्यक्ति, विश्व व्यक्ति। विश्व विश

### ট্যারাঞ্জিকঃম।

(Taraxaoum)

जानाभित्रक के रेगिलिक वाकान, विरामण जामाभित्रक भितः भीण।
गानिहित्तत गाम कितिल जिल्ला (गाम, मार्क, गार्क, गार्क।)
बिल्लान जेगल भाग भाग रन्न रन्न भीन, जरमर जनमः जरूजन करे भी।
थिए थए जेठिन जारेटन, जरभद मिन भीन भीकि ज्ञानिस्त ज्ञानिस्त ज्ञानिस्त

যক্তের বিবৃদ্ধি ও কাঠিন্ত শংগুজ পাও, ( মানচিতের প্রায় চিজিত জিহ্বা )। চ্বাণতা, ক্ষাহানতা, প্রভুত নৈশ ঘর্মা, বিশেষতঃ গৈডিক লব অথবা টাইক্ষেত্র অন্ন হইতে আবোগোল্য অবহায়।

টাইফয়েড অনে অঙ্গ-প্রভালের অভিনত (রস, জিঙ্ক)।

উপচয়ু--- উপবেশন; শমন; ও বিশ্রামকালে প্রায় সম্ভ লক্ষণের প্রকাশ।

সম্বাদ্ধ প্রতামাশ্যিক ও গৈতিক রোগে আই, চেলি, ছাইডুাই, ও নয়ের সহিত এই ঔষধের তুলনা হয়।

# ট্যারাণ্টিউলা।

#### (Tarantula)

কাত্যস্ত পায়্প্রাধান ব্যক্তি দিনোর পাগে, বিশেষতঃ কোরিয় রোরে সমগ্র শরীর, অথবা দকিং বাছ দ্র যাম ঘণ্ডবা আক্রান্ত হইলে, এই ঔষধ উপবোগী বোমবাছ ও দক্ষিণ অভ্যা আক্রান্ত হইলে, এগার)।

জ্ञা, বাহু এবং দেহ-কাণ্ডের অবিরত সঞ্চালন, ও কোন কার্য্য করিতে অসমর্থতা, পেনীর স্পান্যম ও উৎক্ষেপণ।

অস্থিরতা, কোন প্রকার অবস্থানেই স্থির থাকিতে পারা যায় না; অবশু নড়িতে চড়িতে হয় যদিও হাঁটা যায় তথাপি সমস্ত লক্ষণের বৃদ্ধি হয় ( মস ও মাটার বিপরীত)

ম্পর্শাধিকা। — অল্লমাল উত্তেজনায় উপদাহ জন্যে, তৎপনে বিমর্যত উপস্থিত হয়, হাতের আলুগের অঞ্ভাগে উহার অত্যন্ত আধিকা থাকে

त्यक्षण क्षेत्र भीषामीषि यदम्भागण ष्मार्भ वक्षः स्ट्राम छ स्ट्रिल श्राप्ताम बार्क्षिक द्यमग উक्तिक रम

দারণ শিরংপীড়া; মন্তিকে যেন সহজ সহজ স্থচী বিদ্ধ হইতেছে এপ্রথার অমুভব।

রণশেশ (abscess), শোটক (boils) ও আঞ্শহাড়া (felons), আজাত্ব স্থানের একপ্রাকার স্থান্থ নীলাবর্গ (আলাক), এবং নিদার্ত্বল জ্বালাকর বেদনা (এক।, আলা), আক্লে-হাড়ার যাতনায রোগাকে রালে উঠিয়া হাটিতে হয়

দুখিত ক্ষত ; কাংগদিল ; গ্যাংগি ।

নির্দ্ধারিত সময়ে লক্ষণের প্রেকাশ

সাম্বীয় শিরংগীড়া; গোলমাল, তথা ও উগ্র আলোক উহার বৃদ্ধি, বালিশে মাথা দ্বিলে উপশ্য।

প্রতি ঋতুকালে গণ মধ্য, মুথ-মধ্য ও জিহ্বার অসহ্য পরিশুদ্ধতা, বিশেষতঃ নিদ্রাবস্থায় ( নক্ষ-ম )।

উमानवद कारमारखसना ; सन्नामूत्र सारमण ; एनकपूत्रत समग्रा शासि

खेशहरा।—निष्ण हिष्ण, धितिष्ण, धितिष्ण, धितिष्ण भूति का वितिष्ण भूति

ন্ত্ৰপানা ।-- অনাবৃত বায়তে : গাঁতবাতে ও তাৰ্ক্তা স্থান ঘৰ্ষণে স্থাস।

সম্মন্ত ।—এপিন, জোট, শ্যাক, গাট, মাইগেল, স্থানা, থেরের স্থিত সমগুণ সম্বন্ধ।

সায়ুর শেষ প্রাপ্ত এডই উপদাহিত এখং অহভূতিবিদি ই হট্য উঠে যে শান্তি প্রাপ্তিয় নিমিত কোন প্রকার ঘর্ষণের আবিধাকতা জগো

# ि नियुश्य भिष्ठिष्ठेनः म

#### (Trillium Pondulum.)

সজ্ঞাব।—প্রভূত ধাননিক ও শৈরিক রক্তঞাব; সাধারণতঃ উদ্ধান, লোহিত রক্ত; নাসিকা, ফুসফুস, বৃহ্বক, ও অরায় হইতে সক্তলাত (ইপি, সিলি)।

শ্রীরেম জর্ল পদার্থের পচনোপ ক্রম

নাসিকা হইতে রক্তপ্রাব ; প্রভুক্ত, অপ্রাবশ, উজ্জ্বল প্রোহিত সাজ্য দক্ষোৎপাটনের পর দম্ব-গহরর হইতে রক্তপ্রাব ( হেখে, জিয়ো )।

পত্ন প্রতিপক্ষে একবার, এক সপ্তাহ অথবা ততোধিক কাল অবস্থিত, খাড়ু (ক্যাঞ্জন); অভিনিক্ত পরিশ্রম, অথবা অনেক দ্ব পর্যান্ত অশ্বাবোহণের পদ উৎপত্তি।

### মুর্চ্ছাসহ প্রসবান্তিক রক্তজাব।

অভি-রজোরোগ।—প্রভুত, সবেগে নিঃস্ত উজ্জ্ল-লোহিত, রজপ্রবাহ; একটু মাত্র মড়িলে চড়িলেই রজঃ নিঃসরণ (ভাবি); জরায়ুর স্থান-চাতি হইতে; বিরজ কালে (Climacteric); ওপ্রতিপক্ষে, মণিন সংষ্ঠ রজ (পুরাস, অষ্ট); প্রাবঃ

রক্তকাশ ----প্রচন্তা যথা ও রক্তাক্ত নিটানন; প্রবর্তিত ভারস্থার প্রভুত, পুষ্ময় নিটাবন ও বিরক্তিকর কাস।

কুচকি ও কটি যেন এও এও হইয়া পড়িডেছে এরপ অমুভব; ত্রিকান্থি (Sacium) ও অনামান্থি সংযোগক কওবা ওলি (Sacro-iliac Synchion-droses) বিভিন্ন হইয়া পতনের জায় অমুভব, উহা শক্ত করিয়া বাধিয়া বাধিবার ইচ্ছা; বস্তি-কোটরের (polvis) অস্থিওলি বেন ভালির বিশ্বাহে এরপ অমুভব (ইমিউ); তৎসহ রক্তশ্রাব

বিরদ্ধাদিগের জরায় হইতে প্রভূত রক্তনাব; প্রতিপক্ষে রক্তপাত, পাপুর্ব, ক্ষীণ বাপিদা দৃষ্টি; হাৎকম্প; কর্ণে অবরোধ ও শ্বন (ফির); আমাপনগছবরে মন্ত্রণাজনক নিম্নতা (Sinking)।

সম্প্রা । —( ১) গাড় ও মক্তবাব সংক্রান্ত পীড়াম ক্যান্ত-ফদের সহিত অন্প্রক সম্বন্ধ (২) পিজ, বেল, ক্যালি-কা, মিলি, ল্যাক, মিলি, সংক্, গ্রাস ও মষ্টের সহিত সমগুণ সম্বন্ধ।

### ডক্টেমর।।

(Dulcamara)

क्षिय । त्यापीम, श्रेष्ठमां भाष्ट्र, व्यक्षित्र, क्यापन-श्रेष्ठाव व्यक्तिस्त्रात शरक व्यक्ति । व्यक्ति ।

প্রতিখার জনিত আমবাত অথব চর্ম-রোগ, 'শীতগতা, আর্মতা, বর্মাকাল, অথবা গ্রীমাকালে বাতাতপের আকশ্মিক পরিবর্তন বসতঃ উহার উপস্থিতি বা বৃদ্ধি (বাই)

শীতগতা যশতঃ ঘর্মের বিলোপ চ্ট্রা শৈলিকবিল্লা হুইতে বিবর্দিত শ্লেগ -নিঃসরণ।

আর্থি, শীতগ, নিমগ্তে বাসকরা বা কাজকরা বশতঃ রোগ (এরাণ, আর্গ, আর্গ,

मानगिक विभ्रामा, दकान वाश्वत्र धोक्क नाम महन कतिएक शाका यात्र ना

চর্মের বেশ্যমতা, শিতলতার অতিশয় অমৃত্যুতি, উদ্বেদ, বিশেষতঃ শীতপিত্রে (urticatia) প্রবণতা স্বোগীর সন্দি লাগিলে অথবা অনেকক্ষণ শীতপতা স্বোগ করিলে শীতপিতাদি উৎপর হয়।

কম্পজন (ন গাচ), জামবাড, ও পারজজ্বরের (scarlet feve) পর শোধ শোধা-- ধর্ম-জোপ, উত্তেদ-বিলোপ ও শীড-ভোগের পর শোধ

আতসার —আর্থিনে সর্দিলাগা বশতঃ অথবা আর্থ সুয়াটিকা-কালে, ও উফকালের শীভলকালে পরিবর্তনে ( ব্রাই ) ; অতিযার

বাস্ক বালকদিগের সর্দিজনিত স্ত্রাভাব; তৎসহ হয়বৎ ম্তা; থালি পায ঠাপ্তাজলে হাটায় উহার উৎপত্তি; অনিচছায় মূত্রে নিঃসরণ।

ধতুন পূর্বের গাত্তে উদ্ভেদের উৎপত্তি (কোনা ---জধিক ধতুজাব কাদে বেচ, গ্রাফ)

সকল শরীরে শীতপিতা; অরহীনতা; কপুয়ন, চুলকাইলে পরে জালা উফতার বৃদ্ধি; শীজলতার হাস

মস্তবের ক্যেশবৃত অংশে, মৃথমগুলে, কর্ণালে, শৃত্যস্থলে (temple), চিবৃকে (chin) সূল, কপিশ মিশ্রিত পীতবর্ণ ডিপিটিকা (c uets), উহার ঈয়ৎ লোছিত বর্ণ প্রাক্তাগ, কপুরন করিলে রক্তাপাত।

মূণ-মণ্ডলে অথবা হাতের পিঠে ও আজুলে, মাংনল, বৃহৎ, মন্তণ আঁচিল উপচয়।—সাধারণতঃ শীতলভার; শীতল বায়তে; শীতল আর্জাণে, এবং শ্বন্থ, উদ্ভেদ, ও ধর্ম-বিলোপে; বৃদি।

উপশ্ব । - নড়িয়া চাড়িয়া বেড়াইলে উপশ্ব ( ফির, রস )।

সম্বন্ধ — (১) বাবা-কার্যা, ও ক্যাশী-সলের সহিত অন্থ্রাক সম্বন্ধ। (২)

এসিটিক-এসি, বেণ, ল্যাকের সহিত প্রতিক্ল সম্বন্ধ। (৩) ক্যান্ধ, ব্রাই, লাই,
রস, সিপির পরে ভাল থাটে। (৬) লালা-প্রাব, এ প্রির স্থীতভা,বায়্নলীভূজপ্রান্ধ,
অভিসার; ঋত্-পরিবর্ত্তনে অন্তভ্তি,ও রাত্তিকালীন বেদনা লগণে মার্কের সহিত
সমগুণ সম্বন্ধ; ক্যালী-সল রামায়নিক সমগুণ। (৫) পারদের কুদ্দে, অথবা
অপন্যবহারে ভলকেমেরা ব্যবস্তৃত হয়।

# ডাইওস্কোরিয়া ভিলোদা।

(Dioscorea Villesa)

वृक्ष या यूवकपिरशंत्र आर्थभध्य व कौवछ।।

আহারাত্তে আধান, বিশেষতঃ চ পার্মাদেগের, মধ্যে মধ্যে প্রারণ উদরবেদনার আজিম-' '

माञ्जीत्र निकटे छेपरत कामक्रानित्र छोत्र द्याना ।

প্রবল মোচড়ান উদর-বেদনা, নিয়মিত আবেশে উপস্থিতি, যেন অন্ত্রগুলি স্বল হত্তে ধৃত ও মোচড়ান হইতেছে

भूल-त्यम्म। — मन्त्र्यभितिक व्यवनक इहेटल ७ भग्न कितिल वृक्षि; भाषा १२ मा माणाहेटल व्यवन लग्निफिटक यक ११ क व्यवन (क्रान-गिरध्य विभयोज)।

নিজাবস্থার শুক্রানাব ; সমস্ত রাজি কামিনী বিষয়ক স্থাপন্ত প্রপ্ন ( টাফে ) ; জামুর মুর্জলতা , জননাজের শীতলতা ; অভিশয় নিরাশা ( টাফে )।

आयूग-रोषाः । व्यथमावयात्र गथन छोज ७ मोत्रः द्यममा पाटकः गथन यन्तेकः एषम्वर द्यममा व्यथम आरुष्ट्रक रूपः । मरभन्न छण्नकः ।

প্রথম অঙ্গুলি সন্ধির প্রাণাহ-প্রাবণতা (হিপ )।

উপচয়। -শমনে; উপবেশনে; দ্বিভৌগ্র হইরা অ্যুন্ত হইলো; বৃদ্ধি।

উপশ্য । — নড়িলে চড়িলে; ইটো কটন্তনক হইলেও ইটিলে; উপশ্য। সম্মুদ্ধ । — কলোস, ফস, পড, রস, ও সিলির সহিত তুলনা হয়।

### ডিজিটেলিস পার্গিউরিয়া।

(Digitalis Purpurea.)

নিবৃত্ত-রঞ্জাদিগের আক্ষিক উতাপাবেশ, ওৎপরে অভিশন্ন গ্রহালতা ও অনির্মিত স্বিরাম নাড়ী। অল্লমাত্র সঞ্চালনে বৃদ্ধি।

হৃদ্কপাটের উপদর্গপারশ্বর হর্ষণ স্বংপিও

নড়িলে চড়িলে হাৎপিতের স্পান্দন স্থাগিত হইবে রোগিগীর এপ্রাকার অস্তত্ত্ব (কোকেন-সর্বাদা না নড়িলে চড়িলে হৎপিতের স্পান্দ স্থাগিত হইবে এপ্রকার অর্ভব, জেলস)।

আমাশরে প্রান্তি অথবা নিমগ্নতা ( Sinking ) অমুভব ; ছর্মগভা ; অভাস্ত অবসয়তা ; রোগীয় বেশধ হয় যেন সে মরিভেছে।

সংসর্গের পর সঙ্গমের অভিশয় তুর্ধাসতা সংযুক্ত, রাজিকানীন শুক্রজাব।

ৰক্ষঃস্থলের অভিশয় ত্র্বেলভা, কথাবলিতে কণ্ট হয় ( প্রান )।

মল —অভি লঘু ভদাবর্ণ ; বিলম্বে নিঃস্তত, থটিকাকার (চেলি, গড) ; প্রাের শুশ্র (ক্যান্ত, সিন্ধ, ) অনিচ্ছায় নিঃস্তত ; মল

পূর্ণ, অনিযমিত নাড়ী, অতি ধীর ও চুর্বল নাড়ী; প্রতি তৃতীয়, পঞ্চম বা সপ্তম স্পন্দনের বিরাম।

মৃথমগুলের পাতুরতা, মৃতকল্প আকৃতি ও নীলাভ-লোছিত বর্ণ।

ত্রকের নীলাক্ততা, অন্দি-পল্লব, ওষ্ঠাধন ও জিহ্বার নীলবর্ণ; নীলরোগ (Cyanosis)

চক্ষ পাতার, কানে, ওঠে ও জিহ্বার শিরার ক্ষীতভা। বিষম, আরাস-সাধা, গভীর দীর্ঘ নিখাসের স্থায় যাস। হত্তাক্লিতে সহজে ও বারবার যাঁজি-লাগা

শোপ — স্বালেটিনার পরবর্তী; ও ত্রাইট্রস্ ডিজিফ নামক রোগের শোধ; ডৎসহ মুদ্র-নাম; আভ্যন্তরিক ও বাহ্যিক শরীরাংশের শোও; ছ্র্পিডের বিধান-বিকার জনিত রোগ থাকিলে শোণ সহ মূর্ডো (অরাযুর ল্পর্শ-ধ্রেষ সংযুক্ত শোণে, কনডেলে)

द्यांगीटक रमास्राकतिया वमारेटन वा काँ ए करारेटन मूर्छ। त मस्रावना ।

উপচয় |----বসিলে, বিশেষতঃ শোকা হইয়া বসিলে, এবং নড়িলে চড়িলে; বৃদ্ধি

স্থা । — गिरमाना ভिकिटिगिरमत भूथा किया नष्टे ७ উৎकर्श विवर्षिত करत्र।

### ডিপথিরিনঃম।

#### ( Diphtherinum )

গণ্ডমালা-থাতু-ছেষ্ট এবং সোরা বা টিউধার্মকিউল অর্থাৎ কচ্চু বা গুটিকা দেশ্যপ্রতা ব্যক্তিদিশের সংগ্রে রাল-মধ্য ও শাস খ্যের ট্রেটিক ঝিলীর এতিধার্ম ক্রিড সোগের প্রবণভায় এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী।

প্রথা বা অবসর জীবনীশজিসম্পান স্থতরাং ডিপথিয়ার বিষে অন্তর্ভ অমুভূতিদিশিষ্ট সোগী; প্রায়ম্ভ হইতেই রোগের আক্রমণের সাংঘাতিকতা (ল্যাক-ক্যান, মার্ক-সামে)।

যাতনাহীন ডিপথিরিয়া; প্রায় বা সমাকরণে কেবল বিষয়-নিষ্ঠ
(Objective) লক্ষণের প্রকাশ; রোগী এতই ছর্মাণ, উদাসীন প্র অবসম যে
দেকোন বিষয়ের অভিযোগ করেনা; নিজা বা স্থান্তি, কিন্তু ভাকিলে সহয়েই
লাগরিত হয় (বাপ্ট, সলফ) তালুম্ল ও তালু-ভোয়ণের (palating arches) মলিন লোহিত ক্ষাভভা; কর্ম মূল ও গ্রীবায় গ্রাছর লাভশয় ক্ষাভভা;
খাসের এবং গলা, নাসিকা ও মুখ হইতে নিঃস্ত লাবের অভি ছর্মার অভিযায় প্রতিশয় আরম্ভতা ও স্বয়্প লেপাচহমভা

ভিপথিয়ার বিল্লী পুরু, মলিন-খুসর বা দীষৎ কপিশমিশ্রিত কাল; গালভোপ নূম বা স্বাভাবিক অপেকা নিম্ন, নাড়ী র্কল আ জাত, হন্ত-পদ শীতল; এবং রোগীর স্থাপষ্ট স্থালভা; রোগীর অন্ধ-বৃদ্ধিপুঞ (Semi Stupid) অবস্থার পড়িয়া থাকা, চক্ষুর নিপ্রভাতা ও বিমুদ্ভা (এপিন, ব্যাপট)

আক্রমণের প্রারম্ভ হইতে নাসিকা হইতে রক্তপাত অথবা গভীর অবসমতা (এইল, এপিস, কার্ক-এসি), বোগের প্রায় স্থচনা হইতেই হিমাল (কোটে, মার্ক-মায়ে); নাড়ীর মুর্কলভা, জভতা এবং জীবনী-শভিষে প্রতিক্রিয়ার অভিশয় মিমগ্রতা।

বেদনা হাতীত গলাধঃকরণ করা যায় বটে, কিন্তু তরল পার্থ বমন বা নাক্রিয়া নিঃসর্গ হইয়া পড়ে; খাসের ভয়ম্বর ফুর্গ্য।

শ্বর্যপ্রের ডিপ্রিরিয়ার ক্লোর,বালী-বহি, বা ল্যাক-ক্যান বিফল ইইলে; এবং ডিপ্রিরিয়ার পরবর্তী পক্ষাধাতে, কটা, কেল, বিফল ইইলে; ডিপ্রিরিণ কল্ডান। যণন প্রথম হইতেই রোগীর বিপতির সম্ভাবন দৃষ্ট হয়, এবং অত্যন্ত স্থানির্বাচিত ঔষধেও উপশম বা স্থায়ী উপকার না দর্শে, তথন এই ঔষধের প্রয়োগ হয়।

তাঃ এলেন পঁচিশ বৎসর পর্যান্ত উৎরোক্ত লক্ষণ গুলি এই ঔযধের নির্ভর যোগ্য পরিচালক লক্ষণস্বরূপ অবল্যন ক্রিয়া উহাদেরআরোগ্যসাধন ক্রিয়াছেন

সকল রোগজ-ঔষধের স্থায় ইহাও জিংশ শক্তির নাচে চিকিৎসায় কার্য্যকর নতে শক্তির আধিক্যে ইহার আরোগ্য-কারিডা বিবজিত হয়। ছই শত শক্তি হইতে সহল্র ও লক্ষ শক্তিতে ইহার ব্যবহার হয়। এই ঔষধের পুনঃ পুনঃ ব্যবহার নিপ্রান্তনা ও অবিধেয়। আদত এটিটার্যনের স্থায় হোমিও-প্যাধিক জমে ইহা হইতে কোন প্রকার বিগজনক পরিণাম অংগ্য না।

পঁচিশবৎসমের অভিজ্ঞতা হইতে ডাঃ এলেন বলেন যে প্রতিষেধ্য ঔষধস্বরূপও ভিপথিদিন স্থান্য কাজ করে। এক পরিবারের একজনের ভিপথিরিয়া হইলে অজেরা এই ঔষধ ব্যবহারে রোগ-মুক্ত পাকে

## ডোবেরা রোটভিফোলিয়া।

(Drosera Rotandifolia)

ত্পশক্ষক-কাস; প্রবল আবেশ, একটির গর অগরটির শীঘ্র শীঘ্র উপস্থিতি, প্রোয় খাস ছাড়িতে পারা যায় না (পূর্বাহ্ন ৬--- ৭ টার সময় জাগরণ, যে পর্যান্ত না খানিকটা ছম্ছেড প্লেম উথিত হয় সে গর্যান্ত কাসের অবিরতি,---ক্ষ-ড্যান্ত ; প্রতি কাসেব আবেশকালে নাকদিয়া অধিক রক্ষেপাত, ইও ; দিবাভাগে এক, প্রত প্র অন্যানে কাস, রাজিতে প্রনিশ্চিত ছ্প-শক্ষক কাচেয় আবিশ, কেশ্রে হ্লব )।

গাজীর-শব্দ, অবজন্ধ সংযুক্ত ক্র্র-রববৎ কাস (বাবদ), ছইপ্রাংর রাজির পর হামের আক্রমণ-কালে বা তৎপরে বৃদ্ধি, আম্মেণিক, গলরোধকর, এবং বম্নোত্তম ও বমন বিশিষ্ট কাস (প্রাই, কাগী-কা)

বালক-বালিকাদিগের অবিরত গণ-কতারনকর কাস; রাজিতে বালিশে শাধা রাশিবাদাত উহার আর্জ (বেল, হাইওস, ররম)। गमा (तार्ग प्रक-प्रकितिता त्रांखिकाणीन काम; जनश्यता श्रामा श्रीता ।

কাস; উষণ্ডায়, গানে, গানে, হাজ্যে, জন্মনে, শ্যুদ্ধে, ও মধ্যরাজির পরে কাসের স্থান্থ।

কাসিতে কাসিতে অল ও প্রেয়া নমন এবং অনেক সময় নাক-স্থানিয়া রক্ত পতন ( কুপ )

গ্ৰমমে পালক থাকার জাদ অহতেব , উহাতে কাসের উদ্রেক। বছব্যাণক তুপ-শব্দ-কানের সময়ে অজান্ত রোগের প্রাত্তাব

ধর্মান বিটাদিলের গলাবেদনা; গল-গহবরের গভার স্থানে এর-ম্পর্শনা (rough) অবদরণ ও ওজতা অহভব; ভগ্ন, গভীর, শজিশুন্ন স্থান, কণা বলিতে পরিশ্রেমর আবিশ্রকভা (এরম)।

স্থানা আকুঞ্ন ও ভূড়ভূড়ি অনুষ্ঠা, স্থানাজন, সীজনা, আথবা হরিদর্শ নিষ্ঠীবন।

ন্তপশক্ষ-কাদের পরে স্থার্যান্তিক বল্পা (Laryngeal pluthisis) (বায়ুনলীভূজের প্রতিখ্যার, কক-ক্যান্তি )।

স্মৃত্য ।——(১) নরাজনিকার সহত অমুপ্রক সমন্ধ (২) শু ঘু, সল, জিরের পরে জোদেরা ভাল থাটে। (৩) জোদেরার পরে ক্যাক, পল, সল খ্যুবজত হয় (৪) আকেপিক কাসে সিনা, কোরাল, কুণ্, ইলি, শুাধুর সহিত জোদেরার তুলনা হয়। যথা রোগের অবিরাম, যন্ত্রণপ্রদ, নৈশকায় অনেক সময়ে এই ঔষধে উপশমিত হয়।

হানিমান জাহার মেটিনির মোজিকা লিউবা নাম্ক গ্রেই উল্লেখ ক্রিয়াছেল যে ৩০ শজির একমালা মাত ছোমেরা সেবনে বছবালী ছণ শব-কাম সম্পূর্বরূপে আর্রোগ্য প্রাপ্ত হয় সাত আটাদনের মধ্যে নিশ্চিতরেপে আরোগ্য জন্মে। প্রথম মালার অব্যবহিত পরে বিভারমালা কখনও দিতে নাহ; উহাতে যে কেবল প্রথম মালার স্থকল রহিত হয় এমন নতে, অধিকস্ত রোগীর অপকার হইয়া থাকে।

# थुका जिल्लिंग ।

(Thuja Occidentalis)

স্নস-প্রধান-ধাতৃতে অর্থাৎ বাহাদের শ্বীরে সাইকোসিস বিষ (মাষ্ক দোষ) আছে তাহাদের পক্ষেই থুজা বিশেষ উপযোগী।

সলফারের সহিত ''সোরা-দোষের'' অথবা সারকিউরির সহিত উপদংশবিষের যে সমন্ধ সাইখোসিদ-দোষের সহিত থুজারও সেই সম্বন্ধ।

ত্বকে বা শৈশ্মিক বিল্লীতে আঁচিল, উপমাংস প্রভৃতি উৎপন্ন হইলেই শ্রীরে সাইকোসিস-দোষ আছে বলিয়া প্রতিপন্ন হয়

লাসকা-প্রধান (Lymphatic) ধাত্তে, অভিশয় মাংসল দেহে, ও মালিনঘর্ণ মুথাস্থতি, রফবর্ণ কেশ, এবং অসুস্থ ত্বক বিশিষ্ঠ ব্যক্তিদিগের স্থীত্রে গুলাস্থ ভাল জিয়া দর্শে।

গে-বীজে টিকা গ্রহণের কুফল (এণ্ট-টার্ট, সিলি); এবং বিল্পু কিংবা কুচিকিৎসিত প্রমেহের মদ্য ফল (মেড)।

स्म क्लान जशिति वाङि शार्थ विद्यादह; जाजा ७ क्ट स्म श्वक ् इरेग्नोहह; উদরে যেন কোন জীবন্ত প্রাণী অহিয়াছে; যেন কোন দৈবীশন্তির প্রভাব দ্যিয়াছে; এই প্রকার স্থায়ী মনোভাব।

উন্মাদিনী নারীরা স্পর্শ করিতে বা নিকটে যাইতে দেয়না চক্ষু নিশ্বীলন করিবার সময় শিরোম্বর্ণন।

শিরংপীড়া — শস্তক-প্রাচীরের অস্থিতে (parietal bone) যেন প্রেক বিশ্ব ছইতেছে (কফি, ইয়ে); অথবা বেন ব্যথিত স্থানে একটা মার্জ (convex) বুডাম প্রচাপিত হইতেছে; এরপ শিরংপীড়া; অধিক ইন্দিয়-স্থপ-সম্ভোগে; অতিয়িক্ত উদ্ভাপ লাগতে; ও চা-পানে (সেলে); উহার বৃদ্ধি; মাযক-দোষ বা উপদংশ-দোষ হইতে উৎপন্ন প্রাতন শিরংপীড়া।

শাদা সশত্ব খুস্কি (dandruff) ; কেশের শুদ্ভা ও প্তন । .

চক্।—নবজাত শিশুদিগের মাষক-গোষ বা উপদংশ-দোষ জনিত চক্ষ্-প্রদাহ; আঁ কিল বা ফোকার স্থায় বড় বড় উৎসাদন (granulations) উষণ্ডার ও আছোদনে মন্দাবস্থাপ্রাপ্তি; অনাব্ত রাখিলে বোধ বা ফেন শীতল বাধুর প্রোত উহার অভ্যন্তর দিয়া প্রবাহিত হইতেছে।

অক্সি-পুট।—রাজিতে চক্ষ্র ণাভার সংযোজন, উহার পাওদেশের শুল ও সাশহতা; অজনি ও পদ্ধার্থ্য (tarsal tumours); তুল, শক্ত, মুদ্র ক্ষুদ্র উপমাংসের ভাষ এছিছে, কঠিন আঁচিল; ষ্টাফিনেগ্রিয় গ্রেয়োগে আংশিক উপশন, কিন্তু খনাবোগ্য

স্বর্গতিন স্বর্ণ প্রেমান, পচা মাংসের তায় পুষ্পাব; উৎসাধন, অমুঞ্জ লাগ, কোষ্মান, সহজে রক্তজাবী বহুপাদ (polypus)

পুরাতন প্রতিভার (catauli) – সম্ফোট অনের পরবর্তী; গঢ়ি সব্দ্রবণ শ্লেমা, পুয ও রক্তজাবী (পলস); প্রতিভার ।

দত্তের মূলদেশের ক্ষরপ্রান্তি কিন্ত শিধর-দেশের অন্ততা ( নেম্ম। ---প্রান্ত-জাগের ক্ষরপ্রান্তি, ষ্টাফ ) ; দত্ত থক্ত থক্ত হইরা তালিয়া পড়ে, পীত্তবর্ণ ধারণ করে ( সিফি )

রাণুণা ---জিহ্বার নিয়ন্থ আর্ফার জীবৎ নীলবর্ণ অথবা জিহ্বার উপরের ও মুখ-বিবরের শিরার ক্ষতিতা ( এম )।

हा-भाग खनिछ मख-द्यमना

'नाटक टकां कारण कान-खोख मध्यत गंध्यत या উहात भार्य (किউक्षिक्ष) खाडां भनव दवनना"।---विनिन्धारमण

উদর। — উদরে যেন কোন অন্ত ভাকিতেতে; স্থীয় কিছু যেন নড়িডেছে; বাম ভিন্না প্রাদেশে (left ovarian tegion), ইাটবার বা বোড়ায় চড়িয়া বেড়াইবার সময় যন্ত্রনাঞান, জালাকর বেদনা, জন্তভা অব্ভাবসিয়া থ শুইয়া পড়িতে হয় (ফোক, অই); প্রতি গাড়-কালে ভাবিক্য

কোষ্টবন্ধতা,—সমলামে প্রবল বেদনা বশতঃ মল-তাাগ-তেইায় স্থাতি হইতে হয়; মূল থানিকটা বাহিয় হইয়া পুনরায় ভিতরে প্রবেশ করে (স্থানি, মিলি)।

অর্থনির ক্ষাততা, বিসিবার সময় বেদনার অত্যন্ত তীব্রতা।
অতিযার প্রত্যুয়ে উণ্ছিত; অধিক বায়ুসহকারে সবেরে নিংস্ত (এশো); ও পিপা হইতে জলপতনের আগ্ন গলগল শক্বিশিষ্ট অতিযার; প্রাতরাশ, ক্ষিপান, বসাজ এবা আহার, গো-বালে টাকা-এশে, ও প্রাপ্ত ভোজনে উহার বৃদ্ধিপ্রাপ্তি। মল-ছাসের বিদারণ (lissure), স্পর্শে ব্যথিততা, চারিদিকে চেপ্টা অ'চিল, বা আর্ড্র স্লৈন্মিক উপমাংস (condylomata)।

অপত্য-পথের (vagina) অত্যস্ত অমুভূতি বদতঃ সংসর্গেব প্রভিনয়কতা (প্লাট :---পরিশুক্তা বদতঃ প্রতিবন্ধকতা লাই, লাইসি, গ্রাট্রম)।

চর্মা — চর্মের মলিন দৃশ্য; স্থানে স্থানে কপিশ বা কপিশমিশ্রিত শুশ্র চিহ্ন; বৃহৎ, সর্স্ত, বীজাল (seedy) আঁ চিল (ইয়াফ); কেবল আব্ত স্থানে উদ্ভেদ, চুলকাইলে আলা

মাংস, অন্থি হইতে আঘাতিভবৎ অমুভূত হয় ( ফাইটো টাচিয়া ভোলাবৎ অমুভূত হয়-ব্ৰঃস, )

মূত্র-ভ্যাগান্তে মূত্র মার্গে যেন মূত্র তুড় তুড় করিয়া করিভেছে এপ্রকার জহুড়ব; মূত্রভ্যাগের শেষ ভাগে ভীত্র কর্তনবৎ যাডনা ( সাস্ ।

উক্তরে অবের শীভের আরম্ভ।

দর্শ —কেবল জানার্তস্থানে, জাধা মস্তকব্যতীত সর্ধশরীরে (সিশিমার বিপরীত) দর্ম; নিদ্রোকালে দর্মা, জাগ্রাৎ হইলে উহার বিরতি (স্থার্ম বিপরীত); রাজিতে প্রভূত জার গন্ধ, ও মুর্ণন্ধ দর্ম।

জননালে মধুর ভার গণাণিছি বর্ণা। ইাটিবার সমর অঞ্জলি কার্চ নির্ণিত্তবৎ বোধ হয়। শরীর, বিশেষতঃ অঞ্জলি ষেন কাচনির্ণিত এবং সহজেই ভাঙ্গিয়া যাইবে, এঞাকার অহন্তব।

বিসুস্থা প্রামেহ। — প্রমেংহর প্রাণ অবরুদ্ধ হইয়া সন্ধি-বাত, প্রস্তেটের প্রমাহ; মাযক দোম, ধ্রজভল; উপমাংস, ও অভবিধ বহুণ সন্ধাধীন উপদ্রেষর উৎপত্তি। নথের বিরুতি ও ভকুরতা (এণ্ট-কুড)।

উপচয় ।...কাজিতে, শব্যার উত্তাপে ; পূর্বাহ্ন ৩ টা ও অপরাহ্ন ৩ টার সময় ; শীতগতার, আর্মবার্ডে ও মাদক্ষেয়ে ; র্ছি।

সাহান্ত্রা ।——(১) বেড, ভাব, ও সিলিয়া সহিত অন্তপুরক সম্বন্ধ (২) ক্যান-ভাট, ক্যান্ত, কোপে, ষ্টেকের সহিত সমগুল সম্বন্ধ। (৩) উপস্থের মুগুলবরক অকের ((prepuce) কাচিলে সিনাব, পুঞা অপেকা শ্রেষ্ঠ (৪) মেড, মার্ক, ও নাই-এসির পরে পুঞা ভাল থাটে।

## থেরিডিয়ন।

### (Theridion Curassavioum)

সময় অভিশয় শাস্ত্র শাস্ত্র অভীত হয় এরূপ অন্তভ্তব (অভিধারে ধীরে, আর্জ্র-নাই, ক্যান-ইণ্ড নম ম)

শিবোদ্র্ণন — চক্ষু বুজিলে (গাক, গুলা, চক্ষু মেলিলে, টাার, উপরের
দিকে চাহিলে, পল, গিলি;) যে কোন যৎসামাত্র শব্দ হইতে;
শিরোদ্রণি কর্প-রোগ সংজ্ঞান্ত শিরোদ্র্বন।

বিবমিষা।—অত্যন্ন মাত্র সঞ্চলনে বিশেষতঃ চফু বুজিলে; ও জভনেগে গাড়াতে চড়িলে; বিবমিষা।

শিরংগীড়া — নড়িতে আরম্ভ করিশে চক্ষ্ম পশ্চাতে অরফার সন্শ; মতিকের গভীর ছানে প্রল, শ্রনে বর্দ্ধিত (ল্যাক); এবং অস্তোরা গৃহে ইঞ্চিশে অথবা অল্লমাত্র মন্তক নাড়িলে অভিশন মর্দিত; শিরংগীড়া

প্রত্যেক শব্দ যেন সমগ্র শরীরের অভান্তর দিয়া প্রবিষ্ট হয় এপ্রকার অমুভব এবং উহাতে বিবমিষ। ও শিরোঘূর্ণনের উৎপত্তি

নাদিকার প্রাত্তন প্রতিভারে, গাঢ়, পীতবর্ণ, হরিভাভ, হর্গদ লাব (পল্ম, গুজা)

पर-विषया ; श्रीराज्यक जीख भवा परश्च श्रीविष्ट राम

আমবীয়া সম্পীদিগের সামুদ্রিক বিবনিষা; আহাজের গতি হইতে নিছতি লাভ ক্রিবার নিমিত উহারা চফুচ্ রুদ্ধা ক্রিয়া রাখে, এবং নিদারণ বিবনিষায় আক্রান্ত হয়।

স্বদাস্থির নীচে, স্বাড় পর্যাস্থ প্রসারিত বাম বক্ষের উর্দ্ধভাগে প্রাথশ স্থচীবেধন (এনিস, মাইরি, পিক্স, সগফ)।

সমূদয় অভিয় উপর ভর্মবৎ বেদনা।

কলের কার (verte bræ) বাবধান স্থানে অভিশয় অর্ভুতি, মেরপথে চাপ না লাগে এজন্ত হেলান না বিয়া এক পার্থে বদা (চিন-সল); অর্থাত পদে ও যরের মেজেতে পারের সংঘর্ষণে উহার যুকি। বয়স্থাৰস্থায়, গৰ্ভাৰস্থায় এবং বিরজাবস্থায় (climacteric years) অভ্যন্ত স্থায়বীয় অনুভূতি।

রেকাইটিস, কেরিজ, ও নিজে।সিস রোগে থেরিডিয়ন রোগের স্লদেশে প্রবিষ্ট হইয়া উহার কারণ বিনষ্ট করে।

থাইসিদ ফ্রোরিডা রোগে প্রায়ম্ভাবস্থায় এই ঔষধ প্রয়োগ করিতে পারিলে অনেক সময় এওজানা আরোগ্য লাভ হয়।

্ রাজ্যালা রোগে, হুনির্বাচিত ঔষধেও উপকার না দর্শিলে এই ঔষধ ব্যবস্থত হয়।

अञ्चल । - काद जार नार्टकात शत करे खेमर जान बाटि।

# थ्याण्यि वार्मा (भटको तिम।

(Thlaspi Bursa Pastoris)

শহারের প্রত্যেক দার হইতে ৫ ভূত শৈরিক রক্তনাব; রক্তে ম্রিন ও সংযত।

জরায়ুর রক্তপ্রাব।—প্রাবল গল্পী ও জরায়ুগ উদর-বেদনা সহ, হরিৎপাপু (chlorosis) সোগে; গর্জপাত, গর্জপ্রাব ধা প্রাস্বের পরে; বিরশ্বকাণে শ্রায়ুর ক্যানসার সহকারে; রক্তপ্রাব (ফস, অট)।

खुड़ - नित्रमिछ कारणत्र कारमक भूर्य ; व्यांडलग्न क्षिक भित्रभार , क्षिक पिन भगाँउ (काँ , प्रम, भनत्र पिन); व्यार्ट्ड क्षार्ट्ड कार्ट्ड कार्ट कार्ट्ड कार्ट कार्

জরায়ুর নিজ্যিতা বশতঃ রক্তপ্রাব অথব। গাড়ুর বিশ্বস্যু উহাতে জাবসয়তা জন্মার, গাড়ুর এক পর্যায় না যাইতে যাইতেই অপর পর্যায় উপস্থিত হয়।

প্রামর —-রজ্ঞাক্ত, মলিন বর্ণ, মুর্গন্ধ জ্ঞাব ; স্বাস্থ্য ক্ষেক্ষ দিন পূর্বে ও পরে উহার উপস্থিতি সম্বাদ্ধ ।—শিনাপিস, ট্রিলিয়ম, ভাইবারণম ও অফিলেগোর সহিত এই উয়ধের তুলনা হয়।

## নঃক্সভামকা।

### (Nux Vomica)

কশদেহ, কোপনস্থাব, ক্ষাকেশ, পিত্ত-প্রধান, বা রক্ত-প্রধান ধাতু, বিষাদ-প্রিয়, ছিংসা-ড্রেষ-প্রবণ, বিষয় ব্যক্তিদিগের পঙ্গে নক্তিমিশা বিশেষ উপযোগী।

সূক্ষাকায়, কোপন-স্বভাব, স্নায়বীয প্রকৃতির মন্তপায়ীদিগের অগ্নিমান্য ও বর্ণ-প্রবণতা থাকিলে (সমু-কেশ, নাল-নয়ন যাজিদিগের পঞ্চে, লোকে)

हानिय न यरणन त्य व्यक्षोत्रका, त्यांभनका, विश्मा-त्यम, व्यवदा क्राक्षात्रविका-श्रद्धका क्ष वाज्ञका विभिष्ठे वाक्षिणिका भरण मन्यक्षिमका क्षांका वार्ष

কোণনতা সংগ্ৰুত উৎকণ্ঠা ও আগতিটা করিবার পর্তি, কিন্ত মরিতে ভয় বিষাদবায় :— অধ্যয়নশীল, সাহিত্যিক, বাহারা অধিক সময় বাড়ীতে থাকেন, অধ্যয়াম সমতঃ পীড়িত হন, বাহাদের আমান বিক ও উদরের উপসর্ব এবং কোঠ-বন্ধ থাকে; বিশেষতঃ সভাপারীদিগের পীড়ায় এই ঔষধ কার্যাকরী

বাহ্য সংস্কারে; গোলমালে; গদো; আলোকে ধা গীতবাতো (নক্স-ম); অতিরিক্ত অমুস্থতি; দামান্য অস্থ্যেরও অসহতে। (ক্যাম); প্রত্যেকটি নির্দোষ কথার বিরক্তি (ইয়ে)

বিশিষ্ট ও সাধ্যান ব্যক্তি, যাহায়া অভি সহফেই উত্তেজিত ও জ্জ হইয়া উঠে; বিটখিটে ও নাছোড়বন্দা লোকদিগের পঙ্গে বিশেষ উপযোগী।

কৃষ্ণি, ভাষাক, উত্তেজক পানীয় স্ত্রবা, অধিক মসপ্লাযুক্ত পাল স্ত্রহ গ্রহণ। মপরিমিক আহার (এণ্ট-ক্রে); অধিক দিন ব্যাণী অভিনিক্ত মানুসিক- শ্রম; বসিয়া বসিয়া থাজিবার অভ্যাস, নিম্রাহীনতা (কক, কণচি, নাই-এসি), স্থান্ধি দ্বা বা পেটেন্ট ঔষধ ব বহার; বিশেষতঃ উষ্ণকালে শীতল প্রস্তারের উপবেশনের মন্দকল

এলোগ্যাথি বা কবিরাজী চিকিৎসায় উষ্ণবার্যা ঔষ্ণাদি সেবনের পরে কোন রোগীর হোমিওপ্যাথিক চিকিৎসায় প্রবৃত্ত হইতে হইলে অনেক সময় প্রাথমেই নক্স-ভিমকা ব্যবস্থের হইরা থাকে কিন্তু লক্ষণের সাদৃশ্য না থাকিলে ব্যবহার করা বিধেয় নহে

চৈত্তিয়া সংযুক্ত উদ্ধার (খ্রীক), জোধ, ডিজ-বিকার, স্পর্শ ও সঞ্চলনে উহার বৃদ্ধি

বাঁঝি লাগার মত, ও পাও মারার মত অবিরাম বেদ্দা, নড়িলে চড়িলে ও স্পর্ণ করিলে উহার আধিক্য।

গদ্ধে, প্রাতঃকালে, আহারাছে; প্রত্যেক প্রস্ব-বেদনার পরে; মুদ্ধবির প্রকাতা (নরা-ম, সলফ)

শারাকে, শগনের করেক ঘণ্টা পূর্বে, যথন বসিয়া থাকা যায় তথন না ঘ্যাইরা পারা যায় না, এবং রাজি ৩টা বা এটার সময় আগিতে হয়; রাজি প্রেডাড হইবার কালে আবার এক প্রকার খগপ্র নিজ্ঞা অন্মে, উহ হইডে রোগীকে সহজে আগরিত করিতে পারা যায় না, তৎপরে ভাহার প্রান্তি ও হর্মণতা ক্লেয়া (পলনেটিলার বিপরীত)

প্রতিখার :--শিশুদিগের নাসারব (এম-কা, খ্রাপু); রাজিতে শুক্, দিবাভাগে তরল প্রতিখার (coryza); উফ কলে বিব্দিত, দীতল বায়ুতে উপশ্মিত; দীতল হানে ও প্রস্তর নির্মিত সিড়িতে বসিয়া উৎপায়, প্রতিশ্রায়

উদ্যার।—সম, তিজ উদ্যার; পাওফুলভাদহ প্রদিন প্রাত্তে বিক্যিয়া ও বমন; আহারণ্ডে উদ্যায়।

বিনমিয়া।—আহারাজে; প্রাতে; ও ধুম-পানাজে; অবিরাম বিনমিয়া। রোগী বলে যে নমন করিতে পারিলেই সে ভাল থাকিতে পারে।

আমাশর ---আহারের এক বা ছই বন্টা পরে আমাশরে প্রস্তর-চাপার স্থার চাপাত্মতব (আহারের অব্যবহিত পরে, কান্টা-বাই ন্রা-ম); মুখে অল-উঠা, আমাশরের অশিথিলতা, কাপড় ছিল করিয়া নিডেই হয়; জাহারের পরে দুই তিন খণ্টা পর্যান্ত মান্দিক পরিপ্রাম করিতে পারা যায় না; আহারাছে নিয়ে লুড, উৎকণ্ঠা বিরাজি, ব্রাজি দেখন, ককি পান, উগ্র ঔষধ দেখন, রাজি জাগরণ, ভোজন-বিখাস প্রভৃতি কারণে এই সকল লক্ষণের উৎপতি

(जनरत्रादक्ष--- हेरध, ভিরে); राम यगजांश भाष हहें मा अञ्चल व्यस्थ्य।

বারবার মল-প্রার্থ্ডি; উৎকণ্ঠা ও নিক্ষলত, মল-জিয়ার কিছুকাল পর পর্যান্ত উহার আভিশ্যা; প্রাতে উথানাত্তে, ও মানসিক্ষ পরিশ্রমের পর উহার উণ্ডিডি (নিস্চেষ্টভা, ও অপ্রার্থি, ব্রাই, ওণি, সলফ)।

বাহারা চিন্ন জীখন বিরেচক ঔষধ সেবন করিয়া থাকেন জাঁহানে পর্যাধ-লেখে কোঠ-কাঠিগু ও অভিনার ( সন, ভিরে )

ঋতু নানিজারিত সময়ের অনেক পূর্বের, অতিরিক্ত দীর্ঘকাল খারী প্রভূত খাতু; অপবা প্রারম্ভে ও পরে অহুণ সহ কতিপর অধিক দিন স্থায়ী ঋতু; প্রতি পক্ষে পক্ষে ঋতু; ঠিক নিজারিত সময়ে কথনও ঋতু উপস্থিত হয় না; ঋতু একবার থামে আবার উপস্থিত হয় (সল); ঋতুকালে ও তৎপরে প্রাতন লকণের বৃদ্ধি।

প্রসব-বেদনা।—প্রবিষ্ণা, আব্দেণিক প্রসব-বেদন; উহ্নাতে মল-বেগ বা মূলে-বেগের উৎপত্তি; পূর্চে বেদনার আধিকা; উষ্ণ গৃহে থাকার ইচ্ছা।

আবিদ্ধ অন্তব্যক্তি (hernia), বিশেষতঃ নাভী দেশীয় অন্ত-বৃদ্ধি।

পৃষ্ঠ বেদ্দা। া ইন্দ্রিয়-দৌব্দশ্য বা ক্ষজিম-দৈশুন হইতে উৎপদ্ন কটিবেদ্দা।
ত পৃষ্ঠ-বৈদ্দা, শ্যাম পাশ ক্ষিত্রিতে হইলে উঠিয়া ব্যিমা পাশ ক্ষিত্রিতে হয়

দীতগতার যা শীতল বায়তে অপ্রবৃত্তি; অত্যরমাজ নড়িলে চড়িগেই শীতামুম্ভর, অনার্ত হইগেই শীত; জুরের শীতোতাতা পা ও ঘর্মা প্রত্যেক অবস্থায়ই আবৃত্ত থাকিবার আবিশ্যকতা।

জর। —অভিশয় উত্তাপ সর্বা শরীরের আলাকর উরপ্ততা (একন),
মুথমপ্রশের স্থারজতা ও উত্তপ্ততা (বেল), কিন্ত তণাপি রোগী নৃড়িলে
চড়িলে বা অনাবৃত হুইলে শীত অমুভব করে।

উপচয়--প্রাতে; রাত্রি ৪টার সময় নিদ্রা হইতে জাগিয়, মানসিক পরিশ্রেমে; আহারাস্তে বা অভিরিক্ত আহারে; মগলা ডকণে; মাদক দ্রব্য সেবনে; স্পর্শে, শবে ও ক্রোধে এবং শুক্ষকালে রৃদ্ধি

উপশাস ।—সায়াকে; বিশ্রামে, শয়নে; এবং আর্ডিকালে; হ্রাস (কষ্ট)
সন্মান -(১) প্রায় সকল রোগেই সলফারের সহিত নরাভমিকার
কার্যপ্রক সধল। (২) জিক্ষের সহিত নরোর প্রতিকৃপ সম্বা; জিক্ষের
পূর্বেব বা পরে নকা ব্যবস্ত হয় না (৩) আস, ইপি, ফস, সিপি, সলফের
পরে নকা ভাল থাটে। (৪) নরোর পরে বাই, পলস, সলফ ভাল থাটে
(৫) শরীর ও মনের বিশ্রাম-সময়েই সরাভমিকার ভাল জিলা দর্শে, এল্লেড্ড শ্মন
করিবাব কয়েক ঘণ্টা পূর্বেব ইহা সেবন করা উচিত্ত

## নক্স-মশ্চেটা।

### ( Nux moschata )

স্নায়নীয়, গুলাবায় প্রাক্তির (hysterical) নারী, ও বালক-বালিকাদিগের পক্ষে; যাহাদের প্রাক্ত ত্বক্ অর্থাৎ যাহাদের কদাচিৎ অর্প্যাত্রাব হয়, ভাহাদের পক্ষে এবং গর্ভাবস্থার অস্ত্রথে; নক্সমদেটটা বিশেষ উপযোগী।

युष वत्ररमत पूर्वगणा ; वृष्तिभिरगत अधिगाना

আলোক; শ্রবণ; প্রস্কা; ও স্পর্শে অতিশয় অনুভূতি

সকল রোগের সহিতই তন্দালুতাওনিদোলুতা (এণ্ট-টার্ট, ওপি)

অথবা সামাশ্য বেদনায়ও মুর্চ্ছার প্রবণতা (হিণ); রোগে

### নিদ্রালুডার উৎপত্তি করা।

স্থাপ্ত ও তাটেডক্স। আদমা নিয়া

বিষদক্ষতা, চিস্তা করিতে পারা যায় না ; দক্ষ বিষয়েই অভিশয় ঔদান্ত স্মৃতি-শক্তির ত্র্বেগতা বা বিলোপ ( এনাক, ল্যাক-ক্যান, লাই )।

গঠন, শিপন, ও আলাপনে চিন্তার বিলোপ প্রাপ্তি, ভূল কথার ব্যবহার; মুপরিচিত পথ চিনিতে না পারা (ক্যান-ইণ্ড, ল্যাক)।

পরিবর্তনশীল প্রাকৃতি; একবার হাজ, পরনণেই কেলন (কোক, ইর্মে) গান্তীগ্য হইতে প্রাকৃতি, প্রকৃতা হইতে গান্তীগ্যে অকস্থাৎ গরিবর্তন (প্রাট) চক্ষুর শুদ্ধতা; এত শুদ্ধতা যে অকিপুট রাদ্ধ করা যায় না

মূথ-বিবরের অভিশয় পরিশুজ্ভা (এপিদ গাকে); জিহ্বার তে শুজ্ভা যে উহা তালুকায় সংলগ্ন হইয়া থাকে; গণা গুগার গ্রায় বোধ হয়; গলার শুজ্ভা; ও দুড়ভা, পিপাসাভাব (পলস)।

প্রকৃত পিপাদা ও জিহ্বার পরিশুঙ্কতা ব্যতীতও জিহ্বার অভিশয় শুঙ্কতা অমুদ্ধব।

যে সকল অধ্যে জর দিয়া শয়ন করা যায় তাহার অভিশয় স্পর্শ-বেষ ( ব্যাপ্ট, পাইরে ); শয়াক্ষত জিয়িবার সন্তাবনা

অল্ল কিছু অতিরিক্ত আহার করিলেই শিরংপীড়া জন্মে, আহ্বার-কালে কথবা আহারের অব্যবহিত পরে আমাশ্রে বেদনা, পূর্ণভা ও যাতনা (কালী-বাই)

প্রত্যেকবার আহারের পরে উদরের অভিশয় স্ফীওভা

অতিসার।—গ্রীমকালে শীক্তল পানীয় দ্রের সেখন করাতে, শরৎকালের
এপিডেনিকে শাদা মলবিশিষ্ট (কলচি); আলদেওরা ছগ্নপান বশতঃ; দভোদগমকালে; গর্জ-কালে অভিসার; তৎসহ নিয়াল্তা ও সূর্চ্চা শরৎকালে শুজবর্ণ,
ছর্গদ্ধ ব্যাপক অভিসার (কলচি)।

প্রতি ঋতু-কালে, বিশেষতঃ নিজার সময় মুখ্মধ্য, গল-মধ্য, ও জিহ্বার অসহা শুজ্তা।

भक्त भित्रपर्छ र्यान स्थान (कक), एक किस्त गरकाटन निमा रहेटक भागत्रण (गांक); वास्ता वान्य भगत वनका स्वतासूत्र भौतिका (भाक-कान, गारे)।

থায়ুর প্রতিকৃণ দিকে হাঁটাতে সম্সা শ্বর-ডাল ( ইউন্চ, হিপ )।

কাস ---শ্যাস উফ হইলে; অভিনিজ উওপ্তা অগ্রিলে; গর্ড-ফালে (কোন), সানে; কলে দাঁড়াইলে; ও শীতল অন্ধ্যার স্থানে থাসে (ফ্রাট-স্ল) কাসের উৎপত্তি; আহারাথে উহার ভরগতা, শানাথে অঙ্কাঃ নিজা। —ছনিবার ভন্তালুভা; মন্তভার জায় অভ্তা, কোমা ( ভন্তা-দোম ); নীরব ও অচল ভাবে পড়িয়া থাকা; সভত বিমুদ্ধিত চকু (সশক শাস সহ, ওপি,।

পা ভিন্ধাতে; ও উত্তপ্ত অবস্থায় বাযু-প্রবাহ নাগাতে (একন, এই) বাত্যে পীড়া, শীভণ আর্দ্র থাড়তে, অথবা শীভণ আর্দ্র বস্তে (হ্রস ) উহার বৃদ্ধি; বাম স্বয়ের বাড (ফির –দন্দিণ স্বয়ের, স্থান্দ, ষ্ট্রণ)।

গাড়ীতে বিচরণ-কালে পুর্গ্ণ-বেদনা

শ্রান্তি, অতি অল্লমাত্র পরিশ্রম করিলেও শরনের আবশ্রকতা।

উপচয়। শীতন, আর্দ্র, ঝঞাবাত বিশিষ্ট সময়ে (রোড), ঋত্র পরিবর্তনে শীতল আহার, জল, ও শীতল মানে, শকটারোহণে (করু), সঞাসনে; এবং ব্যথিত পার্ঘে শয়নে; বৃদ্ধি (অব্যথিত পার্যে শয়নে বৃদ্ধি, পলস)

উপশ্ব 1--ভঙ্ক, উষ্ণকালে; উষ্ণগৃহে; ও উষ্ণবজ্ঞে আর্ভ হইলে; হ্রাস

সম্প্রা |---পারদের থ্য নিখানন শীন-শ্বা, ভার্পিন তৈল, এবং ম্দিরা, বিশেষতঃ মুল বিশ্বারম্পিনার মুল- মুল নকুম্পেট্টা হণরা বিনপ্ত হয়

# नारेष्टिक अमिए।

### ( Nitric Acid )

দুঢ় পেশীভন্ত, মলিনবা মুথাক্তি, ক্ষাবৰ্ণ চুল ও চক্ল, স্নান্দীর প্রান্ধতি কবং গৌরার অপেকা স্থামাল ক্লম বাজিদিগের দকেই নাইটিক এগিড বিশেষ উপযোগী।

পুরাতন রোগগ্রন্থ যে সকল ব্যক্তিদিগের সহলে শর্দি লাগে; ও সহজে অতিসার অংগ তাহাদের পজে এই ঔষধ উপযোগী; যাহারা কোটবড্ডার কট পার তাহাদের পজে ইহা ক্যাচিৎ উপযোগী হয়

অতিশয় ত্র্রশতা ও অতিসায় সংশ্বন্ধ বৃদ্ধদিনের পক্ষেত্র নাইটি ক এসিড উপযোগী

### অত্যধিক শারীরিক উপদাহিতা

বেদনা।—টোচফুটাব জায় জেদন ও বেধনবৎ বেদনা। সহসা আবিভূতি ও সহসা ভিরোভূত; যাডাতণ বা ঝতুর পরিবর্ত্তনে উপস্থিত। নিম্রাকালে প্রাকাশিত; এবং স্থানে স্থানে সভোৎপ দনসদৃশ দংশনবৎ যাতনানিশিষ্ট; বেদনা।

অনুভূতি -- মাথার চারিনিকে, ও হাড়ের চারিনিকে দিতার বন্ধনের স্থার (কার্ম-এদি, সল); কর্মহানে, ক্ষতস্থানে, অর্শে, গশ-মধ্যে ও পাা-নথের কুণীতে টোচফুটার স্থায় অন্তব্য বৎসামান্ত স্পর্শে উহার বৃদ্ধি।

পুরাতন রোগ — কোন ভীত্র বিষয়নিত; পারদ, উপদংশ ও গওমাগা হইজে উৎপন্ন; এবং জীর্ণ দীর্ণ শরীরে প্রকাশিত; পুরাতন রোগ

ক্রেনাগত নিজাশ্ভতা, দীর্ঘকালগুনী উৎকর্ত ; রোগীর গুঞাযায় মন ও শরীরের অভিরিক্ত প্রম ( কক ) ; প্রিয়তম বন্ধর বিয়োগে মান্সিক যাতনা; উদান্ত ; জীবনে বিভ্যা, ঋতুর পূর্বে বিমর্যতা।

স্বীয় রোগের বিষয়ে অভিশয় উৎকণ্ঠা; বিগত উপদ্রব সম্বন্ধে অবিয়ত ভাবনা; ওলাউঠার অভিনিক্ত ভয় (আস<sup>\*</sup>), সায়াহে অপ্রয়লভা ও আফুলভা।

কোপনতা; অবিষয়াকারিতা ; বৈরসাধনতৎপরতা; গুণাপূর্ণতা; গুর্দায়তা, বিষেষিতা; কমাপ্রার্থনা ও অবিচলিততা।

প্রাজিন কীণভা, ঘোড়ায় গাড়ীতে বা সেলের গাড়ীতে চড়িলে উষার আধিকা ( গ্রাফ )।

পাকা রাস্তার; গাড়ীর ঘড় ঘড় শব্দে অভিশয় অমুভূতি; টুপীর চাপে মাগা-ধরা (ক্যাক্ষ, ফন, কার্ফো, ফাট)।

ওবিদা।--প্রত্যে প্রাতঃকালে সব্ধবর্ণ ছাঁচ (green casts) নিঃসরণ

অতিদার — অতিশন্ত প্রায় (কুছন) কিন্ত আর নিঃসরণ, বোধ হয় বেন
মল সঞ্চিত রহিয়াছে, নিঃসারণ করিতে গারা যার না (এলম); সরলান্ত
কাববা মলম্বার যেন ছিল বা বিদীর্ণ হইয়াছে এরণে বেদনা (ছাট-মি);
মলা ত্যাগাত্তে প্রবল কর্তনবৎ বেদনা ক্ষেক ফ্টা পর্যান্ত উহার
কাবছিতি (রাট, সল্ম।—মণ্ডাগি-কালে ও ভ্যাগাত্তে বেদনা, মার্ক)।

সরশান্তের বিদারণ , মলত্যার্গ-কালে ছেদনবৎ আক্রেশিক বেদনা ; কোমল মলত্যাগের পরেও ছুরি দিয়া কাটার ভায় যাতনা ( এলুমেন, ভাট, রাট )।

স্তা —সঙ্গা, মলিন-কপিশা, উগ্রাগন্ধ "লখসুত্র সনৃশ", ত্যাগকালো শীতল ; যোগা সূত্র।

শত — সহজে রক্তলাবী কত; মুখের কোণে কত ( স্তাট ); টোচ্যুটোর প্রায় যাতনা, বিশেষতঃ স্পর্গ করিলে (হিপ ); প্রায়দেশ কুটিল ও অসম, ভূমিদেশ দেখিতে কাঁচামাংযোর অন্তর্নগ; ক্ষডাঙ্কুর বহুল; পারদ বা উপদংশ জাগবা উভারের পরে গগুমালাত্রন্ত ভূমিতে উৎপন্ন; কত

স্থাব —পাতলা; তুর্নদ্ধ, বিদাহী, কাপশ বা মলিন পীতাত হরিষ্ণ প্রাব ; কদাচিৎ ভাল পুয়।

রক্তথাব - টাইফরেড বা টাইফরেস করে অন্তর হইতে (কোট, মিউর-এসি); গর্ভপ্রাব বা প্রস্বরাস্তে; অতিরিক্ত শরীর-চেইরি, উজ্জ্বন, প্রভূত অথবা মলিনবর্গ রক্তথাব।

চর্ষণ-কালে কর্ণে চড় চড় শব্দ, নড়িলে চড়িলে সন্ধিন্থলে চড় চড় শব্দ (কক, প্রাফ)

काँ विन । — गांचक-दांच दा छे भारभाव; त्र्य, कामम, मञ्च, क्षानातम महस्य माक्सावी; कार्ज, त्रमक्त शंकीण; दश्यमवद वाकमा विभिष्ठ; काँ विभ ७ छेभगारम (क्षाक्, शूवा)।

ষে যে স্থাপ করু ও ধৈষিক বিল্লী সংযুক্ত সেই সেই স্থাল অর্থাৎ মুথ-বিষয়, লাসিক, সরকান্ত, মল্পার, মূলমার্গ, অপত্য-পণ প্রভৃতি শ্রীয়ের প্লেম্ম - প্রাণী ক্ষি এই ওবণে স্থিশেষ্য্রপে আক্রান্ত হয় (মিউয়-এসি)

উপচয় | সামাকে ও রাজিতে, গুইপ্রধ্য রাজির পরে; স্পর্শে; বাডা-তপ বা ঋতুর পরিবর্তনে, ঘর্মকালে, নিদ্রা হইতে জাগরণাথে ও বিচরণ কালে, বৃদ্ধি

উপশ্য । -গাড়ীতে চড়িয়া বেড়াইবার সময় স্থান (কজ্গাদের বিপরীত)

সমস্থা (—(১) আস'ও কালাডের সহিত অনুপূরক স্থগ (২) ল্যাকেসিনের সহিত প্রতিকৃষ সময় (৩) ওলাউঠার অভিনিক্ত ভয়ে आतम निर्म महिल भग छन भग । (४) नाहि क अभिक श्र मार्कि विद्यातम श्राम श्रीम कार्य कार

# ন্থাজ টি পিউডিয়ান্স। (Naja Tripudians)

আত্মহত্যার প্রাক্ত বিশিষ্ট উন্মাদ, করিত উপদ্রুগ সংক্ষে ঋবিরত ভাবনা (অরম)

হাৎপিতেম উপসর্গশৃষ্ঠ বিবৃদ্ধি।

তরণ প্রদাহ খারা অপরত স্তংগিতের স্থতা প্নরাম স্থাপনার্থে, অথবা শ্বংপিতের প্রাতন বিশ্বত্বি ও শ্বংকণাটের বিরুতি জনিত যাতদার উপশ্লাপে এই ঔষধ উপখোগী

শামবাজিক হাৎপিঞ-এদাহের জন্মগাবস্থা অথবা হাৎপিথের প্রাতম বিধান-বিশ্বজি-নশতঃ উৎপন্ন উপদাহকর, শুন্ধ নহামুভূতিক কাম ( অপল্ল)।

ডিপথিরিয়ায় গরবর্তী শ্রৎণিত্তের পক্ষাখাতের আশকা বলে অনিয়মিত কিন্তু কালে (তালে) নিয়মিত নাড়ী।

ধাস-ব্যোধকর, সায়বীয়, পুরাতন শৃৎকল্প সংযুক্ত, বিশেষ্তঃ বক্তার পরে, কথা বলিতে অসমর্থতা; গাড়ীতে আরোহণে অথবা পার্শে শ্যনে যাওনার বৃদ্ধি।

হাৎপিও প্রাণেশে তীত্র হচি-বেধনবৎ বেদনা।

স্থায় । — আস কোট, লাক, মাইগেল ও ম্পিজির সহিত স্থাধার তুলন হয়। বাস্ত-সমস্ততা, স্নায়বীয় জ্ললতা বশতঃ হাত হইতে স্নব্যাণিয় পতন ( এপিস, বোছ)

বিলাপ-প্রবৃত্তি; অকারণে অঞ্জার (পল্স), কিন্তু সাম্বনা-প্রদানে রোগিণীয় কটের আধিক্য

শিরংগীড়া — বিভাগরের বাণিকাণিগের শিরোবেদনা (ক্যাক্ষ-ফ্স);
সূর্য্যোদয় হইতে সূর্য্যান্ত পর্যান্ত উহার অবস্থিতি, দৃষ্টি হীনতা সহ
উহার আরম্ভ (আইরিস, কালী-বাই) চক্ষর অভিরিক্ত চেষ্টায় উহার উৎপত্তি,
হিছিরিয়া জনিত বামপার্থের শিরংপীঙা; বোধ হয় বেন মাথা ফাটিয়া ঘাইতেছে;
তৎসহ ধতু-কালে এবং ঋতুর পূর্বের ও পরে আরক্ত বদন; বিবমিষ ও বমন;
বেন কৃষ্টে ফুল হাতুড়ি বারা মন্তিক আঘাভিত হইতেছে এপ্রকার অমুত্র , অমের
উন্তাপাবস্থায় শিরোবেদনা, বন্ধারত্তে উহার উপশ্স

অঞ্পাত; যথনই রোগী কাদে ওখনই ভাহার গাল বাহিয়া অঞ্ধারা পতিত হয় (ইউয়ো)

উত্তপ্ত স্থোর তাপ অথবা দারণ গ্রীম্মকালের উত্তাপ বশতঃ ওয়ধি-গ্রাম অর ( হে-ফিডার ), নাগা-রঞ্জে কুজ কুমির স্থায় অমুঙ্গ ।

অিহ্বায় চুল থাকার গ্রায় অমুভব ( সিলি )।

জিহ্বা।—জিহ্বার রক্তবর্ণ দ্বীপাকার থও থও চিত্রে; পার্মে দক্ষর ক্রার আরতি (আসর্ন ল্যাক, মার্ক, নাই-এসি, ট্যামারা); ভারী কইসাধ্য কণা, শিশুদিগের ই টিভে শিখিতে বিলম্ব।

কোঠবছতা।—মলবারের আরুঞ্চন অমুভব, পরে উহার বিদারণ, রক্তাপাত ও টাটানি; কটে নিঃসারিত, শক্তা, থও থুও মল ( এম-কা, মাগ-মি), সরলারের স্চী-বেদ ( নাই-এসি ডাইবা); অনিচ্ছায় নিঃস্ত মল, বায়ু কি মল বাহির হটবে জানা যার না ( এলো, মিউর-এসি, আইও, ওলিন, পড় )।

মূত্র —ইটিবার, কাসিবার, ও হাসিবার সময় জনিচোয় মূত্র-নিঃসরণ, (কষ্ট, পলস, সিলা), অন্যোরা উপস্থিত থাকিলে জনেকক্ষণ মূত্র-পাত হয় না (হিপার, মিউ-এসি), মূত্র ত্যোগাত্তে কর্তনবৎ যাতনা (সাস্ত্রি)।

শুক্রশাব —সংসর্গের অল্লবণ পরে, বিবর্দিত পিলা সহধারে শুক্রণাও; সংসর্গ-কালে অতি বিলয়ে শুক্রশ্রাব শুগণাগর জননাজের জ্বলেডা; অত্যধিক ইন্রিয় সেবার পরক্তী ধ্রমভাল, পৃষ্ঠবংশের উপদাহ, ও প্রাধাত

প্রত্যাহ প্রাত্তে বাহ্য জননেজিয়ের অভিমুখে চাপ ও । কা লাগে, কন্ম ( pro-(lapsus uteri) নিবারণার্থে বসিয়া থাকা আবিশুক হয় (লিলি, মিউর, সিপি)।

মূহ মূহা বিজ্ঞানে স্থানি স্থানি স্থানি কিলে মূহা কিলে ম

श्रदिशिष्णित्र न्यानारन ८४१ क न्या क न्या (न्या है सि )।

স্থাতাল বিধান প্রিল ক্রিলে কেশ পতন ;
ম্থাতালের বৈশাক্ষতা ও চিফাতা ( থুকা )

কোধ, অয় থাতা এবা; কটি; কুইনাইন; আডিরিক্তি লাবণ ভালণ; এবং নাইটেট-অব-সিগভার থালা কার-কর্মের (কটারেজেশন), শোক্ষ, ভয়, অসংস্থাধ, মর্মাছত ভাব, ও সংঘত অসম্ভণ্ডির মন্ফল (ইয়াফ)।

নথের চারিদিকের চর্ণোর গুজতা ও বিদারণ ( পেটে ); মণছারের নিকটে, ও মাডের নিকটের চুলের প্রান্তভাগে দক্ত ( জাত্ম বাকে, হিপার, এ।ফ )।

হাভের ভালুভে আঁচিল ( স্পর্শে বেদনা, ন্যাট-কাব্ধ )।

গৃহে দ্স্তা তক্ষরণদির প্রবেশের ম্বন্ধ, ম্বাগিরাও গৃহ অধ্বেষিত না হওয়া প্যাস্ত উহাতে বিদাস (সোরি), জালাকর পিপাসার স্বন্ধ

ওঠের নিকটে মুক্তোর ত্যায় জন-খেটে ; ওঠের শুগুতা, বিশারণ ও ক্ষত্ত (নাই-এমি)

অথার শিরার বেদনাযুক্ত আফুঞ্ন ( এম-মি, কষ্ট, গুরাক )। লবণে প্রায় (ক্যাফ, কষ্ট ); রুটিতে অভিশয় অঞ্চি

অতিরিক্তা শবণ ভক্ষণ, সমুদ্রকুশে অবস্থিতি অথবা সমুদ্রবাঞা বশতঃ উৎে। ক'লে মারক্তা প্রাণাহিত, বিশেষ্তঃ কেশের ও'ক্তে উডুত, পামা (একজিয়া)।

তরণ বা পুরাতন শীতণিজ্ঞ; সর্বাশ্বীরে, বিশেষতঃ প্রাবল শারীরিক পরিপ্রথমর পর উহার প্রকাশ (এপিদ, ক্যান্ত, হিপ গ্রানি, আর্চি)।

সবিরাগ জর; পুর্ববাহ ১০ বা ১১ টার সময় জ্বরের আবেশের উপস্থিতি, প্রাতন কুটিকিৎসিত জর, বিশেষতঃ কুইনাইন ধারা অবয়দ জর, শীত ও তাপাবস্থায় সংজ্ঞাশুগুড়া সহ শিরঃপীড়া; ও খর্মে বেদনার উপশ্য

উপচয়। ত্রিবাহ ১০ টা বা ১১ টার সময়, স্থোর বা চুলীর উত্তাপে; সমুদ্র-কূলে বা সমুদ-বায়্তে; মানসিক পরিপ্রমে, আলাপনে, লিখনে ও গঠনে এবং শয়নে বুবি

উপশাস — অনারত হার্তে (এপিস, পলস); শীতল অলে ও গণিনা, উঠিয়া বসিলে,; ও উপ্রাপ্তে; দিফাণপার্শে ভরদিয়া শায়নে (ব্যথিত পার্শে ব্রাই, ইয়ে, পলস); হ্রাস

স্ক্র্ ।—( > ) এপিদের সহিত অহপুরক্ষ স্থ্য; এপিদের পূর্বে ও পরে ভাইম মিউরের ভাল ক্রিয়া দর্শে ( > ) ইরোশিয়া ভাইম-মিউরের উন্তিদ সম্তাণ তরুণ রোগে-ইরোশিয়া ও পুরাতন রোগে ভাইম-মিউর উপযোগী। ( ৩ ) জাইম মিউরের পর সিপিয়া ও পুরা ব্যবহান্ত হয় '( ৪ ) পুরাতন রোগে লঙ্গণের সাদ্ভ অহসারে অক্ত অন্তর্বর্তী ঔষধ ব্যবহার না ক্রিয়া অনে ধ সময় ভাটুম-মিউরের পুনঃ পুনঃ প্রয়োগ হয় না ( ৫ ) জ্বরের আবেশ কালে ক্ষ্নেও ভাটুম-মিউর দেওয়া উতিত নহে ( ৬ ) ভাটুম-মিউর ব্যবহারের পরে যদি শিরোঘূর্ণন ও শিরঃপীড়া অভিশয় প্রবর্ত্তিত হয়; অথবা অবস্যুতা দীর্ঘন্থায়ী হয়, তবে নক্স ব্যবহারে উহার শান্তি জ্বা

## नग्राक्रेभ मश्लि कि जिंकश्म।

( Natrum Sulphurioum )

আনুর্দ্রি-কালে, আর্গ্রু-বাসে সম্প্রার বিবর্দ্ধিত রোগে; এবং শুদ্ধ শুত্র পার্দ্র বুতে পরিবর্তনে যে সকল রোগীর অন্থ করে; বাহারা সম্ক্রন বার্ সহ্য করিতে পারেনা, অলের নিকটে যে সকল উদ্ভিদ জন্মে ভাহা আহার করিতে পারেনা; বাহাদের সরীরে প্রমেহ-বিষে বিশেষ অনিষ্ট হয়; ও বাহারা প্রত্যেক রোগ ইইতেই ধীরে ধীরে পারোগ্য লাভ করে; ভাহাদের পকে এই তীম্ব বিশেষ উপ্যোগী।

প্রতি বসম্ভকালে চর্দ্য-কোগের পুনঃ প্রকাশ (সোরি)।

চিন্তা করিতে অসামধ্য ( স্তাট-কা )

বিমর্যতা, অপ্রাফুলতা, কোপনতা; প্রাতে উহার আধিক্য, কথা বলিতে বা শুনিতে অপ্রবৃত্তি (আইও, সিনি)

অপ্রসমতা, গাত-বাতে রোগিণীর বিষয়তা; জাবনে পরিত্থতা (Satisty), আত্মহত্যা নিবারণাথে অতিশয় আত্মদংযদের আবশুক্তা।

অভিঘাতের মানসিক মনদফল; মন্তকের উপঘাত জনিত মানসিক লক্ষণ; আখতি বা পতন জন্ম মন্তিকের পুরাতন উপদ্রব।

অগিপ্টের দানাময়তা—ক্ষুদ্রে ক্ষুদ্রে ফোফার স্থায় দানা (প্রা), হরিহর্ণ পূ্য ও ভয়ত্বর আলোকাততঃ; প্রমেহ বা মাষক-দোষ হইতে উহার উৎপত্তি।

ধতু-কালে নাদিকা হইতে রক্তপাত (ধতুর পরিবর্ত্তে রক্তপাত, ত্রাই, পলস)।

भोতগ জলে ও শীতগ বায়তে উপশ্মিত দস্ত-বেদনা (ক্ফি, প্লগ)। জিহ্বায় ময়লা, হস্তিভাত গুদন্ন তাথ্যা ক্পিশ্বর্গ লেপ

অতিগার — সহসা বেগ, হড় হড় করিয়া মলজাব, অধিক বায়-নিঃসরণ, নিয়ো হইতে উঠিয়া প্রথম দাড়াইবামাত্রে মলবেগ; বৃষ্টি-কালের আবেশান্তে; ও নিয়ত্ত গৃহে বাস বা কাজ করাতে উহার উৎপত্তি

· প্রাণেষ্ট স্থানিত প্রতিষ্ঠিত বিশ্ব, বেদনাশূল্য, গাচনাব (পণস); প্রাওন বা সংক্ষম ৫ মেছ (গাঁচ, ধ্রিবর্ণসোৰ, কাণী-আইওড)

খাস-রুচ্ছ, সেতদেতে, সেখাজ্যকালে দীর্ঘ খাসগ্রহণে র ইচ্ছা।

শি শুদিগের শেয়াপ্রাণী খাদ-কাস, প্রাক্তি বর্ষা কালো; ও প্রত্যেকবাস নৃত্যশাদি লাগিলে উহার উপস্থিতি, আর্রা, ও র্ষ্টি-কালে সর্বদা বৃদ্ধি প্রাপ্তি, হরিবর্গ, হরিতাত, প্রাচুর নিটাধন ( হরিতাত বৃদর নিটাধন, কোপে )।

মাযক-দোষজনিত ক্সত্স-প্রদাহ (সাইকোটিক নিউমোনিয়া); বা্স্
ফুসাফুসের নিজন্তর থাণ্ডেব আ্রেগন্ততা; বগংস্থাের অভিশন প্রণ-বেষ,
কাসিবার সময় স্থাান উন্নিয়া বসিন্ন ও ছই হাতে বৃক্ষ ধরিয়া কাসিতে হয়
(নিক।—দক্ষিণ ফুসকুস, জাই)।

স্পাইস্তাশ মিনিঞ্জাইটিয়।—মস্তিফের ভূমিদেশে প্রাবল চর্ব্ণবৎ বেদনা; মস্তকের পশ্চাৎদিকে আরুষ্টতা; মানসিক উপদাহিতা ও প্রশাগ সহকারে আকেণ; মস্তকে প্রবল রক্ত-সঞ্চয়; প্রশাগ, পশ্চাদক্র টম্বার

উপচ্য। —আর্থিহে বাসে; আর্ত্রিগে (আরাণ, আস্ফাইও,ডলকা); বিস্লামে; ও শরনে; বৃদ্ধি।

উপশ্য ।—জককালে; প্রচাগনে; উঠিয়া ব্যিলে (কাস); অবস্থান-পরিবর্তনে (আর্দ্রকালে কষ্ট); ও অনাবৃত বায়্তে; হ্রাস।

রোগীয় ঘন ঘন অবস্থানের পরিবর্তন করিতে হয় বটে কিন্ত উহাতে কট হয় এবং শান্তি জ্ঞানো (কট)

স্কৃষ্ণ |----জাট-মিউ ও সলফের সহিত অধিক সমগুণ সহয়; রস-প্রধান--ধাতুতে সিফিলিস ও সাইকোদিস জ্ঞামেশে এজা ও মার্ফের সহিত তুলনা হয়

# পডফিলঃম।

(Podophyllum)

পিত্ত-প্রধান-ধাতুর যে সকল ব্যক্তি, বিশেষতঃ পারদ সেবনের পর, আমাশরের বিশ্ঞালায় আক্রান্ত হয়; এবং যাহারা পিত্ত-প্রকোপের আক্রমণ সহকরে; তাহাদের পক্ষে পভ্ষিত্তম বিশেষ উপযোগী

উৎক্ষেপণবৎ (jetking) বেদনার আফে আফ আফমণ। অধিক পরিমাণে শীতগুলা পানের পিপাসা (ব্রাই)।

বিমর্যতা, রোগীর অহমান হয় যেন সে মরিতে যাইতেছে অথবা অতিশয় পীড়িত হইয়াছে (আগ); জীবনে বিরক্তি।

অভিসারের সহিত সপর্যায়ে শিরংপীড়া (এলো), শীতকালে শিরংপীড়া, গ্রীম্বকালে অভিসার।

্বেদনাশূন্য মৃত্যু-বিসূচিকা; পদ, ষজ্যা-পৃষ্ঠ ( Calves ); ও উরুতে প্রবেশধন্নী ; বেদনা-শৃক্ত জলবৎ মল, শিশু-বিস্ফচিকা ( ফাইটো ) ৷ সহজে দস্যোদগদ না হথা।; কেঁ কেঁ করা, ও রাফিতে দাঁত কড়মড় করা; মস্তকের উত্তপ্রতা ও অবলুপ্তন (কেল, হেল); মাড়িতে মাড়িতে চাপ দেওয়ার অভিশ্য ইচ্ছা (ফাইটো)।

হস্তদারা যক্তৎ-প্রদেশ অবিরত মর্দন।

অভিনার — শিশুদিগের অভিনার,দন্তোন্তেদ কাসীন অভিনার; আহারান্তে, প্রকালনকালে ও শিশুর শ্যানির বস্ত্র ভিজিয়া পতিত মলিন জলবৎ অভিসার (বেঞ্জ এণি); প্রভূয়ে-কালে ভাতিসার, প্রায় পর্যন্ত উহার অবস্থিতি, সন্ধ্যাকালে স্বাভাবিক মদ নিঃসরণ (এলো), তৎসহ উদরে ও সরলাত্রে হর্মলভা বা নিমন্নভা অন্তব; দীর্ষকাল স্থানী শতিসার

মল — সব্লবর্ণ, জালাব্ৎ, সূর্গন্ধা, প্রাভৃত্ত (ক্যাক্ষ); প্রবশবেণে বহির্পত (ক্ষেট্র, ফল ), থাটকাবৎ, শেহবৎ (এলে ); জালীর্ণ জাবা মিল্লিড (সিঙ্কা, ফির), পীতবর্ণ মরদার প্রায় তলানিবিশিষ্ট; এবং মলত্যানের পূর্বেষ ব তৎকালে সরলাম্বের (lectum) বহির্গমন লক্ষণাপর; মল।

কুম্বন বা ভারোজোলন বশতঃ ; কোঠাছতা জনিত ; ও প্রান্থর পরবর্তী ; কন্দ

গর্ডের প্রাথম জাগে কেবল আমাশরের উপর জর দিয়া শর্মন অন্ত্র্যান্তর (এসেট-এসি)।

দশিণ গল-মধ্য, দশিণ ডিথাশর ও দশিণ ফুন্সির আক্রান্তের, পূর্বাত্র ৭ টার শন্ম ক্ষরের আবেশ, তৎসহকারে শীত ও উত্তাপের সময় অভিরিক্ত বাচালতঃ; শর্মজ্ঞাবের সময় নিজা ( লাই )

मिकि ( (विका) ( विका) ( विका) ( किका)

य्वजी क्यात्रीमिरभन्न नरकाविन्छि ( भनम, हिछव )

উপচ্য।—প্রত্যুষে (এলে, নরা, সল); উত্তরকালে, ও দফোলাক সময়; বৃদ্ধি।

উপশ্ম [----সন্ধাকালে; বাহ্নিক উঞ্চতা প্রান্তার ও চাপদানে প্রাস

স্থান্ত —(১) এলো, চেলি, কোলিন, লিলি, মার্ক, দক্স ও সলফের সহিত পডর তুলনা হয়। (২) এডদ্বারা পারদের কুফল নিবারিত হয়। (৩) আমাশরের রোগে ইপি ও নজ্মের পরে; এবং যক্তমোগে ক্যান্ত ও সলফের পরে; পড উপযোগী হয়।

# श्वादमिति।।

(Pulsatilla)

পিন্দলকেশ, নীলচক্ষ্, পাঞ্র ম্থমগুল, নীরব শোক-প্রবণ, বিনীত সভাব ব্যক্তিদিগের পক্ষে, বিশেষতঃ নারী ও বালকবালিকাদিগের রোগেই এই ঔষধ বিশেষরূপে বাবস্তুত হয়। পলসেটিলার রোগীর মন্দ পতি, শ্লেমা-প্রধান ধাতু, ও বিহক্তি-প্রবণতা থাকে, কিন্তু কোপনতা থাকেনা

সহজে অশ্রেস্পতি; অশ্রুপতি না করিয়া প্রায়ই রোগের কথা বলা অসম্ভব (ধন্তবাদ দিলে অশ্রুপতি, কাই)

জীলোকদিগের মাংসলা হইবার প্রবর্ণতা, তৎসহ স্কল্প ও আনেক দিন স্থায়ী খাতু (গ্রাফ)

প্রথম রজ-প্রকাশের সময় হইতেই স্বাস্থ্যজন, নীরক্তভা, হরিৎপাঞ্ বায়্ নদীজুল-প্রদাহ, যদা। সেই সময় হইতে কথনও শ্রীর স্বস্থ নহে।

সমস্ত শৈশিক বিজীন আবই গাঢ়, তাবিদাহী ও পীতাভ-হরিদ্বর্ণ (কানী-সল, জাট-সল)

বেদনা। - আকর্ষণবৎ, ছেদনবৎ, একস্থান হইতে জান্য স্থানে সাত্মর
স্থান-বিকল্পীল সঞ্চরমান বেদনা (কালী-বাই, ল্যাক-ক্যান, মাধ্য-এ),
তৎগ্যহ অবিষ্ঠাপীত পাত পাত্তব, যতই বেদনার উগ্রতা ওতই শীতের তীপ্রতা;
সংস্ বেদনার প্রাকাশ, ক্রমে ক্রমে বিরাম, অনবা অশিধিলতা (টেন্শন্),
যে পর্যান্ত না উহার তীপ্রতা জ্যে সে প্র্যান্ত বৃদ্ধি প্রান্থি, অনন্থর
চট্ করিয়া উহার নির্তি (দল্প-শ্ল, প্রান্থ্যুন); প্রথম সঞ্চলনে বেদনা
(ক্রান্ট্রান)

লাক্ষণের সভাত পবিবর্ত্তন, ১ই বারের শত, ছই বারের মগ, ছই বারের আক্রমণ একরাপ হয় না, এক দটে ই প্রশার প্রস্থতা, অতা ঘটায় অসুহত

প্রায় সকল রোগের সহিতই পিপাসাহীনতা।

প্রকাশ জন্ম, পিটক স্বতপদ্ধ জন্ম, তৈলাক্ত জন্ম, ও শৃক্ষের মংস প্রেক্তি ভক্ষণ জন্ম আমাদানিক উপজন; প্রাতে মুখের বিরস্তা

প্রাতে পিপাসা বাংীত অভিশয় মুখ-শোষ (নক্স-ম। - মুখ শার্মি, অথচ দার্মণ পিপাস, মার্কি)।

আমাশয়ে, বিশেষতঃ চা পায়ীদিগের আমাশয়ে শৃহতা অন্তত্তব স্তানে বা মুজে (testicle) মঃম্পাস্ ( গুলাবিবি ) রোগের স্থান-বিকল্প

অতিসার - নির্থজিন অথবা সাধারণতঃ রাজিতে অভিসার, অসবৎ, পীতাত হরিৎ, অভিশ্য পারিবর্ত্তনশীল, আহারের অব্যবহিত গরে নিঃতত; ফল, শীতল পানীর জব্য, ও বর্ষ সেবন হইতে উৎপন্ন; অভিসার (আস, আই —পেয়ারা ফল (ভাসপাতি) জহার বশতঃ, ভিরে, চায়না; পলাঙু ভক্ষণ জনিত, থুলা; গুণুলি ভক্ষণ জনিত, ব্রোম, লাই; চ্বংগান বশতঃ, ক্যান্দ, নিক, সল; অপরিম্বত জলপান বশতঃ, ক্যান্দ, নিজ)।

श्री श्री विश्व निष्ठित अञ्च । जिला त त्र विश्व विश्व निष्ठित अञ्च । विश्व निष्ठित अञ्च । विश्व निष्ठित अञ्च । विश्व निष्ठित । विश्व निष्ठित । विश्व निष्ठित । विश्व निष्ठित । विश्व निष्ठ । विश्व विश्व विश्व । विश्व निष्ठ । विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्व

নিমা ।—সন্যাকালে সম্পূর্ণ নিমান্ত্তা, তথন সম্ম করিতে অনিজ্না, প্রাণষ্
অভিন নিমা, যথন নিমান হইতে উঠিবার সময় তথন গাঢ় নিমা ; ছ্রাসভা ও আন্তি সহকারে জাগরণ ( নকাভমিকার বিপরীত )।

অন্তর্গ — ঘূতাদি বসাময়, তৈলোক্ত, অধিক মসলাযুক্ত খাদ্য দ্ব্যে অথব শুক্রের মাংস আহার বশতঃ অঞ্জনী, বিশেষতঃ উপরের অফিপ্টে ( লাই ও ট্যাফ্ তুলনা করুন )। গর্ভ প্রাবের আশকা; রক্তা-প্রাবের বিরতি ও অনন্তর বিবর্ধিত বেগে প্রত্যাবৃত্তি; আক্ষেপিক বেদনা, তজ্জ্ঞ খাস-সোধ ও মৃ্চ্ছবর উৎপতি; বিমল বায়ু সেবনের প্রবৃত্তি

দন্ত-বেদনা — মুখে শীতল জ্ঞা রাখিলে দন্ত-বেদনার শান্তি (আই, ক্ষি); উষ্ণ দ্বতা ও গৃহের উত্তাপে উহার আতিশ্যা

শাসজিয়া ভালরপে নিষ্পান করিতে অপারগতা, অথবা উফগৃহে শীভায়ুভব শামবীয়তা, গুল্ফবয়ে উহার আধিক্য অনুভূত হয়।

উপচয় ৷—উষ্ণ, আবদ্ধগৃহে; সন্ধাকালে গোধুলি সম্যে; বামপার্শ্বে বা বেদনাধীন পার্শ্বে গমনে; ছম্পাচ্য আহার, বসা জব্য, শ্বরের মাংস, ও বর্ষাদি সেবনে; নড়িতে চড়িতে আরম্ভ করিলে; উত্তাপে, ও উষ্ণ বাহ্য প্রোগে; বৃদ্ধি কোলী-মি)

উপশ্বা — অনাবৃত বায়ুতে; বাপিড পার্থে শ্বনে (ব্রাই);
শীতল বায়ুতে বা শীতল গৃহে, শীতল দ্রবা পানে বা আহারে; ও শীতল বাহ্য
গ্রেগেরে; হান (কাণী-মি)

मध्य ।—( > ) कानी-मि, नारे, मिनि, मन-अमित्र महिल शनामित्र खर्श्य ।—( > ) दा मक्न जम्मण द्यादा शनादा शनादा छिलदानी छोत्रहें दमहें मक्न द्यादान भवाद ( २ ) दा मक्न जम्मण द्यादा शनादा छिलदानी छोत्रहें दमहें मक्न द्यादान श्री जन व्यवस्था मिनि सा स्थाप्या। ( ० ) कानी-वारे, नारे, निल, मद्यत शदा शवाद छान थाद ( ८ ) काम, क्रेनारेन, भाक का तमन, जवर हा शान बनिल द्याता। ( ० ) श्री जन द्यादात छिकिदमा आप्रेख किति दा मक्न जेवस मद्यां जम शनदां जो छिरान अग्रुष्ठ अभिक शिव देव मक्न द्यां जी अभिक वदमंत्र शृद्ध अभिक शिव श्री किताद कितादात शिक श्री विभिष्ठ देव मक्न द्यां जी अभिक वदमंत्र शृद्ध अभिक श्री विभिष्ठ देव मक्न द्यां जी अभिक वदमंत्र शृद्ध अभिक श्री विभिष्ठ छोन श्री हो। अगरमंत्र श्री कितादां छिलदां जी ( १ ) शनदमंत्र श्री कि श्री कितादां छिलदां जी ( १ ) शनदमंत्र श्री कि श्री कितादां कि छोन श्री हो।

## পাইরোজেন।

(Pyrogen)

প্রস্বান্তিক বা শস্ত্র-জ্রিগার পরবর্তী; জল-প্রাণালী প্রভৃতির দুষিত বাপালনিত। ভিপ্রিরা, টাইফরেড বা টাইফঃস জ্বের ভোগ-কালে উৎপয়, সেপিট্রিনিয়িন য়ায অত্যুৎকৃষ্ট স্থনির্বাচিত ঔষধেও একেবারেই উপকার না জন্মিলে অথবা স্থাযীফল না দর্শিলে এই ঔষণ উপযোগী।

শায়া শক্ত অনুভূত হয় (আর্ব); যে সকল অঙ্গে ভরদিয়া শায়ন করা যায় উহা ব্যথিত ও ঘ্টবৎ অনুভূত হয় (ঝাণ্ট); ফ্রাডোৎপন্ন শায়া-ক্ষত (কার্ব এনি)

অতিশয় অস্থিরতা; অন্সের স্পর্শ-বেষের উপশ্মার্থে অবিরত স্কাশনের আবশ্যকতা (আর্ব, ইউপ)।

জিহন। — বৃহৎ, লোলিত; পরিচছন্ন, ভার্ণিসকরারমত মত্প; তার্মির ন্যায় রক্তবর্ণ; ৬ফ বিদারিত জিহন।; শন্দোচারণে কট (জোট, টেরে)

স্থাদ — স্বাধ মেষ্ট ; ভযক্ষর তুর্গন্ধ ; কত হইতে উৎপন্ন পুযুব্ধ মুথের স্থাদ।

वमन — श्रीकिनियक; किंक पूर्वित क्यांत्र केंगिए किंगिनिय विशेष

অভিসার —ভয়ন্তর তর্গন (সোরি); কপিশ বা ক্ষাবর্গ (বেপট) বেদনাখ্যা, অনিচছার নির্গত, অনিশ্চিত, বায়ু-নিঃসর্গকালে বহির্গত (এলো, ও্টিন), অতিসার।

কোন্ত-রোধ।—সম্পূর্ণ নিশ্চেষ্টতা সংযুক্ত (with complete incitia)
(ওপি, ভানি), জ্বরে অন্ত্রাবরোধ বশতঃ তৃদ্দিমা; রুহৎ, কাল,
পচা মাংসের গক্ষ; জ্পণাইয়ের মত ছোট ছোট, কাল গোলার
ন্যায় ল বিশিষ্ট (ওপি, গ্রন্থ) কোন্ত-রোধ।

ঋতু — ভরত্বর ছর্গকা; পচা মাংসের গক্ষ; পচা গদ; কেবল এক্রিন স্থারী, তৎপরে সেই প্রকার ভয়ক্ষর গন্ধ রক্তাক্ত প্রদর বিশিষ্ট; ঝড়ু।

জণ — ( otus ) জণ ও ফুগাদির অবশেষের নরায়তে অবস্থিতি, বিগণিত হওয়া, গর্জে জণের কভিপন্ন দিবস মরিরা থাকা; কাল, জনানক জুর্ন্ন প্রাব নিঃসরণ; গর্জপ্রাব বা প্রস্বের পর সেপ্টিক অব্যের পরে আফ্রা-শৃত্তত পাই-রোজেন অরায়্র আভাবিক জিরার উত্তেজনা জন্মান। পাতলা, বিদাহী, কটা, অতি ছর্গন প্রদায়ক প্রাব (lochia) (নাই-এমি); প্রদায়িক প্রাবের বিলুপ্তি, তৎপরে নীত, উত্তাপ ও প্রভূত ছর্গন বর্ণা বিশিষ্ট ধ্রর

হাৎ পিতের বিভামানতার স্থাপটি ভারান, উহা আছ অরভ্ত হয়; মেন বড় হইয়াছে এরপ বোর হয়; কানে অবিরত অংপিতের দিপ দিপ ও ক্ষানকর শব্দ শুনা যার, ভাহাতে নিদ্রার বাাঘাত জন্য; রজে প্রন্থনক পদ র্থের অবস্থিতি বশতঃ স্থাপিতের স্থাপতা

নাড়ীর অস্বাভাবিক জততা, গাত্র-তাপের সহিত উহার জামুপাতের সম্পূর্ণ অসম্বন্ধ (গিগি)

জ্বের পাপুরতা, শীতনতা, ও ভদেরজার বর্ণ (নিকেলি); বৃদ্ধ ব্যক্তি নিগের ভুদ্দিন শিরা-ক্ষীতিসংযুক্ত, গুর্গক কত (সোলি)

জার — জ্বান্তিবরের মধাজাগে, পৃষ্ঠে শীতের আরস্ক ; তীব্রে শীত ; সর্বান্তের, অস্থির ও হস্ত-পদের শীত ; সেপ্টিক জ্বরের আত্মণের লগেন ১০০ হইতে ১০৬ ডিগ্রি গার্ডাণ; আকস্মিক উত্তাপ, থকের শুক্ত গুলা।; ক্রত, ক্রে, তারবৎ নাড়ী, ১০৪ হইতে ১৭০ বার ম্পন্দন; অনস্তর শীতল আঠা আঠা দর্ম।

সেণ্টিক জ্বরে, বিশেষতঃ প্রাসবান্তিক সেণ্টিক জ্বরে পাইরোজেন অভিশয় উপকারী পচন-নিবারক হোমিওপ্যাথিক ঔষধ

সম্মা ৷— (১) আস, ব্যাপ্ট, কার্ম-ভেজি, কার্ম-এসি,ওপি, স্থান, সোমে, সিকে, তিয়ের সহিত সমগুন সম্মা ; (২) প্রচ্ছন্নপূথ-জনন-প্রক্রিয়া (latent pyogenic process) বশতঃ দুগুমান সদৃশ ঔষধ ব্যবহারেও রোগের পুনঃ পুনঃ প্রত্যাধৃত্তি

## পিক্রিক এসিড।

( Picric Acid )

জীর্ণনির্ধ শরীর যন্ত্র ; স্বার্দবীয় অবসরতার অন্দর্ম প্রতিকৃতি এই ঔষ্ধে পরিশোধিত হয় (ক্যালী-ফ)। ् थेगायः ; कथा विगटि कमिछा ; धोरत धोरत छेखत सान ; आहर आएश मक्षमा । क्षीयम आखि ; विग्रह छानूर्व छावी छावना

খুদকি বা বুদিকা; বহুসংখ্যক একএ পতন ( লাই ); থোপা থোপা কেশ-পতন, সতন্ত্ৰ স্বতন্ত্ৰ স্থানের টাক।

প্লায়বীয় ছঞ্জতা; কম্পন; ন্যায়েটাইজ হইবার ইচ্ছা।

সমগ্র শরীমের ছর্বলিতা ও অবসরতা; জীবনের তরল বিধানের অপ্রম বলতঃ দৌর্বল্য ও শ্রান্তি (সিক, ফস-এসি)।

শীতল থাত ও পের দ্রব্যের আকাজনা; নিধা দ্রব্যের পৃহা; বর্গ ভক্ষণে আমাশরের যাতনার হাস।

উষ্ণ অলে হাত রাখিলে বিৰমিষা অয়ে; শীতলজলে হাত রাখিলে হাঁচি ও শর্মি হয় (ল্যাক-ডি)।

জল আমাশনে উফ হইবামাত্র উঠিয়া পড়া।

গ্রাংদে গ্রাদে ভুক্তদ্রব্য উদগীরণ ( এশম )।

কোর্চ-কাঠিজ; সক্ষ, লখা, শুক্ষ, জ্মেছজ, ও শক্ষ; করে নিঃসাখিত মুল (কন্ত, প্রাক্)।

অতিসার —সরলান্তে কিছু প্রবেশ করিবামাত্র; পিচকারীর অগের ভার প্রোতোবেগে নিঃস্ত, সাগুর ভার দানা দানা মিশ্রিভ, জলবৎ; মলদার যেন বিমুক্ত রহিয়াছে এরপে অমুভব বিশিষ্ট (এপিস, সিকে); অনিচ্ছার বিনির্গত; ওলাউঠার সময় প্রায়ভূত (ওলাউঠার পুর্ববর্ত্তা, ধস-এসি); এবং বৃদ্ধদিগের প্রাত্তঃকালীর; অভিসার।

গর্জাবস্থা ৷---গর্জকালে জলপানে অসামর্থা; জল দর্শনে বমনের উৎগ্রিড় সান করিবার সময় চক্ষু বৃজিয়া পাকার জাবগুক্তা (লাইসি)

রজজাব। প্রঃ প্রঃ প্রভূত পরিমাণে, বিমৃক্ত ভাবে রজপাক, অনন্তর কিরৎকালের জন্ত উহার বিরতি; মুসমূদ হইতে রজপাত; জরায়ু হইওে রজপাত; কানিসার হইতে সক্তপ্রাব; রজোবিলোপে নাসিকা, আমাশর, মল-বার ও ম্তা-বার হইতে অহকল রজ-প্রাব।

বক্ষঃস্থগের উপর বেন কোন গুরুজার স্থাপিত রহিরাছে এরপে শুরুজ্ অনুভব। ঘর্ণ্যে গ্রহকের গন্ধ

বামদিকের নিয় হত্ত্ব অন্থি-পুতি ( Necrosis )।

সক্তদ্রাধ-প্রথণ শাসীরিক প্রাকৃতি ; সামায় অভিদাত ইইতে প্রভূত রক্তণাত (ক্রিয়ো, ল্যাক), প্রতি গ্লৈষিক্ষিলীময় দার হইতে রক্তশ্রাব

স্বরষদ্ধে এতই বেদনা যে কথা বলিতে পার যার না; উষ্ণ হইতে শীতল বাযুতে গোলে (ব্রাইওনিরার বিপরীত), হাসিলে, কথা বলিলে, পড়িলে, ধাইলে ও বাম পাশে শুইলে, কানের উদ্রেক হয় (প্রস, ষ্ট্রান)

হানিম্যাম বলেন যে পুরাতম অতিসার-গ্রস্ত রোগীদিগের প্রতি ছই ঔষধের সমষিক উপকারজনক জিরা দর্শে

উপচয়। — ছই প্রহর রাত্রির পূর্বের, দারাফে (পলস, ত্রঃদ), একাকী থাকা কালে, বাম বা ব্যথিত পার্শ্বে শ্রনে; আলোকে, মেঘগর্জন কালে; উত্তথ বা শীতশ ঋতুর পরিবর্তনে; ও উষ্ণ বস্তু আহারে; বৃদি।

উপশাস — অধকারে, দক্ষিণ পার্থে শরনে; নিজাস্তে; শীতল জব্য আহারে, ধরণে বা মিসমেরাইজ করিলে, প্রাণ শীতল বার্তে মন্তক ও ম্থমগুলের লক্ষণের উপশ্ম, কিন্তু বধ্যস্থল, গলা ও ঘাড়ের লক্ষণের হৃদ্ধি

সন্মন্ত্র ।—(১) আবে নিবের সহিত অনুপ্রক স্থান। (২) কটিকমের সহিত প্রতিক্ল স্থান। কটিকমের পূর্বের বা পরে ফসফরাস বাবহাত হয় না। (৩) সিখোনা বা ক্যালকেরিয়ার পরে ফসফরাস ভাল থাটে (৪) আইওভিন সেবনের ও অতিরিক্তি লবণ আহাবেরর সন্দেশ ফসফরাস হারা নিবারিত হয়।

# ফদফরিক এসিড।

( Phosphoric Acid )

পূর্বে যাহাদের শরীর সবল ছিল, কিন্তু পরে প্রেল্যুদি জীবনের তরল বিধানেব অপচয়; অপরিষিত ইন্ধিয়সেবা (সিদ); প্রবল তরণ বোগ এবং শোক-ছঃথ, ছন্চিন্ত, ভয় প্রেমাদি জনিত দীর্ঘকালয়ায়ী চিত্রবিকার বা বৈর্জি নণ্ডঃ ষাহারা ছর্মল হইয়া পড়িয়াছে; তাহাদের পদে এই ঔষধ সম্ধিক উপ্যোগী

পাতুবর্ণ, ক্লয় মুণাক্ষতি, নীলবর্ণপ্রাস্ত-পরিবেষ্টিত ব্রিময় নয়ন উদ্বেগ, উৎকণ্ঠা, শোক, হঃথ ও স্বগৃহে ঘাইবার জন্ত কাতরতা জনিত রোগ (ইয়ে), নিজালুতা, বিলাপ-প্রবিশ্বা; গুডিকোলের প্রাকালে নৈশ ধর্ম

মুদ্ধ ৫ বিনীত স্বভাব ( পল )।

অনাবিষ্টতা ও উদাদীনতা; জীবনের কার্য্যে বিরাগ; দে সকল বিষয়ে অভ্যন্ত অহাগ ছিল তাহাতে অনাসজি; শোকে বিহবলতা।

অতি বৰ্জনশীল বালক-বালিকা ও যুবক-যুবতী (ক্যান্ধ, ক্যান্ধ-ফ্স) পৃষ্ঠে ও অজে আঘাতিতবৎ বেদনা

প্রশাপ — অবোধ্য মূর্য় (বিড্বিড়ে) প্রশাপ; স্থিতি অথবা মোহবৎ
নিয়োম পড়িরা থাকা, চারিদিকে যাহা ঘটিতেছে তবিষয়ে জ্ঞানশ্যতা; জাগরিত
করিলে সম্পূর্ণ সংজ্ঞাপ্রান্তি, জিজ্ঞাসিত বিষয়ের ধীরে ধীরে ও পরি ওজারণে উত্তর
প্রদান, প্ররাম জাবার স্থিতি (ধ্যান্তা)

दशाणीत कम्मान, खल्यात क्र्यम्जा, महत्य दहाँ हो नागा, या भग-यमन । शक्ष्मामा, छिभगरम ज्ञाना भात्रप-त्याय यम्जः ज्ञान्ति ज्ञान्य ज्ञान्य दियात्मत्र श्रामाष्ट्र, ज्ञाना का त्यापाय, ज्ञानि विश्वा का त्यापाय, ज्ञानि विश्वा का त्यापाय, व्यापाय, ज्ञानि विश्वा का त्यापाय, व्यापाय, व्याप्य, व्यापाय, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य,

শিরোঘূর্ণন। - সমূপ ও পশ্চাৎভাগে মন্তকের নিমগ্নতা; চঙ্গু যুদ্ধিলে শিরোঘূর্ণন; টাইফঃস জ্বের উটিয়া বসিলে পতন; শয়ার শরুন করিয়া থাকার সময় মাথা স্থির রহিয়া পা যেন উপরে যাইতেছে এরপ অনুভব।

শিরংগীড়া—সন্তকের মধ্যক্ষানে প্রচাপক ভার, অধিক্ষিন স্থারী শোক অথবা পায়ুর অবসয়ভা বশতঃ উহার উৎপত্তি; মন্তকের ও গ্রীবার পশ্চান্তালে; সাধারণতঃ পশ্চাৎ হইতে সল্ম দিকে বেদনা; নড়িলে চড়িলে, গোলমালে, বিশেষতঃ গীত-বান্তে উহার বৃদ্ধি। শরনে উপশ্ম (আই, সেল, সিলি), চক্র অভি বাবছার বশতঃ বিজ্ঞালয়ের বালিকাদিগের শিরংণীড়া (ক্যাক্ত-ফ, স্থাট-মি); অভিরিক্ত বর্দ্ধনশীল ছাত্রদিগের শিরংণীড়া

শরীর-শাধার অস্ত্যভাগেব পায়ুতে ছিন্তকরণ টানন ও ধননবং বেদন। ; অক্ষচেইদের পর অবশিষ্টাংশে দায়বীয় রোগ ( দেপা )

অভিসার —বেদনাশূন্য, অদোর্বিল্যজনক; পীত বা শ্বেতবর্ণ; বায়ু সহকারে, অনিচ্ছার নির্গত (এলো, খাট); অয়দ্রব্য, ওলাউঠা ও ভয়ন্তনিত; অভিসার

মূত্র।—লেহবৎ, রক্তাক্ত পশুমিশিত ছগ্ধবৎ-দৃষ্ট মূত্র; মূত্র সম্বর বিসমাসিত হয়; রাণ্ডিতে পরিষ্ণত জলবৎ প্রভুত মূত্র, ভাগের পর তৎক্ষণাৎ উহার উপর গুল্র স্বের উৎপত্তি (ফসফেটের আধিকা, সায়ুক্ষর)।

স্বৃত্তিম নৈথুন; দূষিত ত্রিয়ার অপরাধিতার বোগীর অতিশয় যাতনা (ডাইওস, ষ্ট্যাফ্)।

অনৈচ্ছিক গুজনাব—বারংবার, দৌববিল্যকর, ওত্ত শুজপাত;
সংসর্গের গরেও শুক্রন্তার; শুক্রন্তাবের পর অভিশর সংস্থালিখা: এক
রাজিতে হই বা ভতোধিকবার শুক্রপাত, সলম্ভক্তা, সুঃখিততা, ও
আারোগ্রাগ্রাক্রিন্তা (ক্রিম নৈথ্নের ছবিবার প্রের্থি সহকারে—অষ্টি)

বৃদ্দঃস্থল — কণা বলিলে ও কাসিলে বুকের ছবলতা ( ষ্টান ); যগা; তরল-বিধানের অপচয়, অতি শীঘ্র বর্জন ও অবসাধ্যানক মনোডার বশতঃ 
মার্বীয়তা

মাজিক (cerebral) টাইফয়েড বা টাইফস অব; স্কপূর্ণ উদ্বাস্থ্য ও
প্রতি; কাঠের ও ডির ভার পড়িয়। থাকা; কোন বিষয়ে কোন থবর না
স্বরা; চারিদিকে যাহা ঘটিতেছে তৎপ্রতি সম্পূর্ণ অমনোবোগ; অন্ত ২ইতে
সর্গা রজের রক্তনাব

উপচয় — নানসিক পীড়া জঞ্চ; শুক্রাদি জরল-বিধানের অপচয় বশতঃ; ফুক্রিম নৈথুন; অভিরিক্ত ইন্সিয়-গেবা বশতঃ বৃদ্ধি কথা বলিলে বক্ষঃস্থলে ত্র্মগভার উৎপত্তি (ইয়ান)

উপশ্য |—সঞ্জন; উক্তা ও আর্ত্রকালে; ব্লাস (কষ্ট, নক্ষ)। স্বাহ্ম |—(১) টাইক্ষেড্ অন্তে, ফ্স, পশ্স, পিক্-এসি, সিলি ও মিউ- এসির সহিত; এবং গুলান্ত, স্থাি ও প্রলাণে, নাইট-ম্পিরি-জলসিসের সহিত প্রসিত ফসের ভূপনা হয়। (২) শরীর ক্রমকর বর্গা, ক্রমের ও ত্র্লেশতায় সিক্ষোনার পূর্বে ও পরে; এবং আহারের পরে সূক্ষার নজের পরে; ফস-এসি ভাল জিয়া করে

## कार्रेटोलगका।

(Phytolacoa.)

আগবাতিক ধাতুর রোগী; পেশী-তম্ব ও অন্তি-বেটের যাত; পারদ বা উপদংশ হইতে উহার উৎপত্তি।

দীর্ণভা, হরিৎপাঞ্, শরীরের বসার করপাথি

অভিশয় ক্লান্তি ও প্রাগাঢ় অবসরত ।

আইওনিয়া ও প্রাস্টকা দেখিতে খুনার উপযোগী দেখাইলেও যংল এই ঔষধ ঘ্যে সফলতা লাভ হয় না তথন ফাইটো বাবহারে আবোগ্য জন্মে

ভিপথিরিয়া, প্রমেহ, পারদ বা উপদংশের পরবর্ত্তী আমবাত ও সাধু-শূল। তাড়িতাবাতের ভার বেদনার সঞ্চরণ; চিড়িক-মারা ও ছুরিদিরা কাটার মত শীল্ল শীল্ল স্থান-পরিবর্ত্তনশীল বেদনা (ল্যাক-ক্যান, পল্ম); নড়িলে চড়িলে ও মাজিতে উহার যুদ্ধি।

জীবনে সম্পূর্ণ উদাক্ত; রোগিণী মনে করে যে যে নিশ্চর্গই মনিবে। শিরোঘূর্ণন; শ্যা হইতে উঠিবার সময় শক্তিহীনতা অমুভব ( গ্রাই )।

তীর শিরোবেদনা ও পৃষ্ঠ-বেদন ; সর্বশরীরে ধঞ্জতা, বাণিভতা ও স্থাইতা অমুন্তব, অবিয়ত নড়িতে চড়িতে ইচ্ছা, কিন্তু নড়িগে চড়িলে বেদনা বৃদ্ধি পায়; ( ল্যাক-ক্যান, মার্ক নড়িলে চড়িলে হ্লাস পড়ে, হ্লাস )।

भएको छित-कोरम मञ्ज व्यवसा मञ्जन्म अवदा मश्यन कत्रियोत्र छवियोत्र छात्रिक (१८७१)

গল-ক্ষত (Sore throat); উহার মলিন লোহিত্বর্ণ, আল-জিহ্বার বৃহত্ত, শোগ, প্রায় আংশিক স্বচ্ছতা (কালী-বাই, ফ্লঃস)

णि वित्रिया ।---- गणां धः कत्रद्य भणा २३८७ कर्म शर्याच द्यलमात्र मक्षत्रमः । शिनि-

বার সময় জিহনা-মূলে অভিশ্য বেদনা; জ্বলন্ত অস্থার অথবা আরক্তি
তথ্য লোহ সংলগ্নের স্থায় জ্বালা; পরিভঙ্গতা; হন্ত-কম্প সহ গিলিতে
কট; ক্রমাগত গলাধ:করণের ইচ্ছাসহ গলায় বেন একটা পিশু রহিয়াছে
এপ্রকার অন্তব, তাল্-মূল, অলি-জিহন, ও গল-মধ্যের পশ্চাৎ ভাগের
ভন্মবর্ণ বিল্লীদারা (membrane) আচ্ছনতা; তথ্য তর্ল দ্রেব্য পান
করিতে অসমর্থতা (ল্যাক)

ভিফ্পিরিয়া ও আরক্ত জ্বের পরে ক্যারোটীভ্ ধ্যনীর গ্রন্থির ও হন্দ্র-নিম্ম-গ্রন্থির দৃঢ়তা।

স্তনে অনেকগুলি শক্ত ও ব্যথিত অর্ধ্বুদ

ন্তারে সময় প্রকা জন্মিবার সন্তাবনা; পূর্ণক্রা, প্রস্তারবৎ দৃঢ়ক্তা ও ব্যাথিকতা বিশেষতঃ যথন প্যোৎপত্তি অপরিহার্যা, সন্তান জনপান কালে জন-বৃদ্ধ হইতে সর্বব শারীরে বেদনার সঞ্চরণ (পৃষ্ঠে-গতি, জোট-টিগ জর্মায়ুতে গতি, পলস, সিলি)

গুন-রণ; নালী, ই<sup>ন</sup> করা প্রদাহিত ক্ষত ; দ্বিত, রসানীর মত,

স্তনের ক্ষান্ততা সারেওনা পাকেওনা, উহার বেগুনী রং এবং ''পুরাতন পনিরের স্থায় কাঠিত'' (ব্রাই, শাক-ক্যান, ফেল্)।

ত্তন-বৃত্তের অতিরিক্ত অনুস্কৃতি, স্পশ্নিদেয় ও বিদ্যাল ( াাফ ); সন্তানকে তনদানে উহার দারণ বৃত্তি, সবা শরীরে বেদনার বিকীরণ।

कारेहों भूर्यादभिष्ठित भवत्रहा खनाम ( श्लि, गांक, मार्क, मिणि ).

উপচয়।—বৃষ্টির সময় ও আর্দ্র শীতল বায়ুডোগে যুদ্ধি। সময় ।—কালী-আইওডের সহিত সমগুণ সম্বদ

# ফাইসফিগমা।

(Physostigma)

মসাধারণ সানসিক জিরাণীগভা; চিন্তাকরা হইতে নিবৃত্ত হইতে পারা যায় না। দৃষ্টির অপরিচ্ছয়তা ; কলম (blu) বা পাতলা পরদা হইতে উহার উৎপত্তি ; দুষ্টবস্ত বিমিশ্রিত দেখায়

যাধহারের পর চক্ত্-বেদনা,চগুর সমুধে ভাসমান রফাবর্ণ চিহ্ন ও আলোকের শিকা দর্শন,চগুর পাতা ও পেশীর স্পন্দর (এগার); িষ্ট্যার্ম্স (অফি-রোলকের অনৈচ্ছিক পরিদোশন)।

পেশী-ম গুলের অভিশর অবসরতা; গভিশ জির ক্ষীণতা (জেল্স)। মানসিক বা শারীরিক উপদ্যব বশতঃ যুবকযুবভীদিগের কম্প।

সময়ত বা আভিঘাতিক ধহাইকার; বেশন গতিশাল লোকের যৎ-সামাত্য নিশাস-বায়তে উহার উপছিতি বা উপচয় (হাইপার, লাইনি, নহা, টিক)

সম্বাধ্য ়া---বেল, কোন, কিউর, জেলস, হাইপার, ও খ্রিক্নিয়ার সহিত এই ঔষধের তুলনা ২য়

## ফিরঃম।

### (Ferrum met)

রতা-প্রধান-ধাতৃ; বিবাদ ও বিতর্ক প্রিয়, সহলে উদ্বেজিত; যৎসামাত্ত প্রতিবাদে রাগায়িত ব্যক্তি (এনাক, কক, ইগ্নে); এবং প্রধান, স্বর্মারী, হরিৎপাপ্তভা অবচ অভিশর আরত্ত-বদনা নারীদিগের পক্ষে এই উষ্ধ বিশেষ উপযোগী

রজন্তাব-প্রবণ শারীরিক প্রাক্তি; উজ্জল লোহিত রজপাত, সহজে উহা সংযত হয় ( congulates easily ) ( ফির-ফন, ইপি, ফন)।

ম্থমণ্ডলের অত্যন্ত পাণ্ডুরতা এবং অত্যন্তমাত্র বেদনায়; সঞ্চলনে বা প্রামে উহার আরক্ততা ও উদ্দিপ্ততা, ম্থ-রাগ (blushing) ( এমিল, কোকা )।

উপদাহিতা; যৎসামান্ত গোলমালে, এমন কি কাগজের কড় কড় শংক গর্যান্ত রোগীর নৈরাশ্র জন্মে (এসার, টার )। হর্ষণতা বশতঃ যদিও বোগীকে শরন করিয়া থাকিতে হয়, তথাপি আতে আতে হাঁটিয়া বেড়াইলে রোগী সর্বদাই ভাল বোধ করে

কোন জীবনী-জিয়ার বিক্বত বিবৃদ্ধি বশতঃ হরিৎ-পাপু (Techhitic chlorosis), শীত ঋতুতে উহার বৃদ্ধি

ওষ্ঠ, মুথমণ্ডল, জিহুরা ও মুথের শ্লৈমিক বিয়া ও ভূতি আনুরক্ত স্থানের শুদ্রবর্ণ প্রাপ্তি।

ঋতু — নির্মিত সময় অপেকা শীঘ্র উপস্থিত, অধিক দিন অবস্থিত, প্রভ্ত ঋতু, তৎসহ অগ্নিবৎ আগরক্তা মুখ্যমগুল; কর্ণে ঝন্ ঝন্ শব্দ; ঋতুপ্রাবের একবারে ছই তিন দিন বিরতি, তৎপরে প্রনায় প্রত্যাহতি; প্রণ্ড বর্ণ জলবৎ, দৌর্বল্যকর রজ-ত্রাব ।

শিরোত্রন — জলের উপর পাকার স্থায় তৌল করার (balancing) মন্ত অনুভব সহকারে; প্রাবৃহিত জলে দেশ্নে; জলের উপর হাঁটবার সময়, যথা সেতু পার হইবার কালে, নীচে নামিবার সময় (বোর, স্থান ); শিরোত্রন

শিরংপীড়া — দুই তিন সপ্তাহ পর পর, তুই তিন বা চারি দিনব্যাপী;
মুকারাঘাত বা করাঘাতবৎ স্পাননজনক বেদনা ও শরনের আব্দ্যকতা বিশিষ্ট
শিরংপীড়া, তৎসহ আহার বা পানে অপ্রবৃত্তি

বিবমিষা ব্যতীত গ্রানে গ্রানে ভুক্ত-ন্তব্য উদ্গীর ৭ ( এশম )।

স্ক্পিকার থাভদ্রে অভ স্থ অপ্রতিসহ কুণাহীনতা, অথবা কুন্ধুর্বৎ খন খন কুণা।

वयन।— छूटे প্রহর রাত্রির আব্যবহিত পরে ব্যন; আহার করিবা-মাত্র ভুক্তরব্য বমন; থাইতে থাইতে সহসা উঠিয়া কাইরা বাহা কিছু আহার করা গিরাছে সমস্ত এক উভ্তমে বমন করিয়া ফেলা, প্নরায় বসিয়া থাইতে পারা; অয় বমন ( লাই, সল-এসি )।

অতিসার।—রাত্রিতে অপরিপাচিত মল, অংবা আহার বা পান করিবার সময় মলত্রাব (জোট-টি); উত্তম ক্থা সহকারে বেদনাশ্রু অতিসার; ক্ররোগগ্রস্থাগিরে অতিসার। विवर्षनभीण, धनिष्ठेधनक ना १ के छ। , साधुत पूर्वना ।

ম্স্তিফ-দে বিল্য (এগ-দ্যাগ) — সাহিতি ক বা কর্মণীল লোকদিগের রোগ, যথগায়া উত্তেজনায়, মানসিক পরিশ্রমে বা অভিরিক্ত কার্য্য করিলে শিরঃশীড়ার উপস্থিতি ও পৃষ্ঠবংশের অম্বালম্মি আলার উৎপত্তি (কালী-ফ্স)।

শিরংশীড়া —ছাত্রদিগের, শিক্ষকদিগের, ও অভি-কার্যাশীল লোকদিগের শিরংশীড়া, শোক বা অবসাদজনক মনোভাব বশতঃ উহার উৎপত্তি; মন্তেকের পশ্চান্তাপে ও গ্রীবাদেশে বেদনা (ফাট-মি, দিনি); একটু মাত্র নড়িলে চড়িলে অথবা মানসিক পবিশ্রেমে উহার র্দ্ধি বা উল্লেক্ষ

পৃষ্ঠবংশের রোগসহকারে কাম-প্রবৃত্তি পরিশ্ব লিলোজেক; অনেকলণ্ডারী প্রবল উদগদ; প্রভূত শুক্তপাত; প্রধের কামোনাদ (ক্যাছ, ফস)।

শ্রীরের যে কোন আংশে, কিন্ত বিশেষতঃ বাহ্যিক শ্রুতি-প্রশালীতে (external auditory canal) ক্ষুত্র ক্ষুত্র কোটক

পৃষ্ঠিবংশের (Spine) লক্ষালাম্বি জ্বালা এবং পৃষ্ঠবংশ ও পৃষ্ঠের অভিশয় জ্বলভা; পৃষ্ঠবংশের মজ্জার কোমলভা (ফস, জিম্ম )

শোস্তি, নৃতিশে চড়িশে অল কান্তি অন্তর হইতে সমাক পকাদাত পর্যান্ত উহার পরিণিত সর্বাশরীরে বিশেষতঃ অন্ন প্রত্যাক্ষ প্রোস্থ্যি ও গোর্ষ অনুভব (heavy feeling) পরিশ্রমে উহার আধিকা।

উপচয়। — अङ्ग्रिम भागिक खाँगः भागताः अपृष्ठित्र मिरमः युक्ति।

উপশাম I--- শীতল বায়ুতে ও শীতল লগে; উপশন।

সাহায় ।---- শার্জনা, **লেগ, কালী-ফস, ফস-এ**সি, ফস, পেট্রো, সিন্ধির সহিত পিজিক এসিডের তুলনা হয়।

### পেটেগলিয়ঃম।

(Pètroleum)

্ম সকল ব)জিদিগের চুল ও ছক পাতলা, প্রারুতি উগ্রাও বিবাদশীল (নকা); বাহারা সামাজ বিষয়ে রুষ্ট (ইংগ্র, মেড) ও সকল বিষয়েই বিরজ্জ হয়; ভাহাদের পক্ষে এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী

খোড়ার গাড়ী, রেশের গাড়ী অথবা জাহাজে আরোহণ জনিত পীড়া (কক, জানি); ঝড়-বজের পূর্বেও তৎকালে বিবর্দ্ধিত হয় এরাপ পীড়া (ফাট-কা, ক্স, সোরি)

রোগের শক্ষণের শীঘ্র শীঘ্র আবির্ভাব ও ডিরোভাব (বেগ, মাগা-ফদ ----প্লাট ও ইাণের বিপরীত)।

নিজা বা প্রশাপ কালে একটা জজ্বা বেন ঘুইটা হইয়াছে একপ অন্নান;
যেন একই শয্যায় রোগীর পার্শে আর এক ব্যক্তি শ্যন করিয়া
রহিয়াছে; এবং শয্যায় যেন;ছুইটা শিশু রহিয়াছে; এ প্রকার
অন্তব (ভেলে)।

উঠিলেই শিলোখূর্ণন (বাই); মস্তেকের পশ্চান্তালো; মততাবৎ; সামুদ্রিক বিবমিষার অনুরূপ (কক); শিলোঘূর্ণন;

শিবঃপীড়া মস্তাকের পশ্চান্তাগে শীস সদৃশ গুরুত্ব; প্রচাপন ও দগদপকর বেদনা; মন্তকের প্রত্যেক বস্তাই যেন সদীব; মস্তক থেন কার্চ নির্দ্ধিত, ক্ষরশ ও স্থাই; এরাণ কার্ডব।

আমাশন-বেদনা — গর্ভাবস্থায়; প্রচাপন ও আকর্ষণবৎ বেদনা সহকারে আমাশর শৃত্য থাকিলে; আমাশরের গ্যাস্ট্রালজিয়া, সতত আহার করিলে উহার উপশন (এনাক, ১চলি, নিশি)

অভিসার।—বান্ধাক্পি, ও শন্ন ক্রোউট (ক্পি দারা প্রস্তুত ক্রব্য বিশেষ আহারে; গর্ভাবস্থায়; ঝড়র্ষ্টি-ক্রাণে; সর্ব্রদা দিব্যভাগে প্রবল বেগে নিঃস্তুত; গীত্র্য জলবৎ; অভিসার।

সমস্ত শরীয়ের চর্মের কর্প্তাদ অযুভূতি; সকল প্চিছেদেই ক্ট শ্রেন্য; মংসামাস্ত উপদাতে পুষ উৎপন্ন হয় (হিপ ) হত্তের অকের থরস্পর্শতা ও বিদারণ। হস্তাক্ত্রীর অঞাভাগ প্রতি
শাতকালে কর্কণা, দাঁটা, ও বিদীর্ণ, পদ-দমে ম্পর্শ-দেষ, ছর্মন দর্শে উহার
সিক্ষতা ( গ্রাফ স্থানি, সিশি )।

হার্শিঞ্জ (দজে বিশেষ) — মৃগাধার ও উরুশর পর্যান্ত সং গুসারিত জননালের দক্র , ক্রেড্রান, আরুরজেড , অক্সের বিশার্ণ, কর্মান্ত। রন্তালাক, শুক্রা বা আর্ডিন।

পদতল ও করতলের উত্তাপ ও আলা ( তাল, নল )

क्षी भूत्रव উভয়েরই বাহা जनमात्मत पर्य ও আর্মভা

বেদনা সংযুক্তা, কণ্ডুয়নজনক নীজ-ক্ষোটা, ও হাত ফাটা, দীত ঋতুতে উহার বৃদ্ধি ; শ্যা-ক্ষত।

জৎপিধ্বের সমীপে শীজগতা অমুভব (কার্ফো-এন, স্থাট-মিউ, ক্যালি-মিউ)। উপচয়।----শকটারোধণে,বঞ্জ-বৃষ্টি কালে, ও শীতকালে (চর্মা-সক্ষণের)

উপশ্ম।--ভক্তাৰ ও উক্ বায়তে হাব।

বৃদ্ধি

স্ক্ষ্ |----(১) সীসজনিত বিষাক্ততায় পেটোলিয়ম অশুতম উৎকৃষ্ট ত্তিয়ধ এই ত্তিয়ধেয় চর্দ্ম-লগণ শীতকালে বর্দ্ধিত হয় গ্রীপ্মকালে উপশ্যিত থাকে (এলম); এবং বিলুপ্ত হইলে অভিসাপ ক্ষে

### (शदके दमिनश्म।

( Petroselinum )

স্বিরাম জর।—আভিষাতিক বা প্রাতন মূল-মার্গের প্রদাহ কিংবা সংস্থৃতি (stricture) সংস্থৃত জর; তৎসহ উদরের রোগ এবং বিশ্বত বা অসম্পূর্ণ সমীকরণ-জিয়ার (assimilation) বিভ্যানতা

ভূষার্ত্ত। ও স্থার্ততা, কিন্ত আহার বা পান করিতে আরম্ভ করিবায়াল ইচ্ছার সমাক বিয়তি (ক্যান্তের বিপরীত)।

#### সহসা মূত্র-বেগ (ক্যান্থ)

শিশুর সহসা মূত্র-বেগ , তৎক্ষণাৎ মৃত্র-ত্যাগ করিতে না পারিলে যাক্তনায় উল্লেখন।

মূলাধাব (peri reum) হইতে সমগ্র মূত্রমার্গের অভ্যন্তর দিয়া জাগা ও সড়সড় কর।

মূত্র-মার্কের নৌকাকার গহবরে বারবার স্থরস্থরি

প্রমেষ — সহসা ছনিবার মূত্র-প্রবৃদ্ধি; মূত্র মার্গের গভীর স্থানে জীব্র দংশন, ও কণ্ডুয়ন, উহাব উপশমার্থে কর্জশভাবে মূত্র-মার্গ মর্দ্মনের আবশ্য-কতা, জিল মূলে বা মূত্রাশয়ের গ্রীবায় বেদম। লালা-মেছ (gleet)

সম্বন্ধ । — সহসা মূত্র-বেগে; ক্যান, ক্যান্থ, মার্কের সহিত এই ঔষধের তুলনা হয়।

#### क्षः भः ।

#### (Plumbum)

প্লঃমংম মেরাদণ্ড মূলক রোগে উপধোনী ( ফস, পিক-এসি, জিল )।

শীয়ে শীয়ে সমধিক শীর্ণতা প্রাপ্তি; সর্বাদ্ধীন বা আংশিক বিরক্ততা এবং অভিশয় প্রবিগতা সহকারে পকাঘাতের চরম সীম

পৃষ্ঠবংশীয় সামু-মগুলের দৃঢ়তা বশতঃ পেশীর শীর্ণতা।

व्यवमान । व्यमभूर्ग शृह्ह धारवरम मृष्ट्री शाशि ।

খীনে ধীনে উপলব্ধির উৎপত্তি; বৃদ্ধি-বৃত্তির অড়তা, ক্রেমশঃ বিবর্দ্ধিত উদাত্ত (জরে, ফস্-এসি)

স্থতি-শক্তির মুর্বালতা বা বিলুপ্তি; উপযুক্ত শব্দ প্রাপ্ত হইতে অসমর্থতা (এনাক, ল্যাক-কা)

উপর-বেদনার সহিত পর্যায়ক্রমে প্রকাপ

শ্যায় অমুত অঞ্ভলি ও অবস্থিতির অবলম্ন

পাপুর, ভত্মবর্ণ, পীতবর্ণ, মৃতদেহ সদৃশ, ও নিম্মা গণ্ড বিশিষ্ট; অভিশয় উৎকণ্ঠা এবং বাতন জ্ঞাপক, মুথাক্ষতি মুথমণ্ডলের ত্বকের তৈলাক্ততা ও চিন্ধণতা ( হাট মিউ, স্থানি )

মাড়ীর প্রান্তভাগ দিয় স্থস্পাফী নীলবর্ণ রেখা; মাড়ীর ক্ষীততা, পাড়ুরতা ও সীমবর্ণ রেখা প্রদর্শন

উদরে অতাধিক নেমনা, শরীরের সকলে অংশে উহার বিকীর্ণতা।
রাত্রিতে উদরে এক প্রকার অহত্তি বশতঃ কতিপর ঘটকা পর্যান্ত রোগীর
৫ চণ্ড ভাবে অল-প্রসারণ; সকল দিকেই প্রসারণের আবশ্রকতা ( এথিল )

প্রবল শূল-বেদনা, উদর-প্রাচীর যেন রজ্জ্বদা হইয়া পৃষ্ঠ-বংশের দিকে আকৃষ্ট হইতেছে এ প্রকার অনুভব।

উদর-বেদনা ও পুরীয বমন সহ অন্ত-প্রবেশ রোগ (intussusception), উরু, বজ্ঞাণ অথবা নাভী দেশীয় আবদ্ধ অন্ত-বৃদ্ধি

কোষ্ঠ-রোধ — শক্তে, দলা দলা, মেষের বিষ্ঠার আয় কাল মল (চেলি, জিপি); তৎসহ মলা—দ্বারের আ্রেক্সিপ বশতঃ আবেস ও ভয়দ্বর বেদন; মলের দৃঢ়তা, প্রক্রাবের শুক্ষতা, পকাষ্যত বা পেশীর শীর্ণতা; গর্জাষ্যা; অধিক মল-সঞ্চয় বশতঃ মল নিংসরণের প্রতিবন্ধকতা (প্রাটনা বিফল হইলে প্রাদ্বাম ফলপ্রাদ)।

প্রাইট-রোগ →উদর-বেদনা, উদরের আক্ষিততা; শীঘ্র শীক্ষ শীর্ণতা প্রাপ্তি; অভিশন গুর্বশতা; বৃক্ষকের সমূচিততা।

গর্ভাশয়ে জাণ-দেধের স্থানাভাব অমুভব; ধরায়ুর প্রসারণে অসামর্থা; আশিক্ষিত গর্ভপাত।

আক্ষেপ — খন খন পে<sup>ত</sup>র আর্ক্ষন ও প্রানারণ, অথবা অধিক্ষণ স্থারী আক্ষেণ; মন্তিজের দৃঢ়তা অথবা অর্ধৃদ হইতে উহার উৎপত্তি; অপসাম বা অপসারের অনুরূপ আক্ষেণ।

পীতবর্গ অক; নিবৃত্ত-রমমাদিগের এক প্রকার মলিন-কপিশ ছুলী; পাড়; চক্ষ্, অক ও মৃলের পীতবর্ণ।

উপচয় — রাজিতে ( অল-বেদনার) বৃদ্ধি উপশ্য — ধর্মণে ; ও শক্ত প্রচাপনে ; ক্রাণ সম্বা (১) শৃল-বেদনায় এলম, প্রাট ও ওপির সহিত; নাভীর আর্কানে পড়োর সহিত এবং আবদ্ধ অন্ত-বৃদ্ধিতে নক্ষের সহিত প্রংম্বংমের তুলনা হয় (২) পড়ো এই ঔষধের উদ্ভিক্ষ সমগুণ (২) প্রঃম্বংমের ক্ষেল, এলম, পেট্রে, প্রাট, সল-এসি ও জিল্প ছারা বিনষ্ট হয়

### প্লাটিনা।

(Platina)

যে সকল নারীর কেশ মলিনবর্ণ, দেহ-তম্ব দৃঢ়; যাহাদের শরীর স্থাশ, ধাড় রক্ত-প্রাথ ন; এবং ঋতু নিম্মিত সময়ের অনেক পূর্বে ও অভিরিক্ত অধিক পরিষাণে হয়; ভাহাদের পকে প্রাটিনা বিশেষ উপযোগী।

জননাক্ষের অত্যন্ত অনুভূতি; বস্ত্রের স্পার্শ সহা করিতে পারা বারনা; জননেতিরে পরীক্ষা করিলে আক্ষেপ উৎপত্র হর; রমণ-কালে জগে কট্ট অহুভূত হয়; সংসর্গকালে মূচ্ছা জলো জাধবা উহা সহা করিতে পারা যারনা (ফিউর, ও জারিগেনম তুলনা কর্মন)।

(क्षेत्र); जन्मर व्यवस्था क्षेत्र कार्य कार्यका कार्य कार्य क्षेत्र कार्य कार्यका कार

শুল-বায়ুপ্রান্ত (hysterical) রোগিণী, পর্যায়ক্তনে প্রফুলতা ও বিমর্থত , সহজে ক্রেন্সন (ক্রোক, ইয়ে, পলস) ; পাপুরতা, সহজে প্রান্তির উৎপত্তি।

উত্তত, গর্বিত, প্রগণ্ড প্রকৃতি, সম্রাস্ত ব্যক্তিগের প্রতি উপেকা, জনিচ্ছায় একপ্রকার তাহিছেল্য করা

মানসিক প্রান্থি, রোগিণীর সমীপবর্জী প্রত্যেক বঞ্চই যেন ক্ষুত্র, সকল ব্যক্তিই বেন শারীরিক ও মানসিক সম্বন্ধে নিরুষ্ট, কিন্তু ভাহার নিজের শ্রীর বৃহৎ ও প্রেষ্ঠ; এপ্রকার অমুভব।

সকল দিকেই যেন রোগিণী বৃহত্তর হইতেছে এরপে অমুভব।

সামান্ত বিষয়ে গভীর বিরক্তির উৎপত্তি (ইয়ে, ট্যাফ); অনেককণ ম্নে মনে রাগ করিয়া থাক। অল্লভাষিতা ও মৃত্যু ভয় সহকারে জীবনে পরিভৃত্তি (একন, জাস')

खग, त्यांक, विश्वकिः, धवर कृष्टिम देगपून, ७ कार्काद्वत्र शदा मान्निक छेशक्षर।

মানসিক শক্ষণের উপস্থিতিতে শারীরিক শক্ষণের বিরতি এবং শারীরিক লক্ষণের উপস্থিতিতে মানসিক শক্ষণের নির্ত্তি

শিরংশীড়া — মন্তিকে বা মন্তকের শিধরদেশে অবশতা ও অরুজ্জনক বেদনা; কোধ বা বিরক্তি হইতে; ও অরায়ুর রোগজনিত হিন্তিরিয় হইতে উহার উৎপক্তি; বেদনার ক্রমে ক্রমে বৃদ্ধি ও ই স প্রাপ্তি

কামোনাদ — স্তিকাবস্থায় উহার বৃদ্ধি; ইন্দ্রিয়-লিপ্সার অ্ত্যুধিক বিকাশ, বিশেষতঃ কুমায়ীদিগের (কালী-ফ্স); যোলি-মুধের অনৈজিক আক্ষেপিক অবরোধ, আক্ষেপ ও আকুঞ্চন

निर्दातिक नमरत्रत्र कारमक शूर्त्व, कार्कित कार्षिक शतिमार्ग, कार्वित्रक कार्षिक मिन क्षांत्री शक् ; मिनिम्बर्ग, मश्यक, हर्नक, क्ष्मवर कारमभ मश्यक क्षांत्र : (१६० कं हे न मश्यक क्षांत्र क्षांत

জরায়তে অতিশয় কভুয়ন; ভগ-কভুয়ন।

दमां विकास निवास कारण मन्द्रम्, आहे); मीमदाता विवादम क्रेवां स्वास भारता कार्यस्य क

জরারর রক্ষেত্রাব। — কাল কাল সংযত রক্তবেও ও তর্ম রক্ত একল আব; গাড়, কাল, আলকাতরার মত অথবা সমাট-বাধা রক্ত-পিও আব (ক্রোক)।

সমস্থা।—अत्रम, त्वानंक, हेट्या, कानो-क्रम, शनम, त्रिशि, ख हेग्रात्मक्र मृहिष्ठ प्रारितांत्र ममश्रम मक्सा

ভাগে পাটনার উক্তিক্স সমগুণ

#### ফসফরঃস

(Phosphorus)

যেসকল রক্ত-প্রধান-বাত্র বাক্তির দীর্ঘ ও ক্ষান দেচ, মুন্দর ওক মুকুমার চক্ষু-পাক্ষা, স্থানের সূক্ষা অথবা আরক্তে চুল; এবং ঘাই দের জ্রুত তীক্ষ প্রতিবোধ (perceptions) ও তীব্র অহস্তৃতি, তাহাদের পক্ষে এই উষধ উপযোগী যে সকল মুবক-যুবতী শীঘ্র শীঘ্র বর্দ্ধিত হয়, যাহাদের অবশীর্ষতার প্রবণত থাকে অবশীর্ষ হইয়া হাঁট সল), এবং ক্লোরোসিস; ও এনিমিয়া রোগ থাকে তাহাদের পক্ষে; এবং প্রোতঃকালীন অভিসার বিশিষ্ট বৃদ্ধদিগের পঞ্চে, ফসফরাস স্থপ্রক্রা

আলোক, শব্দ, গব্দ, ম্পার্শ প্রভৃতি বাহ্য সংস্কারে পঞ্চেন্দ্রিরের অতিরিক্ত অনুভূতি (ইয়ে, নয়া, টারাণ)

অস্থিরত , অবিরত সঞালন, এক মুহুর্ত্তও স্থির হইরা বগিতে বা দাড়াইতে পারা যায় না ( পদর্যের অস্থিরতা, জিক্ষ )

জ্বালা। — নেরণণতের স্থানে স্থানে; ক্ষরাস্থিদ্ধরের মধ্য ভাগের (বর্ষণতের অনুরূপ, ল্যাক-না); অথবা পৃষ্ঠের উপর দিকে প্রথম উত্তাপের প্রধাবন; করতলের জালা (ল্যাক); বক্ষংস্থলে ও ক্ষর্দ্দের জ্বালা, শরীরের প্রত্যেক মধ্যের ও বিধান-তত্তর জাল (জার্স, সলফ), সাধারণতঃ স্বায়্-মণ্ডলের রোগে

মন্তক, বক্ষঃস্থল, আমাশয় ও সমগ্র উদরে এক প্রাকার ছুর্বলিতা ও শূন্যতা অমুভব।

বেদনা — বিশেষতঃ বক্ষঃস্থলে বেদনা, সামান্ত প্রচাপনেও উহার বৃদ্ধি, পশু কা–মধ্যবজী স্থানে (1 itercostal space), ও বামপার্শ্বে শয়নে বেদনা, অত্যক্ষ মাত্র শীতে বেদনার উদ্ধেক, অনাবৃত্ত বায়ু সহ্য হয় না

চক্ষ — নিমগ্ন নীলবর্ণ মণ্ডল–পরিবেছিড চক্ষ্য পাডার ফীডডা, জলপূর্ণ ফীডডা (উপরের পাডার ফীডডা, কালী-কা; সীচের পাডার জিপিন) কেবল দিবাভাগে কাস (ইউফে), শাসন করিলে উহার উপশম; ও আহারাস্তে উপশম (স্পঞ্জ)।

भत्रीरत्रत्र छत्रण विधारनत्र व्यवहरत्रत्र १८तः क्ट्रेनाहेन व्यवग्रवशास्त्रः ও স্বিরাম জ্বের প্রব্যোধে ; উৎপন্ন শোগ (কার্ফো, সিঞ্চ)।

কোষ্ঠকাঠিত অন্তের দৌর্মকা অনিত, নিশ্বল মল-প্রার্ত্তি বিশিষ্ট, শস্তদ, আরাসে বিনির্গত ও মলতাগের পর পৃষ্ঠে বেদনা আগবা সরলান্তে এলীবৎ বেদনা সংযুক্তন, শিশুদিগের গুদশ্রশে সময়িত, এবং রাত্রিতে মলছারের কপুরন লক্ষণাগ্র মল ক্ষত্

আত্তে আতে হাটিলে সর্বদাই ভাল বোধ হয়, কিন্ত মর্কলতা বশতঃ রোগীকে বাধ্য হইয় শয়ন করিতে হয়।

छिश्रहित्र। — विक्षांत्र भारतः । वित्र रहेत्र। यनित्रा विक्रिक्त । विक्रांति विक्रां

সম্প্রা। -(১) এশেস ও সিকোনার সহিত অর্পুরক সম্মা। (২) কি তরণ কি প্রতিন প্রায় সকল রোগেই ফিরমের পত্তে সিকোনা ভাল থাটে।

#### ফ্লোরিক এসিড।

#### ( Fluoric Acid )

বার্দ্ধকোর বা অকাশবার্দ্ধকোর রোগ । উপদংশ ও পারদধানিত ধাত্ত হাত্ততা এবং যুবকা-যুবতীদিগের বৃদ্ধবৎ দর্শন।

শ্রান্তি বাতীত শারীরিক পরিশ্রমের বিবর্দ্ধিত সাম্থ্য (কোকা); গ্রীমকালের, কাতি গ্রীমের ও শীতকালের শীতের অলভর প্রভাব অনুভব।

পুরাতন কত-চিত্রের প্রাগ্ডভাগের চারিদিক লাল হইরা উঠা ও কাঁচা কড অগািবার সম্ভাবনা (কট, গ্রাফ)

ষহু সম্ভানের প্রায়জীদিগের শিবার স্ফীততা ও ক্ষত, উহার দীর্ঘকালয় বিজ্ঞা ও মুর্দমাতা । অখির, বিশেষতঃ দার্যান্তির কেরিজ ও নিক্রোসিন, সোরা-দোষ, উপদংশ-দোষ এবং গারদ বা নিলিশিয়ার অপব্যবহার হইতে উহাব উৎপত্তি ( এজন্ )।

বালক-বালিকাদিগের দক্ষিণ শঙা-স্থানের ( Temple ) চেণ্টা অটুল (জগা-চিত্র ); কৈশিকানাড়ীর অর্জ্য ( ক্যান্ত-ফ্লোর টিউব )।

ক্ষত।—লোহিতবর্ণ প্রান্ত ও কোন্ধাসংযুক্ত কত; শহ্যা-কত; উহাতায় বৃদ্ধি ও শীতকতায় প্রাণান্তি, কেশ্ল এক ক্ষুদ্র হালে নিবন্ধ, বিদ্বাৎ রেখার ভাগ্য প্রচণ্ড বেদনা।

শীঙ্গ শীঘ্র দন্তের কর প্রাপ্তি; দস্ত-নালী বা নেজ নালী (নালী খা); মুখমগুলের অস্থির অস্বাভাবিক বিবর্জন (হেক্লা)।

সম্প্রা |— ( > ) কোকা সিলির সহিত অরুপ্রক স্বদ্ধ ( ২ ) মতপারীদিগের উদরীরোগে আদে নিকের পরে; বজ্জন রোগে ( হিপ-ডিজিজ )
কালী-কার্কের পরে; দল্ভের অভিরিক্ত অরুভ্তিতে, ক্ষি ও প্রাফের পরে;
বস্তুম্জে ফ্স-এসির পরে; অস্থিরোগে সিলি ও সিম্ফার পরে; এবং গলগতে,
ক্ষিয়ার পরে; ফ্রোরিক এসিড ভাল থাটে।

#### चादर्वितिम ज्हलदगितिम।

(Berberis Vulgaris)

যুক্তক ( kidney ) অথবা মূত্রাশয়ের লক্ষণের প্রাথান্ত

কটিতে বেদনা; বৃক্ক-প্রাদেশে অভিশয় স্পর্শ-ছেয়: উপবেশনে ও শয়নে, এবং সম্বর্ধণ ও প্রান্তি বশতঃ উহায় আভিশয়

व्कक-खारमण खाला ७ होतीन।

বৃক্ক-প্রদেশে ও কটিদেশে প্রচাপনসংযুক্ত অবশতা, আড়প্ততা ও পঙ্গুতা (Lameness)

স্থমগুলের মৃত্তিকার ভার পাপুবর্ণ, গগুলয়ের নিময়তা, এবং নীলম্গুল-পরিবেষ্টিত কোটর-গত চক্ষু

মূত্র-মন্ত্রের রোগ সহকারে আমবাত ও গ্রন্থিবাত অনিত পীড়া।

#### পিত্ত-শিলা (galistone) জনিত উদর বেদনা।

পিত্তজনিত উদর বেদনা, তৎপরে পাঞ্-রোগ; কর্দম-বর্ণ-মণ পিত্তগদণ ত ক্রয়স্থানের কণ্ডুরন সহকারে ভগন্যর (fictula mano) হ্রমকাস ও বক্ষংস্থলের পীড়া, বিশেষতঃ ভগন্যরে শস্ত্রজিয়ার পরে (ক্যান্ত-ফ্য, মিলি)

বাম ব্রুক হইতে মূত্রাহানলের (ureter) পথে মৃত্রাশয় ও মৃত্রমার্গ (urethin) পর্যান্ত সূচা-বেধন ও কর্তনবৎ বেদনা (ট্যাব—দক্ষিণ বৃত্তক হইতে, লাইক)

ব্রুক শূল, বামপার্শ্বে আণুডিশ্যা (ট্যাব—শূরুবেগ ও শূরা-ক্লচ্ছু, সহ যে কোন পার্থে, ক্যান্থ )

वृक्षारक सम-वृत्वृत् छिथिछित स्रोत्र कश्चव ( स्वर )

মূল — ঈধৎ হরিদর্গ (greenish), রক্তের স্থায় পোহিত, গাঢ় আঠা আঠা আঠা আর্থা সংযুক্ত ; শ্বচ্ছ, ঈধৎ আরক্ত অথবা সেহবৎ (jelly like) অধ্যপতিত পদার্থ বিশিষ্ট ; মূল ।

मकानत्म भूवा-रियानत উপস্থিতি অথবা বৃদ্ধি।

উপ্তয় ---সঞাপন, বিচরণ বা শকটারোহণ; এবং আকপ্সিক সংঘর্ষণে

मध्या — (১) युक्तक-भूरम, काह, मार्ग, मार्ग, गार्थ महिल ममस्य मध्य। (২) जामगालिक दक्षार्थ, जार्थ, बांके, कामी-वार्ड, क्षांम क मगरकत भरत्र कहे क्षेत्रस्य काम किया पर्य।

#### বিসমঃথ।

(Bismuth)

নির্জ্ঞানতা সহ্য হয় না। লোক-সংসর্গের ইচ্ছা, শিশু সংস্থার্থে মাতার হাত ধরিয়া ণাকে ( কানী-কা, লিলি, লাই )

উৎকণ্ঠা; রোগা কথন বদে, কখন হাটে, কথন শোয়, কখনও একস্থানে অনেককণ থাকে না। প্রতি শীতকালে শিংঃগীড়ায় প্রত্যাবৃতি; আমাশয়-শ্লের সঞ্চে সঙ্গে, বা পর্যায়ক্রমে উপস্থিতি।

মুখমগুলের মৃতবৎ পাণ্ডুরতা, চক্ষুর চতুর্দিকে নীশবর্ণ মণ্ডল শীতল জল মুখে রাথিলে দম্ব-বেদনার উপসম ( গ্রাই, কফি, পলস )

বমন। জল আমাশয়ে উপস্থিত হইলেই বমন হইয়া

পতন, ভ্ততাবোর অধিকতর সমর অবহিতি (ভ্ততাবা ও জল বন্ন, আদ)।
করেকদিন পরে পরে, আমাশর ভ্ততাবো পূর্ণ হইলে, অধিক পরিমাণে
বমন; পান করিবামাত্র সকল প্রকার তরুল পগার্থ বমন; এবং ছর্গন্ধ মল
বিবেচন (জলবং মল, ভিরে); তৎসহ আফেপিক মুখ-রোধ ও
অকথ্য বেদনা, উদ্ব-ছেদের (lapatotomy) পরে উহার উৎপত্তি
(নক্ষ, ষ্টাফ)

জাসাশর।—কোন এক ফুরে স্থানে, জানী বন্ধর চাপের জার চাপ, তৎসহ পর্যারক্রমে জালা। থাল-ধরার জার আংক্ষপিক বেদনা; তৎসহ উপদাহ, শ্বদাহ (বৃক-জালা) ও মৃথ-প্রেমেক (মৃথে জল-উঠা)

ব্যন-প্রধান, মৃহ ওলাউঠা ও গ্রীমকালীয় উদরাময়; মলিন, লেহবৎ জশবৎ, মুর্গন্ধ, অভিশয় অবসয়ভাজনক মল ( আস', ডিয়ে )

# - द्वदक्षार्टक अमिए।

( Benzoic Acid )

প্রমেষ্ট বিংবা উপদংশগ্রন্থ রোগীর গাউট বা জামবাতিক প্রাকৃতি প্রান্তি। গাউট জনিত পিশু-সঞ্চয়; সন্ধি-বাত, সকল সন্ধির আজাজতা, বিশেষতঃ সঞ্চালনে জাতুসন্ধির কড় কড় শব্দ; সন্ধিস্থলে চুর্ণময় পদার্থের সঞ্চয় ( বার্ষ্য, লিপি-কার্য্য, লাই)

মলিন-কপিশ মুত্র, মুত্রের মুত্র-গব্দের অত্যন্ত তীব্রতা।

স্কুমার শিশুদিগের রাজিতে শব্যা-মৃত্র, মৃত্রাশরের মুধ্পায়ী গ্রন্থির বিবর্ধনসহ

বৃদ্ধ পুরুষদিগের বিন্দু বিন্দু মৃত্র-পাত; মৃত্রের আভাবিক গণ্যের অধিকতর

ভীব্রতা; মৃত্রে ইউরিক এসিডের আভিশব্য

প্রমেছের বিলুপ্তির পর মূলাশয়ের প্রতিশ্রার (catarili)।
বালক-বালিকাদিগের অভিদার , শুন্ত, ভাতি চুর্গন্ধ, অবসরতাজনক তরল
মল, শ্যা-বয়ের অভ্যন্তর দিয়া উহার গতি (পড); গুর্গন, গাঢ় শোহিত

বর্ণ সূত্র কাস; হরিদ্বর্ণ শ্লেম নিঞ্জীবন ( স্থাট-সঙ্গ ); অত্যস্ত শ্রান্তি ও আগস্ত ।

পারের বৃদ্ধানুত্তীর বড় বড় সন্তিভে ছেদন ও ফ্টা-বেধনবৎ বেদনা ; স্থিস্থানের আরক্তা ও ফ্টাততা ; সাতিতে গাউটের বৃদ্ধি।

সাহান্ত্র |——( > ) অবারিত মূত্র রোগে; বিশেষতঃ নাইটার বিষণ হইগে কোপে, নাইটার, ফির, পুজার সহিত বেজ-এসিডের সমগুণ সমগুণ সমিবাত জনিত রোগে বার্ক ও লিথি-কার্ক ইহার সমগুণ ( ২ ) গাউট রোগে কলচিক্ষম বিফল হইলে তৎপরে; এবং বিল্পু প্রমেহে কোপেবা অপব্যবহৃত হইবার পরে এই ঔষধ উপযোগী। ( ০ ) অরার সহিত ইহার বিষম-গুণ সম্ম ; তদ্বারা মূত্র-রোগ, এবং গাউট ও আমবাত জনিত রোগ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়।

#### বেলেডোনা।

#### (Belladouna)

পিত্ত-গুধান, রস-গ্রাধান, ও রক্ত-গ্রাধান গ্রাকৃতির রোগী; ছ্স্থাবস্থার সঞ্জীবতা ও প্রাসূলতা, ক্ষম্থাবস্থায় প্রচণ্ডতা ও অনেক সময় প্রশাপিতা

শগু-বেশা, নীপ-নয়ন, স্থার মুখজী, প্রক্রার অকবিশিষ্ট নামী ও বাশক-বালিকা; অমুভবাধিক, সামবিক, আফোপ-সম্ভব সোগী; ভাটকা প্রকৃতি-বিশিষ্ট (টিউবার্কিউলাস) রোগী

সহজে সর্দি লাগে; বায়-প্রবাহে, বিশেষতঃ শন্তক অনাবৃত থাকিলে, অতিশয় অর্ভবাধিকা; চুল কাটিলে সর্দি লাগে; শীতল বাভাসে ঘোড়ায় চড়িয়া বেড়াইলে তালু-মূলের (tonsils) প্রাথাহোৎণয় হয় ( একন, ছিল, রস---পায় ঠাপ্তা লাগিলে দর্দি লাগে, কোনা, ফুল, নিলি)। দ্রেত অনুভব ও দ্রেতগতি; ুর্ণীন্ন দ্রণাগিত হয়; বেদ 🗈 অবস্থাৎ উপস্থিত হয়; অনিশ্চিত সময় পর্যান্ত পাকে এবং অকসাৎ বিয়ত হয় (ম্যাগ-ফ্য)

বেদনার সাধারণতঃ অল্প অল্প সময় স্থায়ী আক্রেমণ; বেদনায় বদন ও নয়নের আরক্ততার উৎপত্তি; সম্বন্ধের পূর্ণতা ও ক্যারটিড ধ্যনার দপদ্প।

রোগী মনে করে যেন সে ভূজ-প্রেজ, ভঃঙ্গর মূণ, ও বিবিধ শীট ( ষ্ট্রাম ) ক্লম্ভবর্ণ জন্ত, ফুকুর এবং নেকড়ে বাঘ প্রভৃতি দেখিতে পায়।

অবান্তব বন্ধর ভয়, উহাদের নিকট হইতে পশায়নের ইচ্ছা ; আম্বদৃষ্টি (hal ucination )।

প্রচণ্ড প্রশাপ; কামড় দেওয়া, গুণু ফেলা, মারা ও দেবাদিছিড়িয়া ফেলিবার প্রারন্তি; উচ্চ হাস্তের আবেশ ও দাভ কড়মড় করা; পরিচারক-দিগকে দংশন ও আঘাত করিবার প্রবৃত্তি ( খ্রাম ); পলায়নের চেষ্টা ( হেলি )

মন্তবের উত্তপ্ততা ও যাত্রনাপূর্ণতা; বদনের প্রদীপ্ততা; নয়নের প্রমন্ততা (wildness) ও একদৃষ্টি (staring), চক্দ্-তারার প্রদারিততা, নাড়ীর পূর্ণতা, উল্লন্দননীলতা (bounding), গোলাকারতা, ও গোলার হাম অঙ্গতিতে আঘাতকারিতা, মুথ গহবরের শৈল্পিক ঝিলীর পরিশুক্ষতা;মলের ধীরতা ও মুত্রের বিল্প্ততা ্ব নিজালুতা, অথচ নিজা যাইতে অপারগতা (ক্যাম, গুলি)

দজোদগম-কালে, জনসহকানে টকান (জন ব্যক্তীত টকান, ম্যাগ-দঁস); সহসা উহার উপস্থিতি, মন্তক্ষের উত্তথিতা ও পদবন্ধের শীতশতা

মস্তকে ও মুখমগুলে রক্তের প্রাধাবন (এমি, প্লন, মেল)।

আরক্তে মুখমওঙ্গা, মন্তিফ ও প্রাথার বৃহৎ ধ্যমীদ্বয়ের দুপদুপ সহকারে, রক্তেস্থ্য জনিত, শিলোবেদনা (মেশ); সামান্ত শব্দ, সংঘর্ষণ, সঞালন, আলোক, শরন, ও অভ্যন্ন শ্রমে উহার উপচয়; প্রচাপন, দুচ বন্ধন, বন্ধ অভিত করণ ও গ্রাতুকালে উপশ্য।

বালিদে মন্তক প্ৰেবিষ্ট করণ ( এপিস, হেলি, পড় )

মস্তক অবনত করিছে, অগবা মস্তক অবনত করিয়া থাকিয়া উঠিবার সময় (ব্রাই) শিরোঘূর্ণনঃ প্রত্যেকবার অবস্থান পরিবর্জনে শিরোঘূর্ণন।

উদরের ম্পর্শ বেষ ও স্ফীজতা, অতি অল মাত্র সংখর্ষে এমন কি শ্যার

भरम्भार्य भगाष्ठ উহার বৃদ্ধি; কোন প্রকার সংঘর্ষ না শাসে এবজ্ঞ অতি সাবধানে বিচয়ণ।

मृक्तिः खिक्किश्व ७ व्यक्तीस खारमाम (हैमिकिमिरकण तिसियन) (यमना, यदमामाग्र क्राप्त क्रमान कि भया न्यस्त्रत मश्कारम वर्षा क्रियान क्र

অমুপ্রস্থ স্থুলায়ের ( ট্রাফাডাস' কোলন্ ) পিতের স্থায় উন্নমন।

ত্বন্ ।—ত্বকের সমাকার, মত্ব, চিস্কান, গাঢ় তারিক্ততা পরিক্ততা, উত্তপ্ততা, ও আলা, পরীক্ষার্থে গামে হাত দিলে হাতে আলা অহভব; সম্পূর্ণ মত্বন ও প্রস্কৃত আরক্ত উত্তেদ বিশিষ্ট ওক্কত গিডেন্হাস্ স্বার্থেটি জ্বর।

खिततत व्यार्थय भवार्थ रयन जनभार गावित रहेत्रा भिष्ठर निमाजिम्स्य कक्षण क्षेत्रभग ; निष्ठारेटण ७ भाषा रहेगा गिरण खेरात खेलभग ; क्षां जन्मारण खेलहत्र ( निमि, भिष्ठत, गिणि)।

উপচয় — স্পর্ণে, নড়িলে চড়িলে, শব্দে, বায়্প্রবাহে, সম্জ্রল চাক্চিক্যময় বস্তার প্রতি দৃষ্টি করিলে (লাইসি, ট্রাম) অপরাহ্ম ১টার পরে,
রাজিতে, ঘই গ্রহর রাজির পরে, পানকালে, মন্তক অনাবৃত করিলে,
গ্রীল্মকালের স্বর্গের উক্তাপে ও শরন করিলে বৃদ্ধি

উপশ্য |--- যিশ্রামে, দাঁড়াইলে অপবা সোজা হইয়া বসিলে ও উষ্ণ গুহে উপশ্য

স্থায় ।—(১) জালকেরিয়ার সহিত ক্ষপুরক সম্ম বেলেডোনার আরম্ব আরম্ব আরোলা ক্যালকেরিয়ার সম্পূর্ণ হয়। (৪) একন, প্রাই, সিন্ত্, জেল, গ্রন, হাইওস, মেল, গুলি ও ট্রামোর সহিত বেলেডোনার সম্প্রণ সম্মা।

## বোভিষ্টা।

(Bovista)

শুক্ষ বা আর্দ্র দক্ষগ্রন্থ বোগী। সংকল্প সংযুক্তা বৃদ্ধা কুমারী তোতলা বালক-বালিকা ( ষ্ট্রাম )

নাসিকা ও অস্তান্ত খন্ত্ৰিক ঝিল্লী হইতে অতি শক্তি, রজ্জুবৎ, তুমেছতা প্রাব নিঃসরণ (কালী-ব

ছুরি, কাঁচি প্রভৃতি -মুধ দ্যাদি ব্যবহারে অমুদীতে অভিশয় গড়ীর দাগের উৎপত্তি।

कंटिरहरू कोश्यु गरा ना (काद, शाक, गगक)।

কক্ষতলের ঘর্শ্বে পীলাপুর স্পার গন্ধ

দক্ষোভোগনের পর (হেমে); আঘাত হইতে; এবং নাসিকা হইতে রজ্জাব।

সন্ধি সকলের অভিশয় তৃর্ধণতা এবং হস্ত-পঙ্গের প্রান্থি।

হাত হইতে জব্যাদির পতন-প্রবণতা (এপিন); শক্তিশুক্ত হন্ত হইতে বস্তুর পতন।

ধত্ব।—কেবল রাত্রিতে ধত্ম মতা প্রথাহিত হয়, দিনে পড়েনা (ম্যাগ-কা—কেবল দিনে পড়ে, এবং শুইলেই থামিয়া যায়, ক্যাঞ্চ, ক্ষ্ট, লিলি)। ধত্র পূর্বে ও ধতু-কালে অভিসার (এম-কা); খাড়ুখমের ব্যথধান-কালে মধ্যে মধ্যে কয়েকদিন রক্তদর্শন (বোয়া), প্রতি ত্ই স্থাহে মলিন ও সংযত রক্ত নিঃসরণ; তৎসহকারে যন্ত্রণাপূর্ণ আবেগ (bearing down sensation) (দিপি)।

কোকিল-চঞ্-অভিন ( coccyx ) অগ্রভাগে ছবিবার কণ্ডুরন; যে পর্যস্ত না অবধরণ ও ক্ষত জন্মে ততক্ষণ চুলকাইতে হর

সম্বন্ধ ।—( > ) শত্-বৈশক্ষণ্যে, এম-কা, বেল, ক্যান্ত, মাগ-সল, মিপির সহিত তুলনা হয়। ( ২ ) আলকাতরার বাহ্য প্রয়োগের মন্দ ফল; এবং বাপ্প ( গ্যাস ) অনিত খাস-রোধ বোভিটা থারা নিবারিত হয় ( ৩ ) প্রাতন দীত-পিতে হঃসটকা উপধোগী হইয়াও বিফল হইলে বোভিটা ব্যবহৃত হয়।

#### বোরাক্স।

(Borax)

#### প্রায় গমল রোগেই নিমাভিমুখ গতিতে আশস্কা।

निम्ना छिम्थ गिडिएक चिल्मम छिरक्छ। ; भिश्वरक थाएँ भागिरिए द्याण भारत छ शोजीरक छ्रका मिन्नम थारक ; मार्गाहरण, ग्रूगाहरण, नामहिला, अवर नीरम्न छल्पम् नामाहरू छ प्याकान थिएं एकाहरू छन्न गाम।

কোন দুখাদান কারণ ব্যতীত শিশু সহসা জাগিয়া চিৎকার করে ও যোগার পার্ম হাতদির চাপিয়া ধরে ( এপিন, সিনা, ষ্ট্রাম )।

অত্যন্ত স্বায়তা, ষৎসামান্ত শবে অথবা অসাধারণ ( ফাচচেন) ) তীব্র শবে এবং কাসি, হাঁচি, ক্রন্সন বা দীপ-শলাকা জালিবার শবে গুরুপ্রাধি ( এসার, ক্যালাভ )

हूण अध्यक्षिया योग, विजित्रा योत्र, व्यक्षिया मरमध रहेन्ना वादक ; এই मरम द्वारा क्षित्रा दक्षणितम श्रम्त्रात्र व्यक्त, व्यव्यक्षिया मन्नान क्रम् योत्रमा ( दक्षणित विजित्र )।

চশুর পলো শুদ্ধ, আঠা আঠা আব ; প্রাতে সংযোজনা ; পশ্বের রোম অভ্যস্তর দিকে ফিরিয়া চকুর, বিশেষতঃ উহার বহিদিকের কোণের প্রাণাহের উৎপত্তি ; উচ্চ্ ভাল রোমোৎপত্তির প্রাবণতা

नामा-त्राष्ट्रत हिन्छिका, अमाहिला; नामारवात्र हिक्य कारकला; यूयकी काभिनीपिरगत मान-नाक।

দক্ষিণ নাসা-রয়ের অবক্ষতা, অংশ প্রথম দক্ষিণ, তংগরে বাম নাসা-রয়ের অবক্ষতা, তংগল অবিরত ফোৎ ফোৎ করণ (এম-কা, ল্যাক-কা, মাগ-মি)।

উপক্ষত ৷---ম্থ-বিবরে, জিহ্বার উপরে, গালের অভ্যন্তর ভাগে উপক্ষত ; আহারকালে বা স্পর্ন করিলে উহা হইতে সহজে রজপাত হয় ; লিডর তদপানে প্রতিবদ্ধকতা জন্মে ; তৎসহকারে ম্থ-বিবরের উত্তরতা, পরিশুক্তা ভ পিপাদা (আস), জিহ্বার বিদারণ ও রক্তপাত (এরম) এবং লালা আব (বিশেষতঃ দত্যেতিদ-কালে) থাকে।

উপক্তজনিত মুধ-ক্ষত; স্পর্শে, এবং অয় বা শবণাক্ত দ্রব্য আহারে উহার বৃদ্ধি; বৃদ্ধণিগের মুথের উপক্ত (এপুনেন)।

শিশুর বারবার মূত্র-গত,ও মূত্রত্যাগের পূর্বে চিৎকার (গাই,ভানি,সার্গা)
খেতপ্রেদর —প্রভূত অগুলালমর, খেত্যারমর, উফল্লের প্রবাহের ভার
অমুভূত; বঙ্কালের ব্যবধান সময়ে ছই স্থাহ পর্যান্ত; প্রাদর-প্রাব (বোজ, কোনা)।

ত্বক; অন্তন্ত, সামান্ত উপদাতে প্যোৎপত্তি (ক্যালেণ্ড, হিপ, মার্ক, সিলি)।
উপচয়। — নিম্নাভিমুখীন গতি; আকত্মিক বৎসামান্ত শব্দ; ধ্মপান
(উহাতে অভিদান্ত অন্তিতে পারে); ও আর্ড, শীতল বড়তে এবং মৃত্তোগের
পূর্বে, বৃদ্ধি।

উপশ্ব | — প্রচাপনে; বাথিত পার্য হাত নিয়া ধরিয়া রাথিলে; উপশ্ব।
সম্বন্ধ | — (১) ক্যান্ধ, সোরি, স্থানি, ও সমফের পরে বোরাত্র স্বাবস্থের (২) বোরাজ্যের পরে, আস', ব্রাই, লাই, ফস, সিলি, স্থপ্রায়্য।
(৩) এসেটক-এসিড, ভিনিগার ও স্থাস্বের (স্বরা) পূর্বের বা পরে বোরাত্রা
ব্যবহাত হয় না উহাদের সহিত প্রতিকৃত্য সম্বন্ধ।

### वारिकिमिशा जिक्र हो दिशा।

(Baptisia Tinotoria)

ব্যাপিটিসিয়া রস-প্রধান ধাতুতে উপযোগী।

শরীরের তরল বিধানের বিসমাস-প্রাবণতা সহকারে অতিশয় অবসরতা (পাইরো); শ্লৈশ্বিক ঝিলীর ক্ষত।

শরীরের সর্ববিধ নিঃসরণ ও জাবের চুর্ন্মি, বিশেষতঃ টাইফয়েডজরের ভাববা অক্তাক্ত তর্মণরোগে খাস, মল, মৃত্য, ঘর্মা ও ক্ষতের ছর্নমা (মারি, পাইরো)।

মানসিক পরিশ্রমে অপ্রবৃত্তি; চিন্তা করিতে অনিচ্ছা, অথবা অসামর্থ্য। সম্পূর্ণ উদাসীত, কিছু করিতে চেষ্টা জন্মেনা, কার্য্যে মন স্থিয় রাখিতে পারা যায় না

সুথি; কণা শুনিতে শুনিতে অপবা জিজ্ঞাসিত বিষয়ের উত্তর দিতে দিতে নিদ্রিত হইয়া গড়, কিছু জিজ্ঞাসা করিলে ঠিক উত্তর পাওয়া যায়, আবার তথনই প্রশাপ উপস্থিত হয় (আর্ব)

প্রথমে বোহিওবর্গ কিহ্বা-কণ্টফসহকারে জিহ্বায় শুত্রবর্ণ লেপ; কেন্ত্র শুলের শুদ্ধতা এবং পীত-কপিশ বর্ণ, গরিশেষে জিহ্বার গুড়তা, বিদারণ ও কত

মুথমগুলের উদ্দীপ্ততা, গুদরবর্ণ, মলিন আরমক্ততা, বুদ্ধিশৃত্ত, বিমন্ত সুধাক্ষতি (জেলস)।

কেবল তর্ল পদার্থ গিলিতে পারা যায় (ব্যায়া-কা), যৎ-সামাত্ত কঠিন থান্তও গলায় ঠেকে (কেবল তরল দ্রব্য গিলিতে পারা যায়, কিন্ত উহাতে অ্যাচি, সিলি)

বেদনাশূরা গল-ক্ষতে (Sore throat); তাল্-মূল,কোমল তাল্ (Soft palate) ও কর্ণমূলের মলিন আরক্তা ও স্টাততা, পচা,ছর্গন আব ; ডিপণিরিয়া।

স্থানিগের রজাতিসার; ঝালকদিগের অভিসার, বিশেষতঃ উহাতে অভিশয় জ্বিল (কার্কো, পডো, সোরি)।

রোগিণী আপদাকে একল করিতে পারেনা বলিয়া নিদ্রা যাইতে গারেনা;
মন্তক বা শরীর শ্যার চারি দিকে থও খও ছড়ান বোধ হয়; সেই সকল
থও একল করিতে রোগিণা এপাশ ওপাশ করে; তাহার বোধ হর বেন শে
ভিন্তন, সকলকে সে ঢাকিয়া রাখিতে পারে না (পেটো)।

যে কোন অবস্থানে রোগী শয়ন করে, শরীরের যে অংশে ভর দিয়া শয়ন করে সেই অংশই ব্যথিত ও ঘুট অমু-ভূত হয় (পাইরো—আগ ও পাইরো তুগনীয়)

টাইদয়েও জ্বো শ্যা -ক্ষত , জার্ণ, মিউ-এসি, পাইরো )।

স্থায় ।---( > ) গ্লানি, পায়বীয়তা, প্রদীপ্ত মুধ্যওল, তল্লাল্ডা ও পেশ্বীয় বেদস্থিবিশিষ্ট অন্নেয় প্রথমবিছায় আর্ব, আ্সা, ত্রাই, ও জেলসেয় সম্ভব।

## व्यात्रारहे। कार्यवनिक।।

(Baryta Carbonica)

প্রথম বাল্যকাল ও দিতীয় বাল্যকাল অর্থাৎ বার্দ্ধক্যের রোগে এবং কচ্ছু-দোষ অধবা শুটিক -ধাতু-দোষে এই উষ্ণ বিশেষ উপযোগী।

প্যতিশক্তির আস্দ্রাব্া বিশ্বরণণাশত, খনাবিষ্টতা (inattention),
মনে রাখিতে পারেনা বলিরা বালক শিথিতে পারেনা অত্ত অন্মিবার সম্ভাবনা।
গগুনালাখাত্ত্রান্ত, থকা সার শিশু, শীঘ্র বাড়েনা শৌঘ্র শীঘ্র বাড়িলে, ক্যান্ত);
গগুনালাজনিত চক্ষ্-প্রান্থ, কনীনিকার অক্ষত্তা, উদরের ক্ষীততা; খন খন
উদর-বেদনার আক্রমণ, মুধ্মগুলের ক্ষীতত ( ফুলা-ফুলা ভাব ); স্কালীন
শার্বভা

শারীরিক ও মানসিক তুর্বলিতা বিশিষ্ট বালক বালিকা। একাকারা, হিটিরির গ্রন্থা জী এবং শ্বয়রজোবিশিষ্টা কুমারীদিগের রোগ; শারীরিক তাপের অসম্ভাব, সর্ধদা শিত শীত অমুভব।

যুদ্ধ, ধাতু-ছষ্ট ব্যক্তি ; গওমাণাগ্রস্ত, বিশেষ্তিঃ স্কুলকায় ব্যক্তি, অগবা গাউট রোগগ্রস্ত ব্যক্তি (ফ্লোগ-এদি)

त्रक्षा शूक्रमितित्रत (द्वात्र) भ्वाभक्षत्र भूवभाषी अहि ७ अव्यक्त विवृद्धि कार्या मृह् ठा ; मानमिक ७ भातीत्रिक हर्व्यक्टा।

র্থ্ধদিগের সংস্থাস-প্রবণতা; প্রাচীন মদ্যপায়ীদিগের কোগ; বাল-চিত্ত সুদ্দদিগের শিরঃগীড়া।

্তাল্-মূল বা গল-প্রানাহের প্রবণতা, সহজে শর্ষির উৎপত্তি; অথবা প্রতিবার শর্ষির আক্রমণে, এমন কি বৎসামাগ্র শর্মি লাগিলেই তাল্মূল-প্রানাহের উপস্থিতি, উহাতে পুষোৎপত্তির প্রবণতা (হিপার, সোরি)। ত্রতা দ্বা ভিন্ন অন্ত কিছু গিলিতে অকষত (ব্যাণ্ট, নিলি)। প্রত্যেকধার সূত্র-ভ্যাগকালে ব্যাপিন বহির্গনন (মিউ-এনি)

সোরা দোষগ্রস্ত বাশক-বাশিকাদিগের পুনাতন কাম; বিবর্জিত তালু-মৃত্ তাথবা দীর্ঘীভূত অশি-জিহ্ব; ধৎসামান্ত শক্ষিতে উপচয় ( এগম )।

গ্রান্থির, বিশেষতঃ গ্রীবার ও কুচকার গ্রন্থির স্ফীততা ও দৃঢ়তা, অং বা প্রাছের (incipient) প্যোৎপত্তি।

তুর্গন্ধ পাদ ধর্মা, ডেক্টেন্স পদাসূলী ও পদতলের ক্ষত (পাদ-মূলের ধর্মা)। পার্যের ঘর্শ্যের আবর্মেধ বশক্তঃ গশ-মোগ (গ্রাফা, সোরি, তালি,মিলি)। শর্দিতে অভিশয় অমুভবাধিকা (ক্যান্ত, কালী-কা, সোরি)

উপ্রয়।—ব্যাগের বিষয় চিন্তা করিলে ( অক্স-এসি ), বাণিত পার্থে শর্মে ; সাহারত্তি ও ক্যান্থান প্রাকালনে ; বৃদ্ধি

अञ्चा ।—( > ) माधात्रभणः त्माति, मणम ७ हिष्ट्यत भरत छेशकाती।
( २ ) वात्राहेष्ठा-कार्ट्यत भरत त्मितिय वावहारत छान्य्य छाषारहत छाव्यकात भागीत्रिक छोत्रिक भरत (०) जगम, काण-भाहेखण, छणका, द्वात्र-जीत, भाहेखण, गिणि, वात्राहेष्ठात ममस्य ( ८ ) जस्माणास्त्राहत, काण्यक्तित्रात भरत वात्राहेष्ठ। विषयस्य ७ भरूभरवाती

#### ব্ৰাইওনিয়া।

(Bryonia)

শাসবাত বা গ্রন্থিবাত প্রাক্তির ব্যক্তিদিগের পক্ষে এবং পিত্র-প্রাকোপের পক্ষে; এই ওঁষধ বিশিষ্টরূপে উপযোগী

खारेखनिया खानक (तांगीरमय दक्षांगनका, जानखन ख त्काध-छायनका; भिन्नवर्ग या क्रायक्ष हूम, भागमवर्ग भूषाकृष्ठि, मृह रभमी छक्ष; क्षम, क्रम क्षाय्यिक रमह पारक

त्वतमा।—खारेश्विमयात्र त्वममा एठी-त्वथम या त्वममय रूत्र, त्राव्यिष्ठ छेरा वृष्टि भाष, निष्टिल हिष्टिल, निर्यामधर्यन, श्व कामिरण छेरात्र উপচয়; এবং সম্পূর্ণ স্থৃন্মির্ডায় ও ব্যথিত পাদের শ্যুনে উহায় উপম মেশে (টিগিয়া, গল;—স্চা-বেধনবং বেদনার ওপচয় ও উপম তাইওনিয়ার বিপরীত প্রকৃতির হইলে, কালী-কা)

সমগ্র শরীরের ফ্রৈপ্সিক বিল্লীর অতিশয় পরিশুফ্রতা, গর্ম ও বিহ্নার পরিশুফ্রতা ও বিদারণ; মনের দগ্ধবং ওহত; শুফ্র কঠিন; যন্ত্রনাজনক স্বল্ল নিষ্ঠীবন বিশিষ্ট কাম; মনিবর্গ অল মৃত্র, অতিশয় পিপাসা।

অনুকল বজঃ : খাতুকালো খতু প্রকাশিত না হইয়া নাসিকা হইতে রক্তপাত (ফদ) : রক্ত নিটাবন অথবা রক্ত কাস; টাইফগেড অরের ডোগ ফালে শেষোক্ত প্রকার রক্ত প্রাব

ক্রোধ অথবা বিরক্তিজনিত অহুথ (কলো, প্রাফ); শীতামুদ্রব ও শীতগতা সহ পদগুতা; ক্রোধের পর শীতামুক্তব কিন্তু মন্তকেন উত্তপ্ততা ও মৃথমণ্ডলের আরক্তভা

শীতল সময়ের গরা উষণ সময়ের সমাগ্রের গ্রীম্মকালে শান্তল পানীয় দ্রা বা বর্ম সেখনে; শর্দি লাগিয়া ও গ্রীম্মকালে গর্মা হুইয়া; জতিরিক্ত উত্তপ্রতার সময় শীতল হওয়াতে; শীতল বাডাসের প্রাবাধ লাগিয়া (একন, হিপার); বতু, স্তন-দ্র্য্ব, জনবা তর্মণ উল্লেদের বিলোপ হইয়া বে সক্ষল রোগ জন্মে, তাহাতে ত্রাইওনিয়া ফলপ্রদ।

কোন প্রকারে নড়িলে চড়িলে র্দ্ধি, এবং শারীরিক বা মানসিক সম্যক স্থান্থিরতায় হ্রাস, বাংওনিয়ার একটা প্রধান বিশেষ শক্ষণ

যে সকল বস্ত পাওয়া যায়না ভাষা ভৎক্ষণতে পাইতে ইচ্ছা অগনা উহা দিলে না লওয়া।

শিশুরা কোলে চড়িয়া খেড়াইডে অথবা শ্যা হইডে উঠিডে ভালবানে না প্রলাপ; সর্বনা নিজের কার্য্যের কথা বলা; শ্যা হইডে উঠিয়া প্রগৃহে যাইবার ইচ্ছ ( এক্টি, হাইওস)

বামবান্ত ও বাম জতবার অবিরত স্কালন ( এপোসা, হেলি)

বিৰ্মিষা ও অবসয়তা বশতঃ বোগার উঠিয় বসিতে অক্ষরতা

অনেকক্ষণ পরে পরে একবারে অধিক পরিমাণ জলপানের অভিশ্য পিপাসা।

শিরংপীড়া --- মাথা নোয়াইলে মস্তিদ্ধ যেন কণালের ভিডর নিয়া ফাটিয়া বাহির হইবে এপ্রকার অনুভব; ইন্ত্রি করা বৃশ্ভঃ (মিপি); কাসিলে, প্রাতে উথানাতে, অথবা পেথম চজু মেলিবার সময় শিরংগড়া; প্রাতে উহার আরম্ভ, স্বাগ্রাস্থ জনসাং বৃদ্ধি; কোঠ রোধ জনিত শিরোবেদনা (এলো, কলিন, ওপি)

আমাশন-গহবদে প্রস্তান-জনিত চাপের স্থায় চাপ অমুভব, উদগারে উহার উপশ্ম (নজ, পশ))

कोष्ठ-द्रत्रोध — निक्ति राजा, मण-श्राया पि-१ त्रिम्छा ; त्र्ट् किंगि, मिनवर्ग, श्रीतिश्वक, मक्षवर मण मम्ब-पाजांत्र कोष्ठ-द्रत्रोध (क्षांष्ठ)

শতিসার — গ্রাত্মকালোর আবেশ সময়ে উপস্থিত গৈতিক, বিদাহী, মলবারের স্পর্শ-বেষ জনক; মলিন জগবৎ, অজীর্ণ ভ্রুজাব্য বিশিষ্ট; অ'তরিক্ত উত্তপ্ত অবস্থায় শীতশ পেয়দ্রব্য পান বলতঃ ও কল আহার অন্তলার; প্রাত্তি ও নড়িলো চড়িলো, এমন কি হাত-প নাড়িলের উহায় বৃদ্ধি স্তিনের গুরুত্ব, প্রভারের ভায় কঠিনতা; পাত্রতা কিন্ত কাঠিভ; উত্তপ্তা ও বাণ্ডিতা; সাত্রতা ক্র কাঠিভ; অনুদ্র অবল্যন দ্বারা তুলিয়া রাখিতে হয় (ফাইটো)।

কাস — ওক, আন্দেশিক, গল-রোধ ও ব্যন সংযুক্ত (কাণী-কা);
বক্ষাস্থানের পার্থে স্টা-বেধনবৎ যাতনাবিশিষ্ট; যতকে যেন ৭৩ ৭৩ হইরা
উড়িয়া যাইবে এক্লপ শিরংশীভাসহ; আহারাতে, পানাতে, উফ্যুন্ত্
প্রবেশে, ও গভীর নিশাস গ্রহণে, বিবর্ধিত; কাস

উপচয়।—স্থালনে, শোদীরিক শ্রাম ও স্থাদে বৃদ্ধি; উরিয়া বসিতে পারা থায়না, প্রান্তি বা বিবাম্যা অপবা উভয়ই অসে উফ্ডা, উফ্ থাতমব্য ও কোনও প্রকার আবের বিলোপে; উগচং।

উপশ্বা ৷---শমনে, বিশেষতঃ ব্যঞ্জি পৃত্যি শরনে (টিনিয়া, প্রসা); চাপ প্রদানে; বিশ্রোকা; শীতশতার ও শীতগরবা আহারে; উপশ্ব স্মৃত্য ।— (১) এস্থিনা ও রসটক্ষের সহিত অহপ্রক সম্ধ। (২)
বাত্ত সম্পত্ত হইরা কথা বলা ও জল পান করা লক্ষণে, বেলেডোনার সহিত সম্পত্ণ
সম্ধা। (৩) ক্ষঃস্থলের আমবান্তিক বা মার্রিটিক বেদনায় রাণনকিউলাসের
সহিত এবং যক্তদেশে বেনো ও গোরব; দলিও পার্থে শরনে হাস ও
বাম্পাশ্রেম অন্তন্ম বৃদ্ধি; বাম্দিকে ফিরিলে একপ্রকার
ভারাকর্যণ অন্তব, এই সকল লক্ষণে টিলিয়ার সহিত সম্প্রণ সম্বা। (৪)
ভাইওনিয়ার পরে, এলম, কালা-কা, নজা, ক্ষন, রস্টক্য, সলক্ষ, ভাল থাটে

#### ব্রোমিয়ম।

(Bromium)

পাতলা-নীলাবর্ণ চক্ষ্, ঈষৎ পিজলবর্ণ চুল, পাতলা জা, প্রদার প্রক্রমার প্রক্রিনিষ্ট বাজিদিগের পক্ষে এবং প্রদার জারক্তন্ গগু, গগুমালাগ্রান্ত বালিকাদিগের পক্ষে; এই উমধের পজুগেরুষ্ট জিয়া দর্শে। পঞ্চান্ত প্রকার আক্রতির রোগীদিগের পক্ষেও ইহার জিয়া যে না দর্শে

মুখমণ্ডলে লুভা-ভন্ত (cobweb) থাকার ভার শহভব (ব্যায়া, বোরা, গ্রাফ)।

নাসা-পক্ষের তাল-বৃস্তবৎ সঞ্চলন ( এণ্ট-টা, লাই )।

সমুদ্র-কুলে জাহাজের নাবিক্ষিগের খাস-কাস

গ্রন্থির, বিশেষতঃ নিম-হত্ব ও গল-গ্রান্থির জর্থাৎ ফলক গ্রন্থি (thyroid), হত্ব নিম গ্রন্থি (sub maxillary), কর্ণ-মূল (parotids) ও অত্যের (testes) গুজমালা বা গুটিকা-ধাতু-মোৰ জনিত প্রত্যেরবৎ দৃঢ় ক্ষতিতা।

ভিক্থিরিয়া — ক্যাবিংস বা গল-কোষে ক্লিম বিল্লার উৎপতি; বায়-নগী, কণ্ঠ-নলী অথবা অবয়য়ে উহার আরম্ভ ও উপরের দিকে প্রসারণ; বৃদ্ধঃস্ফুলের বেদনার উর্দ্ধিকে গতি। কুলিম-ঝিলীবিশিষ্ট ত ডিফপিরিয়া জনিত জ্প। কাসিবার সময় কোমার তাতিশয় ঘড় ঘড় শব্দ, কিজ হিপার্যলফারের লক্ষণের হার গল-রোধ নহে; কায়ের শক্ষ ভরল গুলার বটে, কিজ নিঠাবন উঠে না

ন্ত্রপ-শব্দ কাসের সময় সরভজসহ জ্পের লকণ; খাস ভাগের জন্ত "১†বি আপ্তরা" (gnaping for breath )।

খাস-কচছ্ —গভীর নিখাস গ্রহণ করিতে পারা বারনা; বেন ম্পঞ্জের জিতার দিরা খাস-জিরা চলিতেছে অথবা বার্-পথ যেন ধুমার বা গলকের বালে পূর্ণ রহিরাছে এপ্রাক্তার অহতেব; ঘড় ঘড় শব্দ, ফরাত-টানাম জ্ঞার শক্ষ (ত্বর ভানা যারনা); ত্বর-যত্ত্রে শ্লোবস্থান বলতঃ খাস-রোধের আশক্ষা; (বার্নলী ভূজে শ্লেম জ্ঞা, এণ্ট-টাট)

ব্যারাম ক্রীড়াবশতঃ বালকমিগের হৃৎপিত্তের বিবৃদ্ধি। (অঞ্চালনা বশতঃ বাশিকাদিগের শ্বৎপিত্তের বিবৃদ্ধি, কষ্ট)

জরায়্র বাতাগান; অপত্য-পথ হইতে উচ্চৈঃশরে বায়্-নিঃসরণ ( শাই ); বিদ্যীবিশিষ্ট রজঃহাজ্য ( শ্যাক-ক্যান )।

নিশাস গ্রহণে অর্থনে শীতশতা অহতেব (রস্টক, সগফ) পোর জিয়ার পর উহার উপশ্য (কোর-জিয়ার পর র্ছি, কার্ফো-জন)।

मध्यम् ।—( > ) क्ष अ क्षिण्यानिष्ठ (वारिष, क्षांत्र, विशास, व्यारेशक अ क्षित्रात्र मित्रकार वारिष्ठ (वारिष्ठ (वारिष्ठ क्षांत्र) वार्ष वर्षेत्र । ( > ) व्यारेशक विकास अवस्था अवस्था वर्षेत्र भाग क्षित्र भाग क्षित्र क्षांत्र क्षां

### ভিরেট্ডম এলবঃম।

#### (Veratrum Album)

বাসক-বাসিকা ও বৃদ্ধদিগের পদো; জীবনের অন্তঃসীমায়; যাহারা অভাবতঃ শীতল ও নাবনীশ কির প্রতিক্রিয়ার অসম্ভাব বিশিষ্ট; তাহাদের পদো এবং আরবীয় ও স্নত্ত-প্রধান ধাত্র যুবক-যুবতীদিগের পদো; এই ঔষধ সমধিক উপবোগী

জীবনী-শক্তির শীঘ্র শীঘ্র পতন; সম্পূর্ণ অবসমতা ও হিমাঙ্গ বিশিষ্ট রোগ।

গ্রাম সকল রোগের দহিতই কপালে শীক্তল ঘর্ম্ম ( সর্বা শরীরে শীতল ঘর্ম, ট্যাবে )।

একাকী থাকিতে পারা যায় না, অথচ কাহারও সহিত কথা বশিতে একেবারেই প্রার্থি হয় না

(त्र'िक व्य'भन'एक अर्खवकी व्यथवा व्यामन श्रमवा महन करत्र।

প্রত্যেক বস্তা, বিশেষতঃ কাপড় কাটিবার ও ডিড়িবার ইচ্ছা সহকারে উগাদ (টারাণ); লাপ্পট্যস্চক অশ্লীল কথা সহ প্রেমোন্মাদ অণবা ধর্মোন্মাদ (হাইরস, ষ্ট্রাম)

অত্যন্ন মাত্র প্রমে মূর্চ্ছার আক্রমণ (কার্কো-ডে, সলফ); অত্যধিক মুর্কালতা।

রক্তথাৰ কালে নিমগ্নতা ( sinking ) অহতেৰ ( মৃথ্ছা, টি ল )।

শীতামুন্তব সহ মৃত্যুকের মধ্যুস্থলে একথ্ড ব্রুফ্ স্থাপিতবং অন্তব (সিপি, ভেলে); করোটিতে যুগপৎ শীতোত্তাপ অন্তব; মৃত্তিদ্ধ খেন ছিল ভিল হইতেছে এরপ অনুভব।

ম্থ্যগুল। পাজুর নীলবর্ণ শীতল মুখ্যগুল ; নিমগ্ন (hippocratic) মুখাক্তি; শবিত অবস্থায় মুখ্যগুলের আরক্তা, উঠিলে পাজুরতা (একন)

পিপাসা --অধিক পরিমাণে শীতল জব ও অম গানীয় দ্রব্য পান করিবার দাকণ ও ছনিবার পিপাসা; সকল বস্তুই শীতল অবস্থায় থাইবার ইছে। জান্ন দ্বের জাগবা সরস স্থিয় দ্বের আগবের প্রথ ( ফস-এসি )। মুথমণ্ডল, নাসাত্র, পদ, অন্তর, বাহু ও অন্তান্ত অনেকগুলি শরীরাংশের বরফব্ শীতলতা

উদ্ধে গীতগভা অহতব (কণ্চি, ট্যাব)।

#### প্রভুত অভিদার সহকারে প্রবল বসম।

ন্মন — বিব্যমিষ ও অভিশ্য অবসরতা সহ অত্যাদিক বসন; অলগানে উহার বৃদ্ধি (আগ); অভাল মাত্র নড়িলে চড়িলেও বৃদ্ধি (টাবে); বমনাস্থে অভিশয় মুক্লিভা

উপরে ছুরিকা হারা কর্তনের গ্রাম যাতনা।

ওলাউঠা। --ব্যন-বিধেচন, গুভুত, জলবৎ বেগে বিনির্গত অবসয়তাজনক ভেদ বিশিষ্ট ওলাউঠা; ভন্ন গুপ্তির পদ্ম ওলাউঠা (একন)।

অভিসার —হরিতের আভাবিশিষ্ট (gice libli), অপবৎ প্রবশবেশেবিনির্গত,বারবার নিঃস্ত; ছিবড়ে ছিবড়ে পদার্থ বিমিপ্রিত অভিসার; হাত পার্য
থলীর আরম্ভ হইরা সর্বাধরীরে উহার প্রসারণ সহকারে কর্তন্বৎ উদর-বেদনা;
ভরপ্রাপ্তির পর অবসরতাজনক অভিসার; অভ্যার মাত্র মাত্র মাত্রে চড়িলে উহার
বৃদ্ধি; বমনসং অভিসার, ভেদ-কালে কণালে দিশে দিশে ও তৎপরে অবসরভা
(আস, ট্যাবে)

কোষ্টবন্ধতা — মল এ র্তি পরিশ্নতা; র্হৎ, শক্তা মল (প্রাই, সলাদ);
বাোলা কাষ কালকাল গোলার মত মল (তেলি, ওলি, প্রন্ন); সরলাম্রের নিজি রভা
ক্ষমিত কোষ্ট-রোধ; উদরোজি দেশে বার বার মল-প্রতি অমুত্তব (ইংখ্যু,
সরলাম্রে গ্রের্ডি অমুত্তব, নকা); শিশু ও বালকদিগের মলর্ক্ত্যু, লাই ও ন্যোগ্য

त्रअञ्चलक् ।----नगन ७ विद्यहम, जानवा मीलण वर्षा मध्युक जानमान-प्रानक जानित (ज्ञान का, द्यांक अपनान-प्रानक जानित (ज्ञान का, द्यांक अपनान का प्रान्त (ज्ञान का, द्यांक अपनान का प्रान्त का प्रान्त का प्राप्त का प्र का प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त का प्राप

অহিফেন-সেবন বা ভানুক্ট-চর্ববেশ্ব মন্দ ফল

বর্যাকালে পদ-প্রত্যেদে বেদনা, শ্যার উষণ্ডার উছার আডিশয়, জনাগত ইাটিলে স্থান। রক্তসঞ্চয় বিশিষ্ট বা দুষিত সবিরামজ্ব, শরীরের অতিশ্য শীতলতা, পিপাসা, সুথমগুলের শীতলতা ও প্রতাবস্থা; তক্শীতল ও আঠা আঠা, অভিশন্ন অনসনতা; কপালে শীতল দখ ও মুধমগুলের মৃত্যবং পাপুরতা।

উপচয়। - যৎসামাক্ত সঞ্চলনে, পানাজে, গ্রত্ন পূর্বে ও ঋত্কালে, মল-ভ্যাগকালে; বর্ম নিঃসরণ সময়ে, ও ভয় প্রাপ্তির পর। বৃদ্ধি

স্থাক ।—( > ) আস, আর্ণ, সিক্ষ, কুপ, ইপির পরে; ( ২ ) ওলাউঠার ক্যাক্রের পরে; (৩) বসন ও বিরেচন সহবর্তী রক্ষরতেলু, এম-কা,কার্বো-ভেলি ও বোজের পরে, ভিরেট্রংম ভাল থাটে (৪) অপস্থিমিত মদিরা-পান ও তাম্র-কুট সেখনের সদাফল অনেক সময় এই ঔষধে দুরীক্ষত হয়।

### ভিরেট্ম ভিরিডি।

( Veratrum Viride )

পূর্ব-রক্তা, মক্তপ্রধান ব্যক্তিদিগের পক্ষে এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী।
রক্ত-সঞ্চয়, বিশেষতঃ মন্তিকের ভূমিদেশে (base of brain),
বক্ষঃস্থলে, পৃষ্ঠবংশে ও আমাশয়ে রক্ত-সঞ্চয়।

श्रीमाञ्च भ्रश्यक्षे श्रीवन दवमना ।

তঙ্গণ আগবাত, উপ্রজন, পূর্ণ-দৃদ-ফ্রন্ড নাড়ী, সন্ধিতে ও পেশীতে ডীয় বেদনা (ব্রাই, ত্যালি-এসি); শঙ্গ ও গোহিত সূত্র

শিশুর কম্পন ও উৎক্ষেপণ, টকারের সন্তাবনা; অবিরত মন্তকের উৎক্ষেপণ বা স্ফালন সার্থীয় বা স্বম্ন শিরংণীড়া; ধড়-বিল্প্তি ব্লড: রজ-স্বায়; প্রবল বিষ্মিষা ও ব্যন সহকারে প্রায় স্ব্যাস সমূল দার্যণ শিরংণীড়া।

त्रख-मक्त्र बनिक मग्राम, উত্তথ मरहक, ज्रक्तवर्ग हक्ष्, व्यवनाक्रा, श्रीत,

টকার।—অপরিচ্ছর দৃষ্টি; মন্তকের ভূমিদেশের ঝিল্লীর প্রাদাহ; গশ্চাৎদিকে আক্সই মন্তক, শিশুর আক্ষেপের উপক্রম। আকোণ, প্রাণারিত কনীনিকা, ধরুষ্টহারের আবেল, গশ্চাধ । উত্থার, নীতের আঠি আঠি ঘর্মা সহকারে মন্তিক-পৃষ্ঠ-বংশীর (cerebro-spanal) রোগ

এর বিশ্বত (Sun stroke), মন্তব্ধের পূর্বত , ধমনীন দদ্দপদ্দদে অভি-রিক্ত অযুভূতি ; যুগগ বা আংশিক দৃষ্টি (জেল, গ্লন)

িছব। মধ্যসহলের নিম্নে লেশহিত রেথাসহ খেত ব পাও।র্গ জিহব ; শুন্ধ, আর্জ, খেত বা দীতবর্ণ গেল, গ্রাবন উজয় পার্থেই দেশ চাব ; জিহব বালসিয়া যাত্মার স্থায় অহত্ত হয় ( প্রাঞ্জ )।

নাড়ী — সহসা থেগের বৃদ্ধি এবং জমে জমে স্বাভাবিক অপেক্ষা স্থাস প্রাথ নাড়ী; মনদ, কোমল, চুক্বিল; অনিয়মিত সবিয়াম (ভিজি); নাড়ী।

दिन्दा नाष्ट्रीय दिश्वास द्वांत्र कावना "स्ट्लिश्वित क्वियांत्र माष्ट्रियंत्र क्वस क्वितिस कितिष्ठि वावरक्षत्र मर्ट्ट कक्योच खेयरथत्त स्वाय ''माण्यन ममस्ति" माष्ट्रक व्यवस्थि वावस्थ राज्या राज्या विराय ।

### ভেরিওলাইনঃম।

( Variolinum )

বসজের পূম হটতে এই ঔষধ গ্রেণ্ডত হয় ইহা আংশিক পরীক্ষিত হট্যাছে

ডিপথিরিয়ার সহিত এণ্টিটিকিনের যে সম্ম বসজের সহিত ভেরিওলাইন-

বসস্তের প্রতিষেধক শ্বরূপ ভেরিওগাইন্য ভারিনেশন অপেশা অনেক শ্রেষ্ঠ দ্যিত বীজের দোষে টীকার পরে যে সকল উপসর্গ উপায়ত হয় ইহাতে সে সকল পরিণামকল উৎপয় হয় না। হোমিওপ্যাথিক ঔষধের দজির কার্যকান রিতা অত্বাদী ব্রিতে চাহিবেন না, কিন্তু বসস্ত গুড়াত রোগের সংক্রোমক গ্রেক্ত ব্রিলে, শক্তিকত ঔষধের ক্রিয়া ব্রা কি উহা হইতে আরও কঠিন চ বাঁহারা এই ঔষধ ব্যবহার করেন নাই জাঁহাদের কথা বাঁহারা হোমিওগ্যাপির ''স্থমতের'' স্ত্যাস্ত্য পরীক্ষা না করিয়াছেন জাঁহাদের মৃত্ই অবিখান্তা, ইছে। হয় এই উচ্চের ফলাফল পর্যাক্ষা কর এবং অগৎবাসার স্থাপে গার যদি ইচার বিষ্কতা ভোষণ কর

#### (छट्टलिं तिशाना।

(Valeriana)

দায়বীয়, কোপন-সভাব, হিন্তিরিয়াগ্রন্ত (ইয়ে, পলস), বৃদ্ধিবৃত্তির প্রাধান্ত-বিশিষ্ঠ, অঞ্চপ্রত্যঙ্গের হিন্তিরিয়াগুনিত সায়-শ্লসংযুক্ত; এবং পরিবর্তনশীল প্রাকৃতি সমন্তিত ব্যক্তিদিগের পক্ষে এই ঔষধ বিশেষ উপ্যোগি।

শরীরের লোহিতাংশের গুলুভা প্রাপ্তি (ফির)।

বায়তে যেন ভাসিতেছে রোগীর এরপ পর্তা অন্তত্তব (এসার, স্যাক-ক্যান।—বেন জন্তবা ভাসিতেছে, ষ্টিক)।

मम्मम देखिरम्य व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्ति (क्यान, क्यि, मज्य )।

মস্তবে শীতগতা অহতেব (মুর্দ্ধাদেশে, সিপি, ডিরে); গল-গহ্বরের নীচে দেন এম্প।ছি হতা মুলিতেছে এরপে অহতেব ( ভিছ্বায়, স্তাট, সিলি)।

ি তর বড় বড় থগু থগু সংযত ছুগ্ধ ব্যন; মলেও সেইরাপ সংযত ১৫ (ইথ), সাতার ত্রোধাবেশের পর স্তন পান করিবামাত্র তপনই ব্যন।

গায়েটিকা: - দাঁড়াইলে; ঘরের মেজের উপর পা স্থির রাখিলে (বেল): অল-প্রসারণ করিলে ও পূর্ববর্তী পরিশ্রম হইতে বিশ্রাম করিলে, বেদনার বৃদ্ধি, ইাটিলে হ্রাস।

সম্বাধা । (১) এসাক, এসার, জোক, ইয়ে, ল্যাক-ক্যান, লিগজি, সলফের সহিত সমগুণ সম্বা। (২) পাদ-মূলের বেদনার এগার, কন্ট, সাইকে, লিড, মাক ও ফাইটোর সহিত এই উষধের তুলনা হয়।

#### মার্কিউরিয়ঃস।

( Morenrius ).

পাতन। हुण विभिष्ठ जावर भिविणायिक ७ ४५ विभिष्ठ राजिनिष्ठ गरिक १८३५ मर्सारयका व्यक्तिक कांग्रिका विज्ञा

রা ত্রিতে ও শধ্যার উজাপে রোপের মুদ্ধি মারকিউরিয়াদের প্রাধান প্রয়োগ-

অন্তি রোগ, রাত্তিতে বেদনার আতিশ্যা; পুণ সংগ্রু বা পুণ পরিশ্তু, বিশেষতঃ পুষের ক্ষতিপ্রাচ্ধ্য বিশিষ্ট (হিপ, সিলি) গ্রন্থির ক্ষতিতা। শীতল ক্ষতিতা; ত্রণে ধারে ধারে পুষোৎপত্তি

প্রায় সকল রোগের সহিতই প্রস্তুত ঘর্শের বিভয়ানতা, কিন্তু অ্পুত্রাত্ব উপশ্ব জানো না, কমন কি যাজনার র্দিও হইতে পারে (অধিক্ষথের্য উপশ্ব প্রাপ্তি, ভাট, সোরি, ভিরে)

সামাত্ত পরিপ্রথেই অত্যন্ত ত্র্বগতা ও কম্পন খাস ও শরীরের ত্র্বিদ (সোরি)। ব্যস্ত-সমস্ত ভাবে শীঘ্র শীঘ্র কথা বলা (হিপ)

অত্যক্ত ইন্টি ও প্রাক্ত বিদাহী জাব সহকারে নাগায়নে, ধ্বদরণ ও গত ; পীতাভ হরিৎ বর্ণের হর্নদ পুষের মত জাব ; নাগাছির শাতভা , আর্মেন্ত্র ও রাজিকালে রুদ্ধি ; সহকারে নাগিকার প্রতিক্ষায়

দপদপক্ষ, ছেদনক্ষ, বিদীর্ণকর,সুখনওল ও কর্ণে সম্প্রারিত তীর েদনা; আর্থিত জ্বানি বায়তে, শ্যার উতাপে, শীতল উফ স্রব্যে বিক্রিড; গত্থবিধে উপশ্নিত দত্ত-বেদনা।

मरखत्र भिश्रतत क्रम्लाशि, किश्व प्रश्व-भूग्य वर्श्वतान्छ। ,पश्च-भूर्यत अञ्चलिति , भिश्रतत विश्वभागका, भिक्ष)

সকামাশন —শেওলা শেওলা রক্তাক্ত মল, তৎদহ উদর-বেদনা ও মুহ্ছা, মলত্যাগ কালে ও মলত্যাগের পরে, অভিশন্ন কুছন, তৎপত্মে শীত, এবং "মলভাগ-ক্রিয়া শেষ হইল না এ প্রকার অহতেব; যতই অধিক রক্তে ও অধিক বেদনা থাকে ততাই এই উষধ ভালাধাটে। লালাম্বাব প্রভুক্ত, হর্গদ কাবাটে ধাতব আশাদ লালা, সাবাদ সদৃশ, ও মজ্জুবৎ লালা

বৃহৎ লোলিত, দন্তীক্ষ সম্বলিত (চেলি, পড, হ্রান ); কডসংগ্রু ; যাগিত। লোহিত বা শুল্র জিহবা।

দ রান পিশাসা, কিন্ত ভিহ্বা আর্ডি দৃষ্ট হয় ও প্রেভূত লালাজাব হয় (মুধ-শোষ কিন্তু পিশাসা পরিশুগুতা, পল )।

প্রভূত হর্ণর লাল সহকারে ওন্ধাবিবি (mumps); ঝিয়াক প্রেদাহ (di Metia), ও তালুমূল প্রদাহ (tonsillitis); বৃহৎ, লোলিত দড়াক সম্প্রিত জিহব; মানচিত্রের ভায় অকিত জিহব (লাকে, ভাট, টাারাবা)

ডিফ্থিরিয়া — প্রাণিছিত তালুম্ল, বিবর্জিত ও ফীত উপঞ্চিত্ব, অবিরত গলাধঃকরণের প্রকৃতি; স্থল, ধুনরবর্ণের দড়ির মত সংলগ্ন ব বিযুক্ত প্রাভ্রিশিষ্ট রুতিম বিল্লী, সহকারে ডিফ্থিরিয়া

যে পরিমাণ জলপান করা যার তদপেকা অধিক সূত্রজাব; বারবার সূত্র-

স্বংগ্ন রজাঞ্চিত শুক্রজাব (শেড়; সাসা)।

শেতপ্রান -- বিদাহী, জালাকর, কণ্ডুয়ন ও অবদরণবিশিষ্ট প্রদর;
সর্বাদা রাজিতে উহার আধিক্য; ভগ-কণ্ডুয়ন,মূল সংস্পর্শে উহার র্ধি,
ধূইয়া ফেলার আবগুক্তা (সল)।

গর্ভাবস্থায় প্রাতঃকালীন বিবসিধা (মর্ণিংসিক্নেস্), নিজাকালে অভিশয় লালাজাব হইয়া বালিশা ভিজিয়া যায় (গান্ত-এসি)।

প্রতি খাজু-কালে স্তানে বেদনা, বোধ হয় যেন উহাতে গত হইবে (কোনা, ল্যাক-কানি), রজেন পরিবর্তে স্তনে হয়োৎপত্তি।

কাস — শুক্ষ, প্রান্তিকর, মন্ত্রণাজনক; তৃই আবেশে উপস্থিত; স্নাত্রিতে ও শব্যার উত্তাপে বিবর্দ্ধিত, দলিলপার্শ্বে শরনে সম্পূর্ব অসমর্থতা বিশিষ্ট কাস

पिनिष स्मक्रात्र निमधाखत जाकाष्ट्रण ; शृद्धंत जाकाष्ट्रत पित्रा रहीत्वधवर योजना ( दहनि, क्नि-का )।

ফুসমূস-প্রদাহের রক্তথাবের পর মুসমূদে পূ্যোৎপত্তি ( কালী-কা )। ''নাড়ীতে, জিহ্বায়, গল র মধ্যে, গালের জভাত্মর ভারে, লালাঞার সহস্বারে गटित शिक्षा भिक्षित विषय विषय विषय । विषय ।

भकोत-भाषात विदेभ गण्डः रूखधरमत कम्मान ; द्वमधू (भग्नता मिमिन-अधिराम)

উপ্তয় [- - বাজেও ; জিলা শেতসেঁতে, শীতণ বায়তে, বিশেষতঃ সদ্যাকালে ; শরৎকালে, উফ দিন ও শীতল সেঁতসেঁতে রাজিতে অনার্ত হইলে,
থোলা গায় শীতল বায় লাগিলে ( ব্যারা, হিল ) , দাক্ষণলার্থে শয়নে ; ঘর্ম-নিঃস্বরবে ; ও শ্যার উত্তালে বৃদ্ধি

উপশ্য ।--অনার্ত বায়ুতে; কার্য্যের সময় সবল স্থালনে; শ্যার বিশ্রামে; উপশ্য

আনে নিক ও মার কিউরি উভয় ঔষধেই শ্যার শ্রন-কালে উপদয় ও উপশ্য তথ্য শ্যার উত্তাপে সারকিউরির লক্ষণ বিবর্ষিত কিন্তু শ্যার বিপ্রামে উত্তা উপশ্যিত হয় আনে নিকের লগণ শ্যার বিপ্রামে বিবর্ষিত কিন্তু শ্যার উত্তাপে উপশ্যিত হয়।

मश्चा ।—(>) दिल, हिल, लाक छ मनटक मदा मार्क छाल थाए, किछ निम्करण निम्नियात शृद्ध वा भदा अरे छेयथ वा व्हा १७३४ छिछ नटह (२) निम्नकरम मार्क वावया किति ला शृद्धा भपि निम्नकरम भाक वावया किति श्रा श्री श्री भपि हिला श्री श्री श्री श्री भपि हिला है। (७) मार्कित मन्म कल खर्, हिला, लाक, नाह-जिति, मनक जवर मक्करनत गहिल दोना- मुख वाकिएल छेछ मिलित मार्कित वावयादत विमृत्ति हम। (८) मिलित मन्दित किहिला गम्लव ; क्षिक भाजाय छ क्षिकिल श्री श्री श्री दिलत मन्दित मन्दित है। विश्व मिलित मन्दित स्वाद्ध है। (८) किन छक्त वावयात विमृत्ति मन्दित मन्दित प्राप्ति के वावयात वावयात है। (८) किन छक्त भाक देश मार्कित स्वाद्ध है। विश्व मिलित स्वाद्ध स्वाद्ध

#### गांत्रकिউतियःशम करतामा रेजःम।

(Mercurius Corrosivus)

পুরুষের ডপদংশব্দ রোগ; থাইরা যায় এরপে বিদাধী পুয-বিশিষ্ট ক্ষত; আইটুস ডিকিল।

অন্ত্র-প্রাণশীর রক্তান্দিশর ও ও'মাকন্দীয় অন্তিনার, মে হইতে নবেছর মান পর্যান্ত উহার উপস্থিতি।

কৃষন।—সরলাজের কুষন, মল্-ত্যাগে উহার আনিবৃত্তি (মলতাগে নিবৃত্তি, নকা), অবিরত ও জমাগত কুষন, অল্লা, রাজেণ্ডে, শেওলা শেওলা, ত্রগান্ধ, তথ্য মল; শৈলিক বিল্লার এওপাত এবং ভয়ম্বর কর্তনবং উদর-বেদনা

মুত্রাশদের কুছন, তৎত্য মৃত্যাদের তীয়ে আলা; তথ্য, আলাকর স্বল্ল বা বিল্পে মৃত্য; অতিশর যাতনা সহকারে বিল্পু বিল্পু মৃত্য-পর্যত ; রজাজ ক্ষিণ্ড, ইষ্টক চুর্ণের স্থায় অধঃপতিত পদার্থ; সাওলাল মৃত্র

প্রমেষ, বিতীয় অবস্থা, স্বাহ্ম হারাত্ত্ব (greenish) আশ্ব, রাজিতে র্নি, অভিশয় জালা ও কুম্বন

### মারকিউরিয়ঃস ডঃলিসিস।

(Mercurius Dulcis)

মৈশিক বিলীৰ বিশেষতঃ চকু ও কর্ণের মৈশ্বিক বিলীর অভিযান ক্লিড পীড়া

মধ্য-কর্ণের প্রতিশ্রায় জনিত প্রদাহ (ক্যাণী-মিউ)।

ইউফেকিয়ান টিউবের অবরুদ্ধতা; সোরাদোষগ্রন্ত বালক-

কুচিকিৎসিত ব্লীকচারের পর ৫ ষ্টেট-গ্রাহির তরুণ পীড়া।

নাসা-রন্ধ, গল-মধ্য ও গলকোষের পারদ মিশ্রিত ধাতব পদার্থ জনিত প্রাতিশ্রারিক পীড়া ও ব্যারতা

বালক-বালিবাদিগের অভিসার; খাসের ভার সব্ধবর্ণ ও থড়িত অডের ভার মল; প্রভূত মল; মল লাগিয়া মল-খারে কতের উৎপত্তি

## মারকিউরিয়ঃদ প্রটো-আইওডাইড।

( Mercurius Proto-Iodide )

ভিপথিরিয়া অনিত রোগে এবং গণ-রোগে গ্রীবা-গ্রন্থি ও কর্ণমূল-গ্রন্থির অত্যন্ত ফীডডা; দশিণ পার্শ্বে ক্লিম ঝিলার আরম্ভ বা আভিশ্যা; উফ পানীর প্রবা পানে ও পালি ঢোক গিলিলে বৃদ্ধি ( লা)ক )।

ধিহব।—জিহ্বার ভূমিদেশে গাঢ় পীতবর্ণ লেপ (কাণী-বাই — বর্ণের প্রায় পীতবর্ণ লেপ, তাট ফস; মলিন বর্ণ অথবা হরিতাত গ্রুরবর্ণ লেপ, তাট-সল); অগ্রভাগ ও প্রায়ভাগের আরক্তা; গলার ও বাড়ের দ্রিণ পার্ধের অধিকতম আক্রায়তা।

করিন উপদংশে ( হাণ্টেরিয়ান শ্রাক্ষার), উপস্কু নাজার ব্যবহার করিলে গৌণ দক্ষণ ক্যাচিৎ প্রাকাশ পায়; বঙ্গণ-গ্রন্থির (বাণী) অভিশয় দ্বীভঙা, পুষোৎপত্তি হইবার অপ্রাবণতা।

### মারকিউরিয়ঃস বিন আইওডাইড।

(Merourius Bin Iodide)

বাম পাদের ভিপণিরিয়া অনিত ও এছির পীড়া; গশ-গহররের মণিন আরক্তা; অতরল বা তরল পদার্থ গিলিতে যাতন; যৎসামান্ত ক্রিম বিল্লী, উচা সহজে বিভিন্ন হয়; বছব্যাপক আরক্ত অরের (epidemic scarlet level) আমুয়নিক রোগ, গলগহররে বা তালু-মূলে ক্ষত; এছির বিবৃদ্ধি, গশ-বেশ্য (pharynx) অথবা নাসিকার পশ্চাৎ রদ্ধু হইতে উষৎ হরিদর্গ দ্বেশ্য বিরুদ্ধি।

विख्यात्रिक छेणांत्र ८ एतिकारेषिम व्यर्था ९ ७ विण व्यनिष्ठ भगरकांय-। श्रीवार्थ।

## মার্কিউরিয়ঃস সলফিউরিকঃস।

(Mercurius Sulphurious)

হাজোগ অথবা ষ্কুলোগ হইতে উৎপন্ন বন্দান্তলের শোণ; খাস-ফা, উঠিয়া বসিমা থাকিতে হয়, শমন করিতে পারা যায় না। হাত-পাগের ফীডড়া ফালবৎ তরল মল, উহাতে ভীর আন ও স্পর্ণবেষের উৎপত্তি; বর্ণঃস্থলে জাল।

ডাঃ লিপি বলেন এই ঔষধের উত্তম ক্রিয়া দর্শিলে এডদ্বারা প্রভৃত জলবৎ অতিসারের উৎপত্তি হইয়া রোগীয় অভিশয় শাস্তি অস্মে; বশঃস্থগের শোগে ইহা আর্সেনিকের জায় উপযোগী।

সম্প্রস্থা ---আগ, সিনাব, ডিজি ও সলফের সহিত এই ঔষধের তুলনা হয়

### মারকিউরিয়ঃস সলিউবিলিস।

( Mercurius Solubilis )

প্রাব বিলুখির পর, বিশেষতঃ সোনা-দোষ-এন্ড রোগীদিগের লায়বীয় স্নোগ ('এসাফ্)

वामक-वामिकां पिरांत्र शिष्ट्रगश्जनाष्ट्र अवर श्रथमाणां क्रिक द्यांश

কর্ণপ্রাব (কান-পাকা)।—সক্তাক্তি, প্র্যক্ষাব তৎসহ থোঁচা মারিয়া সেলাই করার মত বেদনা; দক্ষিণ পার্থে, রাজিতে এবং আক্রান্ত পার্থে শর্মন বৃদ্ধি।

वाष्ट्रकर्न-वादत एकिक ( शिक-अभि )

বাহ্যকর্ণ-ঘারে বহুপাদ (polypus) এবং ছত্তকাকার উপমাংস (মেরম, পুজা)।

বিদাহী নাসা-ভ্রাব, উহার প্রাতন পনিরের জার গণ; নাগারদ্ধের আরজতা, অবদরণ ও কত।

नामिका रहेरछ अख्यान —काभिनात्र ममतः त्राद्धिए निर्मिकारण ; नामिका रहेरछ वषमान वत्रकविन्त्र छोत्र मणिन मश्यछ-त्रक्त-त्रक्त स्थिता थारक।

প্রমেষ্ট (gonorrhoea)।—মুদা (phymosis) বা ঈষ্য উপদংশ (chancioid), সবুজবর্গ আবি,রাজিতে উহার বৃদ্ধি; মূত্র-বেগ, দেষ করেক বিদ্ম মূত্রের পতন-কালে মূত্র-মার্নের গত্রথতা, জীততা এবং ত্পার্শ-ছেষ, নিজেজ প্রাকৃতির রোগ, বাদীর সম্ভাবনা অথবা পাকা যাধী

উপদংশ — गूर्ण ( primary ) উপদংশ; नि भिक्त कठिन ( रुप्टितिश्वान ), भूकरत्रत्र वजात्र लाग कांग निम कांग विशिष्ट, रुप्ति मह्भ खग जनर विश्वांश जात्रक छोछ; ७ मृत्रा वा উप्टीभूषा ( paraphymoria) मरमुक छेभपरभ, शक्षीत द्वाणाकात्र काल, शिक्त-भूरखत वग्ना (frantum ) छ आध्यापन-५क ( prepuce ) वारेश यहिशा काल जालाश्वरत छाविष्ट रुप्त; छेश रहेर्ड याजना महकारत अव्ह ७ विषद शीखवर्ग छवीम व्याव निश्चर हम ।

উপদংশ এবং জনন ও মৃত্রপথের রোগে মারকিউরিয়াস সলিউবিলিস হানি-মানের ঔষধ জিহন শুক্ষ গাকিলে ক্যাচিৎ ইহার প্রয়োগ হয়।

চর্মের রোগ; শরীরে কটি-দংশনের স্থায় অণহ দংশন ও কওুরন; সদ্ধান .
কালে ও শ্যার উত্তাপে উহার র্দ্ধি; চুলকাইলে ভাল লাগে

অলের চ্বলিতা ও আ।ডি; স্পর্শ-বেষ ও ছাইবৎ কাহতব।

## মারকিউরিয়ঃস সায়েনাইড।

( Mercurius Cyanide )

গল-গহবরের তীব্রে আরক্তে। ও গলাধঃকরণে অভিশন্ধ আয়াস-সহকারে দ্যিত ডিফ্ বিরিয়া; সমগ্র গল-গহবরের উপর এবং গলমধ্যের নিম্ন পর্যান্ত ক্যনিনিয়ার প্রায়ারণ; পচা, গ্যাংগ্রীণ বিশিষ্ট ডিফ্থিরিয়া, তৎসহ বিগলিত কতে; ক্রনিম ঝিলীবিশিষ্ট কুণ।

অতিশয় প্রবিশতা; যৎপরোনান্তি অব্সন্নতা; প্রশাতা-বশতঃ দাঁড়াইতে গানা যাম না

যথা এই ঔষধ বা)পিক আকারে প্রকাশিত ভিক্ষথিরিয়ার সকলের সাদৃখ্যে স্থানাথ ঔষধপ্রকাথ হিন্নীকৃত হয় তথন অন্তান্ত অমোদ ঔষধের কার প্রতিষেধক স্বরূপত ইহা ফলপ্রাম হইয়া থাকে।

# মিউরিএটিক এসিড।

#### ( Muriatic Acid)

ক্ষমতকেশ, ক্বফচকু, মলিনবর্ণ মুণাক্বজিবিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের ০কে মিউন্ন এসি বিশেষ উপযোগী

কোপনতা, কণরাগিতা, ক্রোধ ও বিশ্বজিস প্রবণতা ( নয়া ); অস্থিয়তা ও শিরোঘূর্ণন।

দৌর্বল্যকর প্রাকৃতির রোগ, তৎসহ কোঁকোঁ করা; সংজ্ঞাশুগুতা, ও বিরক্তচিত্ততা

ছলকের ভার (fungus-like) উপসাংস ও ক্লিম বিলীসংযুক্ত অন্ত-প্রণালীর (intestinal tract) কভ।

অতিশয় চুর্বলতা। বনিবামাত্র চক্ষ্ মুদিত হইয়া আইনে; নিত্ন হতু ঝুলিয়া পড়ে; রোগী শ্যার নিত্নভাগে সরিয়া

### भएए।

মুগ-বিবর ও মগ-মার প্রধানতঃ আক্রান্ত হয়। জিহবা ও মগবাসের আবরণ-পেশীর পক্ষাবাত জন্মে

মুগ-বিষরের উৎকট রোগ; গজীর ও রঘা কর স্থায় কর স্থায় কতে, উহার কাল ভাববা মলিন ভূমি; ছগঁঘা খান; দারণ ভাবসরতা; ভিফলিরিয়া, জালে টিনা, ক্যালার।

মাংদের চিন্তা বা দৃশ্য সহ্য করিতে পারা যার না ( নাই-এসি )।

অর্শসন্ধলিত বা অর্শ-বিবর্জিত মলহামের অতিশার অমুভূতি; ঋতু-কালে মলহারের স্পর্শ-বেষ

অর্ণ।—স্ফীত নীলবর্ণ বলি, স্পর্শে উহাতে অমুভূতি ও বেদনা; সহসা বালকদিগের অর্শেণৎপত্তি; উহাতে অত্যমনাত্র স্পর্শন্ত সহা হর না, শ্যার চাদর লাগিলেও অর্থজনতা জন্ম। মুক্রেড্যাগ্র-কালে হাড়িশ বাহির হয় (বারা-ফা)। অভিনার।—মূত্র-কালো; ও অপান নিঃসারণ-কালে (এলো) অনিচ্ছার মল নিঃদরণ স্কুকালে যুগপৎ মলের নিঃসরণ না হইয়া মূত্রত্যাগ করিতে পারা যায় না।

ধীরে ধীরে ম্যুনিঃসরণ হয়; মুজাশয়ের ছ্রাগতা, অনেককণ অপেকা করিতে হয়, এত বেগ দিতে হয় যে মল-যার বাহির হইয়া পড়ে

জননাঞ্চে আত্যক্ল মাত্রে স্পর্শ, এখন বিছানার চাপরের স্পর্শ পর্য আ সহ্য হয়না ( খিউর )

সংগিত্তের স্পাদান মুথমণ্ডলে অন্তভ্ত হয়। মাজিয়া, একজিম সোলারিস

টাইফরেড ও টাইফঃস অর ।—মোহবৎ গভীর নিজা; মাঞাবস্থায় জ্ঞানমৃত্যতা, উচ্চ কেঁ কোঁ শল বা মৃত্যপ্রশাপ (বিভবিভ করিয়া বলা);
প্রান্তভাগে শেগাছের, কুঞ্জিত, শুক্ত, চর্পাবৎ, প্রফাঘাতিত জিহ্বা;
মৃত্রেত্যাগকালে অনিছোর ছর্গন মল নিঃসরণ; শয্যার নিম্নভাগে সরিয়া পড়ন; নাড়ীর জুতীর জ্পাননের বিরাম; মজিনবর্গ ভরজ রক্তমান;
স্বিধ নালবর্গ ক্তে ম্থ-বিবরের পূর্ণতা; অভিশর অবসাদ

স্থায়া।—(১) আই, মার্ক, ফ্রানের পরে জাল থাটে। (২) অভিরিজ্ঞ আফিম ও ভামাক সেবল জনিত পেশীর স্কলিত এই উবধে আরোগা এবি হয়।

# মিউরেকা পাপিপউরিয়া।

(Murex Purpurea)

विभयं श्रीकृष्टित्र दर्शा कमिरशत भरक अहे खेयम खेभरयांशी

নিযুক্ত-রম্মন্ধ দিনোর অহুবে ইহা ব্যবহার্য্য (শাক, সিপি, সলফ ) ১চিন্তের অতিশয় অবসাদ আমাশয়ে যেন কিছু নাই এপ্রকার শৃগুতা অহুতব (সিপি)।

জননালের অন্ত্যেক্স সংক্রপাশে, প্রবল কামোদীপনার উৎপত্তি ( জননালের জাতিশর উপদাহ বশতঃ ক্লিন মৈথুনে প্রবৃতি, অরিগেন, জিম্ম )।

জননেন্ত্রিয়ের প্রেবল উত্তেজনা, এবং সমণ-জিসার অত্যস্ত ইচ্ছা ( সিপিয়ার বিপয়ীত )। জারায়ুতে ফাতব্ৎ বেদনা; জনায়ন বিজ্ঞানতার পাই অনুভূতি (হেলোন, নাইনি) আভ্যন্তরিক যন্তর্ভি থেন বল্পুথাক বাহির ইইনা আচিবে এক্লণ থাবের অন্তর্ভ তদ্যন্ত উনর উপন উক্ত রাণিয়া বণিয় থাকিতে হয় ও চাল দিলে উপশ্য পড়ে (কিন্তু সগ্য-শ্রেবৃত্তি পরিশ্রুতা, দিলি)

ধতু — অনিয়মিত, নিদায়িত সময় অপেকা মতার প্রকাশিত, প্রাভূত, মধিক-দিন স্থায়ী, বড়বড় রক্ত থতা বিশিষ্ট, ধতু

७ एत — गांनिक चानांप, सांत्वत चां जिम् त्या श्रक्षां ।

সাক্ষ্য ।---, ১) কামোগাদে লিগি ও প্লাটের সহিত ; এবং কাম-এর্ডি পরিশ্র ''আবেগ" অমুভবে গিপিয়ার সহিত মিউরেয়ের তুলনা হয়

### गिलिटकालियः।

( Millefolium )

क्षित्रिक भारतीतिक CPहैं। व्यवदा अख्यक्षितिक (अर्था ।

व्यवन वर्गमान-कारन नरक, किन्छ पीरत बीरत मधनन-ममरम भिरतां पूर्वन

রজ্ঞাব — জর ব তাত ও বেদনা বিবহ্নিত; উজ্জ্ঞা শোহিত, তর্ম রজপাত (একন, ইপি, ভাবি); কুসকুন, বান্নলা-ভূজ, সর্যন্ত, মূথ-বিবর, নাসিকা, আমাশর, মূলাশর, সরলান্ত ও নারা হুইতে রজ্ঞাত; আধিভৌতিক (mechanical) রক্ত-জাব, সভ্তর্থের (wound) রক্তজাব (হুমে)

প্রভুত রক্তমার্থা মহাবণ, বিশেষতঃ পত্রের পর পর (আর্থা, থেমে)। কুসকুস হইতে রক্তপাত —উপঘাতের পর পর থাকের যথা রোগে; অর্শত স্ত

বোগীর ও রক্তবহানাড়া বিদার্গ হইয়া; সুসমুস হইতে রক্তপাত।

নাদিকা, মুসদুস ও জরায় হইতে; প্রস্ব বা গর্জগাড়াতে; আত পরিশ্রম বশক্ত ও গর্জ-প্রাবের পর; ক্রেসে ক্রেসে বেদনাপূল্য রক্তেপাব। এই ওয়ধ প্রস্বান্তিক রক্ত্রাবের প্রতিষ্ণেক।

খতু — নির্দ্ধারিত সমরের পূর্বে প্রাকাশিত, প্রাকৃত ও দীর্ঘকাশিকারী খতু; উদরে বেদনা সংযুক্ত বিলুগু খতু পেশীর দৌর্শাল্য বশতঃ বাহি কাদিগের শ্বেতগুদর ( ক্যায় )

কাস। উজ্জারতের উথিতি বিশিষ্ট; ঝতু বা অন্তাব বিলোগজন্ত; বক্ষঃস্থলে গুরুত্ব ও স্থাবকাল সমলিও; উচ্চস্থান হহতে পজন বদতঃ (আর্ব); প্রবল পরিশ্রামের পর; প্রাভিদিন অপরাত্ম ৪টার সময় (লাইকো) রক্ত সংযুক্ত কাস

সম্প্রা 1—( > ) নাসিকা ও ফ্সফ্স হইতে উজ্জল গোহিত রজ্ঞাতে ইরেক্টের সহিত মিলিফোলিয়মের তুলনা হয় (২) রজ্ঞাবে একন ও আবি-কার পরে মিলিফোলিয়ম ভাল থাটে

### মেজেরিয়ঃম।

( Mezerium )

পাতলা চুল, শ্লেমা-প্রধান ধাতুবিশিষ্ট অশ্বিরপ্রতিজ্ঞ ব্যক্তিনিগের পক্ষে মেজেরিরঃম বিশেষ উপযোগী

জ্বসাধবায়গ্রস্ত ও নিরাশ চিত্ত; প্রত্যেক বিষয় ও ব্যক্তির প্রতি উদাসীন; সামায় ও সম্পূর্ণ নির্দোষ বিষয়ে সাগায়িত ও তৎপরে শীল ভরিমিয়ে জন্ত্তথ্য রোগী।

পামা (eczema), অসহা কওুমন, শায়াম পাকাকারে ও স্পর্নে উহার বৃদ্ধি; মক্ষাধ্বৎ প্রচুম আব সম্মণ; গে বীজে টীকা দেওয়ার পর কণ্ডুয়নজনক উদ্ভেদ।

শিশু সতত বদন কণ্ডুমন করে, উহাতে মুখ্যওল রক্তার্ত হইয়া পড়ে; আর্রি উদ্রেদ; র'নিতে কণ্ডুমনেব রুদ্ধি; মুখ্যওলের প্রাণাহিক আর্ত্ততা।

অতি শল্পয়াতা বিন্নজিন্ত পরে প্রবিশ শিরঃগীড়া; যৎসামান্ত স্পর্শে উহাতে যাতনা; সাধারণতঃ মস্তকের দক্ষিণ পার্শে বেদনা

সম্ভব্যে এক প্রকার পুরুত, চর্দ্মবৎ চিপিটিকা (crusts), উহার নীচে স্থানে স্থানে গাড় ও শালা পুয সঞ্চয়, কেশের সংযোজনা, কিছুকাল পরে পুষের রগানিবৎ দ্বিততা প্রান্তি, এবং উহাতে ছর্গন ও পোকার উৎপত্তি ক্ষাপ্রাপ্ত দক্তে দক্ত-পূল (জিমোজ); দক্ত দীর্ঘাজ্ত নোধ হয়, দাঁতে কাম্ড্র বা জিহ্বা লাগাইলে মুদ্ধ বেদনা, রাজিতে বেদনার বৃদ্ধি; মূণ পুলিয়া বায়ু আকর্ষণে উপশম দক্ত মূলের ক্ষয়প্রান্তি ( মার্কের বিপরীত )।

স্থুন, শেকান্ত পীতবর্ণ চিপিটকার্ড কতে, উহার ততে গাঢ়, পীতবর্ণ পুষ সঞ্ম। কতে বস্তা পাগিয়া থাকে, উহা টানিয়া ছাড়াইলে মজগাত হয়।

ক্তের চারিদিকে জলপূর্ণ ক্ষোট উৎপদ হয়, উহাতে প্রেনল ক্তুমন অন্মে, আগতনের স্থায় জালা করে (হিপ); উহার চারিদিকে অগ্নির স্থায় লোহিত বর্ণ, চকচকে মঞ্জ দৃষ্ঠ হয়।

অষি, বিশেষতঃ দীর্ঘান্তি প্রদাহিত ও শ্টান্ড; উপর হইতে নীচের দিকে রাজিকালীন বেমনার গতি; পারদ-সেবন, ও উপদংশ-রোগের পর উহার উৎপতি; অন্তি-কত; অন্তি-বিবর্জন, ভিতর হইতে বাহিরের দিকে অন্ধ্রের কোমলভাগ্রান্তি।

দীর্ঘান্থির অন্তি-বেষ্টে (periosteum) বেদন, রাজিতে শ্যায়, অভান্ধ মাজ স্পর্শে, ও আন্তর্কালে উহার বৃদ্ধি (মার্ক, ফাইটো)।

কটিবশ্বৰ দত্ৰার ( zona ) পরে ভায়-শূলকনিত আলাকর বেদনা।

জ্মের স্বন্ধ-বিরাম বা টাইফরেড, গ্রন্ধতির প্রবণতা। জাফ্রান্নী ও ফ্রেরান্রি মাসে ব্যাপক আকারে যে সকল জর উপস্থিত হয় তোহাতে সাধারণতঃ খেলে-রিরমের প্রয়োজন পড়ে।

্ উপ্চয়।—শীতল বাষ্তে; শীতল অলে প্রাক্ষাণনে; রাজিতে এবং প্রধান ও সঞ্চালনে সাধারণতঃ দক্ষিণ পার্শের আফাষতা ও মার্কিউরি অথবা এল-কোহলের মন্দ্রকলের; বৃদ্ধিপ্রাপ্তি।

স্থান । কাইটো, কট, ইংস ও গোরেকের সহিত মেজেমিরমের তুলনা

### মেডে।রাইনঃম।

( Medorrhinum )

প্রথেতের বিষ হইতে এই ঔষধ প্রস্তে হয়। কুচিকিৎসিত ও বিস্থে প্রথেতের স্বাদীন মন্দ্রতে অতীব অনিধাচিত ঔষধেও উপশ্য বা স্থায়ী উপস্থায় না দ্র্শিলৈ ইহা ব্যবহাত হইয়া থাকে।

নাইকোনিস (মাষক-দোষ) হইতে উৎপন্ন গাউট, আমবাত, লাছু-শূল এবং পৃষ্ঠ-যংশের মজ্জার বা উহার ঝিছীর রোগ---এমন কি উহার বিধান-বিকার (organic lesions) ও উহা হইতে পকাবাতে পরিপতিতেও মেডোরাইনঃম উপযোগী।

নারীদিগের পুরাতন ডিফাশর-প্রাদাহ (ovaliti:), ফ্যালোপিয়ান টিউবের প্রাদাহ, পেলবিক সেল্লাইটিস, ভন্তময় অর্জ্ব (fbioids), কোষময় অর্জ্ব (cysts) ও জ্বায়তে অন্তবিধ অস্বাভাবিক বস্তর উৎপত্তিতে, বিশেষতঃ সেই সকল বিক্ত পদার্থের উৎকট প্রকৃতি ধারণের সন্তাবনার, সাইকোসিদ-দোষমূলক হউক বা না ইউক, এই ঔষধের ব্যবহার হয়।

জিরঃস, কার্সিলোমা অথবা ক্যানার রোগের ডরুণ বা পুরাতন বিকাশে লকণের সৌনাদ্ভা ও সাইকোসিন-দোষের পূর্ববৃত্তাত থাকিলে এই ঔষধ উপযোগী।

पक ७ देशशिक विक्षीय गञीत-मून द्यारंग भाषितरमय दव भवक मोहरकाशिम-दिन धानिक शृष्टेवरमीय ७ महाक्षरकोलिक भाष्यभाष्टरनय (sympathetic nervous system) गञीत-मून भूयाकन द्यारंग भाष्य राष्ट्रांशियरम्य दमहे भवक।

পাও,বর্গ, রেকাইটিদ-রাস্ত বালক-বালিকারা; অপরিবর্দ্ধিত স্ক্রকারা (ব্যারা-কা); মাননিক সুস্বৃদ্ধিত ও ত্র্বস্ত ।

লসিকা-গ্রন্থির বিবর্জন সহকারে সর্বাপরীরের অভিশর উত্তাপ ও স্পর্ন-দেয়।

শয়রোগজনিত অবসাদ। প্রাতিঃ সর্বাদীন জীবনী-শক্তির অতিশয় অবসমতা।

বেদনা।---বিসুপ্ত প্রেমেহেন্ন পরিণাম শ্বরূপ সন্ধিবাত ও আম্বাড জনিত

(वामः। (ए।) का क्ष्मनः ९ १ एन।, त्वाध हर रम्न मध्य \* होत कि विद्या ध्या इहेप्रोर्ट (का के ) ; अर्थनवीरत धुहेव९ म्लर्ने-८५४ (धार्व, ইউ॰ )

রোগীর নিষ্ণট সর্বব শরীরের কম্পান্সভব, তাৎ পায়বায়তা ও গড়ার অবসয়তা।

হিমাজ অবস্থা, গৰুল সমষ্ট বাতাস করিতে বলা (কার্যোন্ডে); বিমল বাষ্ পাপ্তির আকাজার; গাল শীতল সংস্তে গালাবরণ ফেলিয়া দেওয়া (ক্যাম্ফ, সিকে) গালের শীতলতা ও শীতল ঘণ্যে সিক্তভা (ভিরে)

মন। স্থতিশক্তির জ্বলতা; নাম, শব্দ বা শব্দের প্রথম অধ্যর শ্বরণ রাণিতে পারা বার না, অত্যন্ত আগ্রায় বন্ধরও নাম জিজ্ঞাসা করিতে হয়; এমন কি নিজের নাম পর্যান্ত মনে থাকেনা

পরিগুজন্মণে বর্ণ বিজ্ঞাস করিতে পারা যায় লা; অপরিচিত দাম কেমন করিয়ে বানাল করিতে হয় ভাহাও জিঞাস করিতে হয়।

আলাপ করিতে করিতে কথার সম্বন্ধ হারাইয়া যায়

কোগিণী তাহার লগণ অনায়াদে বর্ণনা করিতে পারে না, ভেবাচেকা খায়, তথ্য পুনরণয় তাহাকে প্রাণ্ড করিতে হয়।

ना का मिया कथा विलय् भाता याय ना।

মৃত্যুর কথা পুর্বে যশা, স্বাদা পূর্ব-দৃষ্টি, ঘটনা ঘটিখাব পুর্বেই তৎসম্বন্ধ অতিশ্য অমুভূতি।

শামান্ত স মাত্র বিধয়ে বিরক্তি; দিখাভাগে কোপনতা, নাত্রিতে ছাইডা অতিশয় অসহিফুতা, ক্ষণরাগিতা।

উৎকণ্ঠা, স্বায়বীয়তা, অব্যস্ত অমুক্তি , অত্যস্ত দংগ্ৰ চম্ফিত হট্যা উঠা। সময় অত্যন্ত ধীয়ে ধীয়ে অবসাম হয় ( এলম, আর্জ্জ-না, ক্যান-ইও )

অভিশয় ব্যস্ত-সমস্ততা; কোন কিছু ক্ষিবার সময় রোগিণীয় এতই বাস্ত-সমস্ততা যে আন্ত ২ইয়া পড়ে

জনেকগুলি লক্ষণ, যথন উহাদের বিষয় চিন্তা করা যায়, তথন বৃদ্ধি পায়। (বেদনার বিষয় ভাবিবামাঞ উহার প্রত্যাবৃত্তি, জ্ক্ল-এদি)।

মৃস্তক ।—-মন্তিকে দারণ আশাকর বেদনা, উপমন্তিকে (cerebellum) উহার আতিশ্যা; মেরুদভেম নিম পর্যান্ত প্রানারণ। भश्यक खोती दर्वाध कर खबर लेग्डॉिटक अ इंडेरस

গাড়ীর কল্প শবে শিরঃগাড়া ও অভিসার। মন্তকে অশিণিলত ও সদ্যোচন অনুত্রৰ, সমতা ইছিবংশের গম গমি উহার প্যারণ।

श्रा–ग्रधाः । – यन छोत म र्ष २६३१। ६ व्योजित न तम अञ्चन, ७९ मर অश्वित्य योजना श्रम व्यमना, भगात्र व्यमना ७ योजना, जनन ना अजनग नम्बर् शिक्षिर्ण भोता योग्र नो (भोक)

নাসিকার পশ্চাৎ রথ, হংজে গাঢ়, ধৃষ্য, বা রক্তাক শ্লেম নিঃস্ত হংয় গণার সভত পূর্ণতা (হাইছা )।

ক্ষুধা।—আহানাতে তৎকণাৎ আবার অভিশ্য ক্ষা (দিনা, লাইকো, গোরি)

व्यवित्रक लिलामा, दर्शाभिण व्यद्धक व्यवलाम करत्।

স্পিরায় (পূর্বে ত্মণা অত্যেঞ্জ) (এসার), লবণে (ক্যাজ, ক্রাট); নিষ্ট মবো (সলফ); বর্ষ, অয়, ক্মলালের ও কাঁচাফলে, আতৃপ্তা আশ্বরণ্ডর্মা।

তানো। —ছম্ছেড, কর্দমবৎ, ধীরে ধারে নির্গত, মশ; সরলাম বাহির হইয়া পড়িবে এপ্রকার অন্তভ্তব বশতঃ কুম্বন করিতে অদামর্থ্য (এলম)।

গোলাম ফাম মল সহকারে অজেন আক্রন ও নিজিয়তা (লাক)

टक्यण ज्यानकपूत्र भणाषित्य श्रीकिया यणाता कितिए भाषा यात्र ; यण-णार्ग वष्टे याणना स्म, ज्या यांचना एम त्य छक् मिस्रा खन भर्ष ; त्याय स्म त्यान यणचारत्र भ्यानवक-त्यान भणाष्ट्रिक ज्यानिक छ्यात्रिक ज्यात्र ।

गत्रणांद्य छोटा एठी-द्यद्यत स्थात्र द्यस्मा

মলহার হইতে রগ-ক্ষরণ, উহার লোণা মৎশ্রের জালের স্থার ত্র্যা (কষ্ট, হিপ)

মুব্রে-যান্ত্র ।—বৃক্ক-প্রেদেশে উতা বেদনা ( পৃত্ত-বেদনা ), অধিক স্ত্রজাবে উহার উপশন ( লাইকো )।

वृक्षक-भूग , क्यांनी (calculus) निश्मन्नव कञ्चय महकारत्र भूखवाही नांनीटि पाक्ष रुपमा (वार्क, वाहेटका, ७ मिम ) वित्रक पहिवान व्यृहा ।

রাত্রিতে শ্যা-মুত্র। - প্রতিদিন রা একালে শ্যার এগোনিয়ার

গমবিশিষ্ট লোভিত বৰ্ণ প্ৰভূত মূল-ভ্যাগ; অধিক কাৰ্য্য করিলে বা অধিক বেলা করিলে,ও উত্তাপ বা শীভলভার আভিশয়ে উহার বৃদ্ধি; স্থাপেকা স্থানিঝাচিত ঔমধ নিক্ষল হইলে: এবং সাইকোসিদ-দোমের পৃথ্য-বৃত্তান্ত আই উষ্ধ ব্যবস্থেয়

মূত্র ভাগে কালে মূত্রাশয় ও অন্বের যন্ত্রণা-পূর্ণ সুস্থন।

জনন–য্ক্রা ৄ—খ ঽ অভি গণিন, সংখড, প্রাস্তুত, রজঃ। রাজের দাগ সহজে ধুইয়া উঠান বার না (ম্যাগ-কা)

জরায়্ব বক্তপ্রাব।—বিরম্ধ কালে সপ্তাহ পর্যান্ত মালিন সংঘত মূর্যার রাজের প্রবাহ, নাড়িলে চড়িলে হড় হড় করিয়া রজপাত ; তৎসহ জরায়্র উৎকট সোগ

माज्ञण त्रष्ठश्म्ण, ज्ञाञ्चम উপসেत्र मिटक काकर्यण अवश् छागव दवमनात अस्त्रल ७ मक्त्र त्रुष्टम ; छागव-दवमनात्र छाम भनवम दक्षांन व्यवस्थ छोभ निटक हम

ভগের ওঠের ও বোনির দারণ কপুমন, চিন্ত করিলে উহার বৃদ্ধি প্রান্তি। স্তন ও ভন-বৃস্তে স্পর্শ-দেষ

(ঋতুকালে) স্তন্ধরের বিশেষতঃ স্তান-রুজ্যের স্পর্শের সদৃশ শীতলতা, শরীরের অ্যশিষ্টাংশের উফ্ডা

শ্বীস্যান্ত্র |—শাস-কাস — এপিয়টিসের ছর্বগভা বা আকোণ বলতঃ খাস-রোধ; অর-যন্ত্রের এরূপ অবরুদ্ধতা যে উহাতে বায়ু প্রবেশ করিতে পারে না, কেবল মুথের উপর ভর দিয়া শয়ন করিলে এবং জিহ্না বাহির করিয়া প্রাথিগে উহার উপশন

প্র-যন্ত্রে ক্ষতবৎ স্পর্ল-ঘেষ

খাস-ক্ষত্ত, ও আক্ষন অহভব; অনারাসে নিখাস গ্রহণ করা যার, কিন্ত প্রাথাস পরিত্যাগ করিতে পারা যার না (ভারু)।

কাস — শুক্ক, অনিরত, উত্তা কাস, যাতনা, বোধ লা যেন শ্রয়ম হইতে। বৈশিক্ষ ঝিলী ছিডিয়া গিয়াছে; পিপার মধ্যে কাস দেওয়ার ভার গভীর শৃতাগর্ভ কাস; রাজিতে, মিইস্তব্য আহারে ও শরন করিলে, উহার বৃদ্ধি; আমাশ মের (stomach) উপর ভার দিয়া শরন করিলে উপশম।

নিষ্ঠীবন — সাওলাল, ফেণিল। ক্ষা ক্ষা ক্ষা, সবুজ বর্ণ ভিজে, গোলার স্থায় নিষ্ঠীবন, আঠা আঠা কফ, অনায়াসে তুলিয়া ফেলিভে পায়া যায় না। क्षाक्रम क्षम-स्मित्र क्षाप्र कोश (यहना ।

পৃষ্ঠ ও (तर्रु-भोषा । ---- ध्वर्षा ध्वरत्रत्र वावधान-श्रूष शृष्ठ-रवमना , मयज रमक्रमर्थ गद्यागिधि ग्रार्थ-रवस ( हिनि-मण )।

দারণ আলাকর উত্তাপ, ঘাড়ের পিঠে উহার আরম্ভ এনং নের্ফাডের নিম পর্যান্ত সম্প্রদারণ, তৎসহ আফুঞ্দ বা শুরুতা, অল প্রদারণ করিলে উহার বৃদ্ধি

স্বংশের বাহের শিংস-দেশের আমবাত ; হাতের আফুল পর্যাপ্ত বেদনার প্রানারণ, স্থাবনে বৃদ্ধি (দ্বিদ্ধা, ভাল বাম, ফির)

কটিলেনীয় কশের কায় (lumber vertebrae) বেদনা ও অপর্শ-ছেব।

কিক স্থি ( saci tim ), কোকিল-চণ্-অস্থি ( coccyx ) এবং বজ্জাণ-পৃষ্ঠে ( back of hips ) বেদনা, চারিদিকে এবং অজ-প্রভাজের নির্পাত্ত উহার্ সঞ্চরণ ।

কুচকী হইতে জামু পর্যান্ত ও কল্মাবনে বেদন ; কেবল হাঁটিগার সময় বেদনা অমুঠুত হয়।

क्ष्यम्बर्धस्यस् क्ष्मस् भीरमम् छोम् छोम् द्यांध्रम् ह्यांदिक व्यक्तिमम् व्याभ्राम् द्यांध्रम् ह्याः ख्रान्याः व्यक्तिमा व्याहरम्।

निशाण भाषाविध्य त्यमना करत, छेश्यक निर्मात्र व्यक्तिवस्कका भरता।

জজ্মান্তর ও পদবয়ের অত্যন্ত অন্তর্গতা (बिक्)।

তिपिए मधीमाछ अध्यारम जन्मा मरत्र छ बाङ्बरम छत्रक्षत्र गञ्जना।

অঙ্ঘাদ্যে বেদনা, শ্যায় উহা ছির রাখিতে পারা যার না, আজু-সংযয় পরিত্যাগ করিলেও নিজা যাইতে শরীর শিথিল করিলে বেদনার রুদ্ধি।

জ্ঞ্যা ও পদের এবং হাত ও বাছর সমুধভাগের শীতলতা।

ভারতার শিরার ও পদের গ্রন্থিতে আকর্ষণ ও আকুঞ্চনবৎ অনুভাব ; জভ্যাপৃষ্ঠে ও পদতেলে থদ্ধী ( কুপ )।

হাটিবার সময় ওল্ফ সহজে খুরিয়া যায় ( কার্কো-এন, পিড)।

र्पेड-श्रीरम्त क्वांता, खेश जनावन वाविष्ठ ७ शोथात याजान शास रहेर्ड हेव्हा (गाक, गण)।

ক্ষত্যি এবং বাহুতে সাৰু শক্তির প্রায় সম্পূর্ণ বিলোপ। অত্যন্ন সাজ প্রয়াসে উহার অবসমতা।

শিরীরেব প্রত্যেক স্থির বেদনা-পূর্ণ গুরুতা।

হাতের আগুলেন হন্ধিন বিস্তৃতি; পূর্বেরর অগুনীর স্থাইন ও শ্রনীতিতা; ওড়ম্ডার শ্বীততা ও বেদনাবিশিষ্ট গুরুতা; পারের গোড়াপার এবং গোলানং স্থানের অভিশয় স্পর্শ-থেই; বায়ু কোবের গ্রায় ইকল মন্বি শ্বীততা।

উপচয়।——রোগের বিষয় চিন্তা করিলে ( হেলন, অন্তর্নদা); উপ্তাপে, আবরণে; প্রসারণে; রড় বণকাপে, অত্যন্ত মাত্র স্থানিলে; মিইজন্য সেবনে; দিবালোক হইডে স্থ্যান্ত পথান্ত ( সিফিন্ন বিপরাত ); বৃদ্ধি।

উপশ্য |---সমুদ্রকুলে (ভাটের বিপরীও); আমাশয়ের উপর ভর দিয়া শয়নে ও আর্ত্রকালে (কট ন্ম); হাস

সাস্ত্র ।——( > ) শুক্ষ কাসে, ইপির সহিত; হিমাজে, সিকে, ক্যান্দ, ট্যাব ভিরের সহিত; বিচরণে অসমর্থতাম, পিক-এসি, জেলসের সহিত; এবং প্রোভঃকালীন অভিসারে, এলো ও সলফের সহিত সমগুল সম্ভূন ( ২ ) সলফারের পাশুরের লালা এবং জিফের পদ ও জ্বার অস্থিরতা উভয়ই মুগাণ্ড মেডোরাইনমে পাওয়া যায়

### মেনিয়ান্থিশ।

(Monyanthes)

সিক্ষোনা ও কুইনাইনের অপব্যবহারে-জনিত রোধ্যে মেলিয়াছিন উপযোগী। শীতাবস্থার প্রাধান্ত বিশিষ্ট জর; উদরে ও হাত-পায় দারণ শীতাম্ভব (ভিরে)।

অনেক আক্রমণের পূর্বে বা সহযোগে, যেন কোন প্র্যটনা ঘটিবে ছাৎ-পিডের নিকটে এরপ উৎক্ষণ্ঠ। অমুদ্রব।

শিরংপীড়া — উর্দ্ধ হইতে নিম্নদিশে মস্তক-শিথারে প্রাচাপন, ছাত দিয়া শক্ত চাপ দিলে উহার লাঘ্ব (ভিন্নে); প্রতি পদ-বিক্ষেপে থেন মন্তকের উপর কোন গুরুভার চাপিত হইতেছে এরপে অনুভব (ক্যাক্ট, গ্লন, ল্যাক্ষ), উপরে উঠিবার সময় বৃদ্ধি (ক্যাক্ষ); সচরাচর শিরো-বেদনার সহিত হাত পায়ের বর্ষ্ণবং শীতশতা (ক্যাক্ষ, সিপি)। নাগা-গুড়ে; বাহুদ্যে ও হস্তাস্থাতে; অনিথিলেন্তা (tension) অধ্জেও আন্তি (tension) অন্ভব।

উপচয়। - স্কাঞ্জিলে; নিশাসকালে; শ্বন ক্ষিণে; বৃদ্ধি। উপস্থায়। --শত্ৰিল-চড়িলে ও আক্ৰাপ্তস্থানে চাপ দিলে; হ্ৰাস

সাধ্যা। (১) ক্ষান্ত, ক্যান্ত, জেল, নিপি, ম্যান মি, ও পারিসের সহিত্ত তুলনা হয়। (২) মেনিয়াছিদের পরে ক্যান্তা, লাই, গ্লম, প্রাম, ভির, ভাল থাটে

# (मिलिलिडिंग अन् या।

( Molilotus Alba)

রতা-সঞ্চয়, রক্তেত্রাবে উহার উপশম। শরীরের কোন অংশের বা যয়ের রক্ত-বহানাড়ীর রক্তপূর্ণতা

রজে-সঞ্চয় এনিও বা স্নায়ণীয় প্রাণ শিরংপীড়া নাকদিয়া রক্ত প্ডিলে উহার শান্তি (বিজ্ঞান, ফেনি ফ্স, মাধ্য দল)।

টম্বার (convulsions) --- লারবীয় শিশুদিবের দক্ষোজেদ-কালে টম্বার (বেল); শিশুর আব্দেপ, ত্বরিভাক্ষেণ (colampsia), অপত্যায় (epilepsy)

প্রাণাড় জারজ মুণমগুলসহফারে ধর্ম-বিষয়ক বিয়াদ; উলাদ, প্রাণমাবস্থায়, মজিজের প্রচাপন ও উপদাহ প্রাণমনার্থ

নাগিকা হইতে রক্ত-গাভের পূর্বে সুখসওলের প্রগাঢ় আর্-ক্তো ও উদ্বীপ্রতা এবং ক্যারটিড্ ধমনীর দপদপ (বেশ);

प्रक পড়িলে मर्सियोग गांशि।

প্রত্যেক যা হইতে রজ-পাতের পূর্বে মুখ্মগুলের **অ**তিশ্য

কোন্তবিদ্ধতা — আরাদে ও যাতনার মল নিংসরণ, মলহারের আকুঞ্চন; দপদপ ও পূর্বতা; ক্ষমিক মল সঞ্চিত না হইলে মল-ত্যানের ইচ্ছা পরি-শৃত্যতা (এলম)। উপচয়।—ৰাজ-ৰ্ষ্টির স্থাগনে; র্ষ্টি-কালে ও পরিষ্ঠনশাল ধ্রুতে বৃদ্ধি

সম্বাদ্ধ |— (১) শিরংপীড়ার পর নাসিকা হইতে রক্তণাতে মেনি গোটংসে, উপকার না দশিলে, এমিল ও এন্ট-জুডের সহিত এবং রক্ত-গণ্য জনিত শিরংগীড়ার, আরক্ত ম্থমগুল, উত্তথ মন্তকাদি লগতে বেল, গ্রম ও প্রাক্তের সহিত উহার তুলনা করা যায়

### ম্যাগ্নিশিয়া কার্ববিণক।।

(Magnesia Carbonica)

যে সকল ব্যক্তির, বিশ্বেতঃ বালক-বালিকাদিনের কোপন প্রান্ততি, সায়বীয় বাতু (ক্যাম) ও সমস্ত শরীরের অম গ্রহ (রিডম) তাত্তিদের পদে এই উষধ উপযোগী।

সমতা » রীর, বিশেষতঃ জভ্যা জ পদ্ধর প্রান্ত ও ব্যথিত অমুভব ৷

विद्यार्य भाग्न-भूटणत दयसमा, वांभणार्थ काशिका (करण ---- एकिन लार्थ बाधिका, मार्ग-क); विश्वामकाटण दमस्नात्र क्षमश्रका, क्षेत्रित्रा देखका देविक एम; श्रक्षीयकाम् एस्ट्रायसमा, बाबिटक वृद्धि

मछत्कत्र भिषत्र श्रांटम हूण होनांत्र छात्र (यमना (काणी-ना, गम)। ध्रीकि कृष्ठीत्र मध्यादर मध्य मध्यप्त छेशहत्र (यक्त जक मधीर शूट्य छोण त्याप (क्रेनी, कीणी-स्व))

बार्त भूर्य गणा-पापा ( णांध-कान ), खानवप (वंधन , कर्डनवर डिमम द्र्यमा, शृष्ट-द्रयमा, धर्मणडा, मोड, द्वर्यमा द्रा द्विट्ड वा भागिड व्यवस्थित क्रिक्ट जिल्ला जिल्ला है। दिवान मार्थ क्रिक्ट जिल्ला जिल्ला है। दिवान मार्थ क्रिक्ट विश्व जिल्ला जिल्ला ।—विश्व क्रिक्ट (क्रिक्ट), मिला ) ; विमारी, मिला, मार्थ क्रिक्ट विश्व क्रिक्ट (क्रिक्ट) क्रिक्ट भाग विश्व क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट भाग विश्व क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट भाग विश्व क्रिक्ट क्र क्रिक्ट क्र क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्र

শুটিশা-ধাতু-বিশিষ্ট পিতামাতার সন্ধানসন্ততিদিগের মাণ্স আহি সের অতিশয় আকৃতিশা। अजिमांत अवव्यातन शृद्ध कछनन छैमत-दामना थिछ छ्छोत्र मछोद्ध निम्नमिङकाण छैरात छैपश्चितः <u>छाङ्गप्रा</u> शृद्धुत्तत **छालात गर्छ,** जातुक्त, द्वानिल ग्रह्म ; मटण भाग भाग हिस्स छ। प्र अछ छाममान मृष्टे रम ;

স্তম্পায়ী শিশুদিগের মলের সহিত আজীর্ণ আবস্থায় ছুগ্ধ নিঃসারণ।

অত্থিকর নিজা, গুমাইতে যাইবার সময় অপেকা পুম হইতে উঠিবার সময় অধিকতর শান্তি অমুভব (ভ্রাই, কোনা, হিপ, ওপি, সলফ, টিউব)।

উপচ্য —শীজনতার; গায় প্রবাহে; বাতাতপের পরিবর্জনে; স্পর্শে; প্রতি তৃতীয় সপ্তাতে; বিশ্রামে; এবং ধতুকালে প্রধানে; ব্রন্ধি।

উপান্য। তথ্য বায়তে হাস, কিন্ত শ্যার উষ্ণড়ায় র্দ্ধি (শিন্ত, মিউর ত্রাস উষ্ণড়ায় হাস, আস )।

সম্মান্ত্র ৷--ক্যানোমিশার সহিত কর্পুরক সম্ম

## ম্যাগিশিয়া ফসফরিকা।

( Magnesia Phosphorica)

कीवकाम, भीव-८षष, फल्भिम भाग-ध्यमम ; मिनमर्ग म्थामिक विभिन्ने याकिभिराम भरण करे केमम উछम উপযোগी

শারীসের দিফিণ্ডাগোর রোগ; মন্তক, কর্ণ, মুথ্যথাল, বক্ষঃ মুল, ডিমা-দম বড্ফণ-প্রায় (scietic nerve) ইত্যাদির পীড়া (বেল, আই, চেলি, কালি-কা, লাই প্র)

বেদনা।—তীত্র, কর্তনবৎ, গোঁচানারার মত, বিশ্ববৎ, স্থচী-বেধনের ছার, যাতায়াতে বিত্রাৎ সদৃদা (বেল); সবিরাম আবেশ-কালে বেদনার প্রায় অসহাতা বলতঃ বোলীর সলস্থারী ক্ষিপ্তভাজনক; সত্বর অবস্থান পরি-বর্তনদীল (ল্যাক-ক্যান, পলস), আকুঞ্চনবৎ অম্ভবসংযুক্ত (ক্যান্তী, আইওড, সলফ); আমালর, উন্নর ও বন্তি-গহবরের (Pelvis) পীড়ার অলুনিব্রৎ (ক্লো. কোলিন), বেদনা।

শীতল বায়ুতে, আনাবরণে; আক্রান্ত খানে শানে; শীতল হাজে পানে বা প্রকাশনে, জনজালনে, অভিনয় লাকে

প্রান্তি, ক্লান্তি ও অবসরত ; উঠিয়া বাসতে অসানর্থ্য

শীতশ জতে দাঁড় ইয়া থাকা অথবা শিতক কান ১ কাল কাল রা নশতঃ অন্তথ (ফ্যাল্ড)।

শিরংপীড়া মন্তকের পশ্চান্তানে আরপ্ত মন্তকেরপার প্রাারণ ( স্থান্ধ, বিল্লালয়ের বাণিকাদিরের শিরংপীড়া সুম্পত্তের আরিক্তা ও প্রদীপ্ততা; চিত্তবিকার, পরিপ্রম বা কঠিন অধ্যান বশতঃ উহাব উব্পত্তি; প্রায় ১০টা হইতে ১১টা অথবা অপরায় ৪টা হইতে ৫টা প্রান্ত বৃদ্ধি; এবং চাপ ও বাহিক উত্তাপ প্রদানে হ্রাস

সায়-শুল ;— ম্থমগুল, অফি-কোটরের তর্জ বা নিয়ন্তার ও দলিল পার্যের স্থায়-শুল, চিড়িকমার ও কাটার স্থায় বেদনা, স্পর্শে, শীওল বায়তে ও চাপে উহার বৃদ্ধি, বাহ্য উদ্ভাপ প্রয়োগে উপশ্য

দস্ত-শ্ল —রাত্রিতে; শীক্ষ শীঘ্র অবস্থান গনিবর্তনদাল দস্ত-বেদনা; আহারে ও পানে বিশেষতঃ শীতল দ্রখা পানে উহার স্থান্ধ; উত্তাপে প্রায়াঞান্তি (শীতলতার স্থাসঞান্তি, তাই, কফ, ফির-ফ্য)

পরিষ্ণত ফিহ্বা সহকারে আমাশবের আক্ষেণ বা গলী, বোধহ্য বেদ শরীরের চারিদিকে একটা ফিডা ক্যিয়া ঢানা হইডেছে।

छमत्र-दिवस्मा ----व्यापानि-भूग, द्यागीटक विस्नोख १०सा व्यवनक एरेसा शिक्टिंड एम ; উखान, पर्यः ७ मक होन क्यापाटन छन्म सरस्या (करनाम, ध्रम); द्याष्ट्री ७ शाष्ट्रीत दिवस्माम करणामिष्ट विक्रण १३८० ४० छेश्टम छन्माम भट्या।

थजू ।----निर्दातिक ममरशत कात्मक शृत्मि; मिन वर्ष, त्रञ्जून त्रक्रस्थाव, शृद्धि दिशमात्र जाधिका, त्रञ्ज शिक्ष शहेल कात्रेख श्रेरण উद्दात होग (गांक, जिक्क); विश्वारण्य भाग मक्षत्रभाग जोक्ष दिश्वार्थ जार्थि जार्थि जार्थ, जिल्लाम कार्य कार्य निर्देश विर्वाण स्टेश वाचिन, द्यानिम्र्यंत जार्य शिक ज्वरताथ।

শ্যা-মুর ।---স্থায় জিপাত বর্ণতঃ বারিতে শ্যা মুব; । গুর্ব গেভ্ত মুত্র: সূত্রে-মার্কে শলাকা প্রাবেশের পর।

थहो। — ५ छीच त्रम, द्वाधार निष्ठात, खन्द थिगोत वा दवहार निष्य क-मिरशत ; इस्त थरात यहा (वाजधना)

উপ'চয়। --- " বিশ্বতে; শীকল বিশ্ব ব শাল বিশ্ব শবাহে;
শীজলন লো স্থানে বা প্রাণ গলে; সঞ্চলনে এ সংপ্রে ; বৃদ্ধি

উপশ্য ।—অবনত হইষা দ্বিভাঁজ হইলো; উও থে, উঞ্চায়; গুচাগনে (আগাক্য নেদনার উত্তাগে উ শ্য, আস ) হ্রাস

সন্থা । —— ( ) বেল, কলোফা, কলোফ, গাইকে, ল্যাক-ক্যান ও লগসের সহিত তুলনা হয় ক্যাম এই ঔষণের উদ্ভিজ সমগুল। ( < ) ভপ্ত জতে মিশ্রিত করিয়া প্রয়োগ ব বিলে কথন কথন ইহার স্বোহক্ট ক্রিয়া দর্শে

# ম্যাগিয়া মিউরিয়েটিকা।

(Magnesia Muriatica)

मात्रीमिटात दर्शाम अगाय द्यामात्र महिल मरण्डे, जाटकानिक छ शिष्टितिया-व्यमिल भीष्माय, जावर त्य मकन दर्शात्र अत्वक वदमत भगान जाध्य जाध्यान्ता किरवा भिल-प्राटकाटभग जाजमान महा कत्रियाटक छ। हादमत भटक जह छ। १४६ विटम्प छ। १८११ ति

শিশুগণের আয়াসিত দক্ষোদগম-কালে চুগ্রজীর্ণ করিতে অসমর্থতা; 
মর্থ আমাশগ্রে বেদনা জনায় এবং অপরিপাচিত আকারে নির্গত হয়, মুন্তকায়,
রিকেট রোগগ্রস্ত শিশু, মিষ্টরেব্য আহারের আকার্যা

স্পার্শ-দেষ জামুত্রব, শবেদ অভিনার ক্রমুভূতি (ইয়ের, নবা, থেরে)।

भश्रदकत घर्ष निश्मत्रात्व व्यववर्ष ( को , रामित , भिष्ट ) भूग वेबदा क्रमांश्रफ ५ न दशनोत किथि ७ मश्रदकतो ; योश्रक्ष छ माश्रद जोशिद छेशोत व्यव्ह औ

পলাপুৰ কায় গৰ বিশ্বি উদ্ধান (খা গে পলাপুণ গন্ধ, চিনাণ) ইনিটিলে ও স্পৰ্শ করিলে ইন্ধতে পটাপনবং বেদনা ইন্নডের মুদ্ভাও বিষদ্ধন, দক্ষিত পাথে শয়নে বৃদ্ধি (মার্ক, কাল্) ক

কোষ্ঠবন্ধতা, রুৎৎ শক্তা; গ্রাহণ, মেথের বিষ্ঠা সন্থুশ, আয়াসে নিঃসারিত।
মলদ্বারের প্রান্ত-ভাগে বিশ্বপ্রিত; মল (এম মি, লাট-মিউ)
দক্তোদগম-কালে শিশুদিগের কোষ্ঠ-কাঠিতা।

অমূজ্রণ পীতবর্ণ; কেবণ উদরের পেশাধার কুন্থন করিলে নিঃসারিত, স্লাশ্যের ছবলতা

থাতু, প্রতি থাতু-কালে অভিশয় উত্তেজনা, রুফ্রর্ণ,সংযত রজ্জ-প্রাহ; উরু পর্যান্ত প্রসারিত আক্ষেপ ও বেদনা; ধরায় হইতে অভিরিক্ত রক্তজাব, রাজিতে শ্যায় উহার র্দ্ধি এবং উহাতে হিছিরিয়ার উৎণ্ডি এট, কলো, ধ্যান্থ)

প্রামানতে; প্রতিবার মালত্যাগ-কালে প্রায়্র আলেপ সহ-কারে; প্রাব নিংসাল তৎপরে প্রায় হইতে রক্তশাল খাজুর জুই সপ্তাহ পরে প্রদরের উপস্থিতি (বারা, বোড)।

পাদ-ঘর্শ্বের অভিশয় ৫ বণতা ( সিলি, সাানি )

উপবেশন-কাতে স্বক্ষপ ও শ্বপি ওর বেধনা, নড়িয়া-চড়িয়া বেড়াইলে উহার উপশ্য (জেল ভূগনা করন)।

উপচয়। -----রাজিতে; অখারোহতে; সমুন্ত-স্থানে ( অজিশয় হর্ণলভা) ও শীতসতার। রুদ্ধি।

উপশ্য ।—উষ্ণতায়, শ্যায়; ও ব্যায়ামে; এ স সম্বন্ধ ।— বালক-বাহি কাদিধের রোগে ক্যামোর স্থিত তুলনা হয়।

# রঃ পটি ক্সিকোডেও ন।

( Rhustoxicodondron )

আম্বাতির এক্তির (ক্ষেটি ) ৬ মে / সম ) ব্যা কর্ণগের গগে বস্টনোর বিশেষ উপযোগিকা।

ভিজিবার, বিশেষতঃ অভিনিক্ত ভানতা ইইবার নরে ভিজিবার মলফল।

टकान आम, दिन्दी वा कछता (tendo 1) मनक हैत दर्शक (छाप, नदा; वाह উर्क्त पूर्णिया दिनान वश्च मात्राम भारत कतिरम, अवर श्रीष्टाकारण महोट्ड वा ह रम भान कतिरम दिन प्रकृष खन्न छिर्देश हैत दमह मक्ष खन्न ।

भन्नीदित्र अन्तमग्र विधारनेत्र (fibrous tisaue) विक्षय आकाश्वत्त (द्वारणा, ---

महन्तानवर दिष्मा, दकान दिणा वा कखन्ना द्यन छैरान मश्मा सान रहेटल हिं जिन्ना शिनाटक व्यवस्था; राज्य व्यवस्था; राज्य व्यवस्था; राज्य व्यवस्था; राज्य व्यवस्था व्यवस्था; राज्य व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्

অভিশয় অভিনতা; উৎকণ্ঠা, থাল্ডা (এফন, খাদা); শগ্যায় থাকিতে পারা যায় না; বেদনার শান্তির জন্ম বারবার অবস্থান পারবর্ত্তন করা আবদ্ধক হা (মানসিক উৎকণ্ঠা বদতঃ অস্থিয়তা, আসা)। আস্থ্যতা, অনেকক্ষণ এক-ভাবে থাকিতে পারা যায় না

পেশীর খাত, বাম পাথের গ্রাধা ( সায়েটিকা ) ( কলো ), জ্ঞোর সহযোগে বাম বাহতে বেদ্না

আনার্ড বায়ুতে অভিশ্য অনুসূতি; "ব্যা-বস্তের নাচ ২ইতে হাড বাহিন কারণে ক স ডাম্রস্ক হয় (ব্যারা, হিল)।

त्रोजित्क काक्षित्र कामका; त्यन त्क्र विष बोख्याहेगा गोतित्व अक्षण अग्न, भग)ग्र वाक्तिक भागा गोत्र ना ।

क्षां हैवांत वा ठाँ दिवांत मध्या किर्नाष्ट्रीय, भाग । दिश्वांत विक (भाग कारण होग, विभिन्न, भाग हहेटल देवांटन छात्रिका, वार्थ)

অভি পরিশ্রম দাড় বাঝয়া, ইাভার দেওয়া ও পোডাটিক কাথো কঠিন শুম করাব স্বর্গ (ব্রাই)

মুখের কোণে ক্ষন্ত, মুখের চারিলিকে অর-জোট ( জর-ঠঠা); চিবুকে উল্ভেদ ( ক্লাট)

গিলিবার সময় ক্ষমন্বনের মধাবন্তা স্থানে বেদনা . কটিতে বেদনা ও ভকতা, উপবেশনে বা শয়নে উহার আধিকা, সঞ্চলনে অণ্না কোন কঠিন বস্তুর উপর শয়নে উহার হাস

শুখ, আরক্ত, বিদাবিজ জিহ্না : ক্রিভ্জাকাব আরক্ত অপ্রভাগ ; জিহ্নায় দস্যে দ<sup>১</sup>১<sup>০</sup> পড়ে ( ১৮৮৮, পড় )।

জিহ্বা, মৃথ-বিষয় ও গল-মধোয় গুজতা মহকাধে অভিশয় পিপামা প্রদাহিত বিমর্গিত জল-ম্বাত বাহা জননাক

টাইফযেত ভারেন আরম্ভ সহকারে অতিসার; অতিশ্য আবসমতাসহ অনিজ্ঞায় বিবেচন, মলত্যাগ কালে অজের পশ্চামাগের নিয়ে ছেমনবং বেদনা।

আরুণিত অংশের অবশতাসং পদাধাত, অলে ভিজিয়া বা ডিজা মাটিতে শান করিয়া; এবং পরিশ্রম, প্রান্ত, অপরিমিত উনিয় সেবা, কম্পত্রের বা টাইফয়েড জার হইতে উহার উৎপতি; অলপ্রভাজের আংশিক পদাধাত, অফিপ্টের পক্ষাথাত।

বিদর্গ, বাম হইতে দক্ষিণে বিদর্গণ ; ফোফাসংযুক্ততা ; পীতবর্ণ ফোষা, অতিশয় ক্ষীততা, প্রদাহ , জালা, কণ্ডুয়ন, হল-বেধন।

স্বিরাম জ্বে শীতাবস্থার পূথে ও ওৎকালে শুন্ধ, বিরক্তিকর কাস; রজের আত্মাদবিশিষ্ট কাস। ज्यम्पदार्थत महिला जान्या आखि।

छिश्राह्य । वार्ष्ण शृद्धाः भीजम, जाति कार्यः प्राविद्धः, विष्याहरः क्रिया प्राविद्धः । विष्याहरः । विष्याहरः । विष्याहरः । विष्याहरः । विष्याहरः ।

উপশ্য ।— एक भग ; एम, एम क एम, तम व । हरान, एक व छेवस जर्म , भक्षान ; जनकान পतिवर्जन ; स्थाक मक्षानम ; सम

রুগটবোর অভি-বিশেষ ধর্মণ এই যে কভিণ্য স্থা ব্যতাত বেদনা বিশ্রামকালে উপস্থিত ও বিব্যন্থিত হ্য এবং স্থালনে হ্রাস পড়ে। রুগটকা অনিত কঞ্যন ও জালা অনেক সময় সিপিয়া ধারা সম্বন্ন আরোগ্যপ্রাপ্ত হয়, কয়েকদিনের মধ্যে ফোড়া গুলি শুকাইয়া উঠে

সাধ্যন্ত্রা ।—( > ) আইগুনিয়ার সহিত অমুপুরক সম্বন্ধ । ( ২ ) এপিসের সহিত প্রাতক্ত সম্বন্ধ না ব্যাইগুনিয়ার সূর্বের বা পরে এপিস বাবহার করা অফর্ত্বায়। (৩ ) আর্গ, আই, রোড, কার্ট সল ও সলফের সহিত সমগুণ সম্বন্ধ .

## রাটানহিয়া।

(Ratanhia)

গর্জের প্রথম করেক মাসে ভয়ম্বর দক্ত-বেদনা; দক্ত দীর্ঘাভূত বোধ হয়; শায়ন করিকো বেদনা বাড়ে, তথন উঠিয়া ইয়টিতে হয়

কোষ্ঠবন্ধত ; অভিশয় কুন্তুন সংযুক্ত কঠিন নগ ; অর্থ-বলি নিঃসরণ, তৎপরে অনেককণ পর্যান্ত অবিরাম বেদনা ও মল্ড্রারের জ্বালা (সলফ); অপ্তের নিজিয়েতা; নগডাগের পর নগভাবে ও সরলাজে থেন ক্রিরে চেঁচি ফুটিরা রহিয়াছে এরপ বেদনা (পুঞা)

মল-টি-মার পর নিদার্গণ যাতনা; নরম মল-ত্যাগের পরও আশা (নাই-এসি)

স্লাদ্বশ্যের বিদ্যারণ (fissures), সরগাম্ভের অভিশ্য পর্যভূতি স্বাস্থায়িনা স্নীদিগের স্তন-রুম্বের বিদারণ (গ্রাফ, সিপি)

সম্বন্ধ । ক্রাণ্ড, কার্ব-এসি, আইরিস, সলফ ও পুজার সহিত সমগুণ সম্বন্ধ।

## রাণঃনকিউলঃস বঃরোসঃস।

#### ( Ranunculus Rulbosus )

মদিরাপানের কুফলে যে সকল ঔষধ অভাস্ত ফল গ্রদ বালঃন কিউলঃদ ভাহার অক্তজন, আক্দেশিক হিকা; মদাভাগ (বা. ium tic 1014)

দিবাঘতা; চকুর সমূবে ফুড়াটকা; অগি-গোলকে প্রচাপন ও যাতন (ফস)।

যে সকল দ্রীলোক বসিয় বসিয়া কাজ করেন তাহাদের স্কনান্থির প্রাপ্তভাগে পৈশিক বেদনা, অনেক সময় ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র স্থানে আগা ( এগার, ফ্রা ) , স্ক্র-কার্যা, টাইপ-লেখা ও পিয়ানো যাজান হুইতে উহার উৎপত্তি ( এন্ট )।

বক্ষ-প্রাচীনে স্নায়্-শূল, পেশী-শূল; অথবা আমবাত জনিত, সূচীবেধনবা সঞ্চরণবৎ, তীব্র বেদনা, আবেশে আবেশে উহার উপস্থিতি; বাতাতপের পরিবর্তনে উহার উদ্রেক বা একাশ; প্রাদাহিক প্রকৃতি, পৃষ্ঠবংশের উপদাহ হইতে উৎপত্তি (এগার)।

অতিরিক্ত উত্তপ্ত অবস্থার সহসা শর্দি শাগিয়া অথবা ক্রন্থিপ্রিন্ত কারণে উৎপন্ন প্লারিসি যা নিউমোনিয়া ( একন, আর্ব )

कष्णात्र व्याप-त्यस, याखना ७ ष्याणा ( श्राणिनि-व्याग )

পশুর্কা-মধা পেনীর বাড; ব্যক্ত স্থানের স্পার্শ-দ্রেয় ও ঘ্রাইতা, স্পার্শে, সঞ্চলনে অথবা শরীর ফিরাইলে ঘুরাইলে উহার আধিকা (বাই), আর্জ-কালেও বড়-বৃষ্টির সময় উৎপান্ত (ব্রুগ)

কটি-দক্ষ; গর্জ কা-মধ্য-পেশীর স্নায়্-শুলের পুর্বেধ বা পরে উহান্ন উৎপত্তি (মেজ); খেন্টিগুলির নীলাভ আনুতিও থাকিতে পারে

উপ্রায়। স্পর্শে, সঞালনে; বাজাতপের পরিবর্তনে, বিশেষতঃ ঝড়-বৃষ্টি-কালে ( ফ্রঃস ) বৃদ্ধি।

সম্মন্ত্র ।—(১) একন, আর্গ, ব্রাই, ক্লিম, ইউফর, ও মেজের সহিত সমগুর্গ সম্বন্ধ। (২) সলফ ও প্রাফের সহিত বিষয়-গুণ সম্বন্ধ।

### রিউম।

#### (Rhenm)

শিশুদিগের ০ থে, বিশেষতঃ দন্তোজেদ-বালে এই ঔষধ বিশেষ উপবোগী।
সর্বে শরীরের অমুগন্ধ; শিশুর গাত্র হইতে অমুগন্ধ
নিঃসরণ, প্রাকালন বা সানাস্তেও উহা দূর হয় না (হিগ,
মাগ-কা)

মল-বেগ ও অয়-মল সহকারে শিশুদিগের টিৎকাব সারা রাজি শিশু-দিগের জেন্দন ও অবলুর্ছন (সোরি)।

শিশুর অধীরতা, বহু বস্তুর আকাজ্জা, এবং জন্মন; প্রিয় ধেলার মধ্যেও আপ্রতি ( নিদা, ষ্টাফে )।

মন্তবের কেশার্ত কাংশের ক্ষবিরত প্রভূত দর্ম; শিশু নিট্রিত বা ফার্রত থাফুক, থির বা সঞ্চলিত থাকুক, তাহার চ্ল সর্বাদা ভিফা থাকে; এই দর্ম অমু বা অন্য থাকিতে পারে (ক্যান্ধ, স্থানিকি)।

দক্ষোদানে কট; মৃথমগুণের পাপুনর্ব ও গানের অস্তর্গন্ধ সহকারে শিশুর অন্তিরতা, কোপনতা ও বিরক্ত-চিত্ততা।

নানাপ্রকার থাজন্তব্যের আকজিলা কি**ন্ত** উহা থাইতে পারা যায় না, বিরাগ মধ্যে

উদর-বেরনা; এক বাহ বা ধক্ষা অনাবৃত করিলে তৎক্ষণাৎ উহার আধিকা; তেৎসহ অতিশয় অম মল; দাড়াইলে বৃদ্ধি প্রাপ্তি; মল-ত্যাগে অমুপশম।

मार्श्यः —() ) एक जम्य रहेटण अवर भिस्त गीटन बाजक वाकिटन मार्श-कात लटन जरूल्तक मधक। (२) काम, कानाम, हिल, हेलि, मार्श-का, लफ, हेगक, मनटकत महिक ममस्र मस्य। (७) मटन व्यक्ति वाकिटन वाकिट्न वालिक्न मार्शिक वालिक्न मार्शिक वालिक्न मार्शिक वालिक्न वालिक्न मार्शिक वालिक्न मार्शिक वालिक्न वालिक्न मार्शिक वालिक्न मार्शिक वालिक्न वालिक्न मार्शिक वालिक्न वालिक

### রুহোকা ক্রিক্সঃস।

(Rumex Crispus)

গুটিকা-গাত্র রোগী, ত্বন্ধ ও গৈগিক বিশার অভ্যন্ত অমূভূতি। বিমৃক্তি ব'য়ুতে অভ্যন্ত অনুভূতি; পরভান; সদ্যাকাল উহার আজিশ্যা, ঠাঞা লাগিলে আধিকা; অধের অনিশিচভঙা

গল-গহবরে তুড়তুড়ি, উহাতে শুদ্ধ বিমাঞ্জন কানের উদ্ভব শুদ্ধ, অবিরত, শান্তিজনক কাস। বায়ুর বা গৃহের পরিবর্তনে (ফস, ম্পঞ্জ); সামান্তে শরনাস্তে; গল-গহবর ম্পর্শে বা প্রচাপনে; বামপার্শে শরনে (ফস); অত্যক্তা মাত্রে শীতল বায়ু নিশ্বসনে; বাদ্ধ প্রাপ্তি; বায়ু উষণ্ডর করিবার জন্য শ্ব্যাবন্ত্র দ্বারা মস্তকাবরণ; শত্যক্ল নিষ্ঠাবন বা একেবারেই নিষ্ঠাবনের অভাব।

শীতদ বায়তে অথবা যাহাতে নিখসিত বায়্য আয়তন বা স্থয়তা বহিত হব ভাহাতে কাসের বৃদ্ধি।

গণার মধ্যে পিশুবৎ অমুভব, ঢোক গিলিলে উহার অবতরণ, কিন্ত তৎক্ষণাৎ আবার প্রত্যাবৃত্তি।

কাসিবার সময় শ্বর্যজ্ঞে ও কণ্ঠনাগীতে শ্বদর্গ অহুত্ব (কষ্ট)। কাসিতে কাসিতে প্রনিছোর সূত্র-নিঃসরণ (কষ্ট, পশ্স, গিলি)

প্রত্যকাশীন অতিসার; পূর্বাহ্ল ৫টা হইতে ১০টা পথান্ত (এলো, ফাট-সল, পত, সল); বেগনাশুন্ত, প্রভূত, ত্র্বন্ধ মল; সহদা মল-বেগ, প্রোতঃকালে তাড়াভাড়ি শ্যা পরিত্যাগ করিয়া মল-ত্যাগ করিতে ঘাইতে হয়।

থকের নানাস্থানে কণ্ডুরন; শীতলভায় উথার ব্রন্ধি, উফতায় ক্লাস; কাপড় ছাড়িবার সময়, অনাবৃত্ত হুইলো অথবা শীতল বায়ু লাগাইলোগাত্র-কণ্ডুরন (হিপ, ভাট-সল, ওলিন)।

উপচয়।—শীতল বা ঠাণ্ডা বায়ুতে শমনে ( হাইও ) বৃদ্ধি।

উপশ্য ৷—উদ্ভান শীতন বায় বজনার্পে মুখ-বিধর তাবরুদ্ধা করিয়া রাখিলে, গ্রাম

ज्ञायाम् ।----- त्रण, कष्टे, ध्रम, हाइख, मम, आंध्र महरमन महिख प्रवास क्यायाम

### রাটা থেভিওলেন।

( Ruta Graveoleus )

গণ্ডমালাজনিত অভিন আয়াভাবিক বিনর্জন; অন্ত ও অভি-বের্ছের মুইএন ও অক্সান্ত উপঘাত ; বাত-কণ্টক (sprain); অন্তি-বেষ্টের প্রাণাহ; অন্তি-ভাগ (fracture) বিশেষতঃ অন্থির সন্ধি-বিচাতি (সিন্দাই)।

পতন বা আঘাতের পরে যেরপ হয় সর্বা শরীরে সেইরূপ খৃষ্টতা ও এঞ্জা অম্ভব; অল-প্রত্যালে ও স্থি-শ্বলে উহার আধিকা ( আর্ব )।

শরীরের যে সকল অংশে ভর করিয়া শরন করা যায় ভাষাতে স্বষ্টভার স্থায় বেদনা ( খ্যাপ্ট, পাইয়ো )।

व्यव्हित्रका, भग्रम-कारण श्रमः श्रमः व्यवद्यान-পরিবর্ত্তন ( द्वःम )।

মচবিদ্যা যাওয়ার পরে, বিশেষতঃ মণিবন্ধ-সন্ধির (wrists) ও ওল্ক-স্থির (ankles) থঞ্জা (পুরাতন বাতক-টক, বোভ, টুণ)

বক্ষঃস্থলে উপদান্ত প্রাণ্ডির পরবর্তী যক্ষা ( মিলি )।

চক্ষ্য মধ্যে ও উপরে অবিয়াম বেদনা তৎসহ দৃষ্টির অপরিচ্ছারতা, বোধ হয় যেন চক্ষ্ অভিরিক্ত ব্যবহাত হইয়াছে

रण कांक्कार्या, पिका-निर्मारण, खाञ्चत्र कार्या ( छाटे-त्रि ) ; এकांबखारव पृष्टिभारक ( रमन ) हक्ष् वावशास्त्रत भन्नवश्री भीषा।

চক্ষুর অতি ধ্যবহার, মন্দ আলোকে অভিনিক্ত ব্যবহার; স্থা স্চীকার্য্য, রাজিতে অভিনিক্ত অধ্যয়ন প্রস্তৃতি হইতে দৃষ্টির অপরিচ্ছরতা বা গ্রবগতা, কুন্মাটিকাবৎ ঝাপসা দৃষ্টি, মূরে সম্পূর্ব অম্পষ্টতা। চক্ষুর জালা, বেদনা ও অত্যাকৃষ্টতা (strained) অনুভব;
আগ্নির গোলার স্থায় উত্তপ্ততা; নাচের অক্সিগ্টের আক্ষেণ।
উপঘাত প্রাপ্তির পরবর্তী নিশ্চেষ্টতা, বা সংঘাত বণতঃ কোঠ-রোধ (মার্ণ)
মলত্যাগের চেফা করিবামাত্র তৎক্ষণাৎ হাড়িশ বাহির
হইয়া পড়া; যৎসামালরূপে মন্তক্ষ অবনত করিলে; প্রস্বান্তে ও প্নঃ
প্নঃ বিফল মল-বেগের পর উহার উপস্থিতি

মুত্রাশার থেন সর্বাদা পূর্ণ রহিয়াছে উহাতে এরাপ চাপ অহডেব; মূত্রে ত্যাগের পরেও উহার বিভামানতা; মৃত্র-বেগ উপস্থিত হইলে আর উহা ধারণ করিতে পারা যায় না, ধারণ করিলে পরে মূল-ভ্যাগ করিতে কট হর; ত্বা, হরিধর্ণ মূল; অনিচ্ছায় মূল-নিঃসরণ।

তাঁটিল ; উহাতে স্পর্শস্থ বেদনা ; স্বরতলে চেগ্ট , মত্থা আঁটিল (ছাট-আ।, স্থাট-মিউ।---কর-পৃষ্ঠে, ডল )

পুঠে ভরদিয়া শরন করিলে উপশ্বিভ হয়:এরাপ পৃঠ-বেদনা

স্মৃত্য ।----(১) আর্থা, আর্জ্জ না, কোন, ইউলে, ফাইটো, প্রাস ও সিদ্দাইর
সহিত সমগুণ সম্বান (২) আর্থিকার পরে সন্ধি-ছলে; এবং সিদ্দাইটমের পরে
অক্তির উপদাতে রাটা আরোগ্য-প্রতিয়োর সম্বতা জ্যার।

## রোডে।ডেও ।

(Rhododendron)

বে সকল স্বায়বীয় ব্যক্তির বাড়ের ভায় হয় এবং বাহারা বজাবাতে বিশিষ্টরূপে ভীত হইয়া থাকে; ঝড়ের পূর্বে বিশেষভঃ ভড়িৎপূর্ণ ঝড়ের পূর্বে যাহাদের
ক্ষাত্রণ বৃদ্ধি পার (ক্রাট-কা, ফন, সোরি, মিলি) ভাহাদের পকে এই ঔষধ বিশেষ
উপযোগী।

প্রতিক্র পরিবর্ত্তনে, বাড়-ব্জ্র-কালে, এবং প্রবল বাতাস-কালে
উহার আধিক্য।

স্থানের তর্ণ প্রাণাহিক ক্ষতিতা; এক স্থা হইতে জন্ত স্থিতে উহার সঞ্চরণ; রাতিতে উত্তভা, বিপ্রানকালে এবং ঝড়ের সময় আধিকা (ক্যালমিয়া)

সক্ষণ অন্ধে আঘাডজনিও আকর্ষণ ও জেদনবৎ বেদনা, বিশ্রোমে এবং আর্মি, শীতলা, ঝঞা-বাত কালে উহার বৃদ্ধি (ইঃস)।

জজ্বাধ্য অমুপ্রস্থাবে না রাথিগে নিমা যাইতে বা নিম্রিত থাকিতে পায়া যায় না।

পদের অসুষ্ঠ-সন্ধিতে শাসবাতজনিত তম্বনম পদার্থের সঞ্চর সংগ্রন্থ গাউট, সাধারণতঃ গৃঞ্জন (banion) বলিয়া ভাষ জন্মে (কলচি, লিড)।

প্রমেষ্ড অথবা আম্বাত জন্ত অগুকোষের ফীতত ও দৃদ্তা (রিম); অগু-প্রদাহ, অগু যেন সংপিষ্ট হইতেছে এরূপ জন্তুত্তব ( অরু, ক্যান্স)।

উপ্রয় ।-- বঞ্জা-বাজ-কালে; আঝানে তড়িৎসংজ্ঞান্ত পরিবর্তনে; ঝড়-বজের আগমনে ্ব বৃদ্ধি। বাজাসের প্রাবিদ্যো লগতানর প্রকৃপস্থিতি।

উপশাম।---মন্তব্দে বদ্ধ অড়াইরা উষ্ণ করিলে; এবং শুদ্ধ উন্তাপ প্রয়োগে ও ব্যারামে, উপশম।

সম্মা ।—প্রাই, কোন, ক্যাক, শিড, লাইক, সিপি, ফ্রাসের দহিত সম্ভণ

## नद्रामिद्र महम।

(Laurocerasus)

শ্বণালে বার্-প্রবাধ ক্ষণিত শীতগতার জ্ঞার শীতগতা।
গগ-নলী ও অন্তের অভ্যন্তমে বাইবার সমন পানীর প্রব্যের শক্ষ জনা বার
অধিকাংশ রোগের সহিত বেগনা-পরিশৃক্ততা ( দ্রাম )।
জীবনী-শক্ষির ক্রন্ত অবসাধন সংবৃক্ত রোগ ( ক্যান্ড, ভিরে )।
প্রতিক্রিয়ার অসম্ভাব, জীবনী-শক্তির বলের অভাব, বিশেষতঃ বৃক্তঃশ্বনের
লোগে; শ্বনিশান্তিক ঔবধেক ক্রিয়া ধর্মেনা।

कारमक्कार्योगे मुख्यांत्र कारयम्। कारात्राटक ७ मकाकारण क्रमगा निसालका।

# লাইকোপোডিয়ঃম।

( Lycopodium )

याशास्त्र वृद्धितृष्ठि छाणत, विद्य भन्नोत्र छ्वान, भन्नोत्त्र छिद्दारभ नीर्ग, निमारभ जर्द-(भाषठाण ; याशासा क्रांगकाम अवर क्रमक्ष्म छ यक्षरकत्र द्वांगळावन (क्रांक, क्रम, जन) ; डाहारमत्र भटक जर्द वांगक छ युष्ट्रम भरक जरे छेयम ममधिक छै।

গাঢ়-মূল, ক্রমশঃ বিবর্দ্ধনশীল, পুরাতন রোগ।

প্রধানতঃ দক্ষিণ পার্শ্বে প্রচাপন ও আফর্যণবৎ অবিরাম বেদনা, অপর হ ৪টা হইতে ৮টা পর্যান্ত উহার জাতিশযা।

রোগের দক্ষিণ পার্শের আজেণ্ডি, অথবা দক্ষিণ ইইতে বাম পার্শে গতি, গল-মধ্য, বক্ষঃস্থল, উদর ও ভিদ্যাশয় সকল স্থানের সোগেরই এইরূপ প্রকৃতি

মুর্বাল শীর্ণ শিশু ; সুবিকলিত কিন্তু সুন্তা, রাগ শরীর।

भिश्व मात्राप्तिम काँ। म, मात्रात्राजि पुगाम ( प्याम ७ मात्रित्र विभन्नी ७ )

खत्र, त्यांग, प्रथ किश्वा मश्ख्य जामखष्ठि मश्यूका देवत्रक्ति व्यमिक व्यक्ष (क्षेत्र)।

भाषो, खेमतिक, क्रणण (षयो, खीय-प्र**ष्टां**य (यांश्री

क्षिणमण्डा, निजा एहेट्ड खांशत्रनाट्ड णन्त्रांशिष्ठा वित्रक्षित्रका; क्षिण्या क्षण्या क्षण

সমস্ত দিন অশ্রুপাত, সোগিণী আপনাকে প্রস্থিয় করিতে পারেনা ; অতিশয় পুরুত্তি, ধস্তবাদ দিলেও জন্মন।

মুষ্য-ভীতি; নির্জনতার ভয়। একাকী থাকিতে ভয় (লিলি, বিস, কালী-কা)।

পাঞ্র, মলিন, অরহ মুথাক্তি; নাসা-পার্মের পাথার ভায় সঞ্চ-জান (এন্ট-টার্চ ডেইবা) রোগীকে ব্যাক্তম অপেকা অধিক বা দেখার। প্রতিখ্যার; শুদ্ধ প্রতিখ্যার, রাণ্ডিতে নাশিকার অবরুদ্ধতা, মুথদির খাস-জিরা সম্পন্ন করিতে হয় ( এস-কা, নকা, শুন্ধ); অবরন্ধ নাশিকারার কাই সশব্দে খাস্ফিয়া, নাশিকা, নাসামূল ও তৎসমূথবর্তা গহরর ঘর্ষণ করিতে কারতে শিশুর নিজা হইতে চমকিত হইয়া উঠা, নাসা-রন্ধে চিপিটিকা ( কালী-বাই, টীউক)

ডিণখিরিয়া; গল-গহবরের ঈয়ৎ কণিশমিশ্রিত লোহিত বর্ণ, ক্রজিম ঝিলীর বামদিক হইতে দক্ষিণ তালু-মূলে প্রাসারণ, অথবা নাসিকা হইতে দশিণ তালু-মূলে অয়তরণ; নিজাত্তে ও শীতল পানীয় দ্রের্য পানে আধিকা (উষ্ণদ্র্যা পানে আধিকা, ল্যাক)

সকল বন্ধরই অয়াসাদ; উদগার, বৃকজালা, মূথে জল-উঠা, অয় বমন (জ্যের শীত ও উত্তাপাবস্থার মধ্যে)।

কুরুরবৎ ঘন ফুধা; রোগী যতই থাম ওতই থাইতে চাম; না থাইলে মাথা বেদনা করে।

আমাশরিক রোগ; — অতিশ্য় বা্য়ু-সঞ্চয; সর্বদা পরিভৃত্তি অর্ভব; উত্তা কুণা, কিন্তু করেক গ্রাস আহার করিবামান্ত কণ্ঠ পর্যন্ত পূর্ণতাকুত্তব (উদ্যান্তে পূর্ণভার হাস না হইলে, াসক্ষ), রোগার উদর স্থীত বাধ হয় ও পেট ভাকে নিম উদরই বিশিষ্টরূপে আকোন্ত হয় (উর্দ্ধ উদর কার্মেন-জে সম্রা উদর, সিম্ম)।

বরঃপ্রান্তি হইতে; শেষ-প্রান্ত কাল হইতে ও গৃহ পরিত্যাগ করিয়া স্থানান্তরে গেলে কোষ্টবন্ধতঃ; শিশুদিগের কোষ্ট-কাঠিছ; বিদল মল-প্রবৃত্তি,মলত্যাগ-কালে সর্বাজ্যের আফুর্যন ও বহির্গমন ও অর্শেয় বিকাশ

মুত্রে লোহিত রেণু; শিশুর শ্যাবন্ধে গোহিত রেণু (ফ্ন); প্রজাব করিবার পূর্বের শিশুর ক্রন্দন (বোরা); মূলতাাগে পৃষ্ঠ-বেদনার শান্তি।

ক্রতিম-গৈগুন ও অতি-নৈগুন বদতঃ যুবকদিগের ধবদভদ; উপস্থের ক্ষতা,
শীতগতা ও শিথিলতা; বৃদ্ধদিগের প্রবল লিগ্যা কিন্তু উপস্থের
অসম্যক্ উথিতি; নৈগুন-কালে নিজিত হইরা পড়া; সকালে ওক্রনিঃগরণ

যোনির শুফ্ডা; গৈণুন-কাজে ও তংগণে ওলাত আলা (লাইসি), ক্যাসুর বাতাথান ভজ্জভ মৈণুনের প্রতিব-কলা

প্রতিবার মলভ্যার কালে জননে নিয় হইতে রক্তপাত

ক্রবের পা উপরে উবি ১ হং । উল্লেখন বং গতি জ ক্রতেন্তে প্রভিনির এক্সপ্র অমুভব।

पणिविभारतित अञ्च वृष्टि (her i), अञ्चव छिव द्वारो, विष्ट युक्तः वास्त्रकः विभिन्न विकास के छैवर । आदिवास विकास

উপেকিত বা কুচিকিংসিত কৃণ কৃষ প্রদান (l' cumon'), দক্ষিণ কুমদুসের
ভূমিদেশের সবিশেষ আন্তান্ততা, (আশোষণ (absorption) বা নিষ্ঠাবন
প্রাবহ্বনার্থে)।

গভীন, শৃহ্য-গর্জ (ফাঁপা) কাস, অধিক পরিমাণে শোল উঠিলেও শাস্তি কলোনা

এক পা উত্তপ্ত, অস্তু পা শীতল ( নিক্ষ. ডিঞি, ইপি )।

প্লাজিতে দুধা অহতের করিয়া ফিডা। হইতে জাগরণ ( গিনা, সোরি ),

উপচয়।----जाপताङ्क ८छ। इन्हेट्ड ५-छ। ; जारादात भरतः गीउन जारीया या भागोत्र सदा रगरस्य : विस्ट्य ७ गर्ववाङ वाक्रमवा ङ्यस्य , वृद्धि

উপশ্र ।— भैजन रहेल; यसक जनायुज क्रिला, ज्या आश्रीय जाश्या वा श्रीयीय ज्या त्या त्या व्याप्त क्रिया विषय क्रिया वि

ज्ञाश्वा ।——( > ) बादे खिखित्मन महिल कार्य्न मध्य ( २) काद, कार्या-त्स, मनत्यन पन नाहेत्का खान थात्ये। ( ० ) नाहेत्कान कार्या-त्स, मनत्यन पन नाहेत्का खान थात्ये। ( ० ) नाहेत्कान क्रिया प्रका भिक्ष मुन क मोध्यामे कहे थेयत्य खेनकान मित्र जानक करिल हेरान भूनः खातान विश्वित नत्य ( ८ ) अम्महे मान् ज्ञान ना वाक्रित भूनांकन त्यातान हिकित्मान खोनत्ख नाहेत्वा वान्यान कर्ना भेनामभीमक नत्य; खानत्म क्रिया क्रिया त्याना खोन्य खेय्य खातान कर्नाहे खान ( ० ) भनाष्ट्र, क्रिया क्रिया; जानकृत्येन यून्यान वा त्यांका थाख्यान मन्त्र क्रिया ( क्रिया); जानकृत्येन यून्यान वा त्यांका थाख्यान मन्त्र क्रिया ( क्रिया); जानकृत्येन यून्यान वा त्यांका थाख्यान मन्त्र क्रिया ( क्रिया); जानकृत्येन यून्यान वा त्यांका थाख्यान मन्त्र क्रिया ( क्रिया); जानकृत्येन यून्यान वा त्यांका थाख्यान मन्त्र क्रिया ( क्रिया); जानकृत्येन व्य

## लाइमीन।

(Lyssin)

### জল ঢালা । প্রবাহিত জল দেখিলে বা উহার শব্দ শুনিলে সমূদ্য় পীড়ার উপচয়।

জ্বাত্ত রোগ শা উন্ত কুনুরের দংশনের আত্তঃ উন্যাদ জ্বিবার আশিলা

স্ভা-ব্রণের ( wound ) দীয়ৎ নাল বিবর্ণ ( ল্যাক )

অস্বাভাবিক ইনিয়-প্রবৃত্তি জানত পাড়া ( নিরুত্তি জনিত---কোনা )।

यत्नां छोत या विव्यक्तिक मश्चारम द्वां शिव मर्याप यामावद्या श्रीखि

সুর্য্যের উত্তাপ সহ্ করিতে পারা যায়না ( জেল, মন, ল)ক, ঝাট)

টজার অত্যাজন বা প্রতিক্ষিপ্তা (reflected) **সাংলাক ও জল বা দর্শন** দর্শনে (ষ্ট্রাম); কোন প্রকার তরল পদার্থের বিষয় চিন্তা করিলে; এবং অত্যন্ত্র স্পানে বা বাষ্-প্রবাহে আংগে পের উৎপত্তি।

শিরংপীড়া তেওঁরজ ও গদরাব কৃষ্বের দংশন বশতঃ শিরংপীড়া; মনো-বিকার বা মানগিক পরিশম জনিত পরাতন শিরংপীড়া প্রবাহিত জ্বলের শক্ষে অথবা উজ্জল আকোতে উহার বৃদ্ধি।

भूष ■ शर्णात १८ण्ड्छ, अञ्ज्य काशि काशि, दक्षिण गांगा; क्रानित्रक पूर्दक्षा ( क्रिक्ष )

ग्रा-(व्यवना ; मण्ड श्रामाक त्रावन हैक्का ( मार्य-कान, भाक्त )

গিলিতে কট, এমন কি ভরণ পদার্থ গিলিতে গল-নগীয় আক্ষেপ; **জল** গিলিতে মুণ-রোম।

প্রবাহিত জল দর্শনে অনিয়ত সূত্র-প্রতি ক্যাছ, স্লুফ); চিনিস্ংযুক্ত, অন্ন আবিল মূত্র

কল (অসাধ্য স্থান বিচ্ছাতি), বহু বৎসরের জনেক রোগিনীর ক্ষারোগালাক, অপতা-পথের অভিশয় অমুভূতি, তজ্জ্জ রমণ-জিয়াম যাজনা উপচয়।--জলের দর্শন বা শব্দ, জন্দে পথর আপেকি ( দ্বীম ), ও শক্টারোহণে রুদ্ধি ( কক —শক্টারোহণে হান, নাই-এমি )

স্থায় হাইডোফোফোবিয়া এবা ৭ ও বাজি বোগে, বেং, কচাছ, হাইও, ষ্ট্রামোর সহিত সাইসীনের জ্বনা হয়।

### লিডঃম।

#### (Lednin)

আম্বান্ত ও গ্রন্থি-বাত ও রাতিতে, এবং উও মাদরা অপব্যবস্ত শরীরে এই ঔষধ উপযোগী (কলচি)

আইরিসের (উপতারা) শগ্রোপচারের পর চণ্ট্র সমূত্থের কপে (anterior chamber) রক্তশাব।

চক্ষু ও চক্ষুর পাতার স্বষ্টত্রণ বিশেষতঃ অধিক ক্ষরিত-রক্ত স্থায়। অক্ষি-পদ্ধব ও শুক্লমওলের (conjunctiva) কাশিমা

আমবাত ও আমবাত জনিত গ্রন্থিতি নিমাতে তিহার আরম্ভ ও উপরের দিকে উথিতি নিচের দিকে নামন, ক্যালমির ); বিশেষতঃ কলচিকমের অপব্যবহার বদতঃ নিজেল অবস্থায় পরিণতি; স্থিতানে বেদনামুক্ত অর্থা বা চুর্ণময় পদার্থের সঞ্চয়; তক্ত ও প্রাতন স্থিনোত

বাম শব্দ ও দক্ষিণ বজ্ঞাণ-সন্ধির আক্রোন্ডি ( এগার, এণ্ট-টার্ট, ষ্ট্রাম ) আক্রান্ত স্থানের শীর্ণতা প্রান্তি ( গ্রাম )

ভেষন, ছেমন, ও দপদপবৎ বেমনা, নড়িলে চড়িলে স্থিত্ন বেমনার আডিশ্য; রাজিতে শ্যা ও শ্যাবস্ত্রের উহাত্তায় আধ্যিক্য (মার্ক), কেবল বরফের জলে পা রাখিলে উহার উপশ্য সিকে)

যাহার। সকলে সময়েই শীতল থাকে ডাহানের অরণ, স্বিদ্য শীতল ও শীত অকুভব ্ব স্বাভাবিক শারারিক উত্তাপের অভাব ( সিণি ), আহতখান স্পাদের সবিদেয় শীতল। শ্রীয়াংশ ভাগবের স্পর্শে শীতক, কিন্তু রোগ উই শীতক অনুভব করেনা কোন কোন রোগে অজে ভতাপ ও জানা অলে বাল্যা শ্যার উষ্ণস্তা অসহা হয়

জার গ্যাস্ত গদ্ধের প্রতিতা মচকিয়া যাওয়ান মত অস্হ্য বেদনা সহকারে ওগ্রের প্রতিতা; পারের ব্যাসুনির প্রতিতা ও গ্রেপিডডা; পারের গুড়ুমুড়ার মুষ্ট্রত প্রতিতা।

০দ ও ওগ্রেশ দারু ক্তান, ক্তান ক্রিলেও শ্যার উষ্ণভার উহার বৃদ্ধি (গল, রুস)।

महत्य अग्र ७ भा गहिषया या अया ( कार्या-अ)

স্থাতা মন্ত্র, মুধিক-দংশন ( হাইপার ); প্রেক, কাটের ছল-বেধ, বিশেষভঃ মুশক-দংশন আনিভ বিদ্যান

ব্রাণ্ডিপায়ীদিগের স্থায় কুপালে ও গালে শাল পাল পাজ লা বা অটিকা,
স্পর্গ করিলে উহাতে চিটু থিট ক্রা

উপঘাতের পর দার্ঘকালস্থায়ী বিবর্ণ; রুফ ও নালবর্ণ ধান হরিদ্বর্ণ হয়।

উপচয়। — উত্তাপে বৃদ্ধি; भगात উত্তাপ मध क तिएं পারা यात्रना, मधा-माधिकाएं। উচা অসহ। হইনা উঠে, তজ্জ স भगात्र शाधा-रक्ष एकियां। দিতে হন ( गिनिन निभग्ने )। मिक्सिन नाफ्टिन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफ्टिन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफ्टिन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वित्रा नाफिटन हा फिल्म, भा कम् भित्रा द्वारा । स्वत्रा व्यवस्था । स्वित्रा व्यवस्था । स्वत्रा व्यवस्था । स्वत्य स्वत्य स्वत्रा व्यवस्था । स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य । स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य ।

উপশ্ব ।---গাল-বলোগোচনে রালিকাণে সন্ধি-স্থানের এছি-বাডজ চুর্ণময় অব্দের ভয়ানক জালার শাস্তি।

স্ক্রা — উপঘাতের দীর্ঘকালস্থায়ী ফলে কোনায়মের সহিত, এবং অভিযাতে, আর্ব, জোট, হেমে, বেলিস ও স্কুটার সহিত লিভয়েয় তুলনা হয়

## लिलियः विशेषानः ।

( Lilium tigrinum )

ভ্রমানতঃ ব মপার্শ্বেব আরু ডির (১)কি, গুরুর )

ডিয়াশ্য বা গড়াশ্রের হীড় সহবারে নোছিংর মৃতিগংকৈ ও যাজনা (শাই, মন, ডিরে), সাজুন প্রানে ড্হার আ ত্লাম

সাথার টাদিতে ডলাত্তবৎ অনুভব; মনোলাবের গোলযোগ।

চিত্রের গভীর অবসাদ; অশগতি নিবারণ করিতে পারা যায় না, অভিশয় জীরতা, ভয়পূর্বতা, ও অধিক অশুলাবিতা রোগিণীর অন্ত যাহা করা যায় তাহাতে উদান্তা।

রোগসম্বেদ উৎকণ্ঠা; লগণগুডি যাথ্রিক রোগজাগক বলিয়া আশক। করা; জী-প্রষ উভয় প্রকার নোগীতেই এই লগণের স্মান্টভা

জরায়র উপদাহের সহিত পর্যায়ক্তমে অজিসম্পাত, আঘাত ও কুৎসিত চিত্ত করিবার (এনাক, লাক-২গুন) প্ররাত্ত

কিছু করিতে ইন্ডা ব্যস্ত-সমস্ত ভাগ এখন উচো ভিলামহান হা; স্বায়ন্ত্র-শুস্তা ক্রেন্তরাজি ( গার্জনা )

জয় --- একাকী থাকিতে ভয়, উন্মাদ ও স্বজোগ জন্মিবার জয়; রোগ আয়োগা পাইবে না বলিয়া আশকা; আসের বিপদ বা রোগের আস্কা

क्रतामुत्र छेशवार व्यवना श्वान-पृत्रिक क्षतिक भिरतारवस्ता ना मानभिक्ष रत्नान् । त्रस्त्रादेवण्यमा ७ स्वर्षण्यक छेण्यार्ट

অসমান ভূমিতে হাটিতে অপারগতা।

কুন্ত কুন্ত হানে বেদনা ; সভত উহার স্থানপরিষত্তন ( কালা-বাই )।

বার বার মূত্রে-বেগা; মূত্র-ধারণা অরিলে বলংস্থলে মক্তন্সকার আমুভব। উদরে ও বভি-কোটরে কুন্থনবং আকুবেগ অনুমুভব, বোধ হয় যেন मगल गम वर्गिक कहेंगा शांकाव ( भागिक-कार्मन, गिकितम गिनि ); जन-सम होज मिग्रा উচ্চ कवित्र तांबिट छेंवस्य , जदम्स सदकक

ধ্র — মণান্দ জের পুর্বের পারা, মলিন, ছার্নার নার্নার করিব।— দ চড়িয়া বেড়াইবার সমস্ভিহা নিঃস্থত হয়; বিচরণে বিরুত হইলে রঞ্জ নিঃসরবেরও বিরুতি জ্বো (কর্ম — শানে বিরুতি, কিন্দেন,

ষ্ঠান প্রান্ধ কার্যানি হারা চাপিয়া ধরা হইয়াছে এপ্রাণার অমুভব (ক্যান্ত); বোধ হয় যেন সমস্ত রক্ত হাৎপিতে নিয়াছে, উহা বিদার্থ হইবার গ্রায় পূর্ব বোধ হয়; সোজ হইয়া হাটিতে দারা যায়না।

সমগ্র শরীরে নাড়ীর ম্পানন অন্তত্ত্ব, রজ-বহা নাড়ীগুলি ফাটিয়া ধেন রজ পড়িবে উহাদের এরূপ প্রসারিতভা অন্তত্ত্ব (ইন্সিউ)

হৃৎকল্প, বিশোভ।—শ্লাগোর ( apex ) নিকটে শান্তি, ত্রন্ততা, ও উৎকণ্ঠা অন্তব ; বাম বশ্লে তাত্র বেদনা ; রাতিতে নিদ্রা হৃইতে জাগরিত হৃইতে হয় ; নাড়ার তানিরমিত গান্ত ; হাত প শীতে ও দীতল দ্র্যার্ড ; আহারেব পরে,ও যে কোন পার্থে শয়নে বৃদ্ধি ( বামণার্থে শয়নে বৃদ্ধি, লাক )।

ধ্বলিজের ক্ষত প্রান্ধন, প্রতি মিনিটে ১৫০ ছইতে ১৭০ বার প্রান্ধন।
সর্গায়ে চাপ্রশতঃ (কল্মন্থোগে) অবিরও মল ও স্তা ত্যাগের ইচ্ছা।
ডিঘাশ্যা, গর্ডাশ্য ও পেল্বিসের বিধান-তম্বর ছবল অবস্থা, উহা ছইতে
অরায়্য স্থাবর্তন, বিপরীতাবর্তন, ও অস্মাক সংক্ষাচন (বেশন, সিপি);
প্রস্বের পর ধারে ধারে আরোগ্য প্রান্থি; তৎসং প্রায় সর্ধদাই সর্গান্তের
নিশেচইতা বশতঃ মল-রাজ্

সম্মা ।--- এটা, এগার, ক্যান্ট, হেলন, মিউরেক্স, গ্রাট-ফ্স, প্লাট, সিপি, স্পিন্ধি, ও টারার সহিত সমগুল সম্ম

# लादविलया छन्द्यको।

(Lobelia Inflata.)

পাতना हून, मोनवर्ग हमूर, यन्त्रत म्र्गकृष्टि , ও স্থাপ প্রাবণ্ডাবিদিন্ত राजिभित्रत पर २ এই উধ্ধের সধ্যোধন উপধোগিতা

আমাশরিক বিশ্বালা, অত্যন্ত বিব্যায়া ও বসন; গর্ভ-কালে প্রাতঃকালীন বিব্যায়া; আকেপিক খাস (স্থান্ত্রমা), শ্বাস-রেশ্বের আশিক্ষা-জনক শ্বাস-কৃচ্ছ সংযুক্ত কৃপশব্দ কাস।

শিরংণীড়া — বিবমিষা, বমন ও অভিশয় আগরাতা সহ আমাশরিক শিরং-পীড়া; মওতার পরবর্ত্তী শিরংপীড়া; অগরাফ হইতে এই পেহল রাজি পর্যান্ত উহার রুদ্ধি; প্রভূত ঘশ্ম সহকারে সহসা পাপুর্ব প্রাপ্তি (ট্যাব); তামাক বা তামাকের ধ্যে রুদ্ধি পাণ্ডি

ব্যন - শীতল ঘর্যা-স্রাত বদন সহকারে ব্যন; প্রাত্তত লালান্ত্রাব স্থকারে গর্ভাবস্থান ব্যন (লা ক্রনি রান্ত্রতে, মাক'), উত্তম ক্ষুধা, বিবমিয়া, প্রাভূত ঘর্মা ও অস্পাইট আবসম্বতা সংযুক্ত

#### পুৰাতন বমন।

চা যা ভাষাকের অভি-ব্যবহার বশতঃ গ্রাধি, ছবলভা ও উদরোধিদেশে এক প্রকার অবক্তব্য ভাব

সূত্র ।—নগার কমগা-বর্ণের মৃত্র ; আধক গরিমাণ গারন্তর অধংপজিত পদার্থ শাস-রুচ্ছু ।—বগাংস্থলের মধ্যভাগের আকুঞ্চন ক্ষনিত খাস-রুচ্ছু, প্রতিবার প্রস্ব-বেদনার উপস্থিতিতে উহার আধিকা, বোদ হয় যেন এডদ্বারা প্রস্ব বেদনা বিনষ্ট হয় শীতকতা সংগাইকে ভাগবা অভ্যানমানে প্রামে, সিঁড়ী বাহিয়া উপরে উঠিলে ব নীচে নামিতে উহার বৃদ্ধি গ্রান্থি ইপি)।

বেন দেহ-শাথা হইতে বগংগতে রক্ত আসিয়া উহা পূর্ব হইতেছে বগংগতে এরপ রক্ত-সঞ্চয়, চাপ অথবা ভার অহভব,দ্রেক্তবেরের ইন্টিলে উলার বৃদ্ধি। স্থাপিও বেন গতিপুত্ত হইবে এরপ অহভব, উহার ভূমিদেশে গভীর-মূল বেদনা (শিথরদেশে, শিলি)। তিকাষি — শেবরতের নিমন্তারণ ব্রিকোণান্তিতে অত্যন্ত অনুভূতি; অত্যন্তা স্পার্শ, এমন কি নরম বালিশের স্পার্শ পর্যন্ত সহ্য করিতে পারা যায় না; কাণডের স্পর্শ পর্যান্ত না গাগিতে গারে এজন্ত সমুধদিকে অবনত হইমা উপবেশন

পাতলা চুল, দীল বা ধুসর বর্ণ চক্ষু, আরক্ত বদন, সুস্কার ব্যক্তিদিগের মদিরাপায়িতার মদ্দফলে লোবেলিয়ার যেরূপ সম্বর্ধ এত্তিপরীত আরুতির ব্যক্তিদিগের পক্ষে নক্সভমিকার সেইরূপ সম্বর্ধ।

উপচয়। —শীতল অলে গা ধুইলে বা সান করিলে খাস-ক্ষত, এবং বেদনার মৃদ্ধি বা গ্রান্ডার্ডি অগে ( এণ্ট-জ্ড); একট্যালে নড়িলে চড়িলে; ও স্পর্যে মৃদ্ধি গ্রাধি।

উপশ্য ।---পানাতে, ও সায়াহে হাস; জতবেগে ইাটিলে বুকের বেদনার উপশ্য।

म्यास्य ।....... अणे-छोर्ड, भाग, हेलि, छार्च, खिरतंत्र मंदिक ममखन भिष्य ।

## ल्याक कानाईनश्य।

#### (Lao Caninani)

পায়ধীয়, অফিয় ও জাত্যন্ত অমুভূতি বিশি। ব্যক্তিদিগের গলে এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী।

লমণের স্থান-পরিবর্তনশীলতা, বেদনার এক স্থান ইইতে অন্ত স্থানে, সভত সঞ্চরণ (কাদী-বাই, পলস), কয়েক ঘণ্টা বা করেক দিবস পরে পরে এক পার্শ্ব হইতে অন্য পার্শ্বে গতি।

আজিশ্য় বিশ্বাজি, আন্মানস্কতা; স্বকাদি কিনিয়া ভাষা ফেশিয়া চলিয়া যাজ্যা ( এগনঃদা, এলাক, ক্ষ্ট, প্রাট )।

লিথিতে অতিয়িক্ত অধিক কথা ব্যবহার করা অথবা প্রশ্নত কথাগুলি

वाक्षांत्र मा कता, भटक्त रभम ज्यकत । अगत्र प्रश्नित रक्तिशा शालत , शार्थ वा क्षश्राम कतिर्क भटमानिर्वेभ कतिर्क मा श्री शालिश वा व्यक्ति स्वाप्त कर्तिरक भटमानिर्वेभ कतिरक मा श्री शालिश व्यक्ति स्वाप्त स्वाप

देनजान ; दािशिन यदन रुद्ध दि छोश कार्य भाष्याम छोश कर्य ना छोहोत्र दकान जाप्ताम-पद्मन छोनिक नाहे, छ दोत्र वे छम व कर्य दक्षाम खदम'यन नहें ; द्य दक्षान गृह्दर्छ (म प्यस्प्य कर्द्र क्षित्र ( एक), व्ह काकि नाक)

কোপনতা, থিটথিটে স্বভাব ; শিশু সক্ষ সম্যেট, বিশেষ্তঃ রাজিতে জেন্দ্দ ও চিৎকার করে (জ্যালা, ন্যা, গোরি)।

একাকী থাকিতে ভা (কালী-কা); মৃথ্যু-ভয় (আসা); উগাদ হইবার আশকা (লিলি), নীচের ভলায় পড়িয়া যাইবার আশক্ষা (বোরা)।

পুরাতন "নীলবর্ণ" অবস্থা ("ব্লু" কংজিশন); প্রত্যেক বস্তু এত ক্ষাবর্ণ দেখার যে উহা হইতে আর অধিকতর ক্ষাবর্ণ হইতে পারে না (গাই, পলস)।

যৎসামান্ত উত্তেজনাম ক্রোধের, অভিশাপের ও শপথের আবেশ ( লিনি, নাই-এসি ); দারুণ কুৎসিত্তা , ঘুণাপূর্ণতা

গাঢ় শুজ স্লেখা निःসরণ সহকারে মন্তর্কের প্রতিশার

এক নাস-রয়ের অবরুদ্ধতা অঞ্জনাগা-রগ্নের বিস্তৃত্তা ও জাব-নিংগরণ; এই অবস্থার পর্যারশীলতা; জাবের বিদাহিতা, নাগিকা ও ওঠের অবদরণ (এরম, মেপা)।

ডি॰ থিরিয়া ও টিন্সলাইটিস; এক পার্শ্ব হুইতে অন্য পার্শ্বে লক্ষণের পুনঃ পুনঃ পরিবর্ত্তন।

খাতু সহকারে গলাব্যথা ও কাসের আরম্ভ ও শেষ; গলায় খেত যা পীতবর্ণ তালীয় (patches) মত হাল; বেদনার কর্ণপ্রান্ত সঞ্চয়ণ।

গল-মধা।—বহিনিকে ক্পর্শ-ধেষ (ক্যাক); থালি টোল গিলিলে উহার বৃদ্ধি (ইয়ে), অবিষ্ণু গলাধংকরণের প্রবৃদ্ধি, উহাতে ব্যথিতিতা, প্রায় অসাধ্যতা (মার্ক); বেদনার কর্ল পর্যান্ত প্রায়ারন (হিল, কালা-বাই); বাম পার্যে আরম্ভ (ল্যাক)।

ডিগণিরয়ার শঞ্চিত পদার্থের (deposit), উপদংশের ওক্ষতের উজ্জ্বল, চিকাণ আকৃতি।

णाक भूमा, किल्दक्ष भूमात मित्रकृषि खरमा न ; आश्राततत्र भूदर्वक रममन भूमा भरत ७ जिल्ला भूमा ( काम, काम, मिना मारे, होन )।

উপরোর্থ দেশে নিমগত; আমাশয়ে দ্রবলিতা।

ধ্ব — নিয়মি গ্রস্মধ্যের অনেক প্রের; অতি প্রভূত পরিষাণে; প্রারশ প্রথাতে, উজ্জ্ব লো হত, আঠা আঠা, রজ্জুবৎ রজ-নিঃসরণ (মলিন, কাল, রজ্জুবৎ রজঃ, জোক) স্তন্ত্রের ফৌডডা, ব্যথিডড, এবং ধ্রুর পূর্বে ও ডৎকালে অভিশার অন্ত্রুভি (কোনা)

অপত্য-পণ ( vagi in ) হইতে বায় নিঃসরণ ( ব্রোম, লাই, নক্স-ম, ভাল )।
ত্তন — তথের প্রদাহ ও বেদনা, অভাল সংঘর্ষে ও সন্ধার প্রাক্তারে উহার
র্দ্ধি: সিঁড়ি বাহিয়া উঠিতে বা ন মিতে স্তনদ্বয় দৃঢ়র্রাপে ধরিয়া
রাখিতে হয় (বাই)।

স্তান-গুর্থ প্রকাইয়া ফেডিলার জন্ম প্রায় সকল রোকিনীর প্রেক্ট এই ঔষ্ধ উপকারী ( এসাফ ----স্তল ছগ্নের পুনরুৎপত্তি বা বিবদ্ধনার্থে, ল্যাক ভি )।

শয়নে খাস সোধ হইবে রোগিণীর এক্সণ অন্তর ; সেজক্ত ভাহাকে উঠিয়া হাঁটিজে হয় ( এম-কা, ডিভে, ল্যাক )

কোন অপরিজ্ঞাত কারণে শুভুদান-কালে ছথের বিলোপ ( এস। ফ )
বাম পার্শে শয়নে হৃৎকম্পের প্রোবল্য, দক্ষিণ পার্শে ফিরিলে লাম্ব ( টাাব )।
স্পর্শে, উপবেশন কালে প্রচাপনে, অথবা হাঁটিবার সময় ঘর্ষণ লাগিয়া সহজে
কানেনিরের উত্তেজনা ( সিনে, কফ, মিউর, প্লাট )।

হাটিবার সময় বোধ হয় যেন শুভো হাটা যাইতেছে; भग्न সময়ে বোধ হয় যেন শ্যা স্পূৰ্শ কয়া যাইতেছেনা ( এসার )

পৃষ্ঠ-বেদনা — নিদারত, আমহ্য ত্রিকাস্থি-প্রদেশের উর্ন্ধভাগে অবস্থিত, দক্ষিণ নিডম হইতে দক্ষিণ বজ্ঞান-প্রায় পর্যান্ত প্রদারিত; বিপ্রামে ও বিপ্রামান্তে প্রথম স্থালনে বিবর্দ্ধিত; পৃষ্ঠ বেদনা ( হঃস ), মন্তিকের ভূমিদেশ হইতে কোকিলচঞ্চু- অস্থি পর্যান্ত পৃষ্ঠবংশের অবিরাম বেদনা, তপ্রদর্শি বা প্রাচাপনে উহাতে অভিশয় অকুভূতি ( চিন-সল, ফস, জিম্ব )।

मध्यक्ष ।—-(>) १० म, देना, मिछेद्रा गाम, कानो वार, व्लम, मिल, ममरका मिछ ममछ मध्य (२) मधावल ध्रक ख्र य ख्र मार ए छ। द्रित मुक्त स्वाद क्ष्म हिन्द मारका (२) गाम कार्तित न व्यवस्थित मान छ। व्यवस्थ क्ष्म हिन्द व्यवस्थ (४) गाम कार्तित न व्यवस्थ हिन्द व्यवस्थ (४) व्यवस्थ मारका हिन्द व्यवस्थ कार्तिक हिन्द क्ष्म हिन्द हिन हिन्द हिन हिन्द हिन

## न्यांक ডि क्लिद्रिष्टेश।

#### (Lac de floratum)

छनकिन मणिछ एक पात्रा छात्रा विधिम ( नर्मूज ) ख दाइँछम् छिक्किम त्त्रात्त्रत्त िकिदम कत्रिम इन्हर्मण इहँग्रा हिर्मा जह जाछा दार्थ हहेग्रा छाः त्मामान छहा दामिखन्माणिक भाखार्छ नित्राच कित्राहिर्म जनः द्वासिखन्माणिक निक्षणि धर्मात्त्र छहात्र निर्माणा कित्राहिर्म जहरूक त्य स्कृत मन्दर्भ छहात्र क्री

भाष्ट्र-दक्ष्यत्र व्यक्षिण श्रे भीष (Iellex affections) महकारत भ त्ररभाषत्त्र स्माय ७ व्यक्ति विभिष्ठे दत्राश

নৈরাখা; বাঁচিয়া থাকিতে যত্নশুক্তভা, মৃত্যুর ভয় নাই কিন্ত মনিতে যাইতেছে মশিয়া নিশ্চিত ধারণা

व्यारमितिकात मदान भित्रश्मीका । --- श्री एक छितिन व व क्यारमितिका भित्रश्मीकात व्यान भित्रश्मीकात व्यान क्यारमित्र व क्यारमित्र श्रीकात व्यान क्यारमित्र व क्यार

ায়াবঃদ বিদ্যোবকঃদ ( দ্যা বায়ু গোলব )। আমাশয় হইতে গলায় যেন একটা বড় গোলা উঠিতেছে এ ও অমুভব, এবং উহ তে গাদ-বোধের উৎপত্তি (এসাফ, ক এমিয় )

ব্যন নিরপ্তর ন্যন, আহারের স্থিত উহাব কোন সম্বয় নাই, প্রাথমে অপরিপাটিত, অত ম পত দ্বা, অনস্তর তিও জল ব্যন, গর্ভাব্যস্থার ব্যন (জনক্ত্রামি সোধি )

কোষ্টবদ্ধতা নিশ্বল মল-বেগ (এনাক, ননা), শুক্ক ও সক্ত বিষ্ঠা (আই, সল), বৃহৎ, শক্ত মল, অতিশয় কুন্থন, উহাতে মলদ্বারেব বিদারণ; কেন্দ্রজনক যাতনা। (একজন জীলোকেব কোষ্টবদ্ধ রোগ ছিল, এতাহ দলবার পিচ্কালী লহতে হইত, চারি পাচ স্থাহু প্রান্ত ক্রেবারেই মল-ভাগে হইত মা, পনর বৎসর যাবৎ এই রোগ ছিল, অবশেষে এই ঔষধে আরোগা অন্মান্তিল)।

য়ৡ৽৽৽বিশ্বরিত বড়, শীতল জলে হাত রাখাতে বড়-বিশোপ (কোনা), খাজু-কালে এক গ্লাস গ্রন্ধ পান করিলে তৎক্ষণাৎ পরবর্ত্তী খাডু-কাল পর্য্যন্ত রক্ষঃস্রাবের বিলুপ্তি (যস ছুন্না ক্ষুন্ন)

অভিশয় অস্থিত, নিদ্রোহানত বলতঃ ধাঘকাল-বাাগা অত্যন্ত যাতনা ( কক, নাই-এাগ)।

কিছুক্রাহউক বালা হউক সম্পূর্ণ অবসরতা অন্ত্রন, হাটব্যের সময অতিশয় ক্লাপ্ত

অহতুতি -আবুত থাকিলেও যেন শীতল বায়ু গায় পাগিতেছে; চাদর যেন মাজ, যোগিনীয় এপ্রকার অহতেব।

শোধা - যাঞ্জিক ক্রোগা; পুরাতন যুরজোগা; ও অনেক দুর বিবদ্ধিত এল্ব্'ন্ম্'রম ইইতে উৎপদা; এবং স'বর'ন মরের পরবত্ত , সে'ব স্থোলা বা মেন-স্নোগ; মেনের অপরুষ্টতা আথি।

#### लगांदकिमिम।

#### ( Lachesis )

িল-প্রাধান বিমর্থ প্রকৃতি, মণিনবর্ণ চফু এবং আওমুহতা ও অলস্ভার তব্যভাবিশিপ্তব্যক্তি

हिनका ज्ञाह दर्शान ७ जावक हूम विभिन्नो कि ज्ञ-लाक्षीन-क्षोकूत्र नो वो (क्रम) सूत्रकात्र ज्ञालका कौन छ भौर्यकात्र वाक्ति; जन दर्शाश्चलकः भागमिक छ भागोविक পবিবর্তন-লোগ্য বাক্তিদিগের হকে, এই উষধ বিশেষ উপযোগী

নির্ত্তরজস্কাদিগের পীড়া (climatteric ailments); অর্শ, জন্তভাত, উত্তপোর্শ (hot flushes), উত্তপ্ত ঘর্শ; মুর্কাদেশে আলাকব শিরোবেদনা; বিশেষতঃ রঞ্জ-নির্ভিকাশে অথবা তৎপরে (ভাল, সলফ) উহার বিভামানতা

দীর্ঘকাল স্থায়ী শোক্ষ; ছঃথ, ভয় বিশ্বজিদ, তেম-বিধেষ বা নিবাশ তোম জনিত গীড়া ( অংশ, ইংখ, শস-অশি )

রজোনিরতির উপদেব হইতে যে সকল নারীর বিমৃতি লাভ হয় নাই, যাহারা সেই অব্যি কথনত বাহ্য-ত্ম্ব ভোগ করে নাই তাহাদের প্রেণ ল্যাক উপ্যোগী।

শিরঃপীড়া — শ্লাস্থানে ( temple) প্রাচাপন বা বিদারণ্যৎ বেদনা,
নড়িলে চড়িলে চাপ দিখে, মাথ নোরাইলে, শরনে ও নিজার পরে উহার বৃদ্ধি;
রোগিণীর নিজা ঘাইতে ভয় হয় কেননা ভাহার এই প্রাক্ষার মাথাধরা সহকারে
কাগরিত হইতে হয়

মদিরাপানের পরে; বিজ-বিকারে, বিল্পারা জানিয়মিত গাড়ু বাশতঃ; রক্ষোনিবৃত্তি কালে; মন্তকে রক্তের প্রধাবন

वागभार्थिक महार्थन व्याप ( (अरहा )

মন্তগারীদিগের শিরঃপীতা বা অর্শ ; বিসর্প বা সন্ন্যাসহোগের প্রবণতা। প্রধানতঃ বামপার্শ্বের আক্রান্তি ; তিথাশর, অওকোন, বক্ষঃস্থল, মূথমণ্ডল ও গল-মধ্যাদির বামপার্শ্বে রোগের আর্ত্ত ও দক্ষিণপ্রশ্বের্থ গতি। शना, धार्मानम, अ छेपत्त ज्ञार्टिन अजिन्म अनुपूर्ण ; शाना ना किंग धार्तिपिटक पृथ् नक्षांप भग्न क्य ना ; शाना ना छेपद्र प्राधिकारण भगानिक्ष ना शाक-नद्भम ज्ञार्म पृष्ट्य क्रिया भाग ना, छेबाट्ड क्रिया श्रीकान ज्ञास्त्र क्रिया, क्रिया क्रिया ना व्यक्तिमान नाम ज्ञाम ज्ञान-दिश्य क्रिया ना धर्षाद छन्छन् कदम ना

উদ্ভাপ ও শাংভয় আডিশয়ো আডশা ছন্মগুৱা নয়ে

সমস্ত শলাণ, বিশেষতঃ মানসিক লগণ নিদ্রোর পরে বৃদ্ধি পায়, অথবা বৃদ্ধি পাইয়া রোগাকে নিদ্রা হইতে জাগায়; বৃদ্ধি না পাওয়া পর্যন্ত রোগী নিদ্রো যায়; অল্লখা, নাক্লিড, ও বিমর্য জান, লাতে লাগরণাত্তে উহার বৃদ্ধি

মানসিক উদ্দীপনা, চিডের অবাভাবিক অবস্থা, প্রায় ভবিষাৎবাণীর স্থায় অন্তব, উদ্দীপ্ত কলনা; অতিশয় বহুভাষিতা (এগার, ট্রাম); সকল সময় কেবল কথা বিশতেই ইচ্ছা; একভাব ছাড়িয়া দিয় শীঘ্র শীঘ্র অক্ত ভাবের কথা বলা; এক একটী কথায় এক একটী গল্পের সূচনা করা।

কোষ্ট-বন্ধতা ;—-নিশ্চেষ্টতা, সরলামে ১লের অবস্থিতি, অণচ বেগশৃত্ততা ; মলদ্বারের আব্বরণ-পৌর আব্বরণন অনুতব ( ক্ষু, নাই-এসি )।

নিয়মিত সময়ে ধতু, অভিনিক্ত, অল্পকাণ খানী, খল, ক্ষাণ মথঃ, রজ-জ্বাবে সকল বেদনার শান্তি; ধাতু-কালে সর্বদাই ভাল থাকা (জিক্ক)

অর্শ ;---সন্ধারক্ষঃ সহকারে ; রজোনিবৃত্তি কালে, আকুণন বশতঃ রজ--সঞ্চলন অবরুদ্ধ ; ও উর্দ্ধিকে স্ফী-বেধ্যৎ যাতনা সংযুক্ত অর্শ ( নাই-এসি )

মূপ বা নাকের নিকটে কোন ক্ষতা বস্তু উপস্থিত হই সেও শ্বাসের ৫ ডিবন্দ-কভা; ও একটু দুরে পাথ রাখিয়া আন্তে আত্তে বাতাস দিতে বলা (ভাডাডাড় বাতাস দিতে বলা, কাধো-ভেজি)

নিপ্রিত হইয়া গড়িবামাত খাদের গুগিডতা ( এম-কা, ল্যাক ক্যা, গ্রিভি,

জাতিশয় শারারিক ও মানসিক সাময়তা স্বাহ বার ব পান, গ্রহতা ব্যতঃ জাবিরত অবসমতা , প্রাতঃ সালে উয়ার অভিময়া ( মর্ফ, টেট্র )

আংশার (cpdery), নিল বহার বোধের সভাচ (ভিছে), শারীবিব তরল গণার্থের অংগণ, ক্রব্য হৈবুন, ও তেম স্নিভাঞ্চিত অশার; ধতুকালে দেখিত এগজ ন (হিড়)।

বক্ত প্রান্ত প্রান্ত ক্রিল ক্

শ্যোটক, কাৰ্নক্ষণ, অত্যন্ত বেদনাবিশিষ্ট ক্ষতা (টান্না), দূষিত প্ৰণ,
শ্যাক্ষত; উহান মলিন, ঈষৎ নীল, বেজনি আকৃতি; উৎকটতা
অনিবাৰ সন্তাবনা

विषाक जिल्लाटिका, अभवध्यातिकाम मन यन ( भार्यका)।

সূজাশরে যেন এবটা গোলক (bill) গড়াইডেছে এরপ অমুভব পূর্ববিত্ত শরৎকালে কুইনাইন গেবনে অবরুদ্ধ অবের প্রতিবৎসর ব্যস্তকালে প্রত্যার্তি (কাঝো-ভেজি, সলফ)

श्रुक्ति, मृद्द्रश्राणि, निमध म्थाक्ति, निम-इस्त १७म, विद्रांत ७५७।, क्ष्यनं, ७ द्रान्थाना; कर्ष्ट विद्रा वाश्रित क्या यात्र अवया वाहित क्रियात ममत्र आणिक्या यात्र, ठम्म अव्याख्यात्र १७ वा क्यापारणयूप वर्ष, यात्र भीउन, च्या भीउन, च्या भीउन, व्याप्त भीउवर्ष हिरूक्त अवयाख्य (शह.), व्याप्त मक्ष्य भणावाण । शाक्ष्या प्राप्त वर्ष ।

বামপার্থে আবর্র ও দক্ষিণপার্থে প্রাসারিত ডিপণিরিয়া ও টিনালাইটিস (ল্যাক-ক্যান, সাবাড); মালন বেন্ডান আক্রাড (নাজা), উত্তপ্ত পানীয দ্রব্য পানে, ও নিদ্রোত্তে ব্রদ্ধি; গালবার সময় জতর্ল অন্সে ক্ষা তর্ল দ্রব্য গিলিতে অধিকত্র যাতনা (বেল, জাই, ইগো); গলার আক্রতি দেশিয়া ধেরূপ বোদ হয় তদপেক্ষা অধিকত্র অবসাদ।

छेश्रेष्ठ ।--- निर्धारिख ; जहा, यामत , शिर्धाना ७ शत्रम (भवन छछ ;

ম্পর্শে, প্রাত্তে ও স্থ্যাকারে, দীতোর্তাপের অত্যাধিক্যে; সুর্য্যের ভাবে; ব্যস্তকালে; ও গ্রীম্মকালে; বুদ্ধি

উপাশ্য |—উফতার হান

उन्तर्भ । (১) हिल, ॰ रे, ॰ हि शांभन महिल प्रस्लूनक मचन (२) वामि ॰ मि ल वामिन-वाभन महिल विगय-लन मचः (७) मिननाम व्यक्त क्रांटिक शिंग वान्हांटिक उट्टान लोटक विगय लिलेंडिक हेरेल लोटक मिन लाहि विश्वेष्ठ लाग वाट्टि

## ফ্যানঃম।

#### (Stannum)

মন ও শরীরের অত্যক্ত কবসমতা। আমাশয়ে নিময়ত ও স্মৃত্যতা অমুভব ( চেলি, ফস, সিনি)।

সর্বদা ক্রন্দনের ভাষ বিমর্যতা ও নিরাশতা অমুভব,
কিন্ত ক্রন্দন করিলে উহার আডিশয় ( এটি, পলস, মিপি ); প্রান্তি ও ক্র্রেলডা,
বিশেষতঃ নীচের তলায় নামিতে, কিন্ত উপরের তলার বেশ উঠিতে পারা
যায় ( বোরা । -ক্রাক্তের বিপরীত )।

শিরংপীড়া কিংবা স্বায়-শূল ( neuralgia ); মূহভাবে বেদনার শারন্ত এবং ক্রেমে ক্রেমে চরম সীমা (highest point) প্রান্ত বৃদ্ধি; অনন্তর ক্রেমে ক্রেমে ক্রাসপ্রান্তি (প্রাট)

উদর-বেদনা; শক্ত চাপ দিলে, অথবা উদর জামুদ্ধরের আড়াআড়ি রাথিখে উহার উপশ্য (কলো); দীর্ঘকৃষি; ক্লি-নিঃস্রণ।

নির্দ্ধারিত সময়ের অনেক পূথে, অভিরিক্ত প্রভূত রঞ্জলাব; ঝতুর পূর্বে বিমর্থতা ঋতু-কাঙ্গে হয়ুর অভিতে বেদনা

প্রানর , অভিশয় প্র্বালতা ; বক্ষঃস্থল হইতে দেন প্র্বালতা উৎপন্ন ছইতেছে এয়াণ অমুভব [ উদর ও বস্তি-গহবর ( pelvis ) হইতে ফ্য, সিপি ]। গাদ-এংশ, মণ-ভাগে-কালে উহার আধিক্য ( অভিদার সহকারে আভিন্যা, পড); এত সুর্বলিতা, যে বসিবাব পরিবর্ত্তি রোগিণী আসিনে (chair) পতিত হয়।

প্রাতঃক লে কাপড় পরিবার সময় কয়েকবার ব্যিষ বিশ্রম করিয়া লইডে হয়।

প্রাক্তঃকালে; ও থাজন্ব্য পাকের গন্ধ হইওে বিষ্যায়া ও বম্মের উৎপত্তি (আস, কলচি)।

গান করিবার বা শ্বর চালনা করিবার সময় ক্ষমের তিকোণাকার পেশীতে • (deltoid) ও বাছ্রয়ের বেদনা ও গুর্বালতা

বক্ষঃস্থলে অভিশয় তুর্বলতা; কথা বলিলে, হাসিলে, উচ্চস্বরে পড়িলে, ও গান করিলে উহার রাদ্ধ; এত তুর্বলতা যে কথা
বলিতে পারা যায় না।

গভীর, ফাঁপ, বিথতিত, খাস-রোধকর, কাস; কলাকর; এক এক আবেশে ভিন্তার উপস্থিত, কাস ( মুইবার উপস্থিত, মার্ক ); স্ন্যাকালে শ্যাগ্র থাকা কালীন শুক্তাস; বৃক্ষঃস্থানে শ্রাভান্তাক্তব।

व्याप्त (पेठाश्मगृष, अञ्च निधीयम) উद्दात क्रेयद भिष्ठे छ व्यवना-व्याप्त (कार्ग-व्याहे, मिशि); व्या शत, खाशमा शीख-मिक्षिण हतिवयन शूर (कार्गे, मब्ब, लाना श्य, कार्गे-व्याहे), विशंखाल निश्मत्रन ।

অরভলঃ গভীর, কর্লশ, শৃহ্য-গর্ভ শ্বর; কানিলে অথব প্লেমা তুলিয়া ফেলিলে উহার সাময়িক উপশম।

ভাপদা-গন্ধ; প্রত্যেহ রাজি চারিটার পরে ঘাড়েও কপালে; অভিশন্ন দৌর্বলাকর ধর্ম

উপচয়।—राष्ट्य, গানে, আশাপনে, সার-চালনে; দশিনগার্থে শননে; ও উষ্ণ দ্রের পানে (শীতন দ্রব্য পানে, জ্পঞ্চ) বৃদ্ধি।

উপশ্ন |—কাসিলে অথবা নিষ্ঠীবন তুলিলে স্বন্নভঙ্গের উপশ্ন; শক্ত চাপ প্রদানে হ্রাস (কলো) স্ফ্রা ।---(১) পল্টে টিলার সহিত্ত অন্তপুরক সম্বন্ধ

(২) ক্ষিক্ষের পরে, এবং ক্যাদ্য, ফ্স, সিলি, সল, টিউবের পূর্বে প্রান্য ভাল থাটে।

## ফ্যাফিদেগ্রিয়া।

(Staphisagria)

कुलिम रेमश्न ७ जाजि रेमश्न जनिज मानिजिक नक्षा।

অভ্যন্ন মানসিক সংস্থারে (mental impression) অভিশন্ন অনুভূতি; বৎসামান্ত কার্য্যে কিংবা দোষশৃত্য কথার বিরক্তি।

অন্যোর বা নিজের ক্যতকার্য্যে কটতা; উহার ফলাফল ভাবিয়া শোক প্রকাশ

ইন্দির-সেবার অপব্যবহার বশতঃ চিত্তের ঔদান্ত, বৈরাগ্য, নিরণ্ণাহ ও শ্বতি দৌর্বাল্য (এনাকা, অর, ভাট, ফ্য-এসি)।

অহলার, হিংদা বা বিরজি জনিত অর্থ

মন্দ গ্রাক্তির বাগক-বালিকাদিগের কোন দ্রব্যের জন্ত জন্দন, এবং উহা গ্রাপ্ত হইলে অসম্ভন্ন চিত্তে গ্রাপ্যান বা দুরে নিক্ষেণ করা ( ক্রিয়োজ )।

অপমানিত হইয়া কোধ সমরণ করিয়া রাথা এবং অহস্থ হইয়া কম্পিত ও অবসন্ন শরীরে গৃত্ ফিরিয়া যাওয়া ( নয়োর বিপরীত )

ক্ষণালে একটা গোলাকার বর্জুলের তার অন্তর, মাথা ঝাঁকিলেও সেই স্থানে মৃত্রূপে উহার অবস্থিতি তীত্রধার অস্তর্য নত উপদাত, শৃদ্র্যোপ্-চারের পরবর্তী উপাদাত; ছুরিকা ধারা কর্তনের তার বেধনবৎ বেদনা।

ক্বরিম মৈগুল; অভি-নৈগুল, শুক্রকায়; বিরক্তি; ছংগ, অমুচিত অগমান; বিরক্তি বা সংযত অসমুষ্টি সংযুক্ত কৃষ্টতা জনিত মনফল ( অরম )।

ন্নায়বীয় মুধ্বলতা অধিক কঠিন পরিশ্রমের পরবর্তী অবসমতার স্থাক অবসমতা। অঞ্চিপুটে বা উপরের অঞ্চিপুটে একটীর পর আর একটী অঞ্জনী, এবং তৎপরে শক্ত শক্ত স্থানের অবশেষ (কোনা, এআ)

मख-दिममा -- दाकू कि दिम मख-दाम-। , राष्ट्र कि कम १ छ छ छ । एका मार्थि परिष्ठ परिष्ठ दिम्हा हिंदिया के कि दिस्त कि दिस्त हिंदिया के कि दिस्त हिंदिया के कि दिस्त परिष्ठ है । जिल्हा कि दिस्त कि

দাত কাল, উহাদেব ভিতর দিয়া কাল কাল বেথা দৃষ্ট হয়; পরিদ্ধত কালিতে পারা যায় না; থও থও হইয়া ভালিয়া পড়ে, প্রান্তিদ্ধা কর্মেপ্র হয় ( মূলদেশের ক্ষাণ্ডারি, মেল, পুলা ), শতাদ (scurvy) জনিত শ্রীয়বিকায়)

व्यामा म ज्खाप्तरा भूर्व वाक्रिक्ष व्याप्त गूर्य ।

আমাশম ও উদায় যেন শিথিলিত ইইয়া নীচে ঝুলিয়া পড়িয়াছে এপ্লকার অমুভব (এগার, ইপি, টাবে)

তাখাক দেবনে কপৃহা।

শঙ্গজিয়া দারা সূত্যাশয় হইতে প্রান্তর বাহির করা ব ডিম্বাশয়ডেইদের পরে; ও উদর্ভেদের গরে (বিস, হিপ) উদর-বেদনা।

विवाहिला यूवलीमिरगत ; मलगार्थ ; ७ कष्टमाधा व्यम्पत्त भन्न (७मि) मूल त्वन, कालककन भराख मूल-लात्मत छात्न तिमा गांकरल ध्या , यथन लिखा व किता योग ना, जनम मूल भार्य जाना ; वक्षांपरगत मूलाभरमत मूलगामीकिष्टित जिन्मति भूल-लात्मत भन्न तिमा छ त्वन मूलाभरमत मूलगामीकिष्टित छ गर्य भूल-लात्मत भन्न तिमा छ त्वन मूलाभरमत (prolapse of bladeter) '

্ সঙ্গমেন্তিয়ের বেদনা বিশিষ্ট অমুভূতি, বাহ্য স্ত্রী-অপ্নের এডট অমুভূতি ধে উ্চার উপর বস্তের স্পর্শ দহ্য হয়না ( প্লাট )।

রুজিম মৈথুন; অবিরত রমণ-বিষয়ক বর্ণনা, সর্ধানা রতিপ্রবের ভাবনা শুক্র-মেহ; নিময় মুথারুতি; অপারাধিত, লুডিন্তে দৃষ্টি; শুক্র-পাতান্তে পৃষ্ঠ-বেদনা ও প্র্বলভা; সক্ষমেন্তিরের অবসরতা ও শিলিলভা অথবা শীর্ণভা। কাগ, কোবল দিবাজাগে, অথবা কেবলৈ আহারাস্তে কাস, মাংস আহারের পর, এবং ির্দ্ধি ও শস্ততার পর উহার আধিকা; দাঁত মাজিলে কাসের উদ্দেক

শীতকালে ক্পেণ্ড কাস সহকারে পর্যায়ক্রমে গ্রীম্মকালে সামেটিকা; তাসাকের প্রম কাসের উদ্দেক (প্রায়

পৃষ্ঠ-বেদনা, বাজিতে শ্যাম এবং প্রাতে শ্যা হইতে উঠিবার পুর্বে উহার আধিকা

স্থান্থানে; বিশেষতঃ হতোর অসুনী-স্থিতে গ্রাডজনিত চুর্ণময় পরার্থের স্থায় (কলোফা, কল্মি, লাই); স্থান্থ পূয্ সহকারে অলুনীর স্থাস্থাস্থির প্রান্থ

সারা দিন নিজাল্ডা, সারারাজি নিজাহীনতা; সর্ব শরীলে ব্যাথা। শুক্ষ, সর্পত্ত, ফুলক্ষির মত ; ও পারদ অপবাযহারের পর উৎপন্ন; ভূষর্বৎ অবিভিন্ন বা উপমাংস ( নাই-এসি, ভাবে, থুকা )।

व्यद्रत, व्याजन्मर्थन्न करत्रक भिन शृद्ध प्रश्चि म्या।

পামা (ICc.ema)।——চিপিটিকার নিম হইতে পাতবর্ণ, বিদাহী রস-ক্ষরণ, ঐ রস শালিয়া নৃতন ক্ষেতির উৎপত্তি; কোন একভান চুলকাইলে উহার ক্ষণ্ডারনের নির্ভি, কিন্তু অঞ্চন্থানে উপস্থিতি

উপচয়।—-রাজিতে; আতে, শুজাদি শুরল বিধানের অপকর
বাতঃ; কাজি নৈথুন সিবদান; কজিম শৈথুন ক্ষন্ত, তা্মক্ট সেবনে;
কাজান্ত স্থানের জন্মাত্র স্পর্ণে; মানুসিক পাড়ার, রাগ, বিরাগ, ও শোকহাধে; বৃদ্ধি।

अग्राह्म | ----( ) त्रांगनेद्दिश गर्फ व्यां क्रिक व्यां क्रिक व्यां । उर्थ क्रिक व्यां । उर्थ व्यां व्यां व्या व्यां व्

# টোগেনিয়**ুম।**

#### (Stramonium)

त्रक-द्राधाम युगक गृष्डोभिरशंत्र (स्रारशं (क्षकन, ८१ण, ), विरम्भछः (कार्त्रित्रा द्राशंद्र खंगक-वाणिकाभिरशंत शरकः; क्षवः উशांधः, ष्वत्र, क्ष क्षणार्थः; द्वीरमानित्रम् विरमय উপयोशी।

বছতায়িতা; অবিশ্রাম্ব কণা বলিতে প্রার্ম্ভি (গিন্নু, লাকি); অবিশ্রম্ভ ও অসমভ আলাগন ও হাল্য কলণ; কর্মিনুণ্ডি সহ প্রাণ্ডানা করা, বিনয় ও অনুনয় কবা।

मरकामरम्ख वेकात (नदा ---मरकाम्य, द्यम, निक्, क्रिक, ७भि); द्या। जिः, भण, ७ मर्थन मर्थन छैकात श्नक्षिकि (द्यम, णार्थम)।

আলোক প্রাপ্তির ইচ্ছা ও আসক্লিক্সা (Desire for light and company); একাকী থাকা সহা করিতে পারা যায় না (বিন); অন্ধনারে ও নির্দ্ধানে বৃদ্ধি প্রাপ্তি; অন্ধনার গৃহে হাঁটিতে পারা যায় না।

পাক্ষণিত স্থাক্তি দহ নিজ হইতে ঝাগরণ, যেন প্রথম যে বন্ধর প্রতি দৃষ্টি পতিত হইয়াছে তাহা দেশিয়া ভন্ন ফানিয়াছে।

অবান্তৰ বস্তু দর্শন করিয়া রোগীর ভরঞাপ্তি।

রোগিণী যেন ছইজন বা দ্বিগুণিত, অথবা অন্তপ্রস্থভাবে ( crosswise ) শরিত, তাহার দীদৃশ নানাবিধ কল্পনা ( পেটো )। भश्यक रणन हेळलाळा भश्य व्हेशाई विकिश्य हहेशार७ अञ्चल आग्रूजर (वार्किटे)।

প্রসারিত, সমুগত, সমুজ্জল চক্ষু; স্থবিস্তৃত প্রসারিত ক্রীনিকা, উধার চৈত্রশ্রতা, অফি ও অধিপুটের থাকুঞ্ন

শিশুকে ডিরন্ধার করিতে তাহার কনীনিকার প্রদারণ।

শী তল হস্ত-পদ সহকারে মুখ্যগুলের উত্তপ্ততা ও আরক্ততা, গগুরুষের গীমাবদ্ধ আরক্তা, মুখ্যগুলে রক্তের উথিতি; হাস্তবং আক্ষেপিক মুখ্যিকৃতি। অধিকাংশ রোগের সহিত বেদনা-পরিশুস্ততা (ভিপি)।

জনাতক, জনের ভয়, তরল পদার্থে অভ্যন্ত অপ্রবৃত্তি (বেল, লাইসি); গনার আক্ষেপিক আকুঞ্স.

গদগদভাষণ (তোতখামি); একটা কথা উচ্চারণ করিবার পূর্বে অনেকগণ পরিশ্রম করিতে হয়; কথ বলিতে অভিশয় চেষ্টা আবশুক হয়; গ্রমগুলের বিক্তি জ্যো (বোড, ইয়ে, ম্পিঞ্জি)

বালিশ হইতে মার্থা তুলিলেই ব্যন লয়ে; উজ্জল আলোক দেখিলেও ব্যন হয়।

श्वा प्रकार द्या विषय देश है । त्या विषय देश है ।

অধিকাংশ রোগের সহিত বেদনার অবিভ্যানতা ; বেদনাহীনতা, বিশেষ শশণ ( ওপি )।

निक्षाण्डा, ज्यबंह निक्षा एव ना ( ८वन, करांम, ७११ )

উপচয়।—অন্ধকারে; একাকী থাকিলে; উজ্জ্য বা চিন্ধা (chining) সব্যের প্রতি দৃষ্টি করিলে; অর্পে; নিম্রান্তে (এপিস, ল্যাক, ওপি, স্পঞ্জ); ও নিগীরণে; বৃদ্ধি

উপশ্যা ।—লোক সংগর্জে; উজ্জ্বলে আ্লিলের ও উষ্ণজার; হ্রাস।
সাহ্মস্থা —(১) বেল, কুণ, হাইও ও লাইসিনের পরে প্রায়ই থ্রামোনিয়ম
উপযোগী হয় (২) ফুলের অব্যোধ বলতঃ অরায়র রক্তশ্রাবে থ্রামোনিয়ম-

প্রক প্রণাপ-ক্ষণণের বিজ্ঞান জীয় ই মিনা বিষশ হইছে সিকোলি শীঘা ক্রিয়া করে (জর ও পচন-ভাবণতায়, পাইরো) (৩) ওপ-শন্দ-কাসে গুনঃ পুনঃ বেজে-ডোনা প্রয়োগ করাছে অভি ক্রিয়া জন্মিশে দ্বাসে ব্যবস্থ হয়

#### সপ্তলফণ্ডর ।

#### (Sulphur)

গণ্ডমালা ধাতু-দোধ-গ্রন্ত, শৈরিক রজ্জ-স্থান্ন, বিশেষজঃ যন্ত্রাজের শিরামণ্ডলীর রক্ত-সঞ্চয় প্রাবণ ব্যক্তি

যাহারা তাড়াতাড়ি নড়ে-চড়ে, সথর উপেজিত হইরা উঠে বা অবসর হইরা পড়ে, যাহাদের শরীরে রভেন্ন প্রাধান্ত, ক্ষকে বাতান্তপের পরিবর্তাদের অভান্ত অমুভূতি, এঞ্জার সায়নীয় প্রকৃতির বাজি (হিগ, কালী-কা, সোরি)।

যাহারা অবদীর্য (4Looping ) হইয়া উপবেশন বা বিচরণ করে; রুজ্মিগের স্থায় অবনত মস্তকে হাটে; এপ্রকার গণণ-কায় অবনত-শ্বয় ব্যক্তি

সাধার জ্ঞাপক রোগী দাড়াইয়া থাকিতে পারেনা; উহাতে অম্বজ্যতা অমুভূত হয়।

हमां-त्रांग-श्रांव। (भाषि) व्यापितिहहस मिना या जिन। श्रांकान व्यथ्यकि; प्रांदात भदा मर्याम् में मन्नाप्य श्रांका। अञ्चलम द्यं स्वित्व ए १६२म ; अञ्चलको द्यं वैग्वित्य ए १६२म ।

भिखिषिरंगत्र गीं जि-श्रीकां त्या या प्रांच महा ह्या वा (भोडल खल, बले-क्छ); भीर्न-भत्रीत त्रहर-छिम्त भिख; त्राजिएक अधितका ७ छेक्छका, भमांचाक कतित्रा वक्षामि दक्षणियां दमक्षा (हिभ, क्षांचि ); क्रिन्त विश्वयानका, क्षित्र महर्त्ता दक्षे भिक्तां हिक केष्ट्रस्थ दक्षान क्ष्म महर्त्ता ।

যথন কোন নোগে, বিশেষতঃ ভরণ রোগে স্তর্কতা সহকারে নির্বিশিচিত ঔষধেও স্ফল দর্শেনা, তখন স্বর্গাচর সলফার ব্যবহারে পরারের প্রতিনিয়া-শাক্ত সম্জিক্ত হয়; রোগীয় লক্ষণ পরিক্ষ্ট হইয় উঠে প্রাতন রোগে সোরি।

ভাতদে বণিয়া গিয়া সমূৎপর গগুমাকাজনিত পুরাতন রোগ (কষ্ট, সোমি) পুনঃ পুনঃ প্রত্যাক্ত রোগ; (মজোমোগ, প্রদয়াদি); মোগ যথন

বারবার প্রত্যাবৃত্ত হয় তথন রোগী যেন প্রায় হস্ত হইতেছে এরূপ বোধ হয়।

চমূদ, বাদাঃ, লাক, উদান, ডিম্বাশায়, বাহু, জজ্বা প্রাভৃতি এক এক অলে ; কিম্বা রজোনিবৃত্তি কালে শরীরের কোন যন্ত্রে উৎপন্ন অর্কানিতে রক্ত সঞ্চয়।

মন্তক-শিথবে; চল্চে আরক্তা-পরিশৃত মুধমন্তলে, মুধ-বিবরের ফোলায়; প্রথমে দক্ষিণ দিকে পলে বামনিকের গলকোষে; আমাশরে, সরলাত্ত্রে; কর্দ্ধন-শাল আশবলি, ও বিদাহী মুগ্র সহকারে মলধারে, অগ্নির ক্রেকুল ভরজের অল্রেগ (আসাঁ); বক্ষঃস্থলে বদন পর্যান্ত উথিত; তাপাবেশ সহকারে সর্বা মারীরের ত্বে, ও ক্রাহিন্রের মধ্যবত্তী ক্রে ক্রে স্থানে (ক্স), জ্বালান্ত্রত্ব।

অবসাদজনত ও দৌর্বাগ্যকর (ভাগ); এবং উত্তপ্ত মন্তক-শিবর ও শীভ্য পদ সম্বলিত; প্রতি সন্থাহে বা প্রতিপশ্যে প্রভ্যাগড; সব্যন শিরঃপীড়া

মন্তকের মধ্যস্থালে সভত উত্তাপ; দিবাভাগে পদদ্দের শীতগভা, বাজিতে পদত্তের জ্বালা, গদ-তল শীতল ফলে রাথিবার চেষ্টা (গাল, গ্রানি), শীতল করিবার অন্ত পদ্বর শ্যার বাহিরে রাখিতে হয় (মেড), রাজিতে অব্য - পৃষ্ঠে ও ০দ-তলে ধ্রা

দিবাকালে উত্থাপাবেশ, তৎসহ হর্ষগতা ও প্রান্তির আবেশ,গাজের অল্ল অল অর্থ উত্থা অহমানে উত্থার অবসান।

রক্তে যেন ফাটিয়া বাহির হইবে ওঠাধরের এপ্রকার উজ্জ্ব আরক্তা (টিউব)
পূর্বাহ্য ১১টার সময় আমাশয়ে মর্বাগতা ও শৃক্ততা অমুভব (১০ টা বা ১১টার
সময় শৃত্যতামূভব ও আহারে উহার শান্তি, ভাট-কা); অলথাবার সময় পর্যন্ত
অপেকা করিতে পারা যায়না; নিবাভাগে বার্যায় মর্বাগতা ও প্রান্তির আবেশ
( জিম্ব তুলনা কর্মন )

ছই প্রহর রাজির পরে বেদনান্ত যাওদার, অতি প্রভূত্যে শ্যাত্যাগ করিয়া তাড়াতাড়ি বহিদেশে যাইতে হ্য (নলে, দারি); বোধহয় যেন অন্ত অতিরিক্ত হ্নান হইরা গড়িরাছে যে, উল্লেখ্য আমের (contents) ধারণ করিয়া বাবিজে পারেনা

কোঠ-কাঠিত; শক্ত, গ্রন্থিয়, বহাবৎ শুর্গ মল (লাই); ম্নতন্ন জনক বহুৎ মল, বেদনা জনো বলিয়া শিশু মলভাগি কবিছে ভয় পায়, অথবা বেদনা বশভঃ শিশু প্রাণমে মল-ভ্যাগের চেষ্টা করেনা; গর্মায় ক্রমে কোঠ-রোধ ও অভিসার।

या या जान मित्री मल-मूख श्रीवाश्कि इत्र मिहे प्राहे पहे ज्यान याजना; अधिक भारतार वर्षन्छ भूव-खान; मलापादतत हार्तिति क्र जातका । अवस्ति अवस्ति । भनोदम मित्रक जातका । अवस्ति । भनोदम मित्रक जातका । अवस्ति । अवस्ति विवाशिका, छेहा दार्थात । जान करता (मधादनह जातका अवस्त्र अव

ঋড়;—নির্দারিত সময়ের অনেক পূর্বে, অধিক দিন স্থারী, প্রাভূত রজ। অতি রজোরোগ, বিগত গর্জভাব হইতে অক্ষয়তা। "আমাবভার সময় কেবল একমাত্রা ঔষধ ব্যবস্থের"—লিপি।

त्यां हें के ,--- में तीरतत जित्र जित्र जित्र परिण परण परण परण परण जिल्ला जिला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला

ঔষধাক্ত সাবান ও ধৌভাদি বারা চিকিৎাসভ চর্গ-রোগ; মলম ধার চিকিৎসিত অর্শ।

মন্তিক, কুসকুস-বেই, কুসকুস, ও সন্ধিতে মন্ত-সঞ্জ পাণ্ডা প্রাণ্ডলাত আক্রবিধ ক্ষরিত পদার্থের আন্দোষণে আইগুনিয়া, কাল্যা-মিউর, অণ্ডা অণ্র অনিবাচিত উষ্ধে উপ্কার না দর্শিলে সল্ফার ব্যবস্থত হয়।

व्यविमिष्ठ व्यवाशान व्यभिष्ठ श्वांष्ठन विय-मक्तर्ग; म्छानांग्रीसिर्ग्य स्मान

ও অহাত পিড়া; এক এক এক বার মন্ত রিত্যার কিন্ত পুনঃ পুনঃ প্রতিগ্রহণ (সোরি, টিউব)

अधि को तीय श्रांभ त्यारधन व्याक्तिक, होत ७ स्नाना थूनिया पिछ वर्णा; तारिए महणा मम्पूर्वतरण व्यानितिक रहेया छैठ ; म्यूपूर्ट्स श्र्यारखन भन्न एसान्का, रमक सोकि निस्नान्क न।

স্থকর স্বথা, গাল করিতে করিতে জাগরণ

রোগী থাহা ভালবাদে তাহাই তাহার নিকট স্থার দেখার; এমন কি নেকড়াও খুন্দর দেখার

छिन्दत क्रार्थन मक्षांन्य स्थान स्थान ( क्यां क, थूया )

উপচয়। ---- বিশ্রামে; দাঁড়াইলে; শ্যাসর উষ্ণতায়; প্রকালনে, জানে; ও পরিবর্তনদীল বাতাতপে (ইঃস); রুদ্ধি

উপশ্য ।---শুক,উফকালে; ও দলিন পার্যে শয়নে (ইাণের বিপরীত); শ্লাস

সম্ব্র | ——(১) এলো ও সোরির সহিত অর্প্রক সম্ম (২) সাধারণতঃ থাতব ঔষধ অগব্যবহারের মন্য ফল। (৩) ক্যাক্ষ, লাই, পলস, সার্সা, মিপির সহিত জন্ত্র্ল সম্ম (৪) সলফ, ক্যাক্ষ, লাই; ক্ষাবা সলফ, সার্সা ও সিপি অনেক সম্ম উল্লিখিত পর্যাম অনুসারে পরপর ব্যবহৃত হয় (৫) সলফারের প্রপর ক্যাক্ষেরিয়া ব্যবহার ক্ষা উচিত নহে (৬) নিউমোনিয়া ও ক্ষাম্ম ভ্রমণ রোগে একোনাইটের পরে সলফার ভাল খাটে।

#### সঃলফিউরিক এদিড।

(Sulphuric Acid)

শত্ম কেশ ; বৃদ্ধ ও বিশেষতঃ বৃদ্ধাদিগের পক্ষে; এবং নিবৃত্তরঞ্জাদিগের উত্তাপাধেশে এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী

অবধ্যকাবশতঃ নয়, কিন্ত অনুগ্যোগিতা ৰশতঃ প্রশ্নের উন্তর দিতে ক্ষনিচছা। অভিশয় ব্যস্ত-সমস্ততা অনুশুব , লাজ্যক বিষয়ই সত্ত্ব সম্পান করিবার প্রয়োজন ( অভ্যিননা )

জ্ঞমে ক্রমে ও ধাবে গ'রে বিব্রন্ধিত বেদনা, চন্নম সমায় উপস্থিত হইয়া সহসা উহার নির্ভি, কিন্তু পুনঃ পুনঃ প্রভ্যার্তি ( ০শস )।

স্থা-মুখ অজ্যের চাণের ভাষে বেদনা উপথাত প্রান্তির গার, বিশেষতঃ মুদ্ধবিধের পক্ষে, গ্যাংগ্রাং অভ্যিবার সম্ভাবনা।

সন্তর্কভাবে প্রাফালন করিশেও শিশুর গাত্রে আমুগ্রম (হিপ, ম্যাগ-কা, রিউম)

মপালে যেন মন্তিক আনগা হইয়াছে এবং এপাশ হইতে ওপাশে পড়িতেছে এক্কপ অমুভব (বেশ, প্রাই, ব্রংস, স্পিঞ্জি)

স্থ-বিবর, দস্ত-সূত্ জাগবা দমত গাও-গহবরের উপক্ষত (aphthic), দস্ত-সূত্র হইতে সহজে রক্তপাত ; ক্ষতভালর ব্যথিততা , খাগে হর্গধা (বোর)

পুরাতন হুদার (বুক-জান), জাম উদ্গার, দাঁত টক হয় (রোব)। যদিগার সহিত মিশ্রিত না করিয়া গুল পান করিবে আমাশরের শীতনতা জন্মে।

প্রকৃত কম্পন। \*

উপদান্ত প্রাধিন্ন মন্দক্ষণ, ঘুইন্তা উন্মোচিত ও ন শান্তা থক ; অনুসরতা (এসেট-এসি)

কালিমা ( licchymosis ); কাড-চিক্সের সক্ষেবৎ লোহিভবর্গে বা নালবর্গে পরিণতি ও বেদনাপূর্বতা ( হরিৎবর্গে ৫ রিণাভ, লিড )।

পেটিকিয়া; পার্পুরা ছেম্য়হেজিকা; নীল্যর্গ দাগ; সাগ্রণ, আগ্নজ, কও্যুনশীল কুড়ড়ি।

শরীরের সকল বার হইতে ক্লফাবর্ণ রক্তজাব (ক্লোট, মিউ-এসি, নাই-এসি; টেরে)।

<sup>\*</sup> হেরিং বলেন যে সক্ষিউরিক অসিত একভার অলকোহল তিনভার, ১• হইতে ১৫ বিন্দু, প্রতিদিন তিনবার ভিন চারি সপ্তাহ প্রাস্থ ব্যবহার করিলে মদিরা-পানের প্রবৃত্তি প্রাণমিত হয়

পতন বা আঘাত বশতঃ মস্তিধ্বের সংঘর্ষ বা সংঘাত এবং উহাতে স্বকের শক্তমন্ত ও শরীরেব শতিশ ঘর্ম সিফ্রকো।

কোন গভার মূল থা ভূ-ছাইও জনিত ছ্রালতা ও অবসন্নতা, অলু কোন ককল নহে ( গোরি, সম্ফ )

স্বাধা | --- ' ) পশসের সহিত অমুপুরক সহয় (২) ঘৃষ্টবৎ বেদনা, লাওুর চর্মা, এবং প্রাভূত ঘর্মো আলিকার পর ও কালশিয়ার লিডমের পরে ভাল খাটে (৩) আগ, বোরা, ক্যালেও, লিড, রট রিউম ও সিফাইটমের সহিত সমগুণ সহদ (৪) কোমলাংশের ঘর্ষণে ও বিদারণে সলফিউরিক গদিও ক্যালেও, লার সমকক (৫) প্রাভি পানম্বনিত অমুখে ব্যবহৃত হয়

## সাইকিউটা ভিরোদা।

(Ciouta Virosa)

অভিনয় স্বায়বীয় এক্কডির ব্যক্তিবিলার পক্ষে, অপশার ও তাওব (কোরিয়া)
অনিত আক্ষেপতান্ত স্নীলোকের পক্ষে; এবং দন্তোদান-কালে, অথবা ক্রমিজন্ত
শিতাদিনের আক্ষেপে; এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী

টদার — সর্বশরীরের ও অল প্রত্যকের ভয়গ্রর বিকৃতিবিশিষ্ট প্রবল খান্দেণ, স্পর্শে, ও গোলমাল বা কর্মশ শব্দে আক্ষেণের প্রত্যাবৃত্তি।

অপসাদ।—ভারাফ্রানের প্রবেশ আক্ষেপ জনিত শীততার স্থায় আমাদরের শীততা : চিৎকার-করণ ; আরক্ত বদন ; হঠুন্তত্ত ; হিক ; চৈত্ত্যশূত্যতা ও অল-বিক্ষতি ; রাত্রিকাশে বারংবার উপস্থিতি ; প্রথম প্রথম অলকাল, অনন্তর দীর্ঘ-কাল ব্যবধানের পর আক্ষেপের প্রত্যাবৃত্তি

স্তিকালেপ —ক্ষেক মৃত্তি পর্যান্ত বারংবার খাস-ক্ষম হইয়া থাক। ; শরীরের উর্দাংশের সর্বাপেক। অধিক আক্রান্তভা ; প্রস্বের পরেরও উহার অবস্থিতি। দক্ষোদাদ-কাতে, দাঁত বা মাড়ি কড়মড় করা , দাঁত কপাটী লাগিলে যেরাণ হন্ন চোয়ালের দেইপ্রকার আকুষ্ণ ফুলেপ্রড়ি ( চক ) ও অপোচ্য দ্ব্রে আহারের অন্বাভাবিক প্রবৃত্তি , শিশু করলা বা অধার আতি স্বাদসহকারে আহার করে ( এলম, সোরি )

মন্তক, আমাশয়, বাহ, ও অত্যার অত্যন্তর দিয়া প্রারণ বিকলা (:linc:) এবং ভদ্মারা সেই সেই অফে উৎগে পের উৎপান্ত , মন্তকের উভ্নতা

মন্তিক ও পৃষ্ঠবংশের সংশ্বর্য (concussion), বিশেষতঃ পুরাতন আপকারক কল, মাংসের ভিতর টোচ ফ্টিয়া থাকাতে হতুগুল্ড (trismus) ও ধ্যুগ্জন্ত (tetanus) (হাইপার)

পড়িবার সময় অক্ষরগুলি ঘূর্ণিত হয়, উপরো-নীচে যায় অথবা অনুগু হয় (কজু)।

মন্তকে ও মুধমণ্ডলে গ্রামান পীড়কা, উহা মিশিয়া গিয়া পীড়বর্ণ, সুল চিপিটকার উৎপত্তি।

কত্রন-পরিশৃক্ত পামা; আবে লেখ্রবর্ণ জ ডিপিটিকার উৎপত্তি। উত্তেদ বসিয়া গিয়া মন্তিক-বেশবেস উত্তব।

উপচয়। — ভাষাকের ধৃম হইডে (ইয়ে); স্পর্দে; ও সংঘর্ষে (জ্বের);
বৃদ্ধি

উপশ্ম। —অনাবৃত বায়তে স্থাস

मञ्जू । -- रारेष्ट्रा-धिभ, रारेभान्न, नया, अञ्जीकनियान महिल ममस्य महस्य।

### मारेदक्षद्यन ।

#### (Cyclamon Europæum)

শোগা ও রস-প্রাণান ধাত্র যে সকল বাজির মুংপাণ্ড্ ( a tamia ), হরিৎ-পাণ্ডু ( chlorosis ) গাকে; যাহাদের সহজে শ্রান্তি জন্মে স্নতরাং কোন প্রাকার গরিশ্রমে প্রাকৃতি জন্মে না এবং যাহাদের শবীরস্থ যন্ত্রতার অথবা বিশেষ বিশেষ ইন্সিয়ের ক্রিয়ার ক্ষাণ্ডা বা স্থগিততা থাকে তাহাদের পক্ষেই এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী

পাণ্ডুবর্ণ, বিক্লান্ড ঋ জু-রক্তে (ফিন্ন, পণস), তৎসহকারে শিয়োঘূর্ণন, শিরঃপীড়া, ঝাপসা দৃষ্টি

সংযত শোক ও বিবেকের যাতন।; কর্তব্য কর্ম না কর বা অকর্তব্য কর্ম খরা নিব্যান; অহুথ।

বেদনা। যে যে শুলে অস্থিঞ্জলি চর্মের সমীপবর্জী সেই সেই স্থানে প্রচাপন, আস্মর্যণ বা ছেদনবৎ যাওনা

অভিশয় বিমর্যন্তা ও বিরক্ত-চিন্তন্তা; লণরাগিতা, অপ্রামূলতা, মন্মপ্রার্যন্ত (বদ্মেলাল); অপ্রথাবতাবণতা; নির্জনিপ্রারতা, বিমৃক্তি বায়ুতে অপ্রার্থিত (পলসের বিপরীত)।

প্রাতে উথানাত্তে চক্ষুর সমূতে দীথি-রেখা দর্শন অথবা দৃষ্টির অপরিচ্ছয়তা সহকারে রক্তহীন রোগীদিগের শিরঃপীড়া

চক্ষুর সমাথে নানাবর্ণের আলোক শিথা, অগ্নিফুলিস, উজ্জল স্চী দর্শন , কুলাটিকা বা ধুসের জায় অপগ্নিছির দৃষ্টি

আলু ক্ষয়েক গ্রাস আহার ক্রিলেই পরিভূপ্তি ( লাই ), তৎপরে আহ্বর্ণরীয় দ্বো ভাগ লাগেনা, গলায় ও তালুকার বিব্যায়া অন্যায়

পালা ও সকল প্রকার পাজমুবোর একপ্রকার লবণাক্ত ভা স্থান।

নির্দিষ্ট সময়ের অনেক পুর্বের, অতি প্রভুত, রফাবর্ণ ও সংযত (অনেক বিসাধে, অতি অল্ল, প পূবর্ণ, পল্স ); ঝিলীসংযুক্ত; প্রাবাহিত হইবার সময় উপশন্তাদ (উপচয়ক্তর, এই, পল্স ); ঋতু।

মনাবৃত বাযুতে বসিলে, দাঁড়াইলে অথবা ইাটিলে পাদ মুগো আলাকন নেদ। (এগার, কট, ফাইটো, ভেলে)

উপচয় |---জনাবত বায়তে, শীতদ জলে; শীতদ অলে মানে; ধড়, রাজিতে উপবেশনে ও শয়নে; এবং ব্যাক্ত প্রব্য ভোজনে, স্থাধ

উপশাস ।—উষ্ণ গৃহে ; গৃহের অভ্যন্তরে ; েতু, বিচয়াণে ( খেতগ্রেদর, উৎবেশনে বৃদ্ধি বিচরণে হ্রাস, ক্যাষ্ট, কফ ) , হ্রাস।

সম্প্র |—কোরোসিস ও এনিমিয়া জনিত রোগে পলস, সিক্ষ, ও ফিরমের সহিত; এবং উদরে যেন কোন সঞ্জীব প্রাণী রহিয়াছে বই লগণে জোক ও প্রাণ সহিত সাইক্লেমেনের তুলনা হয়

## माम । (পরিলা।

(Sarsaparilla)

মলিনবর্ণ কেশ, লিথিক বা সাইকোটিক গাড়্বিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের পক্ষে সাম। বিশেষ উপযোগী।

অভিশয় দীর্ণতা; ঘকের কুণি-ততা কিংবা বলিবিশিষ্টতা (এপ্রোট, আইওড, স্তাট, ভানিক)

সাধারণতঃ পারদ উপদংশ অথবা বিজ্পু প্রমেষ ছইডে উৎপর শিরোধেদনা ও অস্থি-বেষ্টের বেদনা

वक्त-वक्तिकां पिरशंत व्राह्म क्र क्षेत्र प्रश्न क्षेत्र हैं व्यक्त हैं व्यक्त हैं व्यक्त हैं व्यक्ति हैं विश्व विक् (वार्ता-का, छिलि)।

শরীরের সকল সংশে দজ্রজ উজেদ; উপদংশে পারদ অপবাবহারের পর ক্ষত

অনায়ত বায় লাগিয়া শাতো উত্তেদের উৎপত্তি; শুষ্ক পাঁচড়ার জায় উত্তেদে, বসম্বকালে উহার উপস্থিত হইবার প্রবশতা; উহাতে চিপিটিকা মধ্যো। মুব্রে-জ্যাগ শেষ হইলো দারণ, অম্ছ-পার যাজনা (বাবে, ইস্ মেডো, গুজা)

প্রস্তার রোণু অথবা স্কুদ্রে স্কুদ্র প্রস্তার নিংসগন, স্বরুকক-শূল;
মূত্রোশয়ে অশারি; রক্তাক্তমূত্র।

মৃত্য -উজ্জন ও ণ নিম্নত কিন্ত উলদাহক ('tritating) মূত্র , স্বস্লা, আঠা আঠা, রেণু দংযুক্ত, প্রচুর, অনুভব ব্যতীত পরিত্যক্ত (কষ্ট) মূত্র; শুলুবর বেণু অধানাত।

भूगाभरमात्र दिनमाभूर्ग क्षामात्रिष्ठा । क न्यानंदिष्ठ । क्षान्य विनमू विनमू भूज-व्यानं हरेट वाम विनमू भूज-व्यानं हरेट वाम विनमू भूज-व्यानं हरेट वाम विनम् भूज ।

সূত্রে কিংবা শিশুর শ্যাবদ্ধে রের , সূত্র-জ্যানের পূর্বে ও মূত্রজ্যার-কালে শিশুর চিৎকার (বোরা, লাইকো)।

\* ভাগতা, আর্থনাল, আধ্বা পার্ম স্বেন ব্সতঃ অ্বরুদ্ধ প্রেষ্ঠ, তৎপরে আম্বাত।

अ ग्र-मूण किश्वा युक्क-मूण ; पिक्किन युक्क (life ney) श्रेटल निमालिम्द्र । निमासण द्वमना (णार्थ)।

ক্ননাপের অসহ ছর্গা; পাওল রেডঃপাত রক্তাক্ত গুক্ত-আব ( শিড, মার্ক )।

স্থান ব্রের সংহরণ (retraction), ব্রথম ক্ষ, ওজ ও ওজেনা শ্র (সিশি)।

याक, भारत या व्यवस्य क्षाट्यारहत भन्न व्यक्ति-त्यतमाः नावित्क, व्यक्तितम्, व्यथ्या व्यक्ति शाक्ति व्यक्ति व्यक्तितम् व्यक्तित व्यक्तितम् ।

धार्-कारण कथारण कथा त्रनधिन छेरछन ( देखें छि, श्राष्ट्र, मित्रि )

হাজ-পামের চর্গের বিদারণ: বেদনা ও জালা, বিশেষতঃ হাতের ও পারের আস্থের পার্শের ডর্গের কঠিনতা ও দৃট্তা

স্থায়া ৷---(১) মার্ক ও গিপির সহিত অমপুরক সংগ্, ইহার বে কোনটী

সাস্থিয় পরে ভাল খাটে (২) বাবা, লাইকো, প্রাট মিড, দ্সের সহিত সাস্থিয় তুলনা হয় (৩) পায়দ অপবাৰহারের পর প্রোয়দ: ইহার ব্যবহার ইইয়া থাকে

#### সিকেল।

:(Secale Cornutum)

ক্ষীণা, ছুর্বলা, শীর্ণা, শরার বিকার বিশিন্তী নারী; উত্তেজন-শীল পার্যীর প্রকৃতি, ভপ্তবৎ পাত্র, নিমগ্র মূণ ক্ষতির পঞ্চে এই উচ্চে উপযোগী

व्यक्ति इक, कोर्ग, छ गीन गाजि

পেশী-তন্তর অভিশয় শিথিত। বিশিষ্ট নারা; শরিরের প্রত্যেক বস্তরই অলগ্ন ও উন্মৃক্তি বোধ; ত্রিয়াশূপতা; রক্তবহা নাড়ীর লোলিততা (vessels fiably); অপ্রবল সক্তমাব; পাতলা, কাল মালবং রক্তের প্রাচুর প্রবাহ; রক্তাণ্য বিনষ্টতা।

সক্তমাব-প্রবণ শারীরিক প্রকৃতি; যৎসামায় উপথাতে সপ্তাহ পর্যায় সক্তে-পাত (ল্যাক, ফ্ল), দূষিত ভরল রক্তন্যায়, উহার প্রবল পচন-প্রবণতা, ভালে ঝালি লাগার মত অমুভ্য ও অভিশন্ন চ্থালভা, বিশেষতঃ পূথ্যতা সক্তমাবাদি বশতঃ এই চ্কালভার অমুৎপতি

হরিৎ, কপিশ, ছর্গন্ধ প্রদর-আব

স্থুদ্রে স্থুদ্রে, বেদনাবিশিষ্ট, সবুজবর্ণ, পদার্থধারী স্ফোটক; অতি ধারে ধারে উহার পক্তা ও আনোগা প্রান্থি, উহা বড়ই দৌর্বাল্য জনক। রাক্ষণৰ অত্যাতাবিক কৃষ; অবসাদক্ষর অভিসাধ সহকারেও কৃষা; সেমনেত ও অয়দ্রবা সেবনের আকাজ্য

অনিচ্ছার নিঃস্ত প্রভুত, জলবৎ, গ্রা, কপিশ; অতি সনগে বিনির্গত (গাাধ, ক্রোট); অতিশয় অবসরতা জনক, মূল-বিলুপ্তি সংযুক্ত; মলন্বারের বিশ্বত বিম্কেতা বিশিষ্ট ( এপিস, ফস), অভিসার। युक्षिरभाग वार्वातिक भूज, वर्षभूश अवावद प्रकार व भूज ।

শরীরের সকল অংশে জালা, বোধ হয় ধেন বোগার গাজে জাগ্রির স্কুলিঞ্ পতিত হইতেছে ( আফ া)

মুখ্যওল, বিশেষতঃ মুখ-বিবরের চারিদিকের পাণ্ড্যর্ণ, নিমগ্রভা, বিক্রতি; গালের শাতপতা অথচ আবুজ থাকিতে অন্তর্ত্ত শক্ষণাপর ওলাউঠার প্রনাবস্থা

वृक्षावकात अव्यानी भारकान, नारमाकारन উरात्र वृक्षि।

द्र९ क्वांगिता; त्रक्षर्व क्वांका, श्रीयणः गार्धीलत यहना।

স্পর্শে গাত্র-দ্বকের শীতলতা, অথচ রোগী গাত্রের আবরণ

#### সহ্য করিতে পারেনা; হস্ত দের বর্ধবৎ শীভগতা।

অনিয়মিত , প্রভূত, মালন, তরল পদার্থ-প্রাবী , উদ্বের প্রেস্ব-বেদনাবৎ প্রাচাপনকর বেদনা বিশিষ্ট , পরবর্তী ধ গুলকাল পর্যান্ত জন্মাগত জলবৎ রক্তঞাব সংখুক্ত । খাতু।

গণ্ডপ্রাবের জাশস্ক, বিশেষতঃ তৃতীয় মাসে (ভাষ); অনেককণ স্থায়ী, কুন্থন-জনক, বলপুর্বাক নিঃসরণধৎ বেদনা

জানিষ্মিত; আজ্মুবার , ক্ষাণ বা নিরস্ত; ৫ সব বেদনা; সক্ষাই জ্ঞানুর ও বিমুক্তা বেশ্ধ হয়, কিন্তা নিঃসারণী ক্রিয়া (expulsive action) দুফ্ট হয়না; মুক্তি।

অভিরিক্ত দীর্ঘকাল স্থানী; অজীব যন্ত্রণাপ্রদ ও স্বাস্থিক বেদনা; অরায়্য বালী-ঘড়িয় জ্ঞায় অবহা ডমফবৎ সংখাচন ( hour-glass contraction )।

णोगा, भीगा, व्यवभाषा जिन्दिश खन-ছয়ের বিলুপ্তি। खन উপযুক্তরণে ছয়-পূর্ব ধ্যা না

भूस, कारू, जाकूकिङ ও महन्नाहन स्नाम-मूक नाषी।

উপচয়।—উত্তাপে; ও আবরণের উষণ্ডায; আক্রান্ত সকল হানের সকল রোগেই উত্তাপে; র্ছি।

উপ্শাস ।---শীতণ বায়তে; শীতণ হইলে, শাকান্ত স্থান জনাত্ত ক্রিলে; ও ম্দিনে; স্থান। সম্প্র |——(১) আমে নিকের সহি ৬ সমগুল সম্বর্জ, শীলেভিলি বে বান রীত প্রকৃতি। (২) ওলাউঠার কলটিকবেল সহিও সাদ্র্র্ত । (২) গলাউঠার কলটিকবেল সহিও সাদ্র্র্ত । (৪) গলেকলি প্রান্ত বেলনা বর্ত্তিক করে; রক্তপ্রানের প্রভূততা ও সাংখাতিক দিনার করে। ইছ নিরাণদে ব্যবহার করা যাইতে গরে; কিন্তু আর্গিটের (এলোগ্যাণিক) ব্যবহার সর্ব্বদাই বিপ্রজনক

#### সিড্ৰ। Codron

(Cedron)

নারী; সারবীর, উত্তেজনশীল ধাতু ও ভোগস্থামতঃ প্রস্তির ব্যক্তিদিগোর পাঙ্গে সিম্পন বিশেষ উপধোগী।

ন্মণান্তে সাম্বীয় অবসাদন, ও কোরিয়ার আজেমণ, স্ত্রীলোকে উহার সম্ধিক স্পষ্টতা (রুমণান্তে মুর্বগভা, পুরুষ্দিগের পুরেশ উহার স্পাইতা, ত্রাস্থ্যসূচ্

একদিন পর একদিন পূর্বাহ্ন ১১টার সময় স্ব্যন শিরঃগীড় (প্রতিদিন, ফাট)।

**जरत** रहमन ७ ग्लोनान कत्र रयसना

ধার্কালে ম্থ-বিবর ও জিহ্বার অভিশর শুক্ষতা, অভিশর পিণাদা। অপশ্বার, যে দিন প্রথম ঋতু নিঃদরণ হইতে আরম্ভ হয় ঠিক দেট দিনে অপশারের পূর্বলক্ষণ প্রকাশ পার। প্রতি ধাতু-কালেই নিয়মিতরাপে টক্ষার উপস্থিত হয়।

ধাতুর পাঁচ ছয় দিন পূর্বের প্রতিমানে নিয়মিতরাণে শ্বেতপ্রদরের উপস্থিতি (কাগা-কা); গড়র পরিষধ্যে খেজ-প্রদর (কক)।

ঋতুর গরে প্রভুড শালা-প্রাব

কুইনাইন জনিত কর্ণ-নাম সিজ্লন সেখনে নিবারিত হয়। ঘটিকা-যন্তের স্থায় ঠিক একই সময়ে জরের উপস্থিতি।

উপাচয়। — সঞ্চলনে শীতের প্রজ্যাবৃত্তি; ঝড়ের পূর্বে পুঞ্চি উপাশ্যা। — উষ্ণ পেয় প্রবেষ ; ও উষ্ণ গৃহে স্থাস।

#### **গিন**।

(Cina)

পাত্র বদন; মূথের ও চোথের চারিদিকের রয় আরুড়; এক গাল লাল আর এক গাল ফেকানে (ক্যাম)

কুজুরবৎ ফুধা, পূর্ণ আহারের একটু পরেই আবার ক্ষা; মিষ্ট জব্যের প্রাণ ও অভাত বহুবিধ জব্যের আকাজ্ঞা, মাতার অনপানে অনিচ্ছা

ক্ষ স ; ত্রাতি সংযুক্ত শুজ কাস ; প্রাতে আগেলপিক, গ্ল রোধকর কাস ; প্রতি নসপ্ত ব শর্থকালে প্রভাবিত কাস। কাসের আবেশ উপস্থিত হয় বলিয়া শিশুর কণা বলিতে বা নড়িতে চড়িতে আশম্ব (রাই)।

ज्यांशकारम मूज (षामा पारक, थानिक-क्यन थाकिरम क्रथत मज, अ क्यर्थनिद्य है एम। एक अ (षामा; जिनिक्शम निर्माठ, मूज।

ত্বামবাম, মুর্বল গগুমালাধাতু-ছাই বালক বালিকানিগেব স্বিরাম রে। উপচয়।—সাজিকালে।

जाया । ~( > ) मिलिपिराय जिनाहिकाय जाने-क्क, जाने-निर्दे वारि, वारि, क्याम, क्रिया, मिनि, हे। रिक्त महिक मिनाय मम्लग मध्य ( २ ) छन् म-कारम छूरम्य रगन्त छैं अक्य नाम्लग खिलिय माखि क्यामिला मिन नाम्यक ह्य ( ७ ) मिनि वाशिया अ्त विमूख श्रेश ज्यान, क्या, ज न्यां क्या गांव श्रेश मिना बांवा जिनकात पर्म ( ८ ) यूनकिरिन्यने एक स्थन क्यां छ जैयम लाखा कि ह्य जनन नामक- मिराय द्यारा व्ह्यां निक छेयम क्यां भिनाय विश्व हिखा क्यां प्राप्त जिला हिला ।

( c ) मिना नावरश्रम विभाग वावश्रक रहेमां छ छ। त । क्षीय ८५१८म छि॰ का मा प्रसिद्ध कवन कवन छ। को नाहेन खरमांटर बादबाना खरम ( ८५वम, रिकास )।

#### সিপিয়া।

#### (Sepia)

মণিনবর্ণ চুল, দৃদ্ধ বেছ-ডেম্ব, কিন্ত মৃত্ব ও শাস্ত প্রেরণিত বিশিষ্ট ( পদ্য ) ব্যক্তিদিগের পক্ষে সিপিয়া উপযোগা

ন্ত্রীলোকের রোগে; বিশেষতঃ গর্ভাযয়ার, প্রাথতাবস্থায় ও ওঞ্জান কালে যে সফল রোগ উৎশ্ব হয় সেই সকল রোগে, অথবা আক্ষাক্ষ অধ্যাম ও প্রান্তিসংঘুক্ত রোগে (মিউরেকা, নকা-ম) মিপিয়া বাবস্বত হয়

সিপিয়া "রঞ্জের উষধ," অর্থাৎ কাণ্ড ধৌত করিবার পরে যে সক্ষ অন্তথ অয়ে বা বৃদ্ধি পায় ভাহাতে এই ঔষধ প্রয়োজিত হয়।

অন্তান্ত স্থান হইতে পৃষ্ঠে বেদনার প্রসারণ (স্থানিনার বিপরীত) উহার সহিত কণ্প (শীত, প্রস)

ীতগ ৰায়তে সবিশেষ অমভূতি, সহজে শীতোৎশতি, শাদীরিক উর্জাপের অসম্ভাব, বিশেষতঃ পুরাতন রোগে (তরাণ রোগে, গিডম)।

ভিজিবার পরে; উত্তাপ বা শীতের : জাতিশ্যা হইতে; গাড়াতে চড়িলে; ভজনাগমে জাম পতিয়া যিসরা জাতিনা করিবার সম্ম; সহজে সূজ্যার উৎপত্তি।

থাত্-কালে, গভাবস্থার গুজাদান-সময়ে; এবং কোঠ ফাডিয়া, অভিসার, অর্শ, প্রবর ও অরায়ুর রোগদহযোগে; অভ্যন্তরীংশে একটা গোলায় ভায় অনুভব।

শিরংগীড়া সহকারে মন্তক-শিধরে শীতগতা (ভিয়ে।—উত্তাপ, ক্যান্ত, গ্রাফ, সলফ)। অতিশর পেটুকতা ( লাই )।

ভর, বদনে ও মতকের উপর উত্তাপাবেশ সহকারে; এরত বা কারত বিগদ সম্বন্ধে; সন্ধার প্রকাশে; উৎকঠা। অতিশয় বিমর্যতা ও বিলাপ। জনায় নোগ সচকাবে একাঞ্চী থাকিতে আশন্ধা, খোন্ধের ভয় বন্ধাদগের সহিত শকাৎ করিতে ভয়

আপনার পরিখন, কার্যা-কর্মা (মোর-এসি, ফস-প্রা) ও প্রিয়ত্ম ব্যক্তিদিগের প্রতি; উদাস্থা।

কোতা ও মুগ্র (লাই)। আক্রা, কার্যার কাড়া করিছে, ত্রন কি কোন বিষয় চিম্বা করিতে গ্রাকরিতেও অগ্রম্ম

খাতু-কালে স্বল্প রাজ-ত্মাবসহ; হিটিরিয়া এন্তা, অমুভ্তি-প্রবণা, অ্বশারা নারানিগের, প্রচাপন বা বিদারণবৎ, ভরত্বর শিরংপীড়া। নড়িকে চড়িলে, মন্তক অবনত করিলে, ও মানসিক পরিশ্রমে উহার বৃদ্ধি, এবং বাহ্যিক চাপ-প্রাদানে ও এন্যাগত স্বলে সঞ্চালনে উহার হাস।

প্রা এন শিরংপীড়ার পরে অথবা রালানিংছিকালে জান্তিশায় কেশপ্তন।
ম্থমগুলের, ও চন্দ্র খেতমগুলের পীতবর্ব, বক্ষংহলে পীতবর্ণ চিহ্ন;
গগুদ্ধ ও নাসিকার উর্জভাগের অনুপ্রত্যে ঘোড়ার জিনের অনুরাপ পীতবর্ণ দাগ; জরায়ু-রোগ জ্ঞাপক বদন

বালবন্ধ অত্যন্ত দৃঢ় বোধ হয়, সর্বাদাই উহা চিলা করিয়া দিতে হয় (ল্যাক)

\* নাবের উর্বাংশে স্মন্তন্ত্র স্মন্তন্ত্র স্থানে লাগিল, সার্নিনেটঃস (দক্ষণিশেষ)

( স্বাধ্যারে শিশ্ভিড অপুনীর শাক্ষির দক্ষ, টেলু )

উদরোগাঁ স্থানে কটপ্রাদ শুগুতা, 'বেন কিছুই নাই' এরূপ অমুভব, আহার করিলেও উহার ক্ষরপুশুখ (চেলি, মিউদ্বেক্স, ফুস্)।

लगनो मिरशंत श्रूरणां पत्रण ( वाणय-वाणिका मिरशंत, गणक )।

জিহ্বার মলিনতা দিও প্রভোগ ধাচ-কালে উহার পরিচ্ছাতা, ধতু-আধের বিপ্রতির পর প্রয়ায় উহার প্রভাব্তি; নিম্ন ওঠের ফীততা ও বিদারণ।

কোঠ-কাঠিল :----গর্ডাবস্থার ( এলম ); শক্ত গ্রন্থিল, বর্তু লাকাব, অপ্রচুর আধানে নিঃদারিত, মল; মলভাগিকালে ও তৎপরে অনেককণ পর্যায় সরলায়ে বেদনা ( নাই-এনি, সল ); মলখারে ভার বা বর্তু লবৎ, অমুভব, মলভাগেও উহার অনিষ্ঠি।

भूत — मृत्वत काविजाल काविभाव अवश्य लिख यमार्थ, छैदा आधार शास्त्र भाषिया शास्त्र, स्मिथित (योध देश स्थन मध कर्दर्शाक, मृत्वत दक कर्ष म एक् शृद्ध माथित योग गाम न (योगक्ष व्योक्तिक कर्तर, वेखियम)

भग-मृत्व, भिश्व निक्षिण रहेनागांव भगा जिलाहेमा (मटण (निस्माध); প্রথম-নিদ্রোকালে শ্যাম মূম ত্যাস

্শা-মেছ (গ্লাট); বেদনা-শূন, পীতাল, ব্যাজিকার প্রাণ , প্রাণতে মুলদ্বানের মূপের সংযোজন, হর্দয়া, দার্ঘকার স্থায়া স্থোগ কালী-আইওড);
জননেন্ত্রিয়ের প্র্যালতা ও অবসঃতা

যোনিতে উর্দাকে প্রবল স্টাবেধবৎ যাতনা; জনায় হইতে নাভী পর্যান্ত ছুবি দিয়া কর্তনের তার বেদনা।

জরায় ও যোনির বহির্গনন, প্রাচাপন ও আবেরা, যেন বস্তি-গহরের হইতে সকলই বাহির হইয়া পড়িবে এরপে অনুভব; উহা নিবারণ করিবার জন্ম উপর উদ রাথিয়া বসিতে হয়; উহার সহিত মাস-কট থাকে (এগাল, বেল, শিলি, মিউরোণ, ভাশন)

পূর্বোজ দ্মণের সহিত সংস্টে, নির্মিত সময়ের পুর্বে বা পরে প্রকাশিত, শ্বর বা অতাধিক রজ, রজসাভাব যা অতিরজ;—প্রায় স্বর্গগ্রেকারের রজোইবয়ম্য

গর্ভাবস্থান্ন প্রাক্তঃকালীন বিবমিষা; আহার্য্য মাধ্য বেলাথলৈ বা উহার বিষয় চিস্ত করিলে বিবমিষার উদ্রেক ( নকা ), থাজ্যান্য রন্ধনের গলে খিবমিষা জ্বেল্য ( আ্বার্ন, কলচি )।

খাস-কৃচ্ছ্র উপবেশনে, নিজাত্তে, ও গৃহের অভ্যস্তরে উহার র্জি, নর্জনে যা জত শ্রমণে হ্রাস

জীবনী-ক্রিয়ার বিক্বত বিবৃদ্ধি, অভ্যক্ষণাত্তা নড়িলে উভিপাবেশ, তৎসহ উৎকণ্ঠা ও প্রান্তি; তৎপরে সর্ব পরীরে ঘর্মা; নিবৃত্ত-রজস্কৃত্যা (ল্যাফ, স্থাফ, স্থাফ, টিউব), বজি গহরের-স্থিত যা হইতে উভাপের উভিভি

हर्ष्यंत्र कर्ष्युमनः नीनां व्यव्यति कर्ष्युमनः वाहा खननारम्य कर्ष्यमः, कर्ष्युमन खेलभग खरमानाः, वद्रश्यांगांत्र शिव्यविष्ठ हम् (भगकः)।

উপচয় ----জপরাকে বা সামাকে, শীতল বায়তে অথবা ৬ জ পুর্বাধিকের

বাতাদে, সগমাতিশযো, বিশ্লামে, আর্জ নিবাত গ্রীয়া সময়ে; খাড়বড্জের পুর্বের্ব ; যুদ্ধি

উপশ্য ।—শ্যার উঞ্জার, উক্ত বাহ্য প্রয়োগে; ও প্রারণ শারীরিক পরিশ্রমে, হ্রাস জনেক কক্ষণ বিশেষতঃ মন্তক, হাৎপিও ও বহি-রহবরের লক্ষণ বিশ্রাম ও ব্যায়াম উভয়েই বহিন্তে ও উপশ্যিত হয়।

স্মৃদ্ধ ।— (১) ভাউষ সিউরের সহিত অহপুরক সম্বন্ধ (২) ল্যাকেসিসের সহিত প্রতিকৃল সম্বন্ধ, ল্যাকেসিসের পূর্ব্ধে বা পরে সিপিয়া বাবহৃত্ত
হয় ন প্লমেটিলার সহিতপ্ত প্রতিকৃল সম্বন্ধ, প্লমেটিলার সহিত কথনও
সিপিয়া পর্যায়ক্রমে বাব্হাত হয় না (৩) সিলিশিয়া ও স্লফ্রারের পরে
প্রায়ই সিপির উপযোগী হয় (৪) সিপিয়ার এক মাত্রার আরোগ্য-ক্রিয়া
অনেক সময় বহু সন্থাহ পর্যস্ত থাকে। (৫) অতিরিক্ত তাত্রকৃত সেবনের
মানসিক ফল এই ঔষধে নিঘারিত হয়। (৬) বসিয়া বসিয়া থাকার ও
অতিরিক্ত মানসিক পরিশ্রমের কৃষ্ণলে এই ঔষধ উপকারী।

## সিফিলাইনঃম।

(Syphilinum)

আহাকার হইতে দিবালোক পর্যান্ত বেদনা; গোধ্দি গম্ম হইজে আরম্ভ ও দিবালোকে পরিস্মান্তি (মার্ক, ফাইটো)।

জ্বেম ক্রেনে বেদনার বৃদ্ধি ও হ্রান ( ষ্ট্রাণ ) , স্থান-পরিবর্ত্তনদীল বেদনা, তেজ্জন্য রোগীর বারংবার অবস্থান-পরিবর্তন করিতে হয়।

রাজিতে সমস্ত লক্ষণের আতিশয় (মার্ক); স্থ্যান্ত হইতে স্থোদ্য পর্যান্ত রুদ্ধি

উদ্ভেদ।— নিজেজ, আরক্ত, ভাস্তবর্ণিচহ্ন, শীতল হইবার সময় নীলবর্ণধারণ সর্বাধারীরেয় ক্ষতান্ত শীর্ণতা ( এত্রোট, আইওড় )। হৃৎপিগু —রাত্রিভে হৃৎপিগ্রের ভূমিদেশ হইতে শিপর দেশ পর্যাধ্ব কর্তনবৎ বেদনা ( শিপর হইতে ভূমি গ্রান্ত, মেডো, ভূমি হইতে কঠায়ি বা সম প্রান্ত, শিক্তি।

স্থতিহীনতা পুস্তক, ব্যক্তি ও স্থানেব নাম পানং নাণিতে পানা যাম না; গণিতের গণনা কবার আয়াস (difficulty) জন্মে

অমুভূতি যেন উনাদ হইবে; যেন গলাধাত অগ্নিবে, একণ আনুভাষ; উদাহা অমুভাব

নিজ হইতে জাগরণাতে মানসিক ও শারীরিক অবসয়তা জ্যো এলিয়া রাজির ভয়ক্ষর ভয়; উহা সহা হয় না, বরং মৃত্যু শ্রেয়ঃ বোধ হয়

জাগরণাত্তে অবসরতাজনিত ভরত্বর যাতনার আশ্দা ( শ্যাক 🏸

প্রাথ কাষ্ট্র প্রথ কাষ্ট্র প্রাথ কাষ্ট্র প্রথ কাষ্ট্র কাষ্ট্র

ন্নার্যীয় প্রাক্তির শিরংপীড়া, উহাতে র ত্রিতে নিজাশ্নতা ও প্রলাণ ; অপরাহ্ন চারিটার সময় আরম্ভ, ১০টা হইতে ১১টা পর্যান্ত আভিশ্যা এবং দিবালোকে নির্ত্ত (রাত্রি ১১ বা ১২ টার সময় বির্তি, লাই) ; কেশ-প্রতন ।

নবজাত শিশুদিগের তরণ চক্ষু-প্রাণাষ ; চক্ষুর পাতার স্ফীততা, নিদ্রাকালে উহার সংযোজনা ; রাজিতে বেদনার তীব্রত , রাজি ২টা হইতে ৫ট প্রয়ম্ভ উহার সাতিশয় ; প্রভূত পূয নিংসরণ ; শীতল জলে প্রাণাশনে উপশম।

অন্দিপ্টের পক্ষাঘাত —উপরের ভীর্যক্ পেশীর ( Suje ioi oblique ) পক্ষাঘাত; চক্ষুর পাতা অবনত হইয়া থাকাতে নিব্রিভের প্রায় দৃষ্ট হয় ( এই, গ্রাফ)।

যুগণ-দৃষ্টি, এক প্রতিরূপের নিয়ে অহা ৫ ডিরুণ দৃষ্ট ২য়।

দস্ত ।—দস্ক-মূলের প্রাক্তভাগে দন্তের ক্ষর প্রাপ্তি ও একিয়া ৫ড়া; দন্তে গর্জ হইরা যাওয়া, উহার প্রান্ত ভাগ করাতের দাঁতের ভাগ কাটা-কাটা; দক্ষের আঞ্চতির ধর্মতা প্রাপ্তি, ক্ষাভাগগতানির একট বিন্দুর সভিমুগে গতি (ষ্ট্যাফ)

যে কোন আকারে এলকোহল পানের আকাজ্জা।

शिक्ट्रभिय क्षित्र यित्रा दिनार्यत व्यानविज्ञ (क्षित्रात्र, विज्ञात्र, भण, भण-क्षित्र)।

অনেক বংসর সাপী ছাদ্যা মধ্যত , সরকান্ত সংবৃতি (strictmes) দ্বারা আক্রে বাদ্ধ বাদ্ধ হয়; পিকচারী দিলে মল নিঃসরবের যাতনা প্রায়বন্দ্রের তার অন্তর্ভ হয় (আক-ক্যা, ডিউব)।

মধানের ও মরতাম্রে বিদারণ ( চিচাচেচ ) ( গুজা ); সরতাম বাহির হইয়া পড়া; উপদদের পুথা বৃত্তান্ত, রোগের হর্তিমাতা।

স্বন্ধ-সন্ধি, বা ক্ষণের তিকোণ পেশীর (deltoid) সংযোগ-স্থলে আমবাত, বাল পার্থের দিকে উঠাইলে উহার আধিকা (রস্ট্রা — দক্ষিণ স্বন্ধ, আঞ্চ, বাম, ফির)।

উপদংশঞ্জ রোগে অত্যন্ত স্থানিকাচিত ঔষধেও খানী উপশ্য বা উপকারের। অভাব।

উপদংশগ্রন্থ যে সকল রোগীর কঠিন উপদংশ (chancie) হানিক ঔষধ প্রয়োগে চিকিৎসিত হইখাছে, এবং উহার ফলছরাণ ঘাহারা আনেক বংসর প্রায় গলার ও চম্মেন বোগ ভোগ করিয়া আহিতেছে, অন্ত কোন ঔষধের সহিত স্থান্ত না পাকিলে, চিকিৎসার প্রারম্ভে এই ঔষধ ব্যবহারে প্রায়ই ও হাদের উপকার দর্শে।

উপচিয়। ---- त्रोद्धित्क, शिध्य भगम श्रेट भियालाक वर्धस वृद्धि। म्याह्य ।----- क्षि- श्राह्म ७ উপদংশীয় পীড়ার अत्रम, जमाक, क्राक्ष-व्यक्त, भाक, ७ काইটোর সহিত সম ৪৭ र एक।

## শিক্ষাইটঃম।

(Symphytum)

জগাত্তির সংযোজনায় এই ঔষধে স্থসাধাতা জন্মে (কাল-ফল); কণ্টক-বেধনবৎ বিশেষ বেদনা হ্রাসপ্রাপ্ত হ্য়; ভগাত্বি সংযোগের মূল কোমল উপাদানের উৎপত্তির অমুক্লতা জন্মে ভগান্থির বিচেদ-স্থাদের উপরাহিতা, অভিঘাত আরোগ্য প্রাণ্ডির গরে অস্থি-বেষ্টের বেদনা

ভৌতিক উপদাত (mechanical injuries), অন্দি-গোলকে আঘতি, ছুইতা, থোচা

সুগ-মুথ দ্রব্যের আঘাতের পরে চক্ষে বেদনা; বরফের গোগায় চক্ষে আঘাত শাগা; মাতার চক্ষে শিশুর হাতের মৃষ্টির খোঁচা (চক্ষুর চতুর্দিকস্থ কোম্যা বিধানভম্কতে খোঁচা, আর্ব)

সন্মন্ধা।—(১) আর্ণ, ক্যালেও, ক্যান্ধ-ক্ষ্য, ফ্লোরি-এসি, ছিপ, ও সিলির সহিত সমগুল সম্বন্ধ (২) কণ্টক-বেধনবৃত্ বেধনার এবং উপঘাতের পরে অন্ধি-বেষ্টের স্পর্শ-বেষের অবশিষ্টতার আর্ণিকার পরে সিক্টাইটঃম ভাল থাটে।

## সিলিশিয়া।

(Silicea)

স্বার্থীয়, কোপন-স্থাব, রজ-প্রধান; গওমালা-ধাতুর ব্যজিদিগের পলে সিলিশিয়া উপযোগী

ধান্ত জবোর তাণ বা পরিমাণের ক্রটিবশতঃ নহে কিন্তু সমীকরণের ( nasimilation) জনসাকতা নিবন্ধন শরীরের পরিপোষণের অসম্ভাবে অপ্রিপ্তি (ব্যারা-কা, ক্যান্ত ); এবং অতিরিক্ত শারীরিক ও মান্দিক অমুভূতি

বৃহৎ মন্তক বিশিষ্ট, গশুমালা-দোষ ছট, রিকেট-রোগ-এন্ত বালক বালিকা; ব্রেল্লবেল্ল ও সেবনী-সন্ধির বিমুক্তেন্তা; মন্তকে, সম্থিক ধর্ম (ক্যালকেরিয়া অপেকা নিয়তর অংশে), বাহ্যিক আবরণে মন্তক উষ্ণ স্নাথিবার আবশুক্তা (ভানিক); বৃহৎ উদ্বে; ছর্মল গুল্ফ, হাটিতে শিথিতে বিশ্ব

সম্ভাগ মুণাকৃতি; স্কা, শুক তৃক্; পাপুর মুখনগুল, লিখিল পেশীবিলিষ্ট কর্মণ শরীর প্রের ঘণ্ডোর বিজুপ্তি ( কুপ, গ্রাফ, সোরি ); মন্তক বা পুর্চে সামান্ত বায়ু-প্রবাহ লাগান, ও গো-বাজে নিকা গ্রহণ ( গুজা ) বলতঃ রোগ; প্রেন্তর কণ্ডক- ১ দিগের বংক্যারোগ, তৎসহ লক্ষির সম্পূর্ণ-গ্রভাব।

স্বাভাবিক শারীরিক উদ্ভাবের অভাব, সক্ষাই শাত, এমনকি ব্যায়াম-কালেও শীত (লিভ, মিশি)

স্বায়বীয় ছ্বলতা; কোন জাবনী-জিয়ার বিক্লভ বিবৃদ্ধি সহকারে অবসরতা; কঠিন পরিশ্রম ও আব্দ্ধ থাকা বশতঃ উহার উৎপত্তি, শ্রান্তি, শ্যন করিয়া থাকিবার প্রান্তি; ইচ্ছা-শক্তি ঘারা উহার পরাভব

কোমল বিধান-তন্ত্ৰ, অন্তি-নেষ্ট অথবা অস্থি প্ৰস্তৃতির পুষোৎপত্তির প্রতি নিলিশিয়ার আশ্চর্য্য ক্ষমতা, এডজারা শ্যোটকালিতে পুষোৎপত্তি জ্ঞারা উহা পক্ষ হয় অথবা প্রণাদির অতিরিক্ত পুয-প্রাব হ্লাস প্রাপ্ত হয় (প্রধানতঃ কোমত বিধান-তন্ত্রর আন্তেমণ, ক্যালেও, হিপ)।

শিশুদিগের অবাধ্যতা; অবিম্যাকারিতা, সদয়তাবে কিছু বলিগেও জেনন (এটে-টা, স্থানিক, আইওড)

অন্থিরতা অত প্রমাত্র শব্দে চম্পিত হইয়া উঠা।

আ দুলতা, নমনীয়ত , সাহসহীনতা ৷

মান্সিক পার্মামে আডসর আয়াস; লেখা পড়ার প্রাথির উৎপত্তি, চিন্তা ক্রিডে গ্রা যায় না।

শার্মানক উতাপের অভাব, সর্বদাই শাতার্ভব, এমনকি শার্মারিক প্রমেও শরীর উত্তও হয় না।

शृष्ठितश्मक भिद्राधूर्गन, जीवा-शृष्ठ इहेट्ड मछक शर्या छेशा छिथिडि; स्मन भगूच भिद्रक शिक्षिट इहेटव जन्न अस् अयः छिकिष्टिक वृष्ठि कितिक भिद्रापूर्णन ( श्रम ;---- निम्निक्टक वृष्टि शाटि, कामिन, म्लिडि)।

গোবনকালের কোন উৎকট পীড়ার পর হইতে প্রাতন সবসন শিরঃপীড়া (সোরি), ঘাড় হইতে মস্তকের শিথার পর্য্যন্ত উহার উথিতি, বোধ হয় যেন পৃষ্ঠবংশ হইতে সমাগত হইয়া এক চলে, বিশেষতঃ দালি চলে উহার হিতি (বাম চলে, শিপিন), বায়-প্রবাহে কিংবা মন্তক্ষ প্রনার্ত ব রিয়া রাধিলে উহার বৃদ্ধি; চাপদিলে ও উষ্ণধন্তে ঞ্ডাইয়া রাধিলে হ্রাস / (মাগ-মি, ব্রন) , প্রভূত ১০-ফাবে উপশ্য।

সর্বাদা খাতুর পূর্বের ও খ তু-কালে কোষ্ঠবদ্ধতা ( ধতুর পূর্বের ও ধতু-কাদে অভিসার, জম-কা, বোভি); সরলান্ত্রের নিষ্ট্রিয়তার ন্যায় মল তাগে সরলান্ত্রের পদাঘাতবং আত্রন্ম কুছন, সলের খানিকটা স্বাহির হইযা পুনরায় ভিতরে প্রবেশ (পুলা), সরলান্ত্রে অনেকক্ষণ মলের অধিতি

বক্ষোলকণের মহিত পর্যায়ক্রমে গুদশ্রংশ (বাবা, ক্যান্ত-ফ)

প্রত্যেকবার স্তান স্তন-পান কালে অপত্য-পথ ইইতে র জ-আব (জোচ-টিগ তুলনা করন)

छन-वृञ्च थिनित्र च्याकादा चाक्ष्ठे रुप्त ( मार्गा ) ।

স্বপ্ন সঞ্চরণ (নিশিপান্তন), নিউডি স্থান্থ উঠিয়া ইডস্তডঃ বিচরণ, অনস্তর প্নরায় শয়ন (ক গী-রোম)

অত্ত বৃদ্ধ কে। প্রোক কুম কুম কুম উপ্থাতে পূথোৎপত্তি (গ্রাফ, হিপ, মার্ক, পেটে )।

হস্ত ও পদের অসুশীর নথের পঞ্চা (এণ্ট-ক্রে)

পা जनावूज वाशिल \* कि गार्ग ( cकाना, कृष )

হাত পা, পায়ের আঙ্গ এবং কক্ষ-ভবের ঘর্ম। তুর্গন্ধা ঘর্ম।

প্রতিদিন সায়াঙ্গে ঘর্শবাতীত পদবয়ের অয়, পচামাংসের তায় অসহ্য ছর্না।
ম্যাগ্নিটাইজভ হইবার (অয়স্বান্ত-শক্তি-সঞ্বারের) ইচ্ছা, উহাতে উপশ্ন
(ক্ষ্ম)

বিধান-তম্ম হইতে মাছের কাঁটা, স্ফী, হাড়েম চোঁচ এ ভৃতি শৈল্য নিদ্ধাপনে এতদ্বারা সহায়তা হয়।

অশুস্থানী গ্রন্থির নালী-ক্ষত; কুনী (ম্যাগ-ফস, ম্যারম); আফুল-হাড়া; রক্ত-ক্ষেটিক, কার্বকল; সকল প্রকার ক্ষত। নালী-ক্ষত, উহাতে বেদনা, ছুর্গন্ধ, উচ্চ সাস্থার প্রান্ত (high spongy edges), ও মাংসাজুর; মল-দার-বিদারণ (গুদ-বিদারী); মলভাগোন্তে অভিশন যাভনা।

রীবা, কণ্য, কর্ণ, জন, বংগণ প্রাক্তির গ্রন্থির প্রদাহ ও প্রোৎপত্তি। উপচয়।—শতিগতাম; ধতু-কালে, অমাবস্তাব সময়ে; অনাম্বত হইহে, বিশেষজঃ মন্ত্রক অনামৃত করিলে; এবং শয়ন করিলে বৃদ্ধি

তিপান্স |--তিষ্ডাম নিশেষতঃ মন্তকে বস্ত্র অড়াইসে, আমাশ্যিক লক্ষ্ণ যাতীত মন্ত্রাল :সমন্ত লমণের উপশ্য, আমাশ্যিক লক্ষণ শীতল আহাসে বৃদ্ধিত হয় ( লাই )

স্থান্ত্র । (১) গুলা ও খানি কিউলার সহিত অনুপ্রক সম্বন্ধ (২)
সিলিশিয়ার পরে লাইকো, শিপি, ফ্লোরিক এসিড ও হিপার ভাল খাট। (৩)
সিলিশিয়ার সহিত হিপা, পিক-এসি, কালী-কম, হাইপার, রটা, ভালিকিউ, ও গোটগবার্গের ভূলনা হয় (৪) কা ছ গ্রাফ, হিপা, নাই-এসি ও ফলের পরে সিলি ভাল খাটে (৫) ভনগ ভালহায় পলস ও প্রাতন ভাবহার সিলির সাদ্ধ্য-সম্বন্ধ

### সেলেনিয়ঃম।

#### (Selenium)

অ্বার্ণার (এবং বদন, ম্প্রেণ্স, প্রার্ণার এ এক এক কালের শীর্ণতা

ক্ষাধ্যে অভিশয় বিশ্ব ডি, কিন্তু নিজ কালে প্ৰথে উহার শ্বরণ

শিষোবেদনা ----মদিরাপায়ীদিগের শিষোবেদনা; ব্যক্তিচারের পর; শেমনেড, চা ও হুরাপানের পর; প্রতিদিন অপরাহেণ, শিরঃপাড়া

भश्रक, का, दर्शाय, श्र धनगाद्यत्र दक्य-थङन

থেডিভায়ের অভিদারে পরিস্মাণ্ডি

সালিতে স্থা (শিষা, শোর); উত্তা সদিরা পানে স্পৃহা, প্রায় অমস্য আকাজ্যা

কোষ্ঠবন্ধতা। শতদ অবস্থ মণ, হাতদিয়া বাহির করিতে হয়

(এলো, ক্যাক স্থানি-বিউ, সিপি, সিপি), গুরুতর রোগে, বিশেষতঃ খান্তিক (enteric) অরের পর উহার উৎপত্তি।

मृत्य--- त्याहिक, मिथन, यहा ; क यून, त्याहिक, त्याप्य जावः पाछिक पापर्व विभिष्ठे मृत्य ; विहतः -कात्य कानिकांत्र विगत् विगत् मृत-भोक।

লিন্সা সংযুক্ত ধ্বজন্তক; অশীল চিন্তা, কিন্ত শারীরিক অদামর্থা ( আকস্মিক ধ্বজন্তক, ক্লোর )।

ধীর, অপ্রাচুর উদান অনেককণ স্থারী পুলক সহকারে অতিজাত ডক্রাপাত, সংসর্বের পর ক্রবেগতা, বদমেপাক, প্রায়শঃ অনিজ্ঞায় বিন্দু বিন্দু ডক্রা ও প্রতিটিক রসের নিঃসর্ব এবং উপবিষ্ট অবস্থায়, সলত্যানা ক্রান্তে ও নিজ্রাকালে, উহার করণ; লালা মেহ (gleet) (ক্যালাড)।

কাম-প্রবৃত্তি পরিশৃষ্ণ প্রবল শিকোদাম, লিস্কমুণ্ডের উপরের দিকে আকুষ্টতা (বার্ষ নীচের দিকে আকুষ্টতা, ক্যাছ)।

স্বর-নাশ (aphonia) — অধিকক্ষণ স্বরের ব্যবহারের প্র স্বর-নাশ; গান করিতে আরম্ভ করিবার সময় স্বরের ভয়তা; পুনঃ পুনঃ গলা পরিকার করিয়া স্বচ্ছ খেতসার্মর শ্লো তাল্যা ফোলতে হয় (আজ্জ-মে, ইয়াণ); টিউবারকিউলার ল্যারিঞাইটিন।

দৌর্মন্য, সহজে অবদয়তার উৎপত্তি। মাদসিক বা শারীরিক পরিশ্রম জন্ম; টাইফরেড, টাইফস, বা অমিতাচারের পরে, উহার উদ্বন।

শুইয়া থাকিবার ও নিজা যাইবার ছর্নিবার ইচ্ছা; সহসা শক্তির বিলোপ; বিশেষতঃ গ্রীয়কালে।

উষ্ণ, শতিল অথবা আর্দ্রি সকল প্রাথার বাধার প্রবাহেই অতিশয় অপ্রান্ত। টাইফয়েড জ্বের পরে মেরদণ্ডের অভিশয় ত্র্পশতা, পকাঘাত জ্মিবার আশিস্কা।

রোগাক্রান্ত স্থানের শীর্ণতা প্রাপ্তি।

উপচয়—বায়ু-প্রবাহে ; স্বর্ণার তাপে এবং লেমনেড, চ্ণু বা স্করাপানে ; স্বন্ধি

উপশ্ৰম। -- সুধে শীওল জল বা শীতল বায়ু গ্ৰহণে, ক্লাস।

मन्द्रा । --(>) धनन ७ भूज-पद्धत मण्डल, जनः थाम-यद्धत मण्डल करमत्र मिर्ड , गांत्रक छ वर्ष्ट्राविद्धत खन-यद्ध-व्यवाद जांद्र्ज-दम फ होत्तत्र मिर्ड ; जनः किंति मण, निर्ट्छ मत्रगांद्र मण्डल जांद्र्य महिरू दमरम्ब ज्ञान हत्र । (२) देखित्र दमोर्क्टला, कांगांछ, छांहे, छांक, छ कम-जित्र १ दत दमरम्ब छाम थार्ट (०) भावपदिक खेम्र वा श्राक बात्रा शांह्र्ण यमित्रा द्श्राम जानक भग्नाहरू दम्दल्यन्त्र अपद्मेषम १९६ ।

#### 6मातिषश्म।

(Psorinum)

নোরা-ধাত্-ছই ব্যক্তিদিগের পক্ষে বিশেষ উপদেগী

পুরাতন রোগ-চিকিৎসায় যখন জুনিবাচিত ঔষধে কোন উপকার বা স্থারী ফল দর্শেনা ( তরুণ রোগে, সম্ফ ); এবং যখন রোগীতে সম্ফার উপযোগী মনে হয় কিন্তু সল্ফার ব্যবহারে কোনও ফল প্রত্যা বায় না।

তর্গ রোগের ভয়ঙ্গর আক্রমনের পরে প্রতিক্রিয়ার অভাব।

শারীর-রদের ক্ষর বশতঃ তেরুল রোগের পরবর্তী শারীরিক যুরাদির বিকার যাতীত বা অরম্ভুত, অথবা দৃশ্যমান কোনও কারণ বাতীত; অভিশর মুর্বিগতা ও গানি।

भान कता मध्यक भंतीदत फूर्गका।

সমগ্র দেহের বেদনা, সহজেই শরীর ঘৃষ্ট ও আখাডিত হইরা থাকে। শীতল বায়ুতে বা বাতাতপের পরিবর্ত্তনে অক্তান্ত অসুভবা-ধিক্যা; প্রথর গ্রীপ্সকাশেও পাশকের টুগী, ওভার কোট বা শাল ব্যবহার। ঝড়ের সময়ের ভীব্রভার্মনত ; ঝড়-বজ্রকালে বা উহার কভিগম দিবস পূর্ববি হইতেই অস্থিরতা বোধ (ফস); গ্রীপ্সকালে অন্তর্হিত ও শীতকালে প্রত্যাবৃত্ত ৬ফ, সম্ব্ন উদ্ভেদ।

পাঁচড়া বা অপর কোনও চর্মরোগ বণিয়া গিয়া নানাবিধ উপদর্গ উৎপন্ন হইলে এবং সলফার ব্যবহারে উপশ্য না অন্যিলে: যৎসামাল্ল মানসিক আহেনে (emotion) উৎপন্ন ভয়ানক রোগ

রোগাক্রমণের পূবর্ণনি অস্থাভাবিকরপে ভাল বোধ। তীর সোরা-বিষ-ছপ্ত রোগা; সামবিকতা, অন্বিরতা, সহজেই চঞ্চিততা। অতিসার, প্রাদর, ঝাহু, বার্ম প্রভৃতি সকল প্রাবেরই শাবের ন্যায় জুর্গন্ধ। উৎকণ্ঠা, ভাসপূর্ণতা; পূর্বেই ভবিষাৎ সম্বন্ধ মন্দ বলা।

ধর্মবিষয়ক বিষয়তা; অভ্যন্ত অবসাদ, আত্মহত্যার ছঃথ জনক চিন্তা; মুন্তিন সম্বন্ধে (মেলি) ও আরোগ্য সম্বন্ধে নৈরাখা।

হতাশা — রোগী মরিয়া বাইবে বলিয়া এবং তাহার কারবারে সোক্ষসান হইবে বলিয়া ভীত হয় ; রোগের চরমকালে হতাশা ; নিজের জীবন ও তাহার আত্মীয় সম্বনের জীবন হঃসহ করিয়া তোলা।

তীত্র কণ্ডুয়ন সহকারে আরোগ্যাশা পরিশৃস্ততা

শিরংগীড়ার পূর্বে চকুর সমূথে ঝিলিমিলি দর্শন, দৃষ্টির ক্টাণতা যা অধ্যতা (ল্যাক-ডি, কালী-বাই), ক্লফবর্ণ বিন্দু অথবা মণ্ডল দর্শন।

শিরোবেদনার সমবে সবর্ব নিই ফুগোবোধ; আছারকালো বেদনার ভূমি; উত্তেদ বসিয়া গিয়া অথবা ঝতু হইয়া শিরোবেদনা; নাসিকা হইতে রক্ত পাতে বেদনার প্রাস (মেলি)

শুক্ত, চাক্চক্য পরিশৃত্ত, সহজেই জড়াইরা যার, জটা বাঁধিয়া যায় ( লাই ) একপ ; চুক। কেশ রোগ ( Plica Polotica, পোল্যাও দেশীয় কেশ-রোগ বিশেষ) ( ব্যারা, সাসা, টিউব )

শুক্, সশক্ষ বা আর্দ্র, ছর্মার পূধ-পূর্ণ গীড়কা বিশিষ্ট, মন্তক্ষ-ত্বক ; পীড়কা হইতে একপ্রকার আঠা আঠা, ছর্মার রসক্ষরণ (গ্রাফ, মেস্ক্র) অধিন-প্টের প্রদাহ সংযুক্ত তীব্র আলোক-বেহ, চক্দু মেলিচে অসাম্প্র ;

কর্ণ কানের উপরে ও পশ্চাতে আদ্র' খুস্কি এবং অবদরণ, ত্র্যন্ধ আঠা আঠা আব নিঃসরণ (গ্রাফ)

वर्ग-स्थात ----भोक्तमा, तमानित मक, भहामाध्यम क्रांम खत्रकत क्रीम यातः राम वा कारण हिनान भववकी भूतोकन कर्यसात।

বয়ঃত্রণ — সাধারণ ও গোলাপী সকল প্রকারের; ঝতুকালে, কফি, চর্মি, টিনি ও মাংসে উপচয়; অনির্বাচিত ঔষধেও যথন উপকার হয় না বা ক্ষণিক্ষ উপশম জ্বনায়।

মধ্য রাতিতে কুধাকুভব, কিছু না খাইয়া পারা যার না (সিনা, সলফ)।

পঢ়া ভিমের গদ বিশিষ্ট উদ্গার ( আর্ব, এন্ট-টা, রাফ )।

भवशिक्त, विश्वाम, महेटवन प्याकारतन श्रमीरनन एएगानम्छ मणायण स्थान। थक् थक् कित्रा काणिम छेठाहिएछ स्व (काणी-मि)।

জডিসার। ন্সহস , প্রবল (এলো, সলফ); জলবৎ কলিশবর্ণের, প্রচা শবেরমত গ্রা বিশিষ্ট মল; অনিজ্যায় নির্গত, রাজি ১টা হইতে ৪টার মধ্যে উপস্থিত; সাংখাতিক তরল রোগের পরবর্তী; নজোনগমকালে; বালক শালিকাদিগের ধাতুপরিবর্তনের সময় অভিসার

्कांध वक्ष। क्षित्रवनामहकात्त्र, छ्र्यमनीय, भत्रवाद्याय निश्चात्रका यभ्दः भग्रुशम, दकांधकांत्रिकः ; भगकांत्र विकथ रहेरण करे खेबरथ छेशकांत्र रूप

সূত্রাশয়ের আংশিক পক্ষাত বশতঃ পূর্ণিয়ার সময়ে উপস্থিত, এক্ষিমা-রোগে আজোস্ব পারিবারিক ইতির্জ স্বলিত ছদিম্য; স্বারিত সূত্র বছৰৎসমের পুরাতন প্রমেহ, উহা আমোগাও হয় না প্রাণণিতও হয় না ; অনির্বাচিত ঔষধেও ফল না দর্শিলে

বৃহৎ, ছর্গন্ধ, সংষত (চাকাচাকা) খণ্ড; ত্রিকাস্থিতে (Sacrum) তীব্র বেদনা; দৌর্বাকা; রজঃ নিবৃত্তির সময়ে; খেত প্রদর।

গণ্ডাবস্থার হর্দমা বমন, জবের অভিয়েত সঞ্চলন; যথন স্থানর্থচিত ঔষধে কোনও উপকার হয় না গণ্ডিছ শিশুর সোনাধাতুদোষ দ্ব করিতে এই ঔষধ বাবস্বভ হর

সকল যন্ত্রণার শান্তি সহকারে (ক্যালাড, ভাট-মি) ওরণ রোগের পরবর্তী প্রভূত বর্গপ্রাব

খাসরোগে (হাঁগানি) খাস রুচ্ছ্ ঃ—বিস্তুক্তবায়তে উঠিয়া বসিলে রুদ্ধি (শরো); শ্রুন করিলে ও হই বাছ ছইদিকে অভিদূরে প্রসারিত করিয়া দিলে উপসম (আসে নিকের বিপরীত); নিরাশা,রোগী মনে করে সে আর বাঁচিবে না। প্রতি নীতকালে কাসের আজমণ

ওয়ধিগদ্ধজ-দ্বর (I-lay fever)) — খাসকাস সোরা বা পানার ইতিযুত্ত সহকারে প্রতিবৎসর নিরমিডরূপে মাসের একই দিনে প্রত্যাবর্ত্তন রোগের
গ্রীম্মকালের আক্রমণ নিবারণার্থে ও রোগের ধাত্দোর খালনার্থে পূর্ব শীতকালে
চিকিৎসিত হওয়া আবশ্রক।

কাসি — এক্জিম অথবা পাঁচড়া বসিয়া ষাইবারপরে বছবৎ দরের পুরাতন; প্রাতে নিয়া হইতে জাগরণাত্তে ও সন্ধায় শ্বনে বিবর্দ্ধিত (ফস,টিউব); হরিৎ,পীত বা লবগাক্ত নিজীবন বিশিষ্ট; পূদেরভার; নিজীবন ত্যাগের পূর্বে অনেক্ষণ ধরিরা কাসিতে হর এরূপ; কাস

চর্ম '—চর্মরে'ণে অ'ক্র'ন্ত হইবার অসাজাবিক প্রাবণতা ( সল্ফ ) , উদ্ভেদ্নে সহজেই প্যোৎপত্তি ( হিণার ) প্রাবণ শুক্র, নিম্রিন্ম, ক্রচিৎ ঘর্ম্ম সংযুক্ত নোংরা, মনেহর কথনত প্রাকালন করা হরনা এরণ কর্মণ, আঠা, তিলস্ক্রবৎ ; গরুক ও নীসার মলম ব্যবহারের মন্দক্ষ সংযুক্ত , চর্মা

হর্দমা কণ্ডুমন, অথবা চোর ডাকাড ও বিপদের ভয়পূর্ণ স্থপ্র (ডাট-মি) । সংযুক্ত নিজাহীনতা সোরা বা সোরাধাতুদোধের অক্সই যে কেবল সোরিণঃম ব্যবহাত হইবে ভাহা নহে, অপরাপর ঔমধের মত লক্ষণ সমষ্টির সহিত মিলাইয়া ইহা ব্যবহার করিতে হয়, এবং তথনই আমরা ইহার আশ্চার্য্য ক্রিয়া প্রত্যক্ষ করিয়া থাকি।

স্ব্রা ।—সলকার ও টিউবারকিউলিনামের সহিত অস্প্রক সহয়
ক্রেল্মি, বোরা, হিপাব, সলক, টিউব, সোরিলংমের পরে ভাল থাটে।
গর্ভাবস্থার বমনে ল্যান্ডিক এসিভের পরে; ডিয়াল্মের আডিমান্ডিক রোগে
আনিকার পরে সোরিণংম ভাল থাটে।

खरनद्र कामिद्र भिद्रिपेश्यत्र भट्द मनकाद्र छोनकांच कर्द्र।

J.B Bell—"বিশুদ্ধ স্বৰ্ণ কাৰণা অভিশয় ঘ্ণাবে কোনও বস্তু হইতেই উষ্ধ প্ৰস্তুত হউক ন কেন, উহার আশ্চ্যা কাৰ্য্যকারিতা শক্তির নিকট আমন্ত্রা স্তুত্তর, উহা কোন্ বস্তু হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, তাহা আনিবার কোনও আবগ্রক করে না।"

## ज्ला क्षिया (देशका ।

(Spongia Tosta)

গুটিকা-ধাতুতে এই ঔষধ বিশেষ উপযোগী ৷ পাতলা চুল, শিশিল দেহ-তত্ত, অন্দর স্থাকৃতি বিশিষ্ট (বোম) বালক-বালিকা ও জী-লোকদিগের গলে স্পঞ্জিরা বিশেষ উপযোগী

এছির শ্লীততা ও দৃঢ়তা; গলগও ( রোম )।

ভীত হইরা নিজা হইতে জাগরণ এবং খাস-রোধ অন্তব; বোধ হয় যেন স্পঞ্জের জাত্যন্তর দিয়া খাস-জিয়া নিপায় হইতেছে।

প্রত্যেক মান্সিক উত্তেজনায় কাসের বৃদ্ধি

নিজাত্তে বা নিজ যাইতে যাইতে বৃদ্ধি ( म্যাক )।

গলা-ব্যথা, মিইন্রব্য আহারে উহার বৃদ্ধি গল-এত্বির ক্ষাতিতা; তৎসহ রাতিতে শাস-রোধের আক্রমণ। গলগও। গল মধ্যে পর্যন্ত, কণ্ঠনালী, বায়ু-নলী-ভূজ ( bronchi ) প্রভৃতি বায়ু-০ গের গৈশিক বিল্লীর অভিশয় শুক্তা—"যেন শৃলের স্থায় শুক্ত

काम --- ७४, क्रूज-वनवर, क्र-ताशित्र काम; छेशात्र धर्मगाष्ट्र सम्बन्ध । भक्ष विभिष्ठे, माँहेमाँहे, छन् छन् मरग्क काम; मकलई मन्न्र्र्व छक्, क्षित्रीत घड़घड़ भवर छन यात्र ना।

কাস।—দেবদারুর তক্তার ভিতর দিয়া করাত টানার ম্যায় শুষ্ফ হিস্ হিস্ শব্দ বিশিষ্ট কাস, মিফট্রেব্য, শীতল পানীয়, ধুমপান, মাথা নীচু করিয়া শয়ন ও শুক্ষ, শীতল বাতামে উহার অধিক্য, পঠনে, গানে, আলাপনে, ও গলাধ্যকরণে বৃদ্ধি; উষ্ণান্ত্রব্য আহারে বা পানে হাস

জ্প —আকুলিত সাঁইসাঁই শব্দ বিশিষ্ট, নিশাস-কালে বিব্যদ্ধিত (প্রশাসে বিব্যদিত, একন); ও ছই প্রহম মালির পুর্বে ব্যদিত (প্রাতঃ-কালের পূর্বে ব্যদিত, হিপ); জ্প

ত্বকলা ।—বাতনা ও ইাণানি সহকারে প্রবল ক্বকলা; মধ্যরাতির পরে খাস রোধ ও ব্যাকুলতা সহকারে সহসা নিজা হইতে আগম্ব। ভ্রদ্কপাটের অপ্রাচ্ব্য (valvular insufficiency); ধতুর পূর্বে ও ধাতু-ক্ষালে উপস্থিতি।

হাদশ্ল; আকৃঞ্ক বেদনা, উত্তাপ, শ্রান্তি, খাস-সোধ, উৎকণ্ঠা ও খর্ম; মধ্য-রাত্রির গরে বৃদ্ধি।

শুক্রবাহিনী নাড়ীব ক্ষীততা ও বাথিততা; অওকোষের ক্ষীততা, স্বাইতা, ও নিম্পেষণ; বিস্থা প্রমেহ অথবা কুচিকিৎসিত অও-প্রাদাহের পর উহার উৎপত্তি।

সন্থান —(১) কাস ও জুপরোগে, শুক্তার প্রাধান্ত থাকিলে একন, ও হিপের পরে ম্পঞ্জিরা ভাল থাটে; শ্রেরা বড় ঘড় করিতে আরভ করিলে ম্পঞ্জিরার পরে হিপার ভাল খাটে; নিষ্ঠাবন শিথিল হর কিন্ত রোগীকে উহ গিলিয়া ফেলিতে হয়, এই লক্ষণে আর্থ, কয়, আইওড, লাক, ও নতা-মর সহিত অংক্ষিরার তুলনা হয়

### স্পাইজিলিয়া।

#### (Spigelia )

দীরতা, ছর্মণীভূত; আমবাতিক শারীরিক প্রাকৃতির বাজি; এবং সূত্রে ও দীর্ঘ ক্রমি বিশিষ্ট গণ্ডমাল -ধাতু-ছষ্ট বালক-বালিকাদিগের পক্ষে ম্পাইজিলিয়া উপযোগী।

লগু-কেশ; পাজুর, গীণ, ফীড, ছর্বল; ও কুঞ্চিড, গীড, মুবর্ণজ্জ্

তপার্শের শরীরের যাতনাযুক্ত অনুভূতি; তপৃষ্টস্থানে শীতলতা অনুভব, তার্শে সর্ব শরীরের অভ্যন্তর দিয়া কল্পের সঞ্জব (কালী-কা) হচা, আলপিন প্রভৃতি হক্ষাত্রা, ধারাল বস্তর ভয়।

শ্বংশিতের আম্বাতিক রোগ ( ক্যালী, লিছ, ভাজা); শ্বরে প্রেদেশে শ্বংশিতের আর্থনজনিত শব্দ। ধ্যনীর অর্ধুদ ( eneurism )।

सामयोत्र निरतारयममा — निर्दात्रिक गमरम छैशिक्षि, मिखरमत कृमिरमरम क्षारक कांत्रक, मखरमत छैशन क्षानात्रण अवश् यामिनिरमत हमू, हमू-रकांहेत क मक्षाशास क्षयश्चि ( प्रकिण शार्था, छोष, भिक्ति); श्लाममध्यसम, प्रश्तशक्त्रम, क्षायण रचममा

স্বোদ্যে শিরঃপীড়া, মধ্যাতে উহার চরম হৃদি, স্ব্যান্ত পর্যন্ত হাল প্রাপ্তি (ভাট, ট্যাব)।

व्यक्ति-(गोलटक व्यम्हर क्षिणिनी (यहन); गर्सभन्नेत्र मा णूत्राहेशा हक्ष् णूत्रांग योत्रमा, शां कमक्तिश (शरण छहात्र विरमय व्यक्ति)।

চক্ষু যেন গহরের অপেক্ষা অভিনিক্ত গৃহৎ এরূপ অনুভব (এক্ট, কোন);
কপেদের্গ অভিনিক্তা অনুভূতি; নাথার চারিদিকে যেন বন্ধন রহিয়াছে
এ প্রকার অনুভব কারি, কার্য-এদি, সলক,)

লাসিকার পশ্চাডাগের রন্ধু হইতে জ্র্মি প্রচুর শ্লেম গণার অভ্যক্তরে প্রন, ডাম্মারাজিতে গল-রোধের উৎপত্তি (হাইছা)। অন্দি-গোলকের অভ্যন্তর দিয়া পশ্চাদিকে মন্তকের অভ্যন্তর পণ্যন্ত ভীব্র, বেধন, ও ভেদনবৎ শীতল, আর্দ্রি, স্বাস্তিকালো উহার উৎপত্তি।

म्थमखान प्राम्भ ; निर्मिष्ठ ममाम छेराम छेशिष्ठ ; सामछातान उम्प्रकारित, हम्, रस्म अपि ७ माखा आकाश्वि ; প্রান্তঃকাল হইতে সূর্য়ান্ত পর্যান্ত অবশ্বিতি, ছি জিয়া যাওয়া ও আলান ভাম বেদনা, গালেন মলিন আরক্তা; শীতল, বৃষ্ঠি-কালে; ও চা পানে উহান উৎপত্তি।

তাত্রকুটের ধূম-পান জনিত দশু-বেদনা; কেবল শমন করিয়া থাকিলেও আহার-কালো উপশম (প্লাণ্ট)। শীতল বায় ও জলে বৃদ্ধি; উহার বিষয় চিন্তা করিলে প্রত্যাবৃত্তি।

সুলাজের শেষ বক্রাংশে (sigmoid) অথবা সমলাজে কঠিন করা ট (scirrhus) উহাতে অসহ্য নিদারণ বেদনা ( এলুমেন )।

भोज-कृष्ण ; पिक्न भार्य ज्ञाना गांवा উচ্চ कतित्रो भग्रामत जांवशक्रा (कान्त्रे, ज्ञान) ; वक्षान्यम रही-द्वस्वर द्वपना ।

নাড়ীর স্পন্দনের সহিত যুগপৎ স্থানি-বেধবৎ বেদনা বিশিষ্ট বৃক্ষঃস্থলের রোগ, সঞ্চলনে ও শীতল আর্জ ঋতুতে উহার আতিশ্যা।

ধংকপা; প্রবল, দৃশ্যমান ও প্রেতমান স্পান্দন; স্বতার নাত্র নিজ্ঞা চড়িলে; ও সমুথদিকে স্বনত হইলে উহার উপস্থিতি; স্বদত্রপ্রদেশে (apex) সংগিতের আকুঞ্চনজনিত শ্ব

উদরের রোগ; ও স্থানি-রোগ সহযোগে ভোডগামি, প্রথম শক্ষাংশ তিন চারিবার ব্যিতে হয়

উপচয়।—নজিলে চজিলে, শব্দে, ম্পর্শে, চক্ষ্ গুরাইলে; ঝাঁ†কি লাগিলে অথবা সংঘর্ষতে; র্কি।

উপশ্য ।—নতক উচ্চ করিয়া দক্ষিণ পার্শে শয়নে হ্রাস ( আস, ক্যাই), স্পঞ্জ )।

সম্বন্ধ ।—হাজোগে, একন, আস, কাজি, ডিজি, কালী-কা, নাজা, ক্যালমিয়া ও প্ৰশ্নিয়ায় সহিত প্পাইজিলিয়ায় তুলনা হয়।

# ण्याक्र्रहरनित्र ।।

#### (Sanguinaria)

নির্দ্ধারিত সময়ে উপস্থিত স্বান্ধ শিরংপীড়া, প্রাতে উহার আরম্ভ, দিবাজাগে দ্বিন্ধান্তি, সন্ধান্ধান পর্যান্ত অবস্থিতি; মাধা বেদ ফাটিয়া পড়িবে, জাধবা চক্ষ্ প্রচাপিত হইয়া বাহির হইয়া পড়িবে এরপ জন্তব; নিয়োত্ত উপসামপ্রান্তি।

আমেরিকার সবষন শিরঃপীড়া,অয়কার গৃহে সম্পূর্ণরূপে শান্ত হইয়া থাকিলে উহার ব্লাস ( অভিরিক্ত মানসিক ও শারীরিক পরিশ্রম বশতঃ শিরঃপীড়া, ইপিন্দিরা, সবমন শিরঃপীড়ার পরিশ্রম-কালে বৃদ্ধি এবং ষর্বণে, প্রচাপনে ও স্কাশনে প্রাস, ইণ্ডিগো )

শিরঃপীড়ার মন্তকের পশ্চান্তাগে আারস্ত, উপরের দিব্দে প্রসারণ ও দক্ষিণ চক্ষ্র উপরে অবস্থিতি ( সিলি।—বাম জন্দি-কোটারের উপরে বা মধ্যে অবস্থিতি, শিপঞ্জি)

নিস্তা-রজকালে প্রত্যাস্ত্রত, শিরঃপীড়া; প্রতি সপ্তম দিবলে উপ-থিতি ( ভাষাড, মিলি, সলফ ----অষ্টম দিবলে, শাইরিস)।

মূথমণ্ডলের লাহ্-শূল, নিহিত-জাল্প (kneeling down) হইয়া ভূতলে গুড়ারণে মন্তক চাপিয়া রাখিলে উহার উপশ্য; উপদেয় হয় হইতে সকল বিকে বেদলায় প্রসারণ।

প্রশাহটিশ নিউমোনিয়া ও গাইসিস রোগে, অণয়ায়ে গুগুজ্মের সীমা--বিশিষ্ট আর্জ্জান্তা; কর্ণে আগা।

দ্বিদণ বাজ্ ও দ্বিদণ ক্ষেত্র বাজের বেশনা (বাম, ফির), বাছ উপরে উঠাইতে পারা যায় লা, যাতিতে উহার বৃদ্ধি

দীর্ঘাস্থি, কর-পৃষ্ঠ প্রভৃতি যে যে স্থানের **অক্ অভান্ন আনুত ত**ণার বেদনা ( ব্রংস-ভেনি )

গল-কোষ ও গল নালীতে আলা। সময়ের ও নালিকার বহুপার (polypus) ( ভাল, সোমি, টিউক)। নিবৃত্ত-রঞ্জাদিরের পীড়া।—তাণবৈশ ও খেতপ্রদর, করতল ও পদতলের জালা; শ্যার গাত্রাবরণ ফেলিয়া দিতে হয়; শুনের বেদনাবিশিষ্ট নিবর্ধন; যথন ল্যাকেসিস ও সলফারে উপকার দর্শে না

ওষ্ধিগদ্ধজ্ঞ জ্বের পরবর্তী খাদ রোগ, গধে উহার বৃদ্ধি।

কাস — শুদ্ধ কাস, তজ্জা রাতিতে নিজ হইতে কাগারণ এবং যে পর্যান্ত না শ্বনার উঠিয়া বসা যায় ও বায়ু-নিঃসরণ হয় যে পর্যান্ত উছ'র অবিরতি; গগুদ্ধয়ের সীমাবদ্ধ আরক্তিতা; নৈশ দর্ম; অতিসার

ছপ-শব্দ-কাদের পরে উগ্রাকাস; রোগীর ষতবার শর্দি লাগে তভগারই কাস প্রভার্ত হয়।

যুবতী স্ত্রীদিগের, বিশেষতঃ স্বস্ত্র রজ-কালে, মৃথমগুলে উদ্ভেদ (বেলিস, ক্যান্ধ, ইউন্সিন, সোরি )।

সমৃত্যা ।—( ১ ) সবমন শিরঃপীড়ায়, বেল, আহিরিস, মেলিলোটের সহিত; বিরশ্ত-কালের রোগে, ল্যাক ও সলফের সহিত; প্রাতন ব্রন্ধাইটিস বা প্রচ্ছর নিউমোনিয়ায়, চেলি, সলফ, ফস, ভিরে-ভির সহিত আকুর তুলনা হয়। (২) ছালেটিনার বেলেডোনা বিফল হইলে এই ঔষধ ব্যবহৃত হয় (৩) ওপিয়মের মন্ততা নিবারণার্থে ইহার ব্যবহার হয়।

## স্থানিকিউলা।

(Sanioula)

নিম্নাভিম্থ গভিতে ভর (বোরা)।

শিশুর ছর্মনীয়তা ও অবাধ্যতা, ক্রামান ও পদাঘাত করণ , বিরস্ত চিত্ততা ও কোপনতা, আবার সম্বর হাস্ত ; স্পর্শ করিতে দিতে অনিচ্ছা।

অবিরত কার্য্যের পরিবর্তন

নিজা কালে বালক-যালিকাদিগের মাথার ও মাজের সম্ধিক ঘর্মা; উহাতে অনেকদ্র পর্যান্ত বালিশ ভিজিয়া যার (ক্যান্ত, সিলি) মস্তবেদ কেশার্ডভাগে, চকুর জতে, এবং দাড়িতে শব্দবৎ প্রভুত পুস্কি। কর্বের পশ্চাতে ক্ষত এবং উহা হইতে শুদ্র, ঘৃদর, আঠা আঠা রন নিঃসরণ ( গ্রাফ, সোরি )।

জিহব — বৃহৎ, শোলিত জিহ্বা; উহাতে জালা শীতল পাথিবার জন্ত বাহির ক্রিয় পাথিতে হয়; জিহ্বার উপর দক্ত (গ্রাট-মি)।

শকটারোহণ বদতঃ বিব্যাষা ও ব্যন। পিপাসা; বার্বার আর অর অর জল পান; অল আমাশ গে পৌছিবামাত ব্যন হইরা পতন (আস, ফস)।

অবিরত লক্ষণের পরিবর্তন ( ল্যাক-ক্যান, প্লস )।

অনিজ্যায় মল ও মূল নিঃসরণ; ধারাবরণী পেণীর (sphincter) উপর নির্ভর করিতে পারা যারনা (এলো); অপানের বেগ-কালে মল নিঃস্ত না তা এলভ ক্তথারয় আড়াতাড়ি করিয়া রাখিতে হয়

কোঠ-বন্ধতা — যে পর্যান্ত অধিক মল স্থিত না হর সে পর্যান্ত মল-প্রার্থিত পরিশ্যতা; অতি কুছনে আংশিক নিঃসাগ্নিত মলের প্ররায় ভিতরে প্রবেশ (গিলি, গুলা); অধিক পরিমাণে গ্রায় বর্ণ, তক্ষ, কুল কুলে বর্তু লাকার মল নিঃসরণ, ছাতি দিয়া বাহির ক্রিভে হয় (সেলে)।

মণ। ত্রু পরিত্যাগ করা অসাধা; দথ চুণের জার ধ্ররাভ ওজ গোলা সদৃশ; মলবারের একি হইতে ৭ও ৭ও হইরা পতিত (স্যাগনি ) মণ; মলে পনিরের গধা।

অতিসার।——বিষেচনের প্রাকৃতি ও বর্ণের পরিবর্ত্তন; ওয়ডিবের ভার নাকৃতি; কেণিল, খালের ভার সর্কবর্ণ, থানিক থাকিলে পর সর্কবর্ণ, ভাল-পড়া প্রুরের গালের মত্ত,—মল; আহারাতে ভাড়াভাড়ি মল-ত্যার করিতে যাইতে না

মান করিলেও মলের গন্ধ যারনা ( সলফ )।

মল-বারের সমীপবর্জী অকের আবদরণ (সলফ); মূলাধার (perineum) আবৃত করিয়া জননাল পর্যান্ত উহার প্রসারণ।

লোগা মণ্ডের জ্লের জার উগ্রেগ্ধবিশিষ্ট প্রদর (সরশান্ত হইতে লোগা-মণ্ডের জ্লের মার রস-ক্ষরণ, ক্যাক; ক্ষণ হইতে, টেলু)।

সুৰ্বাগতা, বন্ধি-গহৰবের আধ্যের (contents of pelvis) যেন বাহিন হইরা পড়িবে এক্লপ আবের (bearing down); ইাটিলে, পদ-ঋগিত হইলে, বা সংখর্ষে উহার বৃদ্ধি, বিশ্রামে ও শয়ন করিয়া থাকিলে হ্রাস ; জগের সংগ্রে হাত রাশিয়া জননাক তুলিয়া ধরিবার ইচ্ছা (লিলি, মিউর); জনায়্র স্পর্শ-ধেষ।

পদ-দর্শ।---পদাসুদীর মধাবজী স্থানে ঘর্মা, ও ওজনতা উহাদের কত ; দুর্গদ্ধা
দর্শ (গ্রাফ, সোরি, সিলি); যেন শীতল জলে পা ফেলা ইইয়াছে পদতলে
এরপ ঘর্ম

পদতলের আশা, উহা আর্ত করিতে বা শীতশ খানে সাথিতে হয় ( ল্যাখ, মেডে, ভাক, নলফ )।

শিশু অত্যম্ভ শীতকালেও পদার্ঘাত করিয়া কাপড় ফেলিয়া দেয় (ছিপ, সলফ)

জনশং বর্জনশীল শীর্ণতা, শিশুকে অধিক বয়ক্ষ, মলিন, তৈলাক্ত ও ঈষৎ কপিশ বর্ণ দেখায়; উহাস বাড়ের নিকটের অক্ কুঞ্চিত হইয়া বলিতে বলিতে ঝুলিতে থাকে (এ্রোট,আইওড, ছাট-মিউ, সাস্

সক্ষয়। — এলম, এরোট, বোরা, ক্যাক, গ্রাফ, স্থাট-মিউ, সিলি ও অফ্টান্ত প্রধান প্রধান নোরা-দোষয় ওবধের সহিত সময়।

### স্থাবাডিলা।

(Sabadilla.)

লঘু-কেশ, স্থান্ধতি, ত্র্নলীভূত শিথিল পেশীম এলীবিশিষ্ট ব্যক্তিনিরের পক্ষে এই ঔষধ উপযোগী।

বালক-বালিক'ছিগের ক্রমিজনিত রোগ ( সিনা, সিলি, নিগজি ) :

সামবিক রোগ।——স্পানন, আফেপিক-কম্পন, ক্যাটালেপিন; স্থানিজন্ত উৎপত্তি (সিনা, নোরি)

হত-ক্ষমিদ্দিত নারীদিগের কানোমাদ

অনেক গন্ধবের দক্ষিণ হইতে বাম্বিকে গতি (সাই, পড); পা হইতে সাধার শীভের উথিতি লাখি।—বেন বোগ হইমাছে; অলগুলি যেন শার্ণ হইমাছে, রোগীর এরপ প্রান্তি; বায়জন উদরের শ্লীতভা দেখিয়া রোগিণীর গর্ভ বলিয়া প্রম; রোগিণী মনে করে যেন তাহার কোন ভয়জন গল-রোগ জ্যায়াছে, উহাতে তাহার মৃত্যু হইবে।

স্বিরাম জ্বের ভোগকালে প্রবাপ ( পড় )

শিরংপীড়া — জাতিরিক্তে চিন্তা কর|তে,পতিরিক্ত মনোনিবেশ করাতে (পাজ্জনা),ও পট্ট-ক্ষমি (tape-worm) হইতে উৎপন্ন, শিরংগীড়া

হাঁটি।—আপেণিক, আবেশে আবেশে উপস্থিত, হাঁটি; তৎপরে অঞ্গাত ; প্রচুর অশবৎ প্রাব নিঃসরণদীল নাসিকার প্রতিশ্রার; মুধমগুলের উত্তপ্তা এবং অনিপ্টের আরক্তা ও জালা।

ডিদি বিষা, টিলালাইটিস (তালুম্ল-জ্বদাহ); অপেকাকুত অনায়াদেন উহ্যদ্রের্য গিলিডে পারা যায়; স্ফী-বেধবৎ যাতনা ও অভ্যান্ত অধিকাংশ লক্ষণ, বিশেষতঃ গল-শক্ষণের বাম হইতে দক্ষিণদিকে গতি ( গাংক, গ্যাক্ষ-ক্যান )।

গলার মধ্যে যেন একথও চর্ম শিথিণভাবে ঝুলিয়া রহিয়াছে এপ্রকার অন্তন্তব, উহার উপর মিয়া গিলিভে হয় ( পিওবৎ অন্তন্তব, শ্যাক )।

গল-কোষ ও গল-গহবরের পরিশুক্তা। তক্ষের পার্ডমেণ্টের মত শুক্তা।

উপ্চয়। শীতগতার; শীতগ বার্জে; বিপ্রাম-কালে; ও পূর্বায়ে;

সম্বা ।— , ) অপরায় ৪টা হইতে ৮ট পর্যান্ত বৃদ্ধি লক্ষণে, কলোস, কলচি, লাইকোর সহিত ; এবং অনাবৃত বায়তে হ্রানে, পলস, ও জাবিনার সহিত ভাবাভিলার তুলনা হয়; (২) প্লারিনি রোগে আই ও রাণ-বল্বের পর জাবা ভাল খাটে, এবং একন ও আই বিফল হইলে পরেও এজন্যারা উপকার দর্শে।

#### স্থাবিনা।

(Sabina.)

স্ত্রীলোকদিগের পুরাতন পীড়া সন্থিবাতল বেদনা, বিশেষতঃ তৃতীয় মাদে গর্জমাবের অভিমুখতা।

গীত-ব'তো অসহ্যত' উহ'তে লায়নীয়তার উৎপত্তি যেন অখি ও মজার (marrow) অভ্যন্তর দিয়া সংপ্রবেশ অশ্রুপাতের উৎপত্তি, থুফা)।

প্রায় সকল বোগেই ত্রিকান্থি হইতে মণিপুর পর্য্যন্ত (lirom sacrum to pubes) কটিদেশে আকর্ষণী বেদনা; পৃষ্ঠ হইতে শনীনের ডারিদিক-দিয়া মণিপুর পর্যান্ত বেদনার গতি (ভাইবারনঃম)

গর্ভপ্রাব বা অকাল-প্রসব জনিত পীড়া; জরায় হইতে রক্তথাব; আংশিক ফিকা লাল আংশিক সংযত রক্তের প্রবাহ, অন্ত্যক্ল সঞ্চলনে উহার আধিক্য (সিকেলি); বিচরণে সভত হাস, ত্রিকাফি হইতে মণিপুর (pubes) পর্য্যন্ত বেদনার সংপ্রাসারণ।

শাসু।—নির্দারিত সগয়ের অনেক পূর্বে, অতান্ত অধিক পরিমাণে, অতিরিক্ত দীর্ঘকালয়ারী শাসু; আংশিক তরল আংশিক সংযত (ফির) রক্ত; ( যাহাদের অতি অল বয়সে প্রাণম রক্তোদর্শন হইয়াছিল, তাহাদের); থাকিয়া থাকিয়া শাসু-প্রাবাহ নিঃসরণ; তৎসহ উদর বেদনার ও প্রস্থ-বেদনার ভাগ বেদনা; ত্রিকাস্থি হইতে মণিপুর পর্যান্ত বেদনা।

সংসর্গ-লালসার উত্তেজনা সহকারে ঋতু-কালের ব্যবধান-সময়ে রক্ত-জাব

অরায়্র দৌর্বলা বশতঃ অমরা-রোধ (মূল না পড়া); দার্যণ প্রস্বান্তিক বেদনা (কলো, সিকে)।

পুর্বে গর্ভশাবিণী; ও অঙ্গবয়দে প্রথম ধতুবতী নিবৃত্ত-রঞ্জদাদিগের অভিশয় রক্ত-শ্রাব।

পর্জগাত বা অকাল-প্রসবের পর ডিম্বাশির কিংবা গর্ডাশরের প্রান্থ এই ঔষধে, জরায়্ হইতে অর্ধান কিংবা অন্ধবিধ শৈল্য (foreign body) নিঃসারণের সহায়তা হয় (ক্যাম্)। व्यमहा क्या प्राप्त क न्यांना मश्यूक पूब्त-वद क किन ; क्रिकाक माश्माकृत्यन ( generalizations ) श्रीहृषी ( वृषा, नाह-विमि )

উপচ্য |----জাতায় সঞ্গনে ( নিকেলি ); উফবায়ুতে অগনা উফগ্ছে (এপিস, পশস ); দ্বি

উপশ্য |---শীতল, বিমৃক্ত, বিমল বায়তে হাস

সম্বা । ----(১) পুঞার সহিত অমশ্রক সম্ম (২) উপমাংস ও নামকদোম দনিত শীড়ায় প্রার গরে আবি ভাল থাটে। (৩) ক্যাক, জোক, মিলিফো, সিলে, ও ট্রলের সহিত আবির তুলনা হয়

# স্থাসুকঃদ নাইগ্রা।

(Sambuons Nigra)

গওমালা-ধাতুত্রান্ত বালক-বালিকাদিগের রোগে: বিশেষতঃ বায়্-গবের (nir-passage) রোগে এই ঔষধ উপযোগী।

স্বল ও মাংসল ব্যক্তিদিনের সহসা শীণ তা প্রাপ্তি (আইওড, টিউব)। প্রবল চিত্ত-বিকার; উৎকণ্ঠা, শোক, অথবা সম্ভোগ-লিলার অতি পরি-ভৃথির মন্দ ফল (ফ্ল-এনি, কালী-ফ্স)

শরীরের নানাস্থানে, বিশেষতঃ জন্ত্বার, গুল্ফে, পদে জলপূর্ণীতভা শিশুদিবোর গুল্ফ প্রতিশ্যার; নালিকার ক্ষতা ও সমাক শবরুরভা, উহার শাসের ও জন-পানের প্রতিব্যুক্তা; নাকে গুণ্ গুণ্ ক্রা (এম-কা,ন্রু)

খাস-কৃত্ ; শিশু সহসা নিজা হইতে জাগন্নিত হন, তাহার খাস প্রায় কৃত্ব হয়, ম্থমগুল সীসবর্ণ ও নীলবর্ণ ধারণ করে, সে শ্যার উঠিয়া বইসে; নীল-বর্ণ হইয়া উঠে, খাসের জন্ত পাবি থার (gasps for breath), অবশেষে খাস ছাড়িতে পারে; রোগের আজমণ নির্ভ হয় বটে, কিন্তু প্রন্থায় উপস্থিত হয়; শিশু নিখাস গ্রহণ করিতে পারে, কিন্তু প্রশাস ত্যাগ করিতে পারে না (ফোর, বেফা), রোগের আজমণের মধ্যে নিজা যায় (ল্যাক,— এরম-ড্রাক, তুলনা করন)। কুপরোগে শেষবিস্থায় যে প্রকার খাদ-রোধের আক্রমণ ফলো ওজ্ঞাপ খাস-রোধের আক্রমণ

জ্ঞানপরারণ বালক-বালিকাদিগের খাদ-রোধ-কর কান, মধ্য রাজির সময় উহার আভিশ্যা; শ্রু-গর্ভ, গভীর হপেশকবিশিষ্ট বসংস্থপের আগেপ সংযুক্ত: এবং নিয়মিত খাদ, ও দীর্ঘখাস সম্বলিত প্রখাস বিশিষ্ট; কাস।

জ্বের অ'বেশের পূর্বে গভীর ক'দ

জন —নিদ্রাকালে শুষ্ক উত্তাপ; নিদ্রিত হইবার অব্যবহিত পরে; শননের পরে; পিপাসা-পরিশ্য উত্তাপ গাত্র উন্মুক্ত করিতে আমাস্কা (জরের সকল অবস্থারই আর্ত থাকিবার আন্প্রকভা—নরা)।

জাগ্রৎ সময়ে, সর্বশ্রীরে প্রভূত ঘর্মা; নিটিত হইবামাত ৬ জ উত্তাপের প্রভারতি (নিজা যাইবার জন্ম চক্ত্ বুজিবামাত দর্ম, সিঞ্চ, কোনা)

উপ্চয়।—-বিশ্রাম কালে; মধ্যরাজির সময় ও ফল আহারের পরে;
বৃদ্ধি।

উপশ্বা — শ্যাস উঠিয়া বনিলে; ও সঞ্চলনে; ত্রাস অধিকাংশ যাতনা বিপ্রাম কালে উপস্থিত ও সঞ্চালনে তিয়োহিত হয় (ফ্রাস)।

সাস্থানা ।——( > ) সিন্ধ, ক্লোর, ইপি, মেফা, সলফের সহিত ভাত্র তুলনা হয়। ( ২ ) আসে নিকের অপব্যবহার জনিত পীড় ভাত্রার উপশমিত হয়। (৩) ভয়-প্রান্তির মূলফলে ও ওপিয়মের পরে ভাতু ভাল থাটে।

## হাইওসায়েমাস।

(Hyosoyamus Niger)

কোপন-সভাব, উত্তেজনশীল, স্নায়বীয়, হিছিরিয়া-গ্রন্থ সক্ত-প্রধান ধাতৃত্ব স্যক্তি।

হিটিরিয়া বা মদাত্যয় (delirium tremens) প্রান্ততি রোগে বেরূপ দৃষ্টহয় ভজপ অপ্রাদাহিত প্রকৃতি বিশিষ্ট কিন্ত মন্তিকের বিবন্ধিত জিয়া-শীলতা সংযক্ত রোগ ট্রার। -- ভর বা অয়ের কমি জন্ত বালক-বালকাদিণের টক্বার (সিনা) প্রাব-কালে কিবো প্রতিকাবস্থার টক্বার; আহারাত্তে শিশুর বমন, তৎপণে সহ্যা চিৎকার ক্রিয়া অচেভন হইয়া পজন।

আখেল —সংগ্রাশ্রতা ও অভিনয় অস্থিয়তা সহ আক্ষেণ; চয়ুই হইতে পদাস্থলী পর্যান্ত শরীরের প্রত্যেক পোরা তপানান (সংজ্ঞাসং আদেশ, নয়া)

প্রাণাপ ত্রিরতা, শ্যা হইতে লাফাইয়া ৫ড়া, পলাইয়া যাইবার চেষ্টা আধাদজিক উত্তর দান; বেগগী মনে করে যে সে ঠিক হানে নাই; সে নানাবিধ কাল্লনিক আচারের (doings) কথা বলে, কিন্তু কোন অভাব জানায় না, এব কোন অভিযোগ করে না।

्थनार्थ (बरनर्षामा ७ होत्यानियस्य मध्यकी जवज्ञायरे राहेकमारयमाम यावज्ञ र्या । এই अध्य (बरनर्षामान नक्षण्य क्षांत्र मक्षण मिक्टक्षय प्रक्रमक्ष्य अवर द्वीरमानियस्य एयक्षय रक्षांच ७ ऐगानियर क्षांत्र शास्त्रमा ।

खत्र।----धकाको भाकिएछ ७॥ ; नियाक रुट्रेप्ट, मश्लिख रुट्रेप्ट ख निक्को ख रुट्रेप्ट विभिन्न खत्र ; बाह्रेएछ ; ७ किছू मिरम छाटा मह्र्ए खत्र ।

ভয়ত্তোমের মান ফল; তৎসহ বিশেষ, জোধ, অসম্বন্ধ কথা অথমা প্রত্যেক বিষয়েই হান্ত ক্রিয়ার গ্রেষ্ট ; তৎপরে অপসার।

শানোগাদ; লজ্জাহীনতা, আব্ত থাকিতে অনিচছা, গণাণাজ শবিমা শাণ্ড দেগিয়া দেওমা, গুপ্তাঙ্গ উন্মৃক্ত ক্রা; অদীশ গান গাওয়া: বিষয় হইয়া শ্যাম শুইমা থাকা ও বক্ বক্ ক্রিয়া বকা।

কাস — শুষ, নৈশ, আন্দেশিক কাস; শায়ন করিলে উত্বার বৃদ্ধি, ও উঠিয়া বসিলে হ্রাস (গ্রস); মাজিতে আহামান্তে, পানে, জালাপনে, ও গানে আধিকা (গ্রস, ফস।— শয়নে উপশন, মাঞ্চ-মি)।

প্রেস্থের পরে মুক্তস্তে কিংবা অবারিত মুক্র-প্রাব সহকারে মুক্রাশ্রের প্রদাধাত। প্রাযুতীদিগের মুক্র-ত্যাগে অনিচ্ছা (আর্গ, জপি)।

व्यारक्षिक द्यारशंत्र कार्यकारत्रत्र क्षावर्या ।

कार्यन-प्रकार, **উ**ढ्छममील राजिमिरगत **উ**९को निया-

হীনতা; কাষকর্শ্যের উপদ্রেব হইতে উহার উৎপত্তি , এনেক সময় কলিত কারণে উহার উত্তব।

জর।—নিউমোনিয়া, স্বালেটিনা, স্ত্র উহার স্থিপাতাবিদ্ধা প্রাণিতি, নিছে যেন মন্তিকের জাবিলভা ( sensorium clouded ), চলের একভান দৃষ্টি, কিছে যেন ধরা ষাইভেছে এরপভাবে শৃত্তে হন্ত প্রসারণ অথবা শ্যা-বন্ধ গুঁটন, দম্ব-শক্রার্ড দম্ব, জিহ্বার শুক্তা ও গুরুতা, অনিচ্ছার মশ-সূত্র নিঃসরণ; কণ্ডরা-ম্পানন ( subsultus tendinum )।

উপচয়।---সন্ধাকালে; রাত্রিতে; ধতু-কালে মানসিক পীড়ার; বিষেষে, অন্তথকর প্রেমে; ও শগন করিলে র্থি।

উপ্সামা ।—মন্তক অনবত করিলে (শিরোলকণ) ও উঠিয়া বদিলে (কাস), হ্রাস।

স্থায় ।—( > ) दिन, द्वीम, ও ভিরেট্রের সহিত হাইওসের তুলনা হর
( > ) হাইওসে উপকার না দর্শিলে জনেক সমর ফল প্রাণো কামোগাদের
আরোগ্য জন্ম । (৩) মহলামীদিগের স্বত্ত-কানে হাইওস্বিক্স হইলে নর
বা ওপি ব্যবহৃত হয়। (৪) সর্যাদের পরবর্তী ব্ধিস্কার বেলেভোনার পরে
হাইওস্ভাল থাটে।

## श्रेष्ठाधिम क्यादनदणियम्।

(Hydrastis canadensis)

আঠা আঠা শ্লেমা-জাববিশিষ্ট গ্ৰ্বলীভূত ব্যক্তি।

আমাশবের ও বরুতের ক্রিয়ার স্মুশ্রন্থ বৈশক্ষণ্য সহকারে ধাতু-বিস্তৃতি; অপরিমিত মনিরাপানে শরীবের ভগ্নতা।

কঠিন, সংগণ ক্যান্দার উহার ঘৃক্ কল্মিড ও কুঞ্চিড, ছুরিকা দারা কর্মনবৎ তীত্র বেদনা; স্থন-বৃদ্ধ আকু্মিড ওলাদ। নজনিত মুগ-ক্ষত। অহ্বার বৃহত্তরতা ও উহাতে দ্যাক।

श्रीमत्त ;---- नीष्ट्र, चार्ठ चार्ठा, भीष्ठवर्ष, त्रख्ड्व धार्च ; উहा खशखा-भरवत्त्र ( valian ) पूष इहेर्ड मीर्च मिष्ट्रित छोत्र यूगिया बार्क ( रवास, कानी-वाह ) ; खशक्ष खुत्रन

নাসা-পণ হটতে গাঢ় পীতবর্ণ, রজুবৎ, প্রভূত শ্লেম নিঃসরণ (কোরে-রা)

নাসিকার পশ্চাৎ-রন্ধ্য ও গল-কোষ হইতে কাসিয়া গীতবর্ণ ও আঠ আঠা খ্রোল উত্তোলন; মারশিউরি কিংবা কোরেট-অব পটাশ সেবনের পর ক্ষত; উপদংশ-জনিত গলা-বেদনা।

### হাইপারিকঃম।

#### (Hypericum)

পৃষ্ঠবংশীয় মঞ্জার ভৌডিক উপদাত (mechanical injury); পৃষ্ঠবংশের সজ্বর্য (apinal concussion); পতনের পর কোকিল-চঞ্-ক্ষিতে (coccyx) বেদনা

विश्वज्ञन ( punctured wound ), ছিম্মত্রণ বা निमात्रिष्ठ जनः উহাতে প্পর্শ-খেন, বেদনা ( निष्ठ ), বিশেষতঃ অনেক দিনের ত্রণ ( খুষ্টত্রণ, আর্ণ, হেনে )।

উপঘাত। —— প্রেক, স্থলী, আগপিন, টোচ প্রন্তুতির উপর পদ-মর্দিত হওরাতে উপঘাত ( গিড় ) ; ইন্ধ্রের কামড়ের উপ্যাত ; হ্নু-স্তন্তের প্রতিষেধক।

এই ঔষধে প্রায় স্মাক্ষণে শ্রীয় হইতে বিচ্ছিন্ন ছিন্ন ও বিদীর্ণ ব্যবস্থা যোড়া পারে ('ক্যাণেও)

হতালুনী, গদাধুনী, নথ-তল, করতল, পদতল, প্রভৃতি যে স্কল স্থানের ভ্রান-জনক স্নায়ুর ( aentient nerve ) আধিক্য সেই সকল স্থানের ভ্রগদাত, বেদনার অসহ্যতা দ্বারা তীব্রভাবে স্নায়্র আক্রান্ততা বুঝা যার; হত্ত-প্রাধির বিধান-ত্ত্বের উপদাত। সপ্তরণ বা শক্ষোপচারের পরবর্তী সাম্বীয় অবসাদন; ভাষাদির মন্যাল
এতজ্বারা সর্বনাই ক্ষতের রূপান্তর জন্যে এবং সময়ে সময়ে উহার গতি ও
পচলা অবরুদ্ধ হয় (ক্যান্তেও); হস্তাসুগীর অগ্রভাগের স্থাইতা আ পিইঙা
অভিযাত জনিত অপকার হইতে উৎপন্ন গড়ইকার (কাইস্থার সভিত তুল্লা
করুন)।

শিরোঘূর্ণন। - মন্তক যেন সহসা লখা হইয়া পড়িয়াছে এপ্রকার ভান্তব ; রাজিতে মূত্র বেগ সহকারে শিরোঘূর্ণন

শিরংপাড়া; মন্তকের গশ্চান্তাগের উপর পতিত হওয়াতে হোল প্রিয়া উচ্চে তুলিতেছে এরূপ অনুভব; রোগিণী পাছে উচ্চ হইতে পড়িয়া যায় এঘচ্চ বড়ই উৎকণ্ঠা।

পৃষ্ঠবংশ।--পতনের পরে, বাছবয়ের বা ঘাড়ের শতাল্প মাত্র সঞ্চালনে রোগীর চিৎকার করা; স্পর্শে পৃষ্ঠবংশের অভিময় অমুভূতি

গ্ঞন (bunions) ও কড়ার সায়ুর আজাস্ততাস্চক নিধারণ বেদনা মস্তকে আঘাত বা সংঘর্ষ বশতঃ টকার।

সম্মান ।—(১) আর্ণ, ক্যালেও, রুটা ও ট্রাফের সহিত ত্লনা হর (২) সম্ভবণে পূর্বে যে সকল স্থলে পর্যায়ক্রমে একন ও আর্ণ ব্যবহৃত হইত, একণ সেই সকল স্থলে হাইপারিক্য প্রয়োগে আরোগ্য অন্যে।

### হিপার সংলফঃর।

#### ( Heper Sulphur )

নিশ্চেষ্ট শসিকা-প্রধান-ধাড় ; এবং পাতলা চুল ও পাতলা মুথাক্তি, কার্য্যে ধীরতা, এবং পেশীয় কোমলতা ও লোলিভডাবিশিষ্ট ব্যক্তিদিগের পক্ষে ছিপার উপযোগী

সলফারের ভার সোরা-দোষ, ও গওনালা-দোষেও ছিপার উপযোগী। সলফারের লক্ষণে চর্ম-রোগে শুক্ষ, কপুরন থাকে কিন্তু স্পর্দে অমৃত্ णारक मा, तत्तर ह्वकाहरण व धर्षव कतिरम छेव॰ म खर्मा; किन्न दिवान मनमारतत्र मणार हिर्मान अहार छेव। अ व्यन्निः मनव वारक, भगन कि मेघट छेविधार छ व्या व्या हिर्मा हम (अवि, भार्क), व्या जिल्ला ज्या व्या हिर्मा हम (अवि, भार्क), व्या ज्या का वार्मा वार्मा

যে সকল সোণো পুযোৎপত্তি আনিবার্য্য, এবং পারদের অপব্যব-হারে যে সকল ছলে শরীরের অপকার জন্মিরাছে, দেই সকল স্থলে হিপার ব্যবস্তুত হয়।

রোগীর ক্লণরাগিতা, যৎসামান্ত বিষয়ে জোধের উদ্রেক; ব্যাদ-বায়র ভাষ; অসমত উৎকণ্ঠা,শাশ্মীরিক ও মানসিক অভিরিক্ত অমুভূতি; যৎসামান্ত কারণে বিরক্তি; ক্রভ, ব্যস্ত সমন্ত কথা এবং তাড়াডাড়ি অস্পান

শীতল বায়তে অত্যন্ত অনুত্তি, পাশের দরকা খুলিলেও
বায়্ম লগণ ক্ষেত্ত করিতে পারা যার ব'লিয়া ক্ষমনান। তীয়ের সময়ও
বান্ম লগা ক্ষেত্ত বাধিবার আবভাকতা (সোরি); অনাবৃত থাকা সহ্য
করিতে গারা যার না (নজা—বজাবৃত থাকা সহ্য করিতে পারা যার না,
ক্যান্দ, গিকে) অত্যন্নমাল বিম্তে বায় ভোগে শদি বালে (টিউব)।

সূত্র। — স্তের প্রবাহের প্রতিবদকতা; ধীরে ধীরে সূত্র-নিঃসরণ, সাক্তিল-স্কৃত্রতা, সরকভাবে পতান; গ্র পরিতাক হইবার পূর্বে ধানিককণ ক্রেলা করিয়া থাকিতে হয়, মুনাশনের হর্ষকতা, মুন্র-ক্রিয়া পরিসমাপ্ত করিতে পান্না যান্ন না, বোধ হয় যেন থানিকটা মুন্র সর্বাদাই ক্রেলিট থাকে ( এলম, সিলি )।

কাস।—শরীসের কোন অংশ অনারত হইলে কাস ( ইংস ); শাস-রোধকর ও গল-রোধকর জুপজনিত কাস; পশ্চিম দিকের শুফ ভূ-বায়ু ভোগ বশতঃ কাস ( এবন )

ক্ষেণ। শুজ্ব শীতশে বাতাস গাগাইবার পর ক্ষেপ (একন); গভীর, ক্ষাশ কুকুরের ভাকের ক্যাম কাম, তৎমহ অরভগ ও প্রেমার ঘড় মড় শবা; ণীতল বাযু ও শীতল পানীয় স্তব্যে, এবং ছুই প্রাহম রাজির পুর্যে কিংবা প্রাতঃকালের প্রাকালে উহার বৃদ্ধি

গণার মধ্যে টোচ, মাছের কাঁটা অথবা গোঁলা থাকার জাঁর অমুভব (আজ্জ-না, নাই-এমি) পাকিবার সন্তাবনা বিশিষ্ট তালু-মূল-প্রাণাহ; শুভিশক্তির ক্ষীণভা সহ উহাব পুরাভন বিবৃদ্ধি (ব্যারা, লাই, প্লম, সোরি।

ক্ষত, দজ, উতার চারিদিকে ক্ষুন্ত অপচ্যমান (pinples) বা পচ্যমান গীড়কা (pustules) সন্মিলিত হইয়া প্রদারণ

নিয় ওঠের মধ্যস্থানের বিদারণ (এম-কা, ভাট --- ওঠের বিভেমস্থলে বিদারণ, কণ্ডু)

অতিসার।—অমগন্ধ বিশিষ্ট বালক-বালিকাদিগের অতিসার (ক্যান্ধ, ম্যাগ্ন-কা-শিশু ও মলের অমগন্ধ, রিউম ); কর্দমের বর্ণ মল (ক্যান্ধ, পড়)

ঘর্মা — শান্তি ব্যতীক্ত নিংগরাত্তি প্রভূত ঘর্মা, দুর্গের অন্তব্ ও চুর্নায়; প্রত্যেক শান্তীরিক বা মানসিক শ্রমে ঘর্মা-নিঃসরণ (মোরি, সিপি)।

উপচ্য। —বাথিত পার্শে শগনে (কালি-কা, আঁইওড); শীতল বায়ুতে অনাব্ত হইলে; শীতল ন্তব্য পান বা আহারে; বোগানিড স্থান পার্শ করিলে; ও পারদের অপব্যবহারে; বৃদ্ধি

উপশ্য |----সাধারণতঃ উষণতায় (আস); উষণরপে গাল, বিশেষতঃ
মস্তক বল্লারত করিলে (সোলি, সিলি); সৌতসেঁতে আফুর্কিশ্রেণ
(কষ্ট, নক্স, ক্যাট-সলের বিপবীত); হ্রাস

স্থান ।—(১) কোমলাংশের উপদাতে হিপার ক্যালেওুলার অনুপূরক।
(২) হিপার, পারদ ও অন্তান্ত ধাতু আইওডিন, আইওডাইড অব পটাশ, ও
কড্লিভার অয়েলের ফুফলের দোষ নিবারণ করে। এডারারা বাতাওপের
পরিবর্তন ও শীতল বায়ুর অসহাতার কতকটা হাস অল্মে (৩) সোরাদোয়ন্ত্রনিড
চর্মারোগে সলফারের সহিত হিপারের তুলনা হয়

#### (इदयद्यां निम्।

#### (Mamamelis)

निम्मा, प्रभूष खन्न, अधीयम, भूगीयम श्रेष्ठीक महीतन दक न घान इट्टेट हेर्न दक्ष वक्त-स्पृद्धि वर्ष वेमा छिल्ह्यानी

देशिक ता क-मध्य ---- प्रकृष देशिक विद्योत्र व्यथवन त्रक-मध्य ; भिना-श्राह, भिना-प्रोष्टि, भिन्न-प्रोष्टि मध्यक फ्रन्ड, উহাতে हुन द्वर स क क्लेक्ट्रप्रव्य द्वर्य । देशिना ; धर्म ।

শিরা-ফৌডি বিশিষ্ট রোগীয় সামান্ত ঠাণ্ডা লাগিনে, বিশেষতঃ উষ্ণ আর্ম বা-যুত্তে সহজে শর্মি দাগে

হেমেমেলিস "কৈশিকা শিরামণ্ডপীর (Venous Capillary System)
नকোনাইট শ্বরূপণ

আন্তান্ত স্থলের স্থাবৎ স্পার্শ-দ্বেষ ( আর্ব ), স্থির ও পেশীর বাত।

সভারণ ( wound ) া----ছিন্ন, বিদাবিত, ও বৃষ্ট বা । গতনন্ধনিত উপধাত ; এডদারা রক্তা জাব অবরোধিত, এবং বেদনা ও স্পর্শ-বেদ ও শমিত ইন্ন ( আর্ব ) । আভাষাতিক উপথাতের প্রাতন মনফল ( কোনা )

আজিঘাডিক শুরুষগুল প্রাণাই ( conjunctivitis ), চজু-কক্ষে নীলবর্ণ চিহ্ন অথবা রস-স্বান্ধ, উত্তা কাস বলতঃ উহার উৎপত্তি; তীব্র স্পাদ-ছেষ্ ( আর্ব, ক্যালেও, লিভ )।

নাগিকার রক্তপ্রাব।—অপ্রাবদ, অনেক সময় স্থায়ী কাংযত (কোট) রক্তপাত; প্রাভূত রক্তপ্রাবে শিবোবেশনার শাস্তি (মেলি); স্বাভূত, আজিবাভিক, অমুক্স (Vications) ও বালাকাকের রক্তপ্রাব।

মক্তনাৰ।—প্রত্ত, মলিন, গাঢ়, অগ্রেম ক্ষত ইইতে উৎপন্ন (কোট), অনামু হইতে নিগতি প্রবেশ বা অপ্রবেশ; এবং পতন বা প্রচণ্ডভাবে আমারে হল জনিত মক্তথাব; মনেসিক অমুকল্পে আখানিক মক্তথাব; মানসিক উৎকণ্ঠার অভাব।

রক্ত-কাস, রক্ত ব গ্রুকের স্বাদ্বিশিষ্ট গণকগুনুসকর কাস, প্রয়াস বা কাস বাজীত রক্তপাত, সময়ে সময়ে অনেক মাসাধ্যি বা বৎসরাব্ধি উহার অবস্থিতি

প্রভূত আৰু নিঃসরণ, রক্তপ্রাবেন সহিত উহাব সাদৃশ্য এবং রঞ্জানের গ্রায় উহাতেও ক্রমে ক্রমে শরীরের ক্ষয় প্রাপ্তি।

তার্শ অধিক রঞ্চণতে, তৎসহ জ্বালা, ক্সার্শ-দেষ, পূর্বতা ও বােশির , বেশধ হয় যেন পিঠ ভালিয়া যাইবে; মল-বেগ; বলিয় দিয়ৎ নীসবর্ণ; মলম্বায় টাটার ও হাজিয়া যাওয়ার মত বােধ হয়।

ধাত্ব — মলিন, প্রভৃত প্রবাহ, উদরেব স্পর্শ-ধেষ; ভিষাশয়ে আঘাত প্রাপ্তির অথবা পতনের পর উৎপত্তি; ধাতুকালে সকল যাতনার আতিশয় (এক্ট, পলস)।

গর্ভাশর হইতে প্রবল বা অপ্রবল রক্তান্তাব ; কর্ক প রাস্তার অখাবেরাছণে বা কি লাগিয়া উহার উৎপত্তি ; পৃঠে কুছনবৎ বেদনা

অর্শ হইতে রক্তন্তাবের পর পতিত রক্তের অরপাতাপেকা অবসনতার আতি-শয্য ( হাইডা )

त्रकः-स्थायत्र मसक्ष ( निक्र )

সাহার । --( > ) রক্ত-জাবে ও রক্ত-জাব-প্রবণ থাতুতে ফিরমের সহিত অমুপুরক সময়। (২) আডিঘাডিক রক্ত-জাবে এবং চর্গুর অভ্যন্তরের রক্ত-জাব পরিশোষণার্থে আর্থ কালেণ্ডের সহিত সমন্তণ সম্বর।

## श्लिद्वात्रम् नार्रेकात्।

( Helleborus Niger )

ছর্মান, মর্মান, সোরা-দোষ ছষ্ট বালক-বালিকা; মন্তিছের উপদ্রের প্রবণতা (বেল, ক্যান্ক, টিউব); তৎসহ মন্ত-সঞ্চয়।

वियान। छोडेक्एमण् व्यासम भारतः वाशिकामिरशत्र वसः आधित भरत, व्यथया

त्रज शक्षांत्य प्रति भूनत्रांग च जून क्षाञाविज ना हहेता; विवह छा, जामाम्जज, ज नोत्रन्छ।

সংজ্ঞাশ্রতা; বিষ্চ্তা; কিছু বিজ্ঞাস করিলে আন্তে আন্তে উন্তর্গান; তর্ল অভ্যন্তর প্রতিকৃতি (প্রাতনের, ব্যারা-কা)

দক্ষোন্তেগ-কালে মন্তিগ-লক্ষণ (বেল, পড); রস-সঞ্জের আশস্ক (এপিস, টিউব)।

যজিক ঝিলীর প্রদাহ। তরুণ, মজিক-পৃষ্টবংশীয় গুটিকাঞ্চনিত, রস-ক্ষরণ সংযুক্ত মিনিজাইটিস; অল্লাধিক পূর্ণ পক্ষাঘাত মজিক-দ্যোগজনিত বিশেষ চিৎকার ধ্বনি।

িন্তা শৃশু একতান শৃক্তদৃষ্টি; চমুদ্র বিস্তৃত বিকাশ; আলোকে জ্ঞানশৃক্ততা; চক্ষ্তারা পেসারিত অথবা পর্যায়ক্রমে প্রসারিত ও সঙ্গৃতিত। প্রাাচ নিয়ো, নিয়োর চীৎক্ষার করা ও চমকিত ১ইছা উঠা

হাইড্রোকেফেলাস , স্কালেটিনার পরে অথবা গুটিকাজন্ত উহার প্রত বিকাশ ( এপিস, সগম, টিউব ) , একবাস্ত ও অত্যার অনিজ্ঞার স্থাপন।

মন্তক বা মন্তক-পশ্চাৎ ব্যতীত পদ্মীরে অভ্যন্ত দীতগতা সংযুক্ত টকার, মন্তক ও মন্তক-পশ্চৎ উল্লেখন থাকিতে পালে (আর্ব)

অতিশয় আগ্রাহপুরাক শীতল লগ গলাধঃকরণ; ( লগের ) চামচ দংশন্য কিছ জানশুভা অবস্থায় শবস্থিতি

भूषित्र एक्षेनवर मध्यानन, भूषित्र दकारणत्र चा ७ विकासण ; सनिम, भूगगांचीन-वर, एक माना-त्रक

স্বাদ প্রচার বস্থান, অথবা নাসারকে, অঞ্গী প্রবিষ্ট করণ (সম্পূর্ণ সচেশন অবস্থান, এরম)।

বালিশে মন্তক প্রবিষ্ট করণ; একপার্থ হইতে অপর পার্মে মন্তক অবলুঠন; হস্তদারা মন্তকে আঘাত করণ।

অভিসার --ভরণ হাইছোকেফেলাস, দস্তোম্ভেদ ও গর্ডকালে অভিসার:

জলবৎ মল ; পরিকার, ত্শেহত বর্ণশৃত আম ; শুন্ত, লেহবৎ আম , বেলের ভিনের মত ; অনিচ্ছায় নির্গত ; মল।

মূল।—লোহিত, কুফাবর্ণ, স্বল্ল, কফি-চুর্ণের তাায় অধঃপতিত পদার্থ ; মন্তিফের উপদ্রবে ও শোণে মুদ্রবিলোপ ; সাওলাল মূল

শোপ — মন্তিক, বক্ষংস্থল, ও উদরের শোপ; ফার্ফোটিনা, সবিস্নাম এরের রবর্তা শোপ; তৎসহ জর, চর্বলভা ও মুক্রে-বিলোপা; উদ্ভেদ বিস্না গিয়া ৎপতি ( এপিস, জিক্ক )

সञ्जञ्ज ।---- मश्चिक वा मश्चिक-विद्योत त्वार्श अभिन, अर्थामा, व्याम, त्वन, । है, फिक्षि, नामक, मनक, टिंडेव ও क्षित्कत्र महिल दहनिरवादत्रत्र जूनना हम ।

### (হলোনিয়াস।

( Helonias )

দৌর্বল্য বশতঃ কন্দ, শানগ ও ভোগ-বিলাসে হর্নলীভ্তা; দানসিক বা শারীরিক বঠিন পরিপ্রেমে জীর্ণা; জীলোদের পদে উপ-ধানী; অভিশ্রমার্স্ত পেশীর লাগা ও বেদনা; এত শ্রাম্মি যে নিজা যাইতে বির্বাধার

यथन कार्या निविधे थाका यात्र, शीकांत्र विषय कार्या यात्रमा ७५म अर्थमारे प्रम थाक यात्र (कार्य-कम, कक-अभि)

অন্থিরতা, অবিরত নড়িয়া চড়িয়া বেড়াইতে হয়

কোপনতা, দোধ-গ্রাহিতা, যৎসামান্ত প্রতিবাদ সহ্ করিতে অথবা ইঞ্জিত গহণ করিতে পারা যারনা ( এনাক )।

গভার বিশাদ; প্রগাঢ় মানসিক অবসাদ

বছসূত্র।— প্রথম ক্ষরতা; প্রভুত, পরিষ্ঠার, সশর্কর মূত্র; ওঠের শুষ্ঠা,উহা একতা কাটকিয়া থাকে; অভিশয় শিপাসা, ক্ষরিরভা; শীর্গভা; কোপনভা; ও বৈশ্বতা। সাওলাশস্থা (albuminuria) ঃ—তক্ষণ বা পুরাতন; গণ্ডাবস্থার, অতিশয় স্থালতা, অলমতা ও তত্তাল্ভা সংযুক্ত; এলব্দিস্থারিয়া। সাধারণতঃ সোগীর অতিশয় প্রাতি বোধ হয়, অণচ রোগী তাহার কারণ জালে না

ধৃত্ — রক্তরাব বণতঃ ছবালীভূত নারীদিগের জ্বায়্র জীণতাজনিত নির্মিত সম্বের জনেক পৃথে, অতি প্রভূত রজ-প্রাব; অত্থ্যের ব্যবহিত সম্বেদ রীরের যে প্রিমাণ রক্ত জন্মে তদপেকা অধিক রক্তের জ্বাচর; তন-হয়ের জীততা, তন-বৃত্তের ব্যথিততা ও স্পর্শ-ছেষ (কোনা, ল্যাক্স-ক্যান)। প্রত্-রক্তের জ্বপ্রবল, মালন সংযত, ও ছর্ন্য প্রবাহ

বন্ধি-গহবরে (polv's), স্পর্শ-বেষ ও গৌরব অমুভব (লাগা); জারামুর বিস্তামানতা উপলব্ধি; রোগিণী নড়িংগ চড়িলে ধমায়ুর নড়েচড়ে বলিয়া এমুড়ত হয়, উহাতে অভিশয় স্প্রান্ধি (লাইনি)

গর্জ-পাত ও গর্জ-জ্রাবের মন্য ফল।

স্থাহা । ——(১) এলিট্,স, কির, লিলি, ফস-এসির সহিত হেলোনের তুলনা হয় (২) কল, দীর্ঘকালস্থায়ী রোগা, ও অসম্যক পরিশোষণজনিত ক্রিলভার হেলন এলিটি,সের অন্তর্জণ।

#### রোগান্তক্রমে

मर्किश्व

### ঔ্যধ প্রদলিক।।

অ্গ্রিদ্রান্থ (বঃরণস)--ক্যান্থ, রস, जिन्दमा वा व्याप्टिका ।

ব্ৰাই।

পুরাতন--কা-বাইজে, ফার্কো-ভে, নক্ষ-ভ, আগ

वां वक सिर्शत--- अग्रेग, १ वम नग्रे, সগফ, এণ্ট-জু।

कादनी, भवा, व्याम ।

अभियानिख--- जाकन, जार्ज, गार्क আই।

वना वा प्राप्त-शक्त आर्थन अनिष्ठ- हिल्कि, प्रक, आंग, आर्थनिश्च । পশস, এণ্ট-জু।

জেশধ্যনিত-ক্ষাম। ८भाकानिसमिज----हेट्य, ठात्र, नका, **커리커 (** 

व्यक्षरकायनुक्ति (शरेक्षात्रिण)

পলস, ক্লিম, ম্পজ, আর্প, জন্ম, একেন। অতিসার (ভাগারিয়া) অপাচ্য व्यक्तीर्न, व्यशिमानमा (जिमर श- वाहात्रक्षनिष---विनु, भणम, हेशिक। गर्मिकनिष्ण-अकन, एक, मार्क, কাশক।

> ক্ষমিজনিত---সিনা, জাস, মার্ক। **छित्रप्रविधनान्य — कटनाम, खिर्**श्रे । त्राजिकाणीम---- शणम, ठांत्र, त्रम । প্রোত্যকাদীন---এপিন, 要申明 धिश-क्ष्म

> গ্রীমকাশীন---চাম, ভিমেট, ফ্যাম, আস', আইরিস।

বালক্ষিগের--- ক্যাম, মার্ক, রিউম,

খুদ্ধবিগের---ফস, স্বাস बकु-क् ।

অন্ত্ৰ-প্ৰদাহ ( একিছাইটিস )---जकन, दरण, करणांज, भार्क-क, कार्ज,

অপিসার (এপিলেগি )—বেস, কুথা, হাইয়স, ষ্ট্রাম, ভিরেট ভি, ইয়ে; আস, জিন্ধ, কাল, কা-ব্রোম।

निम)---- व्यव्र, कार्ब्ज-त्य, देश, नक्र नार्वेक, अनोक।

অভিযান (অপণাগমিরা) সদি-জনিত-এফন, মার্ক, ইউফ্রে, বেল, প্লস।

পুরাতন ক্লিম, ক্যান্ত, স্বাফ, মার্ক, হিপার, আস

রোমান্তীর পর---পলস, সলফ।
বসম্বের পর---মার্ক, সলফ।
বসম্বের পর---মার্ক, সলফ
গশুমালাজনিত---ক্যান্ত, আইরোড,
ভাফ, হিপ, সলফ, মার্ক-ক, আস্
ভিপদংশজনিত---মার্ক-ক, নাইটএসি, পুলা, অর

শিশুদিগের—আজ-নাইট, ক্যান্ত, সলফ, মার্ক

তারুংষিকা (প্রাইগে) গুড়া বারের—নাইট-এসি, সলফ ধাননিজ্রিরের উর্জনেশের—এফন, সলফ, সিপি, লাইক, কোলিন; বোরাক্স ধাবন (লোশন) পথেকোষের—কেটো, মার্ক-ক,
নাইট-এসি, রস, একন।
আর্শ (হেমরয়েন্ডস) ১০ফ, হেম,
কোলিন, এলোজ, নকা, ইসকিন্ড।
আ্থারি ( বি থিরা)সিস )—সাইক,
নকা, কান্ড, ক্যান

व्याण्डि-महन्त ( दकतिय ) --- भिन, यम-व्याम, मन्याप, मन्याप विवर्षन --- कात, मार्क-काहरमाछ। दिवर्षन --- कात, मार्क-काहरमाछ। दवसना--- मार्क, कात, दमक, व्याम, मार्क-काहरमाछ, वेखेल-शत

অস্থি-বিক্সতি (রিকেটস)----সিলি, ক্যান্ধ, সলফ

অস্ফ টভাষণ ( টামারিং )----বেল, হাইয়স, ষ্ট্রাম।

আ(ক্ষেপ (স্পাল্য) .... বেল, ক্যাম, ভিষেট-ভি, জেলস, ওপি। গুল্মবায়্জনিত---ক্যাদ্য, মন্ত্ৰ,ইয়ে, হাইয়স।

আফোপ ও থলী (প্লাজন ও ব্র্যাম্পন)—ক্যান্দ, নত্র, কলোস, ভিরেট, কক, জেলস। আভিলালিকমুক্র (ক্ষন্মিম্রিয়া) —আর্স, ফর, মার্জ-ক, টেরেব, ক্যান্থ আভিপ্রাভ (সংনট্রোক)—

का कि, द्वन, अन, दस्यान, छिद्राहे छि।

जाशाना (द्वाष्ट्राक्का)—नवा, कार्त्वा, नार्डक, हामना जाञातां (तिष्ट्राध्या):—नद्यम —दक्षां , भिभिमि, का रार्डेख खंदिलेखन—िल्लिम, मिभिमि, कार्डे, त'है, कि

সন্ধির---র্টা, ব্রাই, রস, সিমিসি, ফ্ট, কা-হাইড

গ্রার্থন—স্থাই, রোড পুরাজন—স্থা, আর্থ, সলফ, রোড, গিমিনি, কা-হাইড।

আমাবশত-জুর - (ক্সমেটক ফিজার) একন, ব্রাই, বেল, নিমিনি।

ভাঁ ব্ (টিউম্বর)—কটা, আর্প, আর্থ বা ভিরেট-ভি। আইরোড, সিলি, ক্যাজ ক্ল (প্রশাপস)

ইন্দ্রনুপ্ত (এগোপিশিয়া) :---পূর্ব-যোগজনিত---ফস-এসি, ইয়ে, স্ক্যান্ত, গিল, চায়, স্ক্যান্ত।

পারশল্পনিত--কাথো, হিপার।
শির্ণণীড়াসংযুক্ত--- গ্রেণর-এমি, না-ইট-এমি, ফস, মিপি, সলফ, ক্যাব্ধ।
উদরী (এসাইটিস)---এপোসাই,
আসি, এপিস, ডিজি, চাব, লাইক।
উদ্গোর (ইরজেশন)---বাই, নক্য,

छित्रशित्र ( १तर्छण्य ) --- वार, नका, शणम, भणग- श्रीम, णारेक, कार्या, क्षाम् ।

উপক্তে (এপথি)—বোর, মার্ক, আস, সশস। छिशाहरूभ (गिकिनिम)---मार्क, ना-हेरे-जिम, थूका, व्याख्य-नाहेरे, व्यवम। छिशाहरूभ क्विज---मार्क, नाहेरे-जिम, व्यान्हाहेर, काहेरो

अर्थ-वित्तांत्रन्-शायः, भाकः व्यानं, का'रमश्च-भगभ

कार्ट्स, कष्टे, मार्क, मिलि, त्रम, दिलात। किरियसविद पट्टा (धामा) - त्रम, वार्क, वार्क, मार्क, मार्क, वार्क, वार्क, वार्क, वारक, वारक, वारक

কালর (করণ)—ক্যাক, স্পাক, আর্থ বা ভিরেট-ভি।

कम्म ( क्षणाभम हेक्डिवित्राहे )---होन, मिदफ, दवन, भिनि, नक्ष दहरणाम। कक्ष हे (क्षाणान)---क्षाम, हाहे-क्षाम, कामा, काहेरहा।

कर्णभूष-श्राम् (भारति।हिति)---भार्क-काहरतिछ, मार्क-भन, मार्क-क्त्र, र्वन, भन्म

क्वि-त्यस्मा---त्यम, श्रमम, भाक्, काम्य, এकम, खिरत्रहे-छि।

ন্ধাব---হিপার, ক্যান্ধ, পলস, ক ব্যল-এসি, মার্ক, কন্তু।

ক্ষন্ত -- মিউর-এসি, পলস, কষ্ট। প্রাদাহ---- একন, বেল, পলস, মার্ক-

기러

हिन-मनम, भनम, नोष--- धकन, गञ्च, नजा, मगञ्च ।

ক্ৰালিমা ( একিমোসিস )—হেম, আর্ণ, রস, মিউর-এসি )

क्षांग--- मिस्सिनिष--- এकन, दिन, বাই, কষ্ট

পুরাতন--কা-বাইজ, সলফ, আই শ্বরম্পনিত ---স্পঞ্জ, হিপার, কুপ্র ছপশ্লক--ইপিক, ড্রস, কোরাল, নাইট এসি, ভিরেট-ভি, জেলস বা বেল

গুত্মবাযুদ্ধনিত কোরাল, হাইরস, हैरभ

সলফ, আইরোড

কুমি—হতাকার—সিনা, টিউক, हैर्द्ध, व्यार्ट-हेड, खान्हे, हात्रमा

দীর্ঘ ও গোলাকার--- মার্ক, স্পিজি, স্লফ, একন

কিতার স্থায়---ফাল-মাল, সিন, সগফ

कुञ्जि-जुन - अकत, जिन, जिन

ইস্কিউ, প্লম্ব।

(ক্র্যাম্পস) ----ঞ্জহায়-ভিন্নেত, নক্স, ভার্ণ, বেল, কুপ্র, জেশস।

পাকাপয়ে---নকা, ডাইবোস, কক। খুদকী (ভ্যানভিদ )---আদ, গ্রাফ, কাইক, সলফ, রস।

গভিভাগ (এবরশন)---সিংক, ক্ষ, জোক, ইপিক, সিড্ল, আর্ণ, (वन

আশিক্তি--পশস, স্ব্যাম, বেল, ভাব, ভার্ব, সিঙ্গে। প্রতিষেধক -- সিকে, ক্যান্ধ সিমিসি, চায়, সিদ্রুপ

গর্ভাবস্থায় বিব্যমিধা-ইপিক, জিয়োজ, নকা, পশস, আইরিস।

গলগণ্ড (গয়টার)---স্পঞ্জ, মার্ক-আইয়োড, আইয়োড, রোম

शलार्यम्मा ( तमात्र-८० १७ )---जायन, दयम, यार्क, काहरहा

शलक्ख्यून-- आब्ध-नार्हे, मण्य, আস্, মেজ, ভিন্নেট-ভি

शुल्यावायु (शिक्षित्रा) - है। है। शांहे, जमा, दछगात्र, कफ, दछगम, প্ৰস, হাইয়স ৷

(कार्छवक्तका---नक, बाहे वा खंशासात ३---म प्रमन---- मणक, नाहेंहे-प्रिंग, नाहेक, जनक, क्वांनिन वा प्रिंग, जिन, देश वा मार्क, जाम, धक्न ।

> লংশ—≷গ্নে, নক্স, পড়ফ, ম†র্ক গুঞ্জন (বিউলিয়ন)---ভিয়েট-ভি,

त्रम, जाम, नका, काम

श्रीश्रि-विवर्धान मार्क-जारब्राष्ठ, यात्रिक्नका, दयम, हिलात, आहरमाछ, मिण, कांक कम, कहिटी।

গ্রীবাস্তম্ভ (প্রিদ নেক)— এ कम छ दवण ; मिमिमि, डारि ঘ্রায়ত্রণ (কণ্টিউজন) –ঙ্গার্ণ ত্রোণাভাব--পলস, মার্ক, জেলস

একন, ক্যান্ত, ত্রান্ত, প্রথ।

क्रिय, **万型 3 -- 邓迈--- 川市**, मारेष-अमि, रेखिएक द्वम, मार्क-क তিয়াক দৃষ্টি----বেল,হাইরস, জেলস, ষ্ট্ৰাম।

८मोर्खना---गनम, कम, व्यादेरबाख, ८वश ।

সভাষণ----জার্ণ ও একন ; হেম।

চক্ষুর কালিমা--আর্ব, হেম জভুক (নিভঃশ) পূজা, জিয়ো ঝিল্লিক প্রদাহ (ভিগণিরিয়া) (यश, काहरहा, क'-भारमंभ, म'र्क-व्याह-ব্যোভ, আস, মিউর-এসি

जिस्ता (दकामा) अभि, अकन, दबन ; भारेक ।

ত্রেণ্ডির (কেন্দ্রিয়া) কুপ, এগার, ভিত্রেট-ভি, বেশ, ইঞ্চে, সিমিসি, শাস্।

গুপ্রসী ( भाषाधिका )--- करणाम । তাল-মুল-প্রদাহ (টিপানাইটিশ্) --- ८ वण, बाजि है, य र्ज-व्यहिताछ ; का-পাধে ।

> ( ব্যাদেশরোগিদ )----(वन, हेर्फ़िएम, भार्क-कन किस, हाहिएमान, दखनम्, नका, छोत्र

> ভিল (মোণ) কার্মো, দলফ ; ক্যালেও

তিৰ্ঘ্যক দৃষ্টি (ইাবিস্থাস)---(यग, शहराम, रक्षणम वा. ष्ट्रीम ; मिना ; ग्लिखि, क्ष्म।

দড়োঃ---( হাপিজ ) ওজ---মার্ক, আইয়োড, আদর্, পেটো।

त्रख्याची --- धक्स, त्रम, प्याम, काहेटले लाक, काक, मनक

प्रसार---भष्ठर कत्र --- भिशि **हर्ट्यांत्र--- ८**टोनांत्र, त्रम, मिशि, সৃঙ্গাফ |

मख्य-श्रुश्चि (श्रीम वर्श्वम )----क्रम ७ दर्ग , गोर्क, मिनि, स्भिन ; क्रम

म्ख्यां व्यक्ष्म ( पूर्वक ) --- अकम ও বেল। পলস

णत्रमञ्च --- क्लिर्त्त ,भार्क, ष्टोक, काइरहा, श्रांत्ररीय -- क्य, कांम, रेन, ट्यम्म । বালকদিগের--ক্যাম, জিয়ো अ**र्जा वर्षात्र---- (यण, सञ्च क्यांस, क्**यः ।

मर्खारसम्-विलय्न- काछ,काम, क्षकन, क्रिया, ভিরেট-ভি, মার্ক

দংশন ও জ্ল-বেধ পিডম, এপিস, রস, ক্যান্থ।

দাহিকা (কার্বজন)—বেল ও সলফ, এপিন; আস**্টি, একন**্য সিল

জুর্বিল্ডে (ভিবিশিটি)—চায়না, ফির, ফস, ফস-এসি, ইয়ে সক্ষ, আই-স্নোড, নক্ম

ধ্বজ্জেল্প (ইন্পোটেন)—ফস এগ-নস্-কা, নকা, ফির, ব্যারাই, হুফ, চার্মা ফস-এসিড।

নাড়ীব্রণ (ফিটুল—সিলি য়োর-এসি, ক্যান্ত হাইছোস।

নাসিকাঃ—রজনাব—একন,বাই, ইপিক, হেম; পলস; চারনা, আর্থ ক্ষত—আস, সলফ, গ্রাফ, অয়,

নিদ্রোহীনতা—ক্ষি, বেল, হাইয়স জেলস ভিরেট-ভি, গ্রন, ইথ্রে

কষ্ট ; আইরোড

নিদ্রালুকা—গুণি, বেল, একন ; লাইক

নিরুদ্ধপ্রক্রাশ (খ্রীকচার)— একন, নক্ষ, ক্যান্থ, ক্যান।

নিশ্বাস্ত্রগ্রা—নার্ক, কার্কা, শিক্ষি, অন্ধ্রকন, প্রস নীলপাণ্ডু ( সামেনোসিস্ )---ডিজি, অস্, কুণ ভিষেট

প্রকাঘাত (গ্যারালিনিন) — ব্যারাই-কা, নকা, আজ-নাইট,গ্রথ প্রস, ফস, জেশস, একন

প্ৰিক্সিয় (ইমাক) অম্ব-প্ৰস, ন্যা, ব্ৰাই, লাইক, কাৰ্মো, ক্যান্ত।

প্রদাহ—একন, নাস, বেল, ফস ক্ষতে—আস, হাইপ্রাস, কা-ফ বাইক্রম

পানিবস্ত্ত (ডেরিসেলা) - রস, শলফ, এন্ট-টা।

भाष्ट्र (षाधिम) -- धाकन, खाँहे, गार्क ८५म, प्याम ; एम ; एम, नका।

পানাত্যয় (ডিলিরিয়ন ট্রিনেন্স) ষ্টাম, ওপি, বেল, হাইয়স, নজা। পানা (একজিনা)—আস্, ক্যান্ড,

मार्क, त्रम, दक्ति छै-छित्र, मणक

পারদ-দোষ--নাইট-এসি, ছিপার, কার্মো

পিচিছজন্ত্রণ (কণিউন্নড, উড )— কার্ণ; হেন; কোনা; ন্নটা

शिखिशिला (शश-८ष्टोंग) - धकन, मार्क, शहरू, नका, होत्रमा।

পৃষ্ঠিবংশের উপদ†হ (স্পাইভাগ ইরিটেশন ——চারনা, ইয়ে, নকা, প্ত-বেদনা --- পরিশ্রমণনিত---

রয়োরচন্ত্র জনিত-----বেল, পল্স, গিকে, কক প্লাট

পৃষ্ঠবংশের উপদ'**হ জ**নিত—চ<sup>+</sup>র, ইয়ে, নজা, জেলস।

প্রতিশ্যাশ্য (ক্যাটার) মস্তকের একন, আস, মার্ক; নকা, ইউজে, কা-বাইজে, কা-হাইড, সলফ।

বক্ষঃস্থলের — ব্রাই, ও আকন বা ফস।

প্রান্থ (গলোরিয়া)—ক্যান, জেশস, মার্ক, একন, ক্যান্থ, পূজা, কোপ।

প্রাস্থ-বেদনা (শেষর)---ক্যান প্রস্থান ক্ষি, ক্ষেক্স

क्षतिम---- श्राम, शिमिनि, कक, मक्ष (वश्रा

প্রাসবাস্থিক বেদনা (আফটার-পেইজা) - সিকে, কফি, পশস, আর্থ ক্যাল, জোক

ফুসফুস-প্রাই, চেল, এট-টা
ফুসফুস-বেষ্ট-প্রাই-প্রাইটিস)--একন ও ত্রাই, ফস, আই-

ব্ধির্ভা (ডেফ নেস)ঃ স্ফি-

জনিত—একন, মার্ক, বেল, পলস ৬জ

রোমান্তীর পর---প্রদা, সলফ, বেল

বসজের পর —মার্ক, সশক, বেল। প্রায়বীয় সোগের পর—ক্স, ক্স-এসি, চায়না, পেটোল

বন্ধ্যাত্ব ( ষ্টারিলিটি ) - ফাস, প্লাট, কোন, ব্যারাই, ক্যাম, সিপি, বোরারা ! ব্যান ( ভুমি টিং ) ঃ অপাচ্য আহাম জনিত—প্লম, এন্ট-জা, ইপিক, আইসিস্

পুরাতন--- জিয়ো, আস<sup>\*</sup>,হাইজ্বাস। রজ---ইপিক, হেম, নাইট-এসিড, চারনা।

বস্তু (ভেরিওশা)---এণ্ট-টা,মার্ক, বেশ, ত্রাই, সশক।

वळ्लाम (भिष्णभ्य)---मार्क-कार त्याप, का-चारेक, विखेक, काक। वळ्वाभिकेळाडिकाम्य (रेम्या-त्यक्षा) काका; जक्म; काम् का-चारेका

বৃতিকণ্টক (খেণ) স্বস, আর্ণ,

বাতরক্ত, এছিবাত (গাউট) না একন ও বেল, কলচ, বা আই; গোড, সিমিসি, পলস, নকা, লাইক, আর্থ। বায়ুনলী-ভুজপ্রাদাহ (এলাইটিন) তরণ—একন, এন্ট-টার্ট প্রাই, ইপিক, ফস, কা-বাইজ।

বালক দিগের—ফস,এনট টা,লোব বৃদ্ধনিগের ক'বেন, এট ট', সিদেগা, শুইল।

পুরাতন কা-বাইজ, হিপার, ফদ কার্ঝো, আদ, কা হাইড

বিচরণ-বিলম্ব --কাশ্ব, ফস, সলক।

বিদ্ধা-দৃষ্টি (ক্যাটারান্ত)--কোনা, ফস, ক্যান, ক্যান্ত, সিল, সলফ, আহ্ন, বেল।

বিব্যিষা ( লশিরা )—ইণিক, ক্রিয়োজ, এণ্ট-ক্রেগেব, টাবে, গলস, লক্ষ-ভা

বিমর্যকা (মিলানকোলি)—ইগ্রে অরম, চায়না, নকা, প্লাট, মার্ক বা গড়-ফ

विध्रज्ञास्त्र ( हैणीय-गिरिष्णे कियाय)
— जाय वा क्रेम ; जाम ; जिरति-ज,
क्षम-जिल ; नका वा हैशिक ; मण्यक्रेन हैंथा।

বিষাদ-বায়ু (মিলানকোলিয়া)
--তার, ইগ, প্লাট, ফস, জিঞ্চ, সলফ
বিসাপ (এরিসিপেলঃস)-- একন
বেল, রস, ভিরেট-ভি, এপিস, ক্যান্থ
ভার্স।

বিসূচিকা (কলেনা): সাংঘাতিক ---ক্যাক্ত, ভিরেট, কুণ, আস

বুকস্থালা (কাডিয়ালজিয়া) --কাবো-ডে, ব্রাই, নকা; লাইক; গলন,
ভিরেট-আ।

त्रक था। १ (निस्मे हिंग)— काश, ८७८त्रव, अकन, ८वम।

ত্রণশেপ ( য়াবসেস ) ঃ--- তর্ণ --বেল বা একন ও ছিপার; মার্ক,
আইয়োড, আস'।

প্রাতন----গিল, ক্যাক্ষ, সল্ফ, ফদ; চাম

ভনের—ফাইটো, ব্রাই; বেল ও থিপার; ফস (প্রোডন); মার্ক, চার

मिश्रिक्श---- विकल्लान (कक्षणन)----वार्ग ख जनन वा दवन।

त्रक्षमध्य---श्रम, द्वल, ज्यक्त व्यवस्य ---ज्यम, द्वल, जित्ति-जि, बारे, रारेर्याम, जिला

भाषक (अमिष्टम्)--- श्या, त्रमः;

মুখের পচাক্ষত —কা-কোর,মার্ক অ ম'; কার্কে, নাইট-এসি

मूथं-श्रीरमक (शाहेरद्रामिम) णाहेक नम, कार्या बाहे, फाम

, মুখন ওল-(বদনা (एएएमक) अकन ;

त्वम, करणांम, न्थिष ; मिशिम कार्यम, ष्टिक्की।

ম্পুমেছ—(ভাষেণিটিস) ঘদ-এসি, আস, নবাজ, ছেলোন

মুদ্রেরেণু—( গ্রাণ্ডেল ) লাইক, এন্ট-জু, নকা, প্রাই

মুত্রস্তস্ত্র—(রিটেনশন অন্ত ইউ-রিণ) ক্যান্থ, নকা, গুপি, একন, স্যান্ফ ক্যান।

মুব্রোশ্য় (ব্লাভার) শ্লোঞাব-এন্ট-জু, পলস, ফির, ক্যান্থ, ক্যান প্রদাহ---স্যান্থ, টেরেব, এপিস একন।

প্ৰশাঘাত-ব্যাহাই কাৰ্ব, এফন, ন্ম আস বেশ।

মূত্রোশায়-প্রদাহ ( সিষ্টাইটি ) ক)াছ, টেয়েব, অপিস।

মূলোশায়ের মূথশায়ী-এফ্রি প্রান্থ প্রেটাইটিস)---বেশ, পণ্য সা-হাইড।

মুচ্ছ (গিনকোপ)--- মঞ্চ, ক্যাম্ফ, ইথো, ভিনেট, আইয়োড, চায়না, কক্ষ

মৃৎপাণ্ডু (এনিমিয়া) ফির পলস, সিপি, কোনা।

्याम (त्रांश ( ७विमिष्टि ) ज्याम (६४, टाই, भणम कम मिनिभि यित्र, ज्यांक, मणक निवृद्धि ( तम्मणन )-

शामाशकर्श (काषिण्यमारायन) कम, आम, किन

যুকুৎ কাঠিন্য - ফদ, মার্ক-জ, ডিজি, নাদ

> शकुष् विवर्षन -- गार्थ- भार्थ-ए शपाए--- अकन, बारे, गार्थ-ए।

নিজিয়তা মার্ক, পগুফ !
রজঃত্রাব (মেনষ্ট্রেশন ) প্রাণম
বিক্ষ - পলস, ফির, সিণি, সলফ,
ফস, নিকে, সাইরে

অনিয়মিত--- সিপি, প্লস্, স্লস্ সিনিশিও

यप्रवीयुक्त--मिथिमि, कक, दक्कांक, दनम, काम, अनम, क्षित्र, दश्म, देश, दक्षमम, मिरक, खिरब्रहे

क विक পরিমাপ शिक्ष, दक्षीक; भ्रोष अक्षम, क्ष्रोद्ध, हेशिक; हार। क्षण-मिशि क्षित्र, श्रमा, दक्षामा मुक्षक, हिर्द्याम।

भवक्ष---- अयम, श्रेशम, (वण; (कामा; मिशि, थ्रांहे, यम।

নিয়মিত কালের পূর্ণে--ক্যান ভাব, ইগ; ক্রিয়ো; সিকে, নক্স-ভ

नित्रभिष्ठ को लित्र धार्थिक १८त----भणम, कम, किन्न, मिशि।

वाङ्कक्षिक (छाई८कविष्म) · ·

(६म, दाई, भणम कम मिनिभि

निवृद्धि (म्हामन )--- हाम वा

দিশিদি, জেশস।

करक्षमभन ) : রক্ত-সঞ্চয় ( शन | ८वण, छिभ, दखनम

यक्टडत---गार्क, द्वन, अरमाख, ব্রাই চায়, আদ, আইয়োড একন कृतकूरमञ्ज- अकन, अम, प्रितिष्ठ-ভি এণ্ট-টা, ত্রাই।

রক্ত-সঙ্গতা (এনিমিয়া) , ফির, होत्र, रुप्र- शिंग, ज्योग मिंग, स्ट्रांन রক্তাতিসার (ডিসেটি,) মার্ক-ক, ইপিক, আস্, এলোজ; হেম বোমান্তী (মিলেগ্ন) একন ও

ত্ৰাই, বেল; কা-भगम ; (क्यम, वहिक ; मभफ

( भीषे )-- मिरनवा, काशि, कानि, भेगम नका मगर, মাণ্টিকো।

(क्छ )---अकनः জেলস, বেল, ক্যান্থ, ক্লোরাল

ब्लिट्यांच्यांन (हेट्रकमन) गाहेक कम-अभि, शुक्त, বেল, একন (स्नम्

শ্য্যা-ক্ষত (বেড গোর) গ্লিসারিণ-ক্রিম বা ক্যালেও লোশন্

শরীর-ক্ষয় ( यात्रागयांग), आहे-

कित ; गणफ, शन, जारिक वा न्यांक ; । त्यांख, क्यांक, मणफ, क्यां म् थवम ।

> क्रिष्ठ अ-- मिना, मार्क, अन्छ क्। भाजीतदान (अःगगात)--राहेख्राम, मिणि या ना-वारेजम, दवन, नारेकः नाम ; गार्क , करे।

> শিরা-প্রসারণ (ডেরিসিম)— হেম, প্রাস গোর-এসি

> শि। थेलिङ भलमधा ( तिला) कछ (थाउँ)-का-वारेक, हिशात, वाह्यार कारेटिंग, कम

> भिद्राधूर्वन (छाडिला)—जकन, (वन, नका, कक, खाँहे, लनम, दलनम। শীতপিত্ত ( পার্টিকেরিয়া) -- এপিস, तम, थणम ; दक्षांत्रांण ।

> শীতাদ (শার্ডি)—মার্ক, নাইট-এসি, কার্ঝো-ডে, আস

> र्श्वकरम् (ल्लारम् देवातिमा) — कम हांग्र, कित्र, कम-अगि, व्यक्ति-दम, জৈলস

भुल (क्रिक)---क्रवांम, क्षर : वाहेतिम, दक्षाणिन ।

मोमभूग-- जिल, जलम, मगरू-जिम त्राणाम्य-- कक, भाष, नका, मिरक, रेटघे ।

শোখ (ভুপদি)ঃ আস, এপিস, ভিশি, ত্রাই, চাম এপোসাই।

উদরের—এপোসাই, আস', এ-পিস, ডিজি, চায়না

मखिरकत---- (रुम, ८वम, पाणिम, डिरब्रो-डिवा (खन्म

বক্ষঃস্থালর —ডিব্রি, আস্, প্রাই, হেল

শাথার---চার, ফির, এপিস, খাস'।

অওকোযের—আইয়োড, রোড, গ্রাফ, অরম।

ক্রৈত্মিকপাণ্ড, হরিৎপাণ্ড (কে-রোগিস)—ফির, পলস, ফির-আই য়োড, সিপি, ক্যাক্ষ।

শ্বাস (স্যাজ্য ) আসঁ, একন গোৰ, ইপিক, ইউজে, কুপ।

যালকনিগের—এটে টার্ট, স্থাস্থ, ইপিক আসি, কুপ।

শ্বেতপ্রান্তর (পিউকোরিয়)— সিপি, কক, পলস, ক্যান্ত, সিলি; জিয়োজ; কোনা।

স্ক্রিপাত-জ্র (টাইফ্রেড ফি-ভার) ব্যাপ্ট, আস মিউর-এসি, রুষ)।

স্বমন শিরংশীড়া (সিক্তেডেক)
—জাইরিস, ইপিক, পলস, নকা
সিপি।

সংখ্যাস (এপোধেনি) अवन, ওপি, বেল, গ্ল, নকা)

স্মৃত্য জ্ব (সিপেল দিডার)— একন ভিরেট-ভি। সৃতিকাজ্ব (পিউয়ারপারল

श्वाक्षता (त्राक्षता । स्वाप्ता । स्वाप्ता

অভিরিক্ত —ক্যান্ধ ফস, আই-যোড; চায়না

ध्वकम् ; (यम् ।

স্থান্ত্র (মিজ-ফিচার)—রাই একন, ক্যাম, ডিরেট-ভি, বেল।

प्राश्च-भूल (निखेशां विश्वां) भूष-मखरण----धकम, व्याम, त्या, करणाम, काम रक्षणमा

मखदक-धन, दयग, नका, ष्टिक्टी, मिसि

পুষ্ঠে নকা অকা-এসি, সিমিসি, ভিষেত্র।

উন্ত ক্ৰোদ, আসঁ, নক্

भार्ष- द्राष्ट, जाम, जिमिमि। (न्यम्डिक (व्यम्,--द्र्यम्) मनम्, भारेष्ठ वा हिशात्र।

স্বরত্ম (জুগ)---একন, স্পঞ্জ, হিপার, আর্ব, এপিন।

खद्राङ्कः (रहाम (नम):— अकन, कष्टे: यात्राह-का, कम, मार्क हेर्या या दवम: का—हाहेड आर्थ।

পুরাতন কা-বাইজন, হিপার ফস कारका, कहे, गार्क স্বল্প-বিরামজ্বর (রেমিটেণ্ট-ফিবার) **(खगम, व्याम, छिट्रबंहे, होशना,** हेशिक, वम

श्वात-देवलकानेर ननम, মার্ক, 위지

হনুস্তন্ত ( লক্জ ) र्ज्ञन, আর্থ, নকা, জেলস।

हिम-(न्यून) हिनदन्तन) त्यद्धांग, भनम दहम या तम; कम, क्यांदनख ত্রিব্যাঞ্চ।

छ्राभक्ककाम ( छ्रिश्काक) ইপিক জ্বস কোরাল কুপ ভিরেট; (क्यम जित्रिहे, जि वा द्यम ।

ख्या । जन्म । जन्म । ज्या भिम, खिरत्र । ज्या विम, खिरत्र । जन्म । जन्म

श्रातान (श्रेषिक्ष) खिलि, नोषा, जकन, लिलि, जान, मन्।

श्रुल (ज्ञाहिना त्यरहेत्रिम्) षागं, ডिजि, श्रांत्र, ভিরেট-এ, ক্যান্ত, গাকি, ভিন্নেট-ভি, ব্লিক।

क्या, यक्या (शहिमिम): कम, वाग, कग-এभि, किन व्याहिष्यांछ, छम, क्रांक,-बाहरब्राष्ट्र माहेक; अक्म, বা বাই।

অঙ্কের-- আইয়োড, স্থান্ধ, ফির, मनक, भार्क आहेख्य जाम।

क्या ३ व धाव, होशना, मका, भणम, রস, আস্ফির

অভিরিক্ত বা বিস্তৃত ক্যাক্ষ সিন,

সম্পূৰ্ণ ৷

